पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

१. मंत्री श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
महावीर पार्क रोड, जयपुर (राजस्थान)

२. मैनेजर श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
श्री महावीरजी (राजस्थान)

卐

प्रथम संस्करण
५०० प्रति

वीर निर्वाण संवत् २४८३
वि० सं० २०१४
अगस्त १९५७

卐

मुद्रक :—
भँवरलाल न्यायतीर्थ,
श्री वीर प्रेस, जयपुर ।

★ विषय सूची ★

क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग की ओर से शीघ्र प्रकाशित होनें वाली पुस्तकें

* *
*

१. प्रद्युम्नचरित :-

हिन्दी भाषा की एक अत्यधिक प्राचीन रचना जिसे कवि सधारु ने संवत् १४११ (सन् १३५४) में समाप्त किया था।

२. सदंसणचरिउ :-

अपभ्रंश भाषा का एक महत्त्वपूर्ण काव्य जो महाकवि नयनन्दि द्वारा संवत ११०० (सन १०४३) मे लिखा गया था।

३. प्राचीन हिन्दी जैन पद संग्रह :-

६० से भी अधिक कवियों द्वारा रचे हुये २५०० हिन्दी पदों का अपूर्व संग्रह।

४. राजस्थान के जैन मूर्त्ति लेख एवं शिलालेख :

राजस्थान के १००० से अधिक प्राचीन मूर्त्तिलेखों एवं शिलालेखों का सचित्र संग्रह।

५. हिन्दी के नये साहित्य की खोज :- [राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों से]

१४वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक रचित हिन्दी की अज्ञात एवं अप्रकाशित रचनाओं का विस्तृत परिचय।
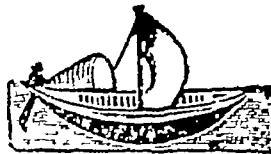
जैन शास्त्र-भण्डारों के ग्रन्थों के नीचे ऊपर लगाये जाने वाले कलात्मक पुट्ठों के चित्र—
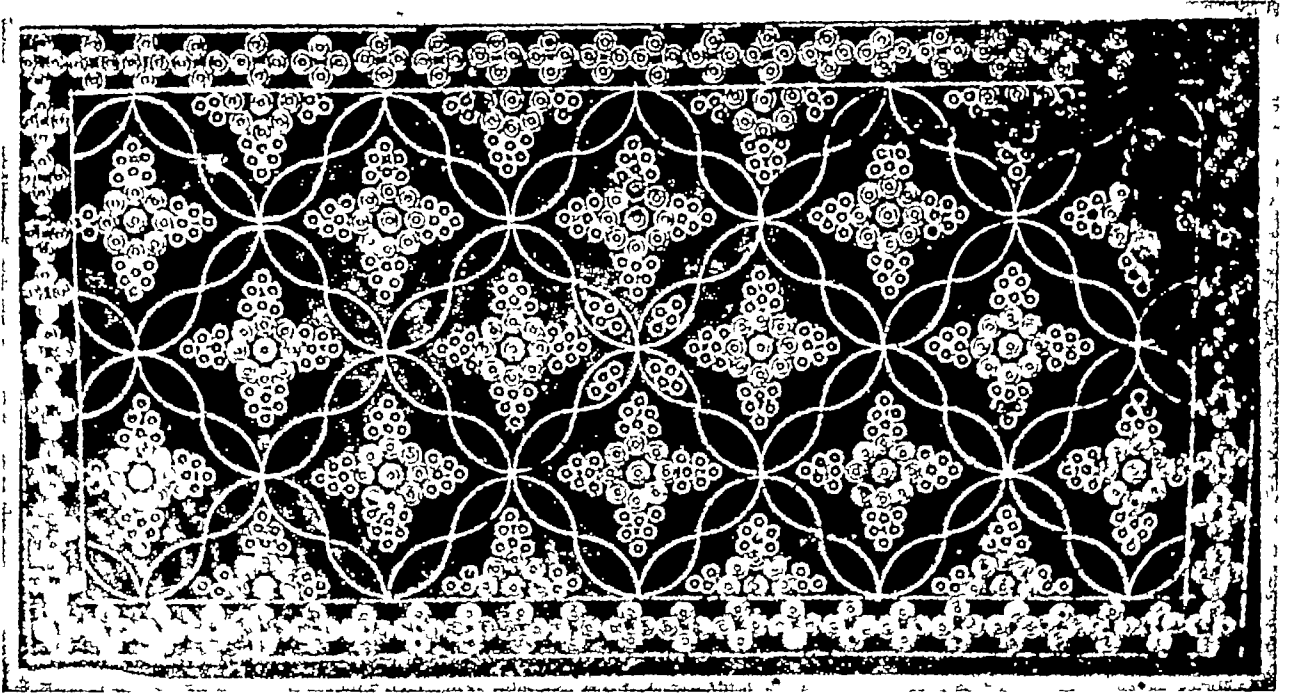
जयपुर के चौधरियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार का एक कलात्मक पुट्ठा
जिस पर चांदी के तारों से काम किया गया है।

मैं हौं जीवद्रव्य नित्य चेतना स्वरूप मेरौ लग्यो है अनादितैं कलंक कर्म मल को। ताही को निमित्त पाय
रागादिक भाव भए भयो है शरीर को मिलाप जैसे खल को। रागादिक भावनि को पाय कैं निमित्त पु
नि होत कर्म बंध ऐसो है बनाव कल को। ऐसैं ही भ्रमत भयो मानुष शरीर जोग [illegible] बनैं तो बनैं [illegible]
उपाय निज थल को ॥३६॥ दो० ॥ रंजायमान(?) गुन [illegible] जाको जोगी दास ॥ सो० मैं [illegible]
शान हौं मारौं मूगट अंकास [illegible] ॥३७॥ मैं आतम अरु पुद्गल खंध। मिलि कै भयो परस्पर बंध ॥ सो असमा

जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत महा पं० टोडरमलजी द्वारा
लिखित 'मोक्षमार्ग प्रकाश' का चित्र।
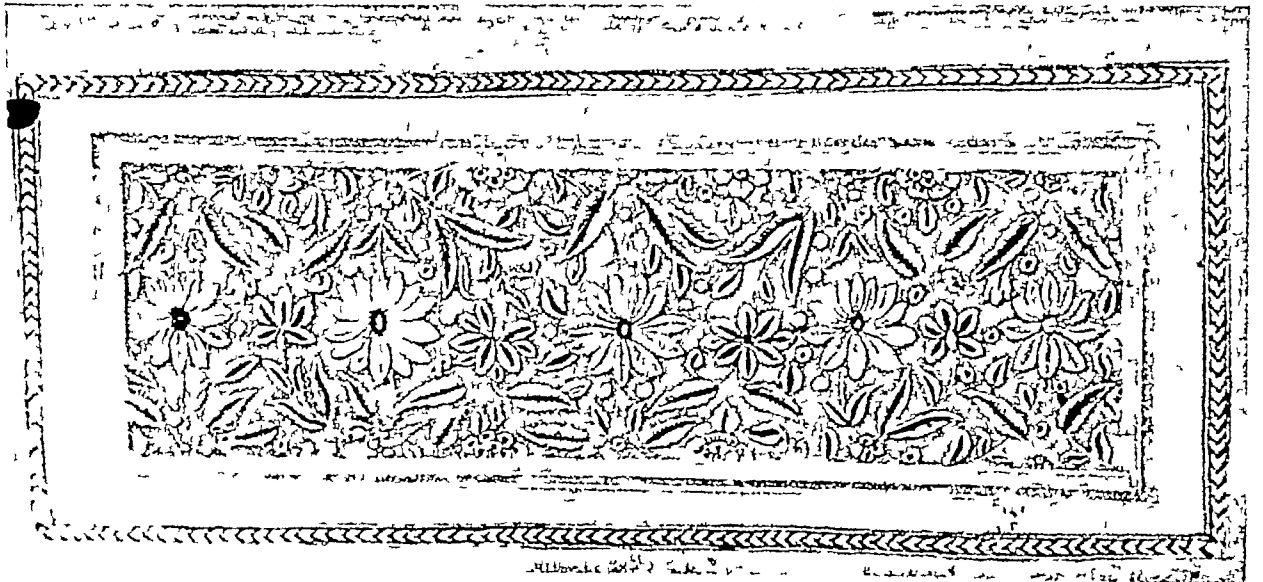
जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार का एक पुट्ठा—
जिस पर खिले हुए फूलों का जाल बिछा हुआ है।

प्रकाशकीय

श्री महावीर ग्रन्थमाला का यह सातवां पुष्प है तथा राजस्थान के जैन ग्रन्थभण्डारों की ग्रन्थ सूची का तीसरा भाग है जिसे पाठकों के हाथों में देते हुये बड़ी प्रसन्नता होती है। ग्रन्थ सूची का दूसरा भाग सन् १९५४ में प्रकाशित हुआ था। तीन वर्ष के इस लम्बे समय मे किसी भी पुस्तक का प्रकाशन न होना अवश्य खटकने वाली बात है लेकिन जयपुर एवं अन्य स्थानों के शास्त्र भण्डारों की छान बीन तथा सूची बनाने आदि के कार्यों में व्यस्त रहने के कारण प्रकाशन का कार्य न हो सका। सूची के इस भाग मे जयपुर के दि० जैन मन्दिर बधीचन्दजी तथा ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डारों के ग्रन्थों की सूची दी गयी है। ये दोनों ही मन्दिर जयपुर के प्रमुख एवं प्रसिद्ध मन्दिरों में से है। दोनों भण्डारों में कितना महत्वपूर्ण साहित्य संग्रहीत है यह बताना तो विद्वानों का कार्य है किन्तु मुझे तो यहाँ इतना ही उल्लेख करना है कि बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार तो १८ वीं शताब्दी के सर्व प्रसिद्ध विद्वान् टोडरमलजी की साहित्यिक सेवाओं का केन्द्र रहा था और आज भी उनके पावन हाथों से लिखी हुई मोक्षमार्गप्रकाश एव आत्मानुशासन की प्रतियां इस भण्डार मे संग्रहीत हैं। ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे भी प्राचीन साहित्य का अच्छा संग्रह है तथा जयपुर के व्यवस्थित भण्डारों में से है।)

इस तीसरे भाग मे निर्दिष्ट भण्डारों के अतिरिक्त जयपुर, भरतपुर, कामां, डीग, दौसा, मौजमाबाद, बसवा, करौली, बयाना आदि स्थानों के करीब ४० भण्डारों की सूचियां पूर्ण रूप से तैय्यार हैं जिन्हें चतुर्थ भाग मे प्रकाशित करने की योजना है। ग्रन्थ सूचियों के अतिरिक्त हिन्दी एवं अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य भी चल रहा है तथा जिनमें से कवि सधारू कृत प्रद्युम्नचरित, प्राचीन हिन्दी पद सग्रह, हिन्दी भाषा की प्राचीन रचनायें, महाकवि नयनन्दि कृत सुदसणचरिउ एव राजस्थान के जैन मूर्त्तिलेख एव शिलालेख आदि पुस्तकें प्रायः तैय्यार हैं तथा जिन्हें शीघ्र ही प्रकाशित करवाने की व्यवस्था की जा रही है।

हमारे इस साहित्य प्रकाशन के छोटे से प्रयत्न से भारतीय साहित्य एव विशेषत जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचा है यह बताना तो कुछ कठिन है किन्तु समय समय पर जो रिसर्चस्कालर्स जयपुर के जैन भण्डारों को देखने के लिये आने लगे हैं इससे पता चलता है कि सूचियों के प्रकाश में आने से जैन शास्त्र भण्डारों के अवलोकन की ओर जैन एव जैनेतर विद्वानों का ध्यान जाने लगा है तथा वे खोजपूर्ण पुस्तकों के लेखन मे जैन भण्डारों के ग्रन्थों का अवलोकन भी आवश्यक समझने लगे हैं।

सूचिया बनाने का एक और लाभ यह होता है कि जो भण्डार वर्षों से बन्द पडे रहते हैं वे भी खुल जाते हैं और उनको व्यवस्थित बना दिया जाता है जिससे उनसे फिर सभी लाभ उठा सकें। यहाँ

हम समाज से एक निवेदन करना चाहते हैं कि यदि राजस्थान अथवा अन्य स्थानों मे प्राचीन शास्त्र भण्डार हों तो वे हमें सूचित करने का कष्ट करें। जिससे हम वहां के भण्डारा की ग्रन्थ सूची तैयार करवा सकें। तथा उसे प्रकाश मे ला सकें।

क्षेत्र के सीमित साधनों को देखते हुये साहित्य प्रकाशन का भारी कार्य जल्दी से नहीं हो रहा है इसका हमे भी दु.ख है लेकिन भविष्य में यही आशा की जाती है कि इस कार्य में और भी तेजी आवेगी और हम अधिक से अधिक ग्रन्थों को प्रकाशित कराने का प्रयत्न करेंगे।

अन्त में हम वधीचन्दजी एवं ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के व्यवस्थापकों को धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकते जिन्होंने हमें शास्त्रों की सूची वनाने एवं समय समय पर ग्रन्थ देखने की पूरी सुविधाएं प्रदान की है।

वधीचन्द गंगवाल

जयपुर

ता० १५-६-५७
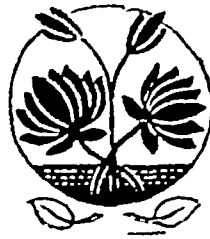
प्रस्तावना

राजस्थान प्राचीन काल से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। इस प्रदेश के शासकों से लेकर साधारण जनों तक ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। कितने ही राजा महाराजा स्वय साहित्यिक थे तथा साहित्य निर्माण मे रस लेते थे। उन्होंने अपने राज्यों मे होने वाले कवियों एवं विद्वानों को आश्रय दिया तथा बड़ी बड़ी पदवियां देकर सम्मानित किया। अपनी अपनी राजधानियों में हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहालय स्थापित किये तथा उनकी सुरक्षा करके प्राचीन साहित्य की महत्त्वपूर्ण निधि को नष्ट होने से बचाया। यही कारण है कि आज भी राजस्थान मे कितने ही स्थानों पर विशेषत जयपुर, अलवर, बीकानेर आदि स्थानों पर राज्य के पोथीखाने मिलते हैं जिनमें संस्कृत, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा का महत्त्वपूर्ण साहित्य संग्रहीत किया हुआ है। यह सब कार्य राज्य-स्तर पर किया गया। किन्तु इसके विपरीत राजस्थान के निवासियों ने भी पूरी लगन के साथ साहित्य एवं साहित्यिकों की उल्लेखनीय सेवायें की हैं और इस दिशा में ब्राह्मण परिवारों की सेवाओं से भी अधिक जैन यतियों एव गृहस्थों की सेवा अधिक प्रशंसनीय रही है। उन्होंने विद्वानों एवं साधुओं से अनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण करवाया। पूर्व निर्मित साहित्य के प्रचार के लिये ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवायी गयी तथा उनको स्वाध्याय के लिये शास्त्र भण्डारों मे विराजमान की गयी। जन साधारण के लिये नये नये ग्रंथों की उपलब्धि की गयी, प्राचीन एव अनुपलब्ध साहित्य का संग्रह किया गया तथा जीर्ण एवं शीर्ण ग्रंथों का जीर्णोद्धार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया। उधर साहित्यिकों ने भी अपना जीवन साहित्य सेवा मे होम दिया। दिन रात वे इसी कार्य में जुटे रहे। उनको अपने खान-पान एवं रहन-सहन की कुछ भी चिन्ता न थी। महापंडित टोडरमलजी के सम्बन्ध में तो यह किम्वदन्ती है कि साहित्य-निर्माण मे व्यस्त रहने के कारण ६ मास तक उनके भोजन मे नमक नहीं डाला गया किन्तु इसका उनको पता भी न लगा। ऐसे विद्वानों के कारण ही विशाल साहित्य का निर्माण हो सका जो हमारे लिये आज अमूल्य निधि है। इसके अतिरिक्त कुछ साहित्यसेवी जो अधिक विद्वान् नहीं थे वे प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां करके ही साहित्य सेवा का महान पुण्य उपार्जन करते थे। राजस्थान के जैन शास्त्र-भण्डारों में ऐसे साहित्य-सेवियों के हजारों शास्त्र संग्रहीत हैं। विज्ञान के इस स्वर्णयुग में भी हम प्रकाशित ग्रंथों को शास्त्र-भण्डारों में इसलिये संग्रह करना नहीं चाहते कि उनका स्वाध्याय करने वाला कोई नहीं है किन्तु हमारे पूर्वजों ने इन शास्त्र भण्डारों में शास्त्रों का संग्रह केवल एक मात्र साहित्य सेवा के आधार पर किया था न कि स्वाध्याय करने वालों की संख्या को देख कर। क्योंकि यदि ऐसा होता तो आज इन शास्त्र भण्डारों मे इतने वर्षों के पश्चात् भी हमे हजारों की संख्या में हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहीत किये हुये नहीं मिलते।

जैन संघ की इस अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय साहित्य सेवा के फलस्वरूप राजस्थान के गांवों, कस्बों एवं नगरों मे ग्रंथ संग्रहालय स्थापित किये गये तथा उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण का सारा भार उन्हीं स्थानों पर रहने वाले जैन श्रावकों को दिया गया। कुछ स्थानों के भण्डार भट्टारकों, यतियों एवं पाण्ड्यों के अधिकार मे रहे। ऐसे भण्डार श्वेताम्बर जैन समाज मे अधिक हैं। राजस्थान मे आज भी करीब ३०० गाव, कस्बे तथा नगर आदि होंगे जहाँ जैन शास्त्र संग्रहालय मिलते हैं। यह तीन सौ की संख्या स्थानों की संख्या है भण्डारों की नहीं। भण्डार तो किसी एक स्थान मे दो तीन से लेकर २५-३० तक पाये जाते हैं। जयपुर मे ३० से अधिक भण्डार हैं, पाटन मे बीस से अधिक भण्डार हैं तथा बीकानेर आदि स्थानों मे दस पन्द्रह के आस पास होंगे। सभी भण्डारों मे शास्त्रों की संख्या भी एक सी नहीं है। यदि किसी किसी भण्डार मे पन्द्रह हजार तक ग्रन्थ हैं तो किसी में दो सौ तीन सौ भी हैं। भण्डारों की आकार प्राकार के साथ साथ उनका महत्त्व भी अनेक दृष्टियों से भिन्न भिन्न है। यदि किसी भण्डार में प्राचीन प्रतियों का अधिक संग्रह है तो दूसरे भण्डार मे किसी भाषा विशेष के ग्रंथों का अधिक संग्रह है। यदि किसी भण्डार मे सैद्धान्तिक एवं धार्मिक ग्रन्थों का अधिक संग्रह है तो किसी भण्डार मे काव्य, नाटक, रासा, व्याकरण, ज्योतिष आदि लौकिक साहित्य का अधिक संग्रह है। इनके अतिरिक्त किसी किसी भण्डार मे जैनेतर साहित्य का भी पर्याप्त संग्रह मिलता है।

साहित्य संग्रह की इस दिशा मे राजस्थान के अन्य स्थानों की अपेक्षा जयपुर, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर, अजमेर आदि स्थानों के भण्डार संख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एवं विषय-वैचित्र्य आदि सभी दृष्टियों से उल्लेखनीय हैं। राजस्थान के इन भण्डारों मे, ताडपत्र, कपडा, और कागज इन तीनों पर ही ग्रंथ मिलते हैं किन्तु ताडपत्र के ग्रंथ तो जैसलमेर के भण्डारों मे ही मुख्यतया संग्रहीत हैं अन्य स्थानों मे उनकी संख्या नाम मात्र की है। कपड़े पर लिखे हुये ग्रंथ भी बहुत कम संख्या मे मिलते हैं। अभी जयपुर के पार्श्वनाथ ग्रंथ भण्डार मे कपडे पर लिखा हुआ संवत १५१६ का एक ग्रंथ मिला है। इसी तरह के ग्रंथ अन्य भण्डारों मे भी मिलते हैं लेकिन उनकी संख्या भी बहुत कम है। सबसे अधिक संख्या कागज पर लिखे हुये ग्रंथों की है जो सभी भण्डारों मे मिलते हैं तथा जो १३ वीं शताब्दी से मिलने लगते हैं। जयपुर के एक भण्डार मे संवत १३१६ (सन् १२६२) का एक ग्रंथ कागज पर लिखा हुआ सुरक्षित है।

यद्यपि जयपुर नगर को बसे हुये करीब २२५ वर्ष हुये हैं किन्तु यहाँ के शास्त्र-भण्डार संख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एवं विषय वैचित्र्य आदि सभी दृष्टियो से उत्तम हैं। वैसे तो यहा के प्राय प्रत्येक मन्दिर एवं चैत्यालय मे शास्त्र संग्रह किया हुआ मिलता है किन्तु आमेर शास्त्र भण्डार, बडे मन्दिर का शास्त्र भण्डार, बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भण्डार, ठोलियो के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पाडे लूणकरणजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, गोधों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पार्श्वनाथ के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पाटोदी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, लश्कर के मन्दिर

का शास्त्र भण्डार, छोटे दीवान जी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, सघीजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, छाबड़ों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, जोवनेर के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, नया मन्दिर का शास्त्र भण्डार आदि कुछ ऐसे शास्त्र भण्डार हैं जिनमे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी, भाषाओं के महत्त्व-पूर्ण साहित्य का संग्रह है। उक्त भण्डारों की प्राय सभी की ग्रंथ सूचियां तैय्यार की जा चुकी हैं जिससे पता चलता है कि इन भण्डारों में कितना अपार साहित्य संकलित किया हुआ है। राजस्थान के ग्रंथ भण्डारों के छोटे से अनुभव के आधार पर यह लिखा जा सकता है कि अपभ्रंश एव हिन्दी की विभिन्न धाराओं का जितना अधिक साहित्य जयपुर के इन भण्डारों में संग्रहीत है उतना राजस्थान के अन्य भण्डारों में सभवत नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारों की ग्रन्थ सूचियां प्रकाशित हो जाने के पश्चात् विद्वानों को इस दिशा मे अधिक जानकारी मिल सकेगी।

ग्रंथ सूची का तृतीय भाग विद्वानों के समक्ष है। इसमें जयपुर के दो प्रसिद्ध भण्डार—बधी-चन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार एव ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार—के ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय उपस्थित किया गया है। ये दोनों भण्डार नगर के प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण भण्डारों में से है।

बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार—

बधीचन्दजी का दि० जैन मन्दिर जयपुर के जैन पञ्चायती मन्दिरों मे से एक मन्दिर है। यह मन्दिर गुमानपन्थ के आम्नाय का है। गुमानीरामजी महापडित टोडरमलजी के सुपुत्र थे जिन्होंने अपना अलग ही गुमानपन्थ चलाया था। यह पन्थ दि० जैनों के तेरहपन्थ से भी अधिक सुधारक है तथा भट्टारकों द्वारा प्रचलित शिथिलाचार का कट्टर विरोधी है। यह विशाल एवं कलापूर्ण मन्दिर नगर के जौंहरी बाजार के घी वालों के रास्ते में स्थित है। काफी समय तक यह मन्दिर पं० टोडरमलजी, गुमानी-रामजी की साहित्यिक प्रवृत्तियों का केन्द्रस्थल रहा है। पं० टोडरमलजी ने यहीं बैठकर गोमट्टसार, आत्मानु-शासन जैसे महान् ग्रंथों की हिन्दी भाषा एव मोक्षमार्गप्रकाश जैसे महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक ग्रन्थ की रचना की थी। आज भी इस भण्डार मे मोक्षमार्गप्रकाश, आत्मानुशासन एव गोमट्टसार भाषा की मूल प्रतियां जिनको पंडितजी ने अपने हाथों से लिखा था, सग्रहीत हैं।

पञ्चायती मन्दिर होने के कारण तथा जयपुर के विद्वानों की साहित्यिक प्रगतियों का केन्द्र होने के कारण यहाँ का शास्त्र भण्डार अधिक महत्त्वपूर्ण है। यहाँ सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश हिन्दी, राजस्थानी एव ढूढारी भाषाओं के ग्रन्थों का उत्तम सग्रह किया हुआ मिलता है। इन हस्तलिखित ग्रन्थों की सख्या १२७८ है। इनमे १६२ गुटके तथा शेष १११६ ग्रथ हैं। हस्तलिखित ग्रंथ सभी विषय के हैं जिनमें सिद्धान्त, धर्म एव आचार शास्त्र, अध्यात्म, पूजा, स्तोत्र आदि विषयों के अतिरिक्त, काव्य, चरित, पुराण, कथा, नीतिशास्त्र, सुभाषित आदि विषयों पर भी अच्छा संग्रह है। लेखक प्रशस्ति सग्रह में ४० लेखक प्रशस्तियां इसी भण्डार के ग्रन्थों पर से दी गयी हैं। इनसे पता चलता है कि भण्डार में

१५ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक की प्रतियों का अच्छा संग्रह है। ये प्रतियां सम्पादन कार्य मे काफी सहायक सिद्ध हो सकती हैं। हेमराज कृत प्रवचनसार भाषा एवं गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा, वनारसीदास का समयसार नाटक, भ० शुभचन्द्र का चारित्रशुद्धि विधान, पं० लाखू का जिणदत्तचरित्र, पं० टोडरमलजी द्वारा रचित गोमट्टसार भाषा, आदि कितने ही ग्रन्थों की तो ऐसी प्रतियां है जो अपने अस्तित्व के कुछ वर्षों पश्चात् की ही लिखी हुई हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ग्रन्थों की ऐसी प्रतियां भी हैं जो ग्रन्थ निर्माण के काफी समय के पश्चात् लिखी होने पर भी महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसी प्रतियों में स्वयम्भू का हरिवंशपुराण, प्रभाचन्द्र की आत्मानुशासन टीका, महाकवि वीर कृत जम्बूस्वामीचरित्र, कवि सधारू का प्रद्युम्नचरित, नन्द का यशोधर चरित्र, मल्लकवि कृत प्रबोधचन्द्रोदय नाटक, सुखदेव कृत वणिकप्रिया, वशीधर की दस्तूरमालिका, पूज्यपाद कृत सर्वार्थसिद्धि आदि उल्लेखनीय है।

भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति वड्ढमाणकाव्य की वृत्ति की है जो संवत १४८१ की लिखी हुई है। यह प्रति अपूर्ण है। तथा सबसे नवीन प्रति संवत् १६८७ की अढाई द्वीप पूजा की है। इस प्रकार गत ५०० वर्षों मे लिखा हुआ साहित्य का यहाँ उत्तम संग्रह है। भण्डार मे मुख्य रूप मे आमेर एवं सागानेर इन दो नगरों से आये हुये ग्रन्थ हैं जो अपने २ समय मे जैनो के केन्द्र थे।

ठोलियों के दि० जैन मन्दिर का शास्त्र भण्डार—

ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार भी ठोलियों के दि० जैन मन्दिर मे स्थित है। यह मन्दिर भी जयपुर के सुन्दर एव विशाल मन्दिरों मे से एक है। मन्दिर मे विराजमान बिल्लोरी पाषाण की सुन्दर मूर्त्तिया दर्शनार्थियों के लिये विशेष आकर्षण की वस्तु है। जयपुर के किसी ठोलिया परिवार द्वारा निर्मित होने के कारण यह मन्दिर ठोलियों के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर पञ्चायती मन्दिर तो नहीं है किन्तु नगर के प्रमुख मन्दिरों मे से एक है। यहाँ का शास्त्र भण्डार एक नवीन एव भव्य कमरे मे विराजमान है। शास्त्र भण्डार के सभी ग्रन्थ वेष्टनों मे बधे हुये है एव पूर्ण व्यवस्था के साथ रखे हुये है जिससे आवश्यकता पडने पर उन्हें सरलता से निकाला जा सकता है। पहिले गुटके की कोई व्यवस्था नहीं थी तथा न उनकी सूची ही बनी हुई थी किन्तु अब उनको भी व्यवस्थित रूप से रख दिया गया है।

ग्रन्थ भण्डार मे ५१५ ग्रन्थ तथा १४३ गुटके है। यहाँ पर प्राचीन एव नवीन दोनो ही प्रकार की प्रतियों का संग्रह है जिससे पता चलता है कि भण्डार के व्यवस्थापकों का ध्यान सदैव ही हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह की ओर रहा है। इस भण्डार मे ऐसा अच्छा संग्रह मिल जावेगा ऐसी आशा सूची बनाने के प्रारम्भ मे नहीं थी। किन्तु वास्तव में देखा जावे तो संग्रह अधिक न होने पर भी महत्त्वपूर्ण है और भाषा साहित्य के इतिहास की कितनी ही कडिया जोडने वाला है। यहाँ पर मुख्यत संस्कृत और हिन्दी इन दो भाषाओं के ग्रन्थो का ही अधिक संग्रह है। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति ब्रह्मदेव कृत द्रव्यसंग्रह टीका की है जो संवत १४१६ (सन् १३५६) की लिखी हुई है। इसके अतिरिक्त योगीन्द्रदेव

का परमात्मप्रकाश सटीक, हेमचन्द्राचार्य का शब्दानुशासनवृत्ति एव पुष्पदन्त का आदिपुराण आदि रचनाओं की भी प्राचीन प्रतियां उल्लेखनीय हैं। यहाँ पर पूजापाठ सग्रह का एक गुटका है जिसमें ४७ पूजाओं का संग्रह है। गुटका प्राचीन है। प्रत्येक पूजा का मण्डल चित्र दिया हुआ है। जो रंगीन एव सुन्दर है। इस सचित्र ग्रन्थ के अतिरिक्त वेष्टनों के २ पुट्ठे ऐसे मिले हैं जिनमे से एक पर तो २४ तीर्थंकरों के चित्र अंकित हैं तथा दूसरे पट्ठे पर केवल वेल बूटे हैं।

भण्डार में संग्रहीत गुटके वहुत महत्त्व के है। हिन्दी की अधिकांश सामग्री इन्हीं गुटकों में प्राप्त हुई है। भ० शुभचन्द्र, मेघराज, रघुनाथ, ब्रह्म जिनदास आदि कवियों की कितनी ही नवीन रचनाये प्राप्त हुई हैं जिनको हिन्दी साहित्य मे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होगा। इनके अतिरिक्त भण्डार में २ रासो मिले है जो ऐतिहासिक हैं तथा दिगम्बर भण्डारों में उपलब्ध होने वाले ऐसे साहित्य मे सर्वप्रथम रासो हैं। इनमें एक पर्वत पाटणी का रासो है जो १६ वीं शताब्दी में होने वाले पर्वत पाटणी के जीवन पर प्रकाश डालता है। दूसरा कृष्णदास बघेरवाल का रासो है जो कृष्णदास के जीवन पर तथा उनके द्वारा किये गये चान्दखेडी में प्रतिष्ठा महोत्सव पर विस्तृत प्रकाश डालता है। इसी प्रकार सवत् १७३३ मे लिखित एक भट्टारक पट्टावलि भी प्राप्त हुई है जो हिन्दी मे इस प्रकार की प्रथम पट्टावलि है तथा भट्टारक परम्परा पर प्रकाश डालती है।

भण्डारों में उपलब्ध नवीन साहित्य—

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है दोनों शास्त्र भण्डार ही हिन्दी रचनाओं के संग्रह के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। १४ वीं शताब्दी से लेकर २० वी शताब्दी तक जैन एवं जैनेतर विद्वानों द्वारा निर्मित हिन्दी साहित्य का यहां अच्छा सग्रह है। हिन्दी साहित्य की नवीन कृतियों मे कवि सुधारु का प्रद्युम्न चरित, (स० १४११) कवि वीर कृत मणिहार गीत, आज्ञासुन्दर की विद्याविलास चौपई (१५१६), मुनि कनकामर की ग्यारहप्रतिमावर्णन, पद्मनाभ कृत डूगर की बावनी (१५४३), विनयसमुद्र कृत विक्रमप्रबन्ध रास (१५७३) छीहल का उदर गीत एव पद, ब्रह्म जिनदास का आदिनाथस्तवन, ब्र० कामराज कृत त्रेसठ शलाकापुरुषवर्णन, कनकसोम की जइतपदवेलि (१६२५), कुमदचन्द्र एवं पूनो की पद एव विनतियां आदि उल्लेखनीय हैं। ये १४ वीं से लेकर १६ वी शताब्दी के कुछ कवि हैं जिनकी रचनायें दोनों भण्डारों मे प्राप्त हुई हैं। इसी प्रकार १७ वीं शताब्दी से १९ वीं शताब्दी के कवियों की रचनाओं मे ब्र० गुलाल की विवेक चौपई, उपाध्याय जयसागर की जिनकुशलसूरि स्तुति, जिनरगसूरि की प्रबोधबावनी एव प्रस्ताविक दोहा, ब्र० ज्ञानसागर का व्रतकथाकोश, टोडर कवि के पद, पदमराज का राजुल का बारहमासा एव पार्श्वनाथस्तवन, नन्द की यशोधर चौपई (१६७०), पोपटशाह कृत मदनमंजरी कथा प्रबन्ध, बनारसीदास कृत मांझा, मनोहर कवि की चिन्तामणि मनबावनी, लघु बावनी एवं सुगुरुसीख, मल्लकवि कृत प्रबोधचन्द्रोदयनाटक, मुनि मेघराज कृत सयम प्रवहणगीत (१६६८), रूपचन्द का अध्यात्म सवैय्या, भ० शुभचन्द्र कृत तत्त्वसार-

दोहा, समयसुन्दर का आत्मउपदेशगीत, क्षमावत्तीसी एवं दानशीलसवाद, सुखदेव कृत वणिकप्रिया, (१७१०) हर्षकीर्त्ति का नेमिनाथराजुलगीत, नेमीश्वरगीत, एवं मोरडा; अजयराज कृत नेमिनाथचरित (१७९३) एव यशोधर चौपई (१७९०), कनककीर्त्ति का मेघकुमारगीत, गोपालदास का प्रमादीगीत एव यदुरासो, थानसिंह का रत्नकरण्ड श्रावकाचार एव सुबुद्धिप्रकाश (१८४७) दादूदयाल के दोहे, दूलह कवि का कविकुलकण्ठाभरण, नगरीदास का इश्कचिमन, एव वैनविलास, वशीधर कृत दस्तूरमालिका, भगवानदास के पद, मनराम द्वारा रचित अक्षरमाला, मनरामविलास, एवं धर्मसहेली, मुनि महेस की अक्षरवत्तीसी, रघुनाथ का गणभेद, ज्ञानसार, नित्यविहार एवं प्रसंगसार, श्रुतसागर का पट्मालवर्णन (१८२१), हेमराज कृत दोहाशतक, केशरीसिंह का वर्द्धमानपुराण (१८७३) चंपाराम का धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार, एवं भद्रबाहुचरित्र, बाबा दुलीचन्द कृत धर्मपरीक्षा भाषा आदि उल्लेखनीय हैं। ये रचनायें काव्य, पुराण, चरित, नाटक, रस एव अलकार अर्थशास्त्र, इतिहास आदि सभी विषयों से सम्बन्धित हैं। इनमें से बहुत सी तो ऐसी रचनायें हैं। जो सम्भवत सर्व प्रथम विद्वानों के समक्ष आयी होंगी।

सचित्र साहित्य—

दोनों भण्डारों मे हिन्दी एव अपभ्रंश का महत्त्वपूर्ण साहित्य उपलब्ध होते हुये सचित्र साहित्य का न मिलना जैन श्रावकों एवं विद्वानों की इस ओर उदासीनता प्रगट करती है। किन्तु फिर भी ठोलियों के मन्दिर मे एक पूजा सग्रह प्राप्त हुआ है जो सचित्र है। इसमे पूजा के विधानों के मडल चित्रित किये हुये हैं। चित्र सभी रंगीन है एव कला पूर्ण भी हैं। इसी प्रकार एक शास्त्र के पुट्ठे पर चौवीस तीर्थंकरों के चित्र दिये हुये हैं। सभी रगीन एवं कला पूर्ण हैं। यह पुट्ठा १६ वीं शताब्दी का प्रतीत होता है।

विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रन्थ—

इस दृष्टि से वधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार उल्लेखनीय है। यहाँ पर महा पडित टोडरमलजी द्वारा लिखित मोक्षमार्गप्रकाश एव आत्मानुशासन भाषा एव गोमट्टसार भाषा की प्रतियां सुरक्षित हैं। ये प्रतियां साहित्यिक दृष्टि से नहीं किन्तु इतिहास एवं पुरातत्त्व की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

विशाल पद साहित्य—

दोनों भण्डारों के गुटकों मे हिन्दी कवियों द्वारा रचित पदों का विशाल संग्रह है। इन कवियों की सख्या ६० है जिनमें कबीरदास, वृन्द, सुन्दर, सूरदास आदि कुछ कवियों के अतिरिक्त शेष सभी जैन कवि हैं। इनमें अजयराज, छीहल, जगजीवन, जगतराम, मनराम, रूपचन्द, हर्षकीर्त्ति आदि के नाम उल्लेखनीय है। इन कवियों द्वारा रचित हिन्दी पद भाषा एवं भाव की दृष्टि से अच्छे हैं तथा जिनका प्रकाश में आना आवश्यक है। क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग की ओर से ऐसे पद एव भजनों का सग्रह

किया जा रहा है और शीघ्र ही करीब २५०० पदों का एक वृहद् संग्रह प्रकाशित करने का विचार है। जिससे कम से कम यह तो पता चल सकेगा कि जैन विद्वानों ने इस दिशा में कितना महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

गुटकों का महत्त्व—

वास्तव मे यदि देखा जावे तो जितना भी महत्त्वपूर्ण एव अनुपलब्ध साहित्य मिलता है उसका अधिकांश भाग इन्हीं गुटकों में संग्रहीत किया हुआ है। जैन श्रावकों को गुटकों मे छोटी छोटी रचनायें सग्रहीत करवाने का वडा चाव था। कभी कभी तो वे स्वयं ही संग्रह कर लिया करते थे और कभी अन्य लेखकों के द्वारा संग्रह करवाते थे। इन दोनों भण्डारों में भी जितना हिन्दी का नवीन साहित्य मिला है उसका आधे से अधिक भाग इन्हीं गुटकों में संग्रह किया हुआ है। दोनों भण्डारों में गुटकों की संख्या ३०५ है। यद्यपि इन गुटकों में सर्वसाधारण के काम आने वाले स्तोत्र, पूजायें, कथायें आदि की ही अधिक संख्या है किन्तु महत्त्वपूर्ण साहित्य भी इन्हीं गुटकों मे उपलब्ध होता है। गुटके सभी साइज के मिलते है। यदि किसी गुटके में १८–२० पत्र ही हैं तो किसी किसी गुटके मे ४००–५०० पत्र तक हैं। ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के एक गुटके में ६५४ पत्र है जिनमे ४७ पूजाओं का संग्रह किया हुआ है। कुछ गुटकों में तो लेखनकाल उसके अन्त मे दिया हुआ होता है किन्तु कुछ गुटकों में बीच बीच में भी लेखन-काल दे दिया जाता है अर्थात् जैसे जैसे पाठ समाप्त होते जाते हैं वैसे वैसे लेखनकाल भी दे दिया जाता है।

इन गुटकों में साहित्यिक एवं धार्मिक रचनाओं के अतिरिक्त आयुर्वेद के नुसखे भी बहुत मिलते हैं। यदि इन्ही नुसखों के आधार पर कोई खोज की जावे तो वह आयुर्वेदिक साहित्य के लिये महत्त्वपूर्ण चीज प्रमाणित हो सकती है। ये नुसखे हिन्दी भाषा में अनुभव के आधार पर लिखे हुये हैं।

आयुर्वेदिक साहित्य के अतिरिक्त किसी किसी गुटके में ऐतिहासिक सामग्री भी मिल जाती है। यह सामग्री मुख्यतः राजाओं अथवा बादशाहों की वंशावलि के रूप में होती है। कौन राजा कब राज्य सिंहासन पर बैठा तथा उसने कितने वर्ष, कितने महिने एवं कितने दिन तक शासन किया आदि विवरण दिया हुआ रहता है।

ग्रन्थ-सूची के सम्बन्ध में—

प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची में जयपुर के केवल दो शास्त्र भण्डारों की सूची है। हमारा विचार तो एक भण्डार की और सूची देना था लेकिन ग्रन्थ सूची के अधिक पत्र हो जाने के डर से नहीं दिया गया। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची मे जिन नवीन रचनाओं का उल्लेख आया है उनके आदि अन्त भाग भी दे दिये गये हैं जिससे विद्वानों को ग्रन्थ की भाषा, रचनाकाल, एवं ग्रन्थकार के सम्बन्ध मे कुछ परिचय मिल सके।

इसके अतिरिक्त जो लेखक प्रशस्तियां अधिक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण थी उन्हे भी ग्रन्थ सूची मे दे दिया गया है। इस प्रकार सूची मे १०६ ग्रन्थ प्रशास्तियां एव ५५ लेखक प्रशस्तियां दी गयी हैं जो स्वयं एक पुस्तक के रूप मे है।

प्रस्तुत सूची मे एक और नवीन ढग अपनाया गया है वह यह है कि अधिकांश ग्रन्थों की एक प्रति का ही सूची मे परिचय दिया गया है। यदि उस ग्रन्थ की एक से अधिक प्रतियाँ हैं तो विशेष मे उनकी सख्या को ही लिख दिया गया है लेकिन यदि दूसरी प्रति भी महत्त्वपूर्ण अथवा विशेष प्राचीन है तो उस प्रति का भी परिचय सूची मे दे दिया गया है। इस प्रकार करीब ५०० प्रतियों का परिचय ग्रन्थ-सूची मे नहीं दिया गया जो विशेष महत्त्वपूर्ण प्रतियां नहीं थी।

कुछ विद्वानों का यह मत है कि प्रत्येक भण्डार की ग्रन्थ सूची न होकर एक सूची मे १०-१५ भण्डारों की सूची हो तथा एक ग्रन्थ किस किस भण्डार मे मिलता है इतना मात्र उसमे दे दिया जावे जिससे प्रकाशन का कार्य भी जल्दी हो सके तथा भण्डारों की सूचिया भी आजावे। हमने इस शैली को अभी इसीलिये नहीं अपनाया कि इससे भण्डारों का जो भिन्न भिन्न महत्त्व है तथा उनमे जो महत्त्वपूर्ण प्रतियां है उनका परिचय ऐसी ग्रन्थ सूची मे नहीं आसकेगा। यह तो अवश्य है कि बहुत से ग्रन्थ तो प्रत्येक भण्डार मे समान रूप से मिलते है तथा ग्रन्थ सूचियों मे बार बार मे आते है जिससे कोई विशेष अर्थ प्राप्त नहीं होता। आशा है भविष्य मे सूची प्रकाशन का यह कार्य किस दिशा मे चलना चाहिये इस पर इस सम्बन्ध के विशेषज्ञ विद्वान् अपनी अमूल्य परामर्श से हमे सूचित करेंगे जिससे यदि अधिक लाभ हो सके तो उसी के अनुसार कार्य किया जा सके।

ग्रन्थ सूची बनाने का कार्य कितना जटिल है यह तो वे ही जान सकते हैं जिन्होंने इस दिशा मे कार्य किया हो। इसलिये कमियां रहना आवश्यक हो जाता है। कौनसा ग्रन्थ पहिले प्रकाश में आ चुका है तथा कौनसा नवीन है इसका भी निर्णय इस सम्बन्ध की प्रकाशित पुस्तकें न मिलने के कारण जल्दी से नहीं किया जा सकता इससे यह होता है कि कभी कभी प्रकाश में आये हुये ग्रन्थ नवीन समझने की गल्ती हो जाया करती है। प्रस्तुत ग्र थ सूची मे यदि ऐसी कोई अशुद्धि हो गयी हो तो विद्वान् पाठक हमे सूचित करने का कष्ट करेंगे।

दोनों भण्डारों में जो महत्त्वपूर्ण कृतिया प्राप्त हुई है उनके निर्माण करने वाले विद्वानों का परिचय भी यहा दिया जा रहा है। यद्यपि इनमे से बहुत से विद्वानों के सम्बन्ध में तो हम पहिले से ही जानते हैं किन्तु उनकी जो अभी नवीन रचनायें मिली हैं उन्हीं रचनाओं के आधार पर उनका सक्षिप्त परिचय दिया गया है। आशा है इस परिचय से हिन्दी साहित्य के इतिहास निर्माण में कुछ सहायता मिल सकेगी।

१. अचलकीर्त्ति

अचलकीर्त्ति १८ वीं शताब्दी के हिन्दी कवि थे। विषापहार स्तोत्र भाषा इनकी प्रसिद्ध रचना है जिसका समाज मे अच्छा प्रचार है। अभी जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में कर्म-बत्तीसी नाम की एक और रचना प्राप्त हुई है जो संवत् १७७७ में पूर्ण हुई थी। इन्होंने कर्मबत्तीसी मे पावा नगरी एव वीर संघ का उल्लेख किया है। इनकी एक रचना रविव्रतकथा देहली के भण्डार मे संग्रहीत है।

२. अजयराज

१८ वीं शताब्दी के जैन साहित्य सेवियों मे अजयराज पाटणी का नाम उल्लेखनीय है। ये खण्डेलवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे तथा पाटणी इनका गोत्र था। पाटणीजी आमेर के रहने वाले तथा धार्मिक प्रकृति के प्राणी थे। ये हिन्दी एवं संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। इन्होंने हिन्दी में कितनी ही रचनायें लिखी थी। अब तक छोटी और बडी २० रचनाओं का तो पता लग चुका है इनमे से आदि पुराण भाषा, नेमिनाथचरित्र, यशोधरचरित्र, चरखा चउपई, शिव रमणी का विवाह, कक्काबत्तीसी आदि प्रमुख हैं। इन्होंने कितनी ही पूजायें भी लिखी है। इनके द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी पर्याप्त सख्या मे मिलते हैं। कवि ने हिन्दी मे एक जिनजी की रसोई लिखी है जिसमे षट् रस व्यंजन का अच्छा वर्णन किया गया है।

अजयराज हिन्दी साहित्य के अच्छे विद्वान् थे। इनकी रचनाओं मे काव्यत्व के दर्शन होते हैं। इन्होंने आदिपुराण को सवत् १७९७, में यशोधरचौपई को १७९२ मे तथा नेमिनाथचरित्र को सवत् १७९३ मे समाप्त किया था।

३. ब्रह्म अजित

ब्रह्म अजित संस्कृत भाषा के अच्छे विद्वान् थे। हनुमच्चरित मे इनकी साहित्य निर्माण की कला स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। ये गोलशृंगार वश मे उत्पन्न हुये थे। माता का नाम पीथा तथा पिता का नाम वीरसिंह था। भृगुकच्छपुर में नेमिनाथ के जिन मन्दिर मे इनका मुख्य रूप से निवास था। ये भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एव विद्यानन्दि के शिष्य थे।

हिन्दी में इन्होंने हंसा भावना नामक एक छोटी सी आध्यात्मिक रचना लिखी थी। रचना मे ३७ पद्य हैं जिनमें संसार का स्वरूप तथा मानव का वास्तविक कर्त्तव्य क्या है, उसे क्या करना चाहिये तथा किसे छोडना चाहिये आदि पर प्रकाश डाला है। हंसा भावना अच्छी रचना है, तथा भाषा एवं शैली दोनों ही दृष्टियों से पढने योग्य है। कवि ने इसे अपने गुरु विद्यानन्दि के उपदेश से बनायी थी।

४. अमरपाल

इन्होंने 'आदिनाथ के पच मंगल' नामक रचना को सवत् १७७२ में समाप्त की थी। रचना मे दिये हुये समय के आधार पर ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान् ठहरते हैं। ये खण्डेलवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे तथा गंगवाल इनका गोत्र था। देहली के समीप स्थित जयसिंहपुरा इनका निवास स्थान था। आदिनाथ के पचमगल के अतिरिक्त इनकी अन्य रचना अभी तक उपलब्ध नहीं हुई है।

५. आज्ञासुन्दर

ये खरतरगच्छ के प्रधान जिनवर्द्धनसूरि के प्रशिष्य एवं आनन्दसूरि के शिष्य थे। इन्होंने संवत् १५१६ मे विद्याविलास चौपई की रचना समाप्त की थी। इसमे ३६४ पद्य हैं। रचना अच्छी है।

६. उदैराम

उदैराम द्वारा लिखित हिन्दी की २ जखडी अभी उपलब्ध हुई हैं। दोनों ही जखडी ऐतिहासिक हैं तथा भट्टारक अनन्तकीर्ति ने सवत् १७८५ में सांभर (राजस्थान) मे जो चातुर्मास किया था उसका उन दोनों मे वर्णन किया गया है। दिगम्बर साहित्य में इस प्रकार की रचनायें बहुत कम मिलती हैं इस दृष्टि से इनका अधिक महत्व है। वैसे भाषा की दृष्टि से रचनायें साधारण हैं।

७. ऋषभदास निगोत्या

ऋषभदास निगोत्या का जन्म सवत् १८४० के लगभग जयपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम शोभाचन्द था। इन्होंने सवत् १८८८ में मूलाचार की हिन्दी भाषा टीका सम्पूर्ण की थी। ग्रन्थ की भाषा ढूंढारी है तथा जिस पर पं० टोडरमलजी की भाषा का प्रभाव है।

८. कनककीर्त्ति

कनककीर्ति १७ वीं शताब्दी के हिन्दी के विद्वान थे। इन्होंने तत्वार्थसूत्र श्रुतसागरी टीका पर एक विस्तृत हिन्दी गद्य टीका लिखी थी। इसके अतिरिक्त कर्मघटावलि, जिनराजस्तुति, मेघकुमारगीत, श्रीपालस्तुति आदि रचनायें भी आपकी मिल चुकी है। कनककीर्ति हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। इनकी भाषा ढूंढारी हैं जिसमे 'है' के स्थान पर "छै" का अधिक प्रयोग हुआ है। गुटकों मे इनके कितने ही पद भी मिले हैं।

९. कनकसोम

कनकसोम १६ वीं शताब्दी के कवि थे। 'जइतपदवेलि' इनकी इतिहास से सम्बन्धित कृति है जो सवत १६२५ मे रची गयी थी। वेलि मे उसी संवत् मे मुनि वाचकदया ने आगरे मे जो चातुर्मास किया था उसका वर्णन दिया हुआ है। यह खरतरगच्छ की एक अच्छी पट्टावलि है कवि ने इसमे साधुकीर्त्ति आदि कितने ही विद्वानों के नामों का उल्लेख किया है। रचना में ४६ पद्य है। भाषा हिन्दी है लेकिन

गुजराती का प्रभाव है। कवि की एक और रचना आषाढ़भूतिस्वाध्याय पहिले ही मिल चुकी है। जो गुजराती में है।

११. मुनि कनकामर

मुनिकनकामर द्वारा लिखित 'ग्यारह प्रतिमा वर्णन' अपभ्रंश भाषा का एक गीत है। कनकामर कौनसे शताब्दी के कवि थे यह तो इस रचना के आधार से निश्चित नहीं होता है। किन्तु इतना अवश्य है कि वे १६ वीं या इससे भी पूर्व की शताब्दी के थे। गीत मे १२ प्रतिमाओं का वर्णन है जिसका प्रथम पद्य निम्न प्रकार है।

मुनिवर जंपइ मृगनयणी, अंसु जल्लोलीइय गिरवयणी।
नवनीलोपलकोमलनयणी, पहु कणयंवर भणमि पई।
किम्म इह लब्भइ सिवपुर रम्मणी, मुनिवर जंपइ मृगनयणी ॥ १ ॥

१२. कुलभद्र

सारसमुच्चय ग्रन्थ के रचयिता श्री कुलभद्र किस शताब्दी तथा किस प्रान्त के थे इसके विषय में कोई उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु इतना अवश्य है कि वे १६ वीं शताब्दी के पूर्व के विद्वान् थे। क्योंकि सारसमुच्चय की एक प्रति सवत् १५४५ में लिखी हुई बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के सग्रह मे है। रचना छोटी ही है जिसमे ३२८ श्लोक हैं। ग्रन्थ का दूसरा नाम ग्रन्थसारसमुच्चय भी है। ग्रन्थ की भाषा सरल एवं ललित है।

१३. किशनसिंह

ये सवाईमाधोपुर प्रान्त के रामपुरा गाव के रहने वाले थे। खण्डेलजाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटणी इनका गोत्र था। इनके पिता का नाम 'काना' था। ये दो भाई थे। इनसे बडे भाई का नाम सुखदेव था। अपने गांव को छोडकर ये सांगानेर आकर रहने लगे थे, जो बहुत समय तक जैन साहित्यिकों का केन्द्र रहा है। इन्होंने अपनी सभी रचनायें हिन्दी भाषा मे लिखी हैं। जिनकी सख्या १५ से भी अधिक है। मुख्य रचनाओं मे क्रियाकोशभाषा, (१७८४) पुण्याश्रवकथाकोश, (१७७२) भद्रबाहुचरित भाषा (१७८०) एवं बावनी आदि हैं।

१४. केशरीसिंह

पं० केशरीसिंह भट्टारकों के पंडित थे। इनका मुख्य स्थान जयपुर नगर के लश्कर के जैन मन्दिर मे था। ये वहीं रहा करते थे तथा श्रद्धालु श्रावकों को धर्मोपदेश दिया करते थे। दीवान बालचन्द के सुपुत्र दीवान जयचन्द छाबडा की इन पर विशेष भक्ति थी और उन्हीं के अनुरोध से इन्होंने संस्कृत भाषा में भट्टारक सकलकीर्त्ति द्वारा विरचित वर्द्धमानपुराण की हिन्दी गद्य में भाषा टीका लिखी थी। पडित जी ने इसे संवत १८७३ में समाप्त की थी। पुराण की भाषा पर ढूंढारी (जयपुरी) भाषा का प्रभाव है। ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार पुराण की भाषा का संशोधन वस्तुपाल छाबडा ने किया था।

१४. ब्रह्मगुलाल

ब्रह्मगुलाल हिन्दी भाषा के कवि थे यद्यपि कवि की अब तक छोटी २ रचनायें ही उपलब्ध हुई हैं किन्तु भाव एव भाषा की दृष्टि से ये साधारणतः अच्छी हैं। इनकी रचनाओं मे त्रेपनक्रिया, समवसरणस्तोत्र, जलगालनक्रिया, विवेकचौपई आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। विवेकचौपई अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर मे प्राप्त हुई है। कवि १७ वीं शताब्दी के थे।

१५. गोपालदास

गोपालदास की दो छोटी रचनायें यादुरासो तथा प्रमादीगीत जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार कें ६७ वे गुटके मे सग्रहीत हैं। गुटके के लेखनकाल के आधार पर कवि १७ वीं शताब्दीया इससे भी पूर्व के विद्वान् थे। यादुरासों मे भगवान नेमिनाथ के वन चले जाने के पश्चात् राजुल की विरहावस्था का वर्णन है जो उन्हें वापिस लाने के रूप में है। इसमे २४ पद्य हैं। प्रमादीगीत एक उपदेशात्मकगीत है जिसमें आलस्य त्याग कर आत्महित करने के लिये कहा गया है। इनके अतिरिक्त इनके कुछ गीत भी मिलते हैं।

१६. चपाराम भांवसा

ये खण्डेलवाल जैन ज ति में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम हीरालाल था जो माधोपुर (जयपुर) के रहने वाले थे। चपाराम हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। शास्त्रों की स्वाध्याय करना ही इनका प्रमुख कार्य था इसी ज्ञान वृद्धि के कारण इन्होंने भद्रवाहुचरित्र एव धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार की हिन्दी भाषा टीका क्रमश' सवत् १८४४ तथा १८६८ मे समाप्त की थी। भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचनाएँ साधारण हैं।

१७. छीहल

१६ वीं शताब्दी मे होनेवाले जैन कवियों मे छीहल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये राजस्थानी कवि थे किन्तु राजस्थान के किस प्रदेश को सुशोभित करते थे इसका अभी तक कोई उल्लेख नहीं मिला। हिन्दी भाषा के आप अच्छे विद्वान् थे। इनकी अभी तक ३ रचनायें तथा ३ पद उपलब्ध हुये हैं। रचनाओं के नाम बावनी, पचसहेली गीत, पंथीगीत हैं। सभी रचनायें हिन्दी की उत्तम रचनाओं में से है जो काव्यत्व से भरपूर हैं। कवि की वर्णन करने की शैली उत्तम है। बावनी मे आपने कितने ही विषयों का अच्छा वर्णन किया है। पचसहेली को इन्होंने सवत् १५७५ मे समाप्त किया था।

१८. पं जगन्नाथ

पं० जगन्नाथ १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे तथा संस्कृत भाषा के पहुंचे हुए विद्वान् थे। ये खन्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा इनके पिता का नाम पोमराज था। इनकी ६ रचनायें श्वेताम्बरपराजय, चतुर्विंशतिसंधानस्वोपज्ञटीका, सुखनिधान, नेमिनरेन्द्रस्तोत्र,

तथा सुखेणचरित्र तो पहिले ही प्रकाश मे आ चुकी है। इनके अतिरिक्त इनकी एक और कृति "कर्मस्वरूप-वर्णन" अभी बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भडार में मिली है। इस रचना मे कर्मों के स्वरूप की विवेचना की गयी है। कवि ने इसे संवत् १७०७ (सन् १६५०) मे समाप्त किया था। 'कर्मस्वरूप' के उल्लासों के अन्त मे जो विशेषण लगाये गये हैं उनसे पता चलता है कि पडित जी न्यायशास्त्र के पारंगत विद्वान् थे तथा उन्होंने कितने ही शास्त्रार्थों में अपने विरोधियों को हराया था। कवि का दूसरा नाम वादिराज भी था।

१६. जिनदत्त

पं० जिनदत्त भट्टारक शुभचन्द्र के समकालीन विद्वान् थे तथा उनके धनिष्ट शिष्यों में से थे। भट्टारक शुभचन्द्र ने अम्बिकाकल्प की जो रचना की थी उसमें मुख्य रूप से जिनदत्त का ही आग्रह था। ये स्वयं भी हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा संस्कृत भाषा में भी अपना प्रवेश रखते थे। अभी हिन्दी में इनकी २ रचनायें उपलब्ध हुई है जिनके नाम धर्मतरुगीत तथा जिनदत्तविलास है। जिनदत्तविलास में में कवि द्वारा बनाये हुये पदों एवं स्फुट रचनाओं का संग्रह है तथा धर्मतरुगीत एक छोटा सा गीत है।

२०. ब्रह्म जिनदास

ये भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे। सस्कृत, प्राकृत, एव गुजराती भाषाओं पर इनका पूरा अधिकार था। इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा में भी इनकी तीव्र गति थी। कवि की अब तक संस्कृत एवं गुजराती का कितनी ही रचनाये उपलब्ध हो चुकी हैं इनमें आदिनाथ पुराण, धनपालरास, यशोधररास, आदि प्रमुख हैं। इनकी सभी रचनाओं की सख्या २० से भी अधिक है। अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में इनका एक छोटा सा आदिनाथ स्तवन हिन्दी में लिखा हुआ मिला है जो बहुत ही सुन्दर एवं भाव पूर्ण है तथा ग्रंथ सूची मे पूरा दिया हुआ है।

२१. ब्रह्म ज्ञानसागर

ये भट्टारक श्रीभूषण के शिष्य थे। संस्कृत के साथ साथ ये हिन्दी के भी अच्छे विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी में २६ से भी अधिक कथाये लिखी है जो पद्यात्मक हैं। भाषा की दृष्टि से ये सभी अच्छी हैं। भट्टारक श्रीभूषण ने पाण्डवपुराण (सस्कृत) को संवत् १६५७ मे समाप्त किया था। क्योंकि ब्रह्म ज्ञानसागर भी इन्हीं भट्टारक जी के शिष्य थे अत. कवि के १८ वीं शताब्दी के होने में कोई सन्देह नहीं रह जाता है। इन्होंने कथाओं के अतिरिक्त और भी रचनायें लिखी होंगी लेकिन अभी तक वे उपलब्ध नही हुई हैं।

२२. ठक्कुरसी

१६ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों मे ठक्कुरसी का नाम उल्लेखनीय है। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा हिन्दी में छोटी छोटी रचनाये लिखकर स्वाध्याय प्रेमियों का दिल बहलाया करते

थे। इनके पिता का नाम घेल्ह था जो स्वय भी कवि थे। कवि द्वारा रचित कृपणचरित्र तथा पंचेन्द्रिय वेलि तो पहिले ही प्रकाश मे आ चुकी हैं लेकिन नेमिराजमतिवेलि पार्श्वशकुनसत्तावीसी और चिन्तामणि-जयमाल तथा सीमधरस्तवन और उपलब्ध हुए हैं जो हिन्दी की अच्छी रचनायें है।

२३. थानसिंह

थानसिंह सागानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा ठोलिया इनका गोत्र था। सुबुद्धि प्रकाश की ग्रन्थ प्रशास्ति में इन्होंने आमेर, सागानेर तथा जयपुर नगर का वर्णन लिखा है। जब इनके माता पिता नगर में अशान्ति के कारण करौली चले गये थे तब भी ये सांगानेर छोडकर नहीं जा सके और इन्होंने वहीं रहते हुये रचनायें लिखी थी। कवि की २ रचनायें प्राप्त होती हैं—रत्नकरडश्रावकाचार भाषा तथा सुबुद्धि प्रकाश। प्रथम रचना को इन्होंने सं. १८२१ मे तथा दूसरी को सं १८४७ मे समाप्त किया था। सुबुद्धि प्रकाश का दूसरा नाम थानविलास भी है इसमे कवि की छोटी २ रचनाओं का सग्रह है। दोनों ही रचनाओं की भाषा गद्य वर्णन शैली साधारणतः अच्छी है। इनकी भाषा पर राजस्थानी का प्रभाव है।

२४. मुनि देवचन्द्र

मुनि देवचन्द्र युगप्रधान जिनचन्द्र के शिष्य थे। इन्होंने आगमसार की हिन्दी गद्य टीका संवत १७७६ मे मारोठ गाव मे समाप्त की थी। आगमसार ज्ञानामृत एवं धर्मामृत का सागर है तथा तात्त्विक चर्चाओं से भरपूर है। रचना हिन्दी गद्य मे है जिस पर मारवाडी मिश्रित जयपुरी भाषा का प्रभाव है।

२५. देवाब्रह्म

देवाब्रह्म हिन्दी के अच्छे कवि थे। इनके सैकडों पद मिलते हैं जो विभिन्न राग रागनियों मे लिखे हुये है। सासबहू का झगडा आदि जो अन्य रचनाये है वे भी अधिकाशत पद रूप मे ही लिखी हुई है। इन्होंने हिन्दी साहित्य की ठोस सेवा की थी। कवि सभवत जयपुर के ही थे तथा अनुमानत १८ वीं शताब्दी के थे।

२६. बाबा दुलीचन्द

जयपुर के २० वीं शताब्दी के साहित्य सेवियों मे बाबा दुलीचन्द का नाम विशेषत' उल्लेखनीय है। ये मूलत जयपुर निवासी नही थे किन्तु पूना (सितारा) से आकर यहां रहने लगे थे। इनके पिता का नाम मानकचन्दजी था। आते समय अपने साथ सैंकडों हस्तलिखित ग्रन्थ भी साथ लाये थे, जो आजकल जयपुर के बडे मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे संग्रहीत हैं तथा वह संग्रहालय भी बाबा दुलीचन्द भण्डार के नाम से प्रसिद्ध है। इस भण्डार में ८०६-६०० हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। जो सभी बाबाजी द्वारा संग्रहीत है।

बाबाजी बडे साहित्यिक थे। दिन रात साहित्य सेवा में व्यतीत करते थे। ग्रन्थों की प्रतिलिपियां करना, नवीन ग्रन्थों का निर्माण तथा पुराने ग्रन्थों को व्यवस्थित रुप से रखना ही आपके प्रतिदिन के कार्य थे। बडे मन्दिर के भण्डार में तथा स्वयं बाबाजी के भण्डार मे इनके हाथ से लिखी हुई कितनी ही प्रतियां मिलती है। इन्होंने १५ से अधिक ग्रन्थों की रचना की थी। जिनमें उपदेशरत्नमाला भाषा, जैनागारप्रक्रिया, ज्ञानप्रकाशविलास, जैनयात्रादर्पण, धर्मपरीक्षा भाषा आदि उल्लेखनीय हैं। इन्होंने भारत के सभी तर्थों की यात्रा की थी और उसीके अनुभव के आधार पर इन्होंने जैनयात्रादर्पण लिखा था। मन्दिरनिर्माण विधि नामक रचना से पता चलता है कि ये शिल्पशास्त्र के भी ज्ञाता थे। इन सबके अतिरिक्त इन्होंने भारत के कितने ही स्थानों के शास्त्र भण्डारों को भी देखा था और उसीके आधार पर सस्कृत और हिन्दी भाषा के ग्रन्थों के ग्रन्थकार विवरण लिखा था जिसमे किस विद्वान् ने कितने ग्रन्थ लिखे थे तथा वे किस किस भण्डार मे मिलते हैं दिया हुआ है। अपने ढग की यह अनूठी पुस्तक है। इनकी मृत्यु ता० ४ अगस्त सन् १९२८ में आगरे में हुई थी।

२६. नन्द

ये अग्रवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे। गोयल इनका गोत्र था। पिता का नाम भैरू तथा माता का नाम चदा था। ये गोसना गाव के निवासी थे जो संभवत' आगरा के समीप ही था। कवि की अभी तक एक रचना यशोधर चरित्र चौपई ही उपलब्ध हुई है जो सवत् १६७० मे समाप्त हुई थी। इसमे ५९८ पद्य हैं। रचना साधरणत. अच्छी है। तथा अभी तक अप्रकाशित है।

२७. नागरीदास

सभवतः ये नागरीदास वे ही हैं जो कृष्णगढ नरेश महाराज सांवतसिंह जी के पुत्र थे। इनका जन्म सवत् १७५६ मे हुआ था। इनका कविता काल स० १७८० से १८१९ तक माना जाता है। इनकी छोटी वडी सब रचना मिलाकर ७३ रचनायें प्रकाश मे आ चुकी हैं। वैनविलास एवं गुप्तरसप्रकाश नामक अप्राप्य रचनाओं मे से वैनविलास जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई हैं। इसमे ३० पद्य है जिनमें कु डलिया दोहे आदि हैं।

२८. नाथूलाल दोशी

नाथूलाल दोशी दुलीचन्द दोशी के पौत्र एव शिवचन्द के पुत्र थे। इनके ५० सदासुखजी काशलीवाल धर्म गुरू थे तथा दीवान अमरचन्द परम सहायक एव कृपावान थे। दोशी जी विद्वान् थे तथा ग्रंथ चर्चा मे अधिक रस लिया करते थे। इन्होंने हरचन्द गगवाल की प्रेरणा से सवत् १९१८ में सुकुमालचरित्र की भाषा समाप्त की थी। रचना हिन्दी गद्य मे मे है जिस पर ढु ढारी भापा का प्रभाव है।

२६. नाथूराम

लमेचू जाति में उत्पन्न होने वाले नाथूराम हिन्दी भापा के अच्छे विद्वान् थे। ये संभवत. १६ वीं शताब्दी के थे। इनके पिता का नाम दीपचद था। इन्होंने जम्बूस्वामीचरित का हिन्दी गद्यानुवाद लिखा है। रचना साधारणत अच्छी है।

३०. निरमलदास

श्रावक निरमलदास ने पंचाख्यान नामक ग्रन्थ की रचना की थी। यह पचतन्त्र का हिन्दी पद्यानुवाद है। सभवत यह रचना १७ वीं शताब्दी के प्रारम्भ मे लिखी गयी थी क्योंकि इसकी एक प्रति सवत् १७५४ मे लिखी हुई जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। रचना सरल हिन्दी मे है तथा साधारण पाठकों के लिये अच्छी है।

३१. पद्मनाभ

पद्मनाभ १५-१६ वीं शताब्दी के कवि थे। ये हिन्दी एव सस्कृत के प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे इसीलिये सघपति डूंगर ने इनसे बावनी लिखने का अनुरोध किया था और उसी अनुरोध से इन्होंने संवत १५४३ मे बावनी की रचना की थी। इसका दूसरा नाम डूगर की बावनी भी है। बावनी में ५४ सवैय्या हैं। भापा राजस्थानी है। इसकी एक प्रति अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध हुई है लेकिन लिखावट विकृत होने से सुपाठ्य नहीं है। बावनी अभी तक अप्रकाशित है।

३२. पन्नालाल चौधरी

जयपुर मे होने वाले १६-२० वीं शताब्दी के साहित्यकारों मे पन्नालाल चौधरी का नाम उल्लेखनीय है। ये संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। महाराजा रामसिंह के मन्त्री जीवनसिंह के ये गृह मन्त्री थे। इनके गुरु सदासुखजी काशलीवाल थे जो अपने समय के बहुत बडे विद्वान थे। यही कारण है कि साहित्य सेवा इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य हो गया था। इन्होंने अपने जीवन में ३० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की थी। इनमे से योगसार भापा, सद्भापितावली भापा, पाण्डवपुराण भापा, जम्बूस्वामी चरित्र भापा, उत्तरपुराण भापा, भविष्यदत्तचरित्र भापा उल्लेखनीय है। सद्भापितावलि भापा आपका सर्व प्रथम ग्रन्थ है जिसे चौधरीजी ने सवत् १६१० मे समाप्त किया था। ग्रथ निर्माण के अतिरिक्त इन्होंने बहुत से ग्रथों की प्रतिलिपिया भी की थी जो आज भी जयपुर के बहुत से भण्डारों में उपलब्ध होती है।

३३. पुण्यकीर्त्ति

ये खरतरगच्छ के आचार्य एव युगप्रधान जिनचद्रसूरि के शिष्य थे। तथा ये सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। इन्होंने पुण्यसार कथा को सवत् १७६६ मे समाप्त किया था। रचना साधारणत अच्छी है।

३४. बनारसीदास

कविवर बनारसीदास का स्थान जैन हिन्दी साहित्य मे सर्वोपरि है। इनके द्वारा रचे हुये समयसार नाटक, बनारसीविलास, अर्द्धकथानक एव नाममाला तो पहिले ही प्रसिद्ध हैं। अभी इनकी एक और रचना 'मांझा' जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में मिली है। रचना आध्यात्मिक रस से ओत प्रोत है। इसमें १३ पद्य है।

३५. वंशीधर

इन्होंने सवत् १७६५ मे 'दस्तूरमालिका' नामक हिन्दी ग्रंथ रचना लिखी थी। दस्तूरमालिका गणित शास्त्र से सम्बन्धित रचना है जिसमें वस्तुओं के खरीदने की रस्म रिवाज एव उनके गुरू दिये हुये हैं। रचना खडी बोली मे है तथा अपने ढग की अकेली ही रचना है। इसमें १४३ पद्य है। कवि सभवत वे ही वशीधर है जो अहमदाबाद के रहने वाले थे तथा जिन्होंने संवत १७८२ मे उदयपुर के महाराणा जगतसिंह के नाम पर अलंकार रत्नाकर ग्रंथ बनाया था[१]।

३६ मनराम

१८ वीं शताब्दी के जैन हिन्दी विद्वानों मे मनराम एक अच्छे विद्वान् हो गये हैं। यद्यपि रचनाओं के आधार पर इनके सम्बन्ध मे विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है फिर भी इनकी वर्णन शैली से ज्ञात होता है कि मनराम का हिन्दी भाषा पर अच्छा अधिकार था। अब तक अक्षरमाला, धर्मसहेली, मनरामविलास, बत्तीसी, गुणाक्षरमाला आदि इनकी मुख्य रचनायें हैं। साहित्यिक दृष्टि से ये सभी रचनायें उत्तम हैं।

३७. मन्नासाह

मन्नासाह हिन्दी के अच्छी कवि थे। इनकी लिखी हुई मान बावनी एवं लघु बावनी ये दो रचनायें अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे मिली हैं। रचना के आधार पर यह सरलता से कहा जा सकता है कि मन्नासाह हिन्दी के अच्छे कवि थे। मान बावनी हिन्दी की उच्च रचना है जिसमें सुभाषित रचना की तरह कितने ही विषयों पर थोडे थोड़े पद्य लिखे हैं। मन्ना साह सभवत १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे।

३८. मल्ल कवि

प्रबोधचन्द्रोदय नाटक के रचयिता मल्लकवि १६ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इन्होंने कृष्णमिश्र द्वारा रचित सस्कृत के प्रबोधचन्द्रोदय का हिन्दी भाषा में पद्यानुवाद संवत १६०१ मे किया था। रचना

---

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास—पृष्ठ २८)

सुललित भाषा मे लिखी हुई है। तथा उत्तम संवादों से भरपूर है। नाटक में काम, क्रोध मोह आदि की पराजय करवा कर विवेक आदि गुणों की विजय करवायी गयी है।

३९. मेघराज

मुनि मेघराज द्वारा लिखित 'संयमप्रवहण गीत' एक सुन्दर रचना है। मुनिजी ने इसे संवत १६६१ मे समाप्त की थी। इसमे मुख्यत 'राजचंदसूरि' के साधु जीवन पर प्रकाश डाला गाया है किन्तु राजचन्दसूरि के पूर्व आचार्यो—सोमरत्नसूरि, पासचन्दसूरि, तथा समरचन्दसूरि के भी माता पिता का नामोल्लेख, आचार्य बनने का समय एवं अन्य प्रकार से उनका वर्णन किया गया है। रचना वास्तव में ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर लिखी गयी है। वर्णन शैली काफी अच्छी है तथा कहीं कहीं अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

४०. रघुनाथ

इनकी अब तक ४ रचनायें उपलब्ध हो चुकी है। रघुनाथ हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा जिनकी छन्द शास्त्र, रस एव अलकार प्रयोग मे अच्छी गति थी। इनका गणभेद छन्द शास्त्र की रचना है। नित्यविहार शृंगार रस पर आश्रित है जिसमे राधा कृष्ण का वर्णन है। प्रसंगसार एवं ज्ञानसार सुभाषित, उपदेशात्मक एव भक्तिरसात्मक है। ज्ञानसार को इन्होंने संवत १७४२ मे समाप्त किया था इससे पता चलता है कि कवि १७ वीं शताब्दी मे पैदा हुये थे। कवि राजस्थानी विद्वान् थे लेकिन राजस्थान के किस प्रदेश को सुशोभित करते थे इसके सम्बन्ध मे परिचय देने मे इनकी रचनायें मौन है। इनकी सभी रचनायें शुद्ध हिन्दी मे लिखी हुई है। ये जैनेतर विद्वान् थे।

४१. रूपचन्द

कविवर रूपचन्द १७ वीं शताब्दी के साहित्यिकों मे उल्लेखनीय कवि है। ये आध्यात्मिक रस के कवि थे इसीलिये इनकी अधिकांश रचनायें आध्यात्मिक रस पर ही आधारित हैं। इनकी वर्णन शैली सजीव एव आकर्षक है। पच मंगल, परमार्थदोहाशतक, परमार्थगीत, गीतपरमार्थी, नेमिनाथरासो आदि कितनी ही रचनायें तो इनकी पहिले ही उपलब्ध हो चुकी हैं तथा प्रकाश मे आ चुकी हैं किन्तु अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में अध्यात्म सवैय्या नामक एक रचना और प्राप्त हुई है। रचना आध्यात्मिक रस से ओतप्रोत है तथा बहुत ही सुन्दर रीति से लिखी हुई है। भाषा की दृष्टि से भी रचना उत्तम है। इन रचनाओं के अतिरिक्त कवि के कितने पद भी मिलते है वे भी सभी अच्छे हैं।

४२. लच्छीराम

लच्छीराम संवत् १८ वीं शताब्दी के हिन्दी कवि थे। इनका एक "करुणाभरणनाटक" अभी उलब्ध हुआ है। नाटक मे ६ अक है जिनमे राधा अवस्था वर्णन, व्रजवासी अवस्था वर्णन सत्यभामा

ईर्षा वर्णन, बलदाऊ मिलाप वर्णन आदि दिये हुये हैं। नाटक की भाषा साधारणत: अच्छी है। नाटककार जैनेतर विद्वान थे।

४३. भट्टारक शुभचन्द्र

भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वीं शताब्दी के महान् साहित्य सेवी थे। भट्टारक सकलकीर्त्ति की परम्परा में गुरु सकलकीर्त्ति के समान इन्होंने भी संस्कृत भाषा में कितने ही ग्रन्थों की रचना की थी जिनकी सख्या ४० से भी अधिक है। पट्भाषाचक्रवर्त्ति, त्रिविधविद्याधर आदि उपाधियों से भी आप विभूषित थे।

संस्कृत भाषा के ग्रन्थों के अतिरिक्त आपने हिन्दी में भी कुछ रचनायें लिखी थीं उनमें से २ रचनायें तो अभी प्रकाश में आयी हैं। इनमें से एक चतुर्विंशतिस्तुति तथा दूसरा तत्त्वसारदोहा है। तत्त्वसार दोहा में तत्त्ववर्णन है। इसकी भाषा गुजराती मिश्रित राजस्थानी है। इसमें ६१ पद्य हैं।

४४. सहजकीर्त्ति

सहजकीति सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये १७ वीं शताब्दी के कवि थे। इनकी एक रचना प्राति छत्तीसी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में ६७ वें गुटके मे संग्रहीत है। यह सवत् १६८८ मे समाप्त हुई थी। रचना मे ३६ पद्य हैं जिसमे प्रातःकाल सबसे पहले भगवान का स्मरण करने के लिये कहा गया है। रचना साधारण है।

४५. सुखदेव

हिन्दी भाषा में अर्थशास्त्र से सम्बन्धित रचनाये वहुत कम हैं। अभी कुछ समय पूर्व जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर में सुखदेव द्वारा निर्मित वणिकप्रिया की एक हस्तलिखित प्रति उपलब्ध हुई है। वणिकप्रिया का मुख्य विषय व्यापार से सम्बन्धित है।

सुखदेव गोलापूरव जाति के थे। उनके पिता का नाम विहारीदास था। रचना में ३०१ पद्य हैं जिनमे दोहा और चौपई प्रमुख हैं। कवि ने इसे सवत् १७१७ में लिखी थी। रचना की भाषा साधारणतः अच्छी है।

४६. सधारु कवि

अब तक उपलब्ध जैन हिन्दी साहित्य मे १४ वीं शताब्दी मे होने वाले कवियों में कवि सधारु का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनकी यद्यपि एक ही रचना उपलब्ध हुई है लेकिन वही इनकी काव्य शक्ति को प्रकट करने में पर्याप्त है। ये अग्रवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे जो अग्रोह नगर के नाम से प्रसिद्ध हुई थी। इनके पिता का नाम शाह महाराज एव माता का नाम गुणवती था। कवि ने इस रचना को एरछ नगर मे समाप्त की थी जो कानपुर[१] झांसी रेल्वे लाइन पर है।

१ जैन सन्देश भाग २१ सख्या १२

कवि की रचना का नाम प्रद्युम्न चरित है जो सवत् १४११ में समाप्त हुई थी। इसमें ६८२ पद्य हैं किन्तु कामा उज्जैन आदि स्थानों में प्राप्त प्रति मे ६८२ से अधिक पद्य हैं तथा जो भाव भाषा, अलकार आदि सभी दृष्टियों से उत्तम है। कविने प्रद्युम्न का चरित्र वडे ही सुन्दर ढंग से अंकित किया है। रचना अभी तक अप्रकाशित है तथा शीघ्र ही प्रकाश में आने वालीहै।

४७. सुमतिकीर्त्ति

सुमतिकीर्ति भट्टारक सकलकीर्त्ति की परम्परा में होने वाले भट्टारक ज्ञानभूषण के शिष्य थे तथा इनके साथ रह कर साहित्य रचना किया करते थे। कर्मकाण्ड की संस्कृत टीका ज्ञानभूषण तथा सुमतिकीर्ति दोनों ने मिल कर वनायी थी। भट्टारक ज्ञानभूषण ने भी जिस तरह कितने ही ग्रन्थों की रचना की थी उसी प्रकार इन्होंने भी कितने ही रचनायें की हैं। त्रिलोकसार चौपई को इन्होंने सवत १६२७ मे समाप्त किया था। इसमे तीनलोकों पर चर्चा की गयी है। इस रचना के अतिरिक्त इनकी कुछ स्तुतिया अथवा पद भी मिलते हैं।

४८. स्वरूपचन्द विलाला

प० स्वरुपचन्द जी जयपुर निवासी थे। ये खण्डेलवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे तथा विलाला इनका गोत्र था। पठन पाठन एवं स्वाध्याय ही इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य था। विलाला जी ने कितनी ही पूजाओं की रचना की थी जो आज भी वडे चाव से नित्य मन्दिरों मे पढी जाती है। पूजाओं के अतिरिक्त इन्होंने मदनपराजय की भाषा टीका भी लिखी थी जो संवत् १६१८ में समाप्त हुई थी। इनकी रचनाओं के नाम मदनपराजय भाषा, चौसठऋद्धिपूजा, जिनसहस्त्रनाम पूजा तथा निर्वाणक्षेत्र पूजा आदि हैं।

४९. हरिकृष्ण पांडे

ये १८ वीं शताब्दी के कवि थे। इन्होंने अपने को विनयसागर का शिष्य लिखा है। जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे इनके द्वारा रचित चतुर्दशी-कथा प्राप्त हुई है जो सवत् १७६६ की रचना है। कथा में २५ पद्य हैं। भाषा एवं दृष्टि से रचना साधारण है।

५०. हर्षकीर्त्ति

हर्षकीर्त्ति हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी में छोटी छोटी रचनायें लिखी हैं जो सभी उत्तम हैं। भाव, भाषा एवं वर्णन शैली की दृष्टि से कवि की रचनायें प्रथम श्रेणी की हैं। चतुर्गति वेलि को इन्होंने संवत् १६८३ मे समाप्त किया था जिससे पता चलता है कि कवि १७ वीं शताब्दी के थे तथा कविवर वनारसीदासजी के समकालीन थे। चतुर्गति वेलि के अतिरिक्त नेमिनाथ-

राजुल गीत, नेमीश्वरगीत, मोरडा, कर्महिंडोलना पञ्चमगतिवेलि आदि अन्य रचनायें भी मिलती हैं। सभी रचनायें आध्यात्मिक है। कवि द्वारा लिखे हुये कितने ही पद भी हैं। जो अभी तक प्रकाश मे नहीं आये हैं।

५१. हीरा कवि

ये बूंदी (राजस्थान) के रहने वाले थे। इन्होंने सवत् १८४८ में 'नेमिनाथ व्याहलो' नामक रचना को समाप्त किया था। व्याहलों में नेमिनाथ के विवाह के अवसर पर होने वाली घटनाओं का वर्णन किया गया है। रचना साधारणत अच्छी है तथा इस पर हाडौती भाषा का प्रभाव झलकता है।

५२. पांडे हेमराज

प्राचीन हिन्दी गद्य लेखकों में हेमराज का नाम उल्लेखनीय है। इनका समय सत्रहवीं शताब्दी था तथा ये पांडे रूपचंद के शिष्य थे। इन्होंने प्राकृत एवं संस्कृत भाषा के ग्रन्थों का हिन्दी गद्य में अनुवाद करके हिन्दी के प्रचार मे महत्त्वपूर्ण योग दिया था। इनकी अब तक १२ रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं जिनमे नयचक्रभाषा, प्रवचनसारभाषा, कर्मकाण्डभाषा, पञ्चास्तिकायभाषा, परमात्मप्रकाश भाषा आदि प्रमुख हैं। प्रवचनसार को इन्होंने १७०९ में तथा नयचक्रभाषा को १७२४ में समाप्त किया था। अभी तीन रचनायें और मिली हैं जिनके नाम दोहाशतक, जखडी तथा गीत हैं। रचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि कवि का हिन्दी गद्य एव पद्य दोनों में ही एकसा अधिकार था। भाव एवं भाषा की दृष्टि से इनकी सभी रचनायें अच्छी है। दोहा शतक जखडी एवं हिन्दी पद अभी तक अप्रकाशित हैं।

उक्त विद्वानों मे से २७, ३५, ४०, ४२ तथा ४५ संख्या वाले विद्वान् जैनेतर विद्वान् हैं। इनके अतिरिक्त ५, ६, २४, ३०, ३३ एवं ३६ सख्या वाले श्वेताम्बर जैन एवं शेष सभी दिगम्बर जैन विद्वान् हैं। इनमें से बहुत से विद्वानों का परिचय तो अन्यत्र भी मिलता है इसलिये उनका अधिक परिचय नहीं दिया गया। किन्तु अजयराज, अमरपाल, उदैराम, केशरीसिंह, गोपालदास, चपाराम भांवसा ब्रह्मज्ञानसागर, थानसिंह, बाबा दुलीचन्द, नन्द, नाथूलाल दोशी, पद्मनाभ, पन्नालाल चौधरी, मन्नराम, रघुनाथ आदि कुछ ऐसे विद्वान् हैं जिनका परिचय हमें अन्य किसी पुस्तक मे देखने को नहीं मिला। इन कवियों का परिचय भी अधिक न मिलने के कारण उसे हम विस्तृत रूप से नहीं दे सके।

ग्रन्थ सूची के अन्त मे ४ परिशिष्ट हैं। इनमें से ग्रन्थ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्ति के सम्बन्ध मे तो हम ऊपर कह चुके हैं। ग्र थानुक्रमणिका मे ग्रन्थ सूची में आये हुये अकारादि क्रम से सभी ग्रन्थों के नाम दे दिये गये हैं। इससे सूची में कौनसा ग्रन्थ किस पृष्ठ पर है यह ढूंढने में सुविधा रहेगी। इस परिशिष्ट के अनुसार ग्रन्थ सूची में १७८५ ग्रन्थों का विवरण दिया गया है। ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार परिशिष्ट को भी हमने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एव हिन्दी भाषाओं मे विभक्त कर दिया है जिससे ग्रन्थ सूची में किसी एक विद्वान् के एक भाषा के कितने ग्रन्थों का उल्लेख आया है सरलता से जाना जा

सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची मे सस्कृत भाषा के १७३, प्राकृत के १४, अपभ्रंश के १६ तथा हिन्दी के २६२ विद्वानों के ग्रन्थो का परिचय मिलता है तथा इससे भाषा सम्बन्धी इतिहास लेखन मे अधिक सहायता मिल सकती है।

ग्रन्थ सूची को उपयोगी बनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है तथा यही प्रयास रहा है कि ग्रन्थ एव ग्रन्थ कर्त्ता आदि के नामो मे कोई अशुद्धि न रहे किन्तु फिर भी यदि कहीं कोई त्रुटि रह गयी हो तो विद्वान पाठक हमे सूचित करने का कष्ट करें जिससे आगे प्रकाशित होने वाले सस्करणों मे उसका परिमार्जन किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण—

सर्व प्रथम हम क्षेत्र कमेटी के सदस्यों एव विशेषत मन्त्री महोदय को धन्यवाद देते हैं जो प्राचीन साहित्य के उद्धार जैसे पवित्र कार्य को क्षेत्र की ओर से करवा रहे हैं तथा भविष्य मे इस कार्य में और भी अधिक व्यय किया जावेगा ऐसी हमे आशा है। इसके अतिरिक्त राजस्थान के प्रमुख जैन साहित्य सेवी श्री अगरचन्दजी नाहटा एव वीर सेवा मन्दिर देहली के प्रमुख विद्वान् प० परमानन्दजी शास्त्री के हम हृदय से आभारी हैं जिन्होंने सूची के अधिकाश भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है तथा समय समय पर अपनी शुभ सम्मतियों से सूचित करते रहते हैं। श्रद्धेय गुरुवर्य्य प० चैनसुखदासजी सा० न्यायतीर्थ के प्रति भी हम कृतज्ञाजलिया अर्पित करते हैं जो हमे इस पुनीत कार्य मे समय समय पर प्रेरणा देते रहते हैं और जिनकी प्रेरणा मात्र से ही जयपुर मे साहित्य प्रकाशन का थोडा बहुत कार्य हो रहा है। बधीचन्दजी के मन्दिर के प्रबन्धक बाबू सरदारमलजी आबूजी वाले तथा ठोलियों के मन्दिर के प्रबन्धक बाबू नरेन्द्र मोहनजी डडिया तथा प० सनत्कुमारजी बिलाला को भी हार्दिक धन्यवाद है जिन्होंने अपने यहाँ के शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूची बनाने की पूरी सुविधा प्रदान की है। अन्त मे हमारे नवीन सहयोगी बाबू सुगनचन्दजी को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने इस ग्रन्थ सूची के कार्य मे हमारा पूरा हाथ बटाया है।

कस्तूरचन्द कासलीवाल
अनूपचन्द जैन

दि० २५–७–५७

श्री महावीराय नमः

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थसूची

श्री दि० जैन मन्दिर बधीचन्दजी (जयपुर) के

ग्रन्थ

विषय—सिद्धान्त एवं चर्चा

अन्तगढदशाओ वृत्ति (अन्तकृद्दशासूत्रवृत्ति)—अभयदेवसूरि पत्र संख्या-७। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचनाकाल ×। लेखनकाल ×। पूर्ण। वेष्टन नं० २६०।

विशेष—अन्तकृत्दशसूत्र श्वे० जैन आगम का ८ वां अंग है।

२. आश्रव त्रिभगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र संख्या-१२। साइज-११¾×५¾ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचनाकाल ×। लेखनकाल-सं० १६०६, द्वितीय भादवा सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० ६७६।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३. इकवीस ठाणा चर्चा—पत्र संख्या-६। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-चर्चा। रचनाकाल ×। लेखनकाल संवत् १८१३, फागुण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० १५४।

विशेष—पं० किशनदास ने प्रतिलिपि की थी।

४. इक्कीस गिणती का स्वरूप—पत्र संख्या-१३। साइज-८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचनाकाल ×। लेखनकाल-सं० १८२६। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८६।

विशेष—संख्यात, असंख्यात और अनन्त इनके २१ भेदों का वर्णन किया गया है।

५ एक सौ गुणहत्तर जीव पाठ—लक्ष्मणदास। पत्र संख्या-७१। साइज-११×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चर्चा। रचनाकाल सं० १८८४ माघ सुदी ५। लेखनकाल ×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६८।

विशेष-प्रारम्भ—अथ लिछमणदास कृत पाठ लिख्यते। अथ एक सौ गुणंतर जीवां की संख्या पाठ लिख्यंते।

दोहा—वृषभ आदि चौबीस कौं नमौं नाम उरधार ।
कछु इक संख्या कहत हूं उत्तम नर की सार ॥१॥
प्रथमहि जिन चौबीस के कहौं नाम सुखदाय ।
कोटि जनम के पाप ते छणक एक में जाय ॥२॥

छंद—प्रथम वृषभ जिन देव, दूजौ अजित प्रमानौ ।
तीजौ संभव नाथ अभिनंदन चउ जानौ ॥३॥

अन्तिम—इनका कथन वर्गेपर्ते पूरव नगरी आदि ।
ग्रंथ माहि तें जानयौ जथा जोग अनवाद ॥६६॥
पाठ वदन के कारणै कियौ नाहि मै मिंत ।
नाम मात्र अनुराग वसि धारि कियौ हरि चिंत ॥७०॥

छन्द सुन्दरी—जैनमत कै ग्रंथ लखाय कै । कहत हौं ये पाठ वनाय कै ।
नाम ए चित मैं सु धरै नरा । होय मिथ्या जाल सबै परा ॥७१॥
मूल चूक जु होय सुधारयौ । हांसि पंडित नाहि न कारयौ ।
करि छिमा मो गुण गहि लीजियो । राम कहै किरप तुम कीजियो ॥७२॥

दोहा—ठारासै चौरासिया वार सनीश्चर वार, पोस कृष्ण तिथ पंचमी कियो पाठ सुभ चार ॥७३॥

"इति एक सौ गुणांतर जीव पाठ संपूर्ण"॥१॥

निम्न पाठ और हैं:—

नाम	पत्र संख्या	पद्य संख्या	विशेष
(१) तीस चौबीसी पाठ	६ से २४ तक	२२७	
(२) गणधर मुख्य पाठ	२४ से २५	१२	
(३) दसकरण पाठ	२५ से ३४	१२४	दस बंध भेद वर्णन रामचन्द्र कृत
(४) जयचन्द्र पचीसी	३४ से ३६	२६	
(५) आगति जागति पाठ	३६ से ४१	७५	सं० १८८४ मंगसिर वदी ११
(६) षट कारिक पाठ	४१ से ४२	१२	
(७) शिष्य शिक्षा बीसी पाठ	४२ से ४३	२७	
(८) सात प्रकार वनस्पति उत्पत्ति पाठ	४३ से ४४	१४	
(९) जीवमोक्ष बत्तीसी पाठ	४४ से ४६	३३	

नाम	पत्र संख्या	पद्य संख्या	विशेष
(१०) मोह उत्कृष्टथित पचीसी	४६ से ४८	२६	
(११) प्रथम शुक्ल ध्यान पचीसी	४८ से ५०		
(१२) जतर चोवनो	५० से ५१	८	
(१३) बधवोल	५१	५	
(१४) इकबीस गियाती को पाठ	५१ से ६०	६३	
(१५) सम्यक चतुरदसी	६० से ६१	१४	
(१६) इक अक्षर आदि बत्तीसी	६१ से ६३	३३	
(१७) बावन छंद रूपदीप	६३ से ७१	५५	१८८४ माघ सुदी ५ मंगलवार

६. **कर्मप्रकृति—आचार्य नेमिचन्द्र** । पत्र संख्या–११ । साइज–११×४½ इञ्च भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचनाकाल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ ।

विशेष—मूल मात्र हैं तथा गाथाओं की संख्या १६२ हैं ।

७. **प्रति नं० २**—पत्र संख्या–१६ । साइज–१०×५ इञ्च । लेखनकाल सं०–१८५६ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७ ।

विशेष—**चंपाराम** ने प्रतिलिपि की थी । इस प्रति में १६४ गाथायें हैं ।

८. **प्रति नं० ३**—पत्र संख्या–१६ । साइज–१२×४½ इञ्च । लेखनकाल × । पूर्ण । वेष्टन नं० १८ ।

विशेष—गाथाओं की संख्या–१६१ है ।

९. **प्रति नं० ४**—पत्र संख्या–३३ । साइज–११×४½ इञ्च । लेखनकाल सं० १६०६ असाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ । इसमें १६१ गाथायें हैं ।

विशेष— संस्कृत में कहीं २ टिप्पण दिया हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सं० १६०६ वर्षे आषाढ मासे शुक्लपक्षे प्रतिपदा तिथौ सोमवासरे श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये आचार्य भुवनकीर्तिदेवा तत् शिष्यणी आ० मुक्तिश्री तत् शिष्या आ० कीर्तिश्री पठनार्थं । कल्याणमस्तु । अमरसरमध्ये राज्यश्री सूजाजी ।

१०. **प्रति नं० ५**—पत्र संख्या–४४ । साइज–५½×४½ इंच । लेखनकाल सं०–१८११ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३ ।

विशेष—**हरचन्द** ने प्रतिलिपि की थी । ग्रंथ गुटका साइज में है । १६१ गाथायें हैं ।

११. **प्रति नं० ६**—पत्र संख्या–२१ । साइज–१०½×४½ इञ्च । लेखनकाल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २२ ।

विशेष—प्रति अशुद्ध है। संस्कृत टीका सहित है। मूल गाथायें नहीं हैं। कर्म प्रकृति का सत्वस्थान भंग सहित गुणस्थान का वर्णन है।

जिनदेव प्रणम्याहं मुनिचन्द्र जगत्प्रभु।
सत्कर्म्मप्रकृतिस्थान संवृणोमि यथागम ॥१॥

णमिऊण वड्ढमाण कणयणिंद देवरायपरिपुज्जं।
पयडीणसत्तठाण ओघे भगे सम चोद्दे ॥१॥

देवराजपरिपूज्य कनकनिभ वर्द्धमानभगवद् अर्हद्भट्टारकं नत्वा कर्मप्रकृतीनां सत्वस्थान भगसहितं गुणस्थानेषु वक्ष्यामीति संबंधः।

१२. प्रति नं० ७—पत्र संख्या-३८। साइज ११-X५ इञ्च। लेखनकाल-१६७६भादवा सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० २१। प्रति सटीक है। अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

विशेष—इति प्राय श्री गोमट्टसारमूलात् टीकाश्च निष्काप्य क्रमेण एकीकृत्य लिखितां श्रीनेमिचन्द्र सैद्धान्तिक विरचित-कर्मप्रकृतिग्रन्थस्य टीका समाप्ता।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १६७६ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां तिथौ संग्रामपुरवास्तव्ये महाराजाधिराजराजश्रीभावसिंह-राज्ये श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवातत्पट्टे भट्टारक शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीचन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री श्री श्री श्री श्री देवेन्द्रकीर्तिजी। तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भौंसा गोत्रे सा० गगा तद्भार्या गौरादे तयो पुत्र सा० घेल्हा तद् भार्या घेलसिरि, तयोः पुत्र पच। प्रथम सा० ताल्हु तद् भार्या ल्होड़ी तयो पुत्रौ द्वौ प्र० सा० वाजू तद् भार्ये द्वे० प्र० बालहदे, द्वि० प्रतापदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र० पुत्र सा० सावल तद् भार्या सहलालदे तयो पुत्र चि० साहीमल, द्वि० पुत्र सा० साकर। साह ताल्हु द्वि पुत्र सा० घढ़ तस्य भार्या गाखदे। एतेषां मध्ये साह वाजू तद् भार्या बालहदे इद शास्त्र रत्नत्रयव्रत-उद्यापनार्थं भट्टारक श्री श्री श्री देवेन्द्र कीर्ति तत् शिष्य आचार्य श्री रामकीर्त्तिये प्रदत्तं।

१३. कर्मप्रकृति विधान—बनारसीदास। पत्र संख्या-१३। साइज-१०½X४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचनाकाल-स० १७००। लेखककाल-१७६०। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६२।

विशेष—यह रचना बनारसीविलास में संगृहीत रचनाओं मे से है।

१४. प्रति नं० २—पत्र संख्या-५१। साइज-६X६½ इञ्च। लेखनकाल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६७।

विशेष—कर्मप्रकृतिविधान, गुटके में है जिसमें निम्न पाठ और हैं—श्रावकों के १७ नियम, सिंदूर प्रकरण-(बनारसीदास) और अनित्य पंचाशिका-(त्रिभुवनचन्द)।

१५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या–१६ । साइज–६½×५ इच । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६८ ।

१६. कर्मप्रकृतियों का व्योरा—(कर्मप्रकृति चर्चा) . ..... । पत्र सख्या–१७ । साइज–१७½×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८३२ ।

विशेष—ग्र'थ बही खाते की साइज में है ।

१७. कर्मस्वरूपवर्णन—अभिनव वादिराज (प० जगन्नाथ) । पत्र सख्या—५० । साइज–१०½×६ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–सं० १७०७ माघ बुदी १२ । लेखन काल–स० १७०७ । अपूर्ण । वेष्टन न० ६८४ ।

विशेष—१० से २३ तक के पत्र नहीं हैं । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ— कर्म्मव्यूहविनिर्मुक्ता, मुक्त्वानत्वा त्रिशुद्धितः ।
ग्रन्थकर्मस्वरूपाख्यो वादिराजेन तन्यते ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

इति निरवद्यविद्यामण्डनमडित पडितमंडलीमडित भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्तिजीकाख्यशिष्यै. कविगमकिवादिवाग्मित्व गुणगणभूषणै. कणादाक्षपादप्रमाकरभट्टशिवसुगतचार्व्वाकसांख्यप्रमुखप्रवादिगणोपन्यस्तदूषणदूषणैस्त्रैविधविद्याधिपै पंडित जगन्नाथैरपराख्ययाभिनववादिराजैर्विरचिते कर्म्मस्वरूपग्रंथे स्थित्यनुभागप्रदेशनिरूपणं नाम द्वितीय उल्लास,

वर्षे तत्त्वनभो श्व भूपरिमिते (१७०७) मासे मधौ सुन्दरे,
तत्पक्षे च सितेतरेहनि तथा नाम्ना द्वितीयाह्वये ।
श्रीसर्वज्ञपदांबुजानति–गलद् ज्ञानावृतिप्राभवा
स्त्रैविद्येश्वरतांगता व्यरचयन् श्रीवादिराजा इम ॥ १ ॥
तावत्केवलिभिःसमः कलिमलैर्मुक्ता कलौ साधव ।
तावज्जैनमत चकास्ति विमल तावच्चधर्मोत्सवः ।
तावत्षोडशभावनामवमृतां स्वर्गापवर्गोक्तयो
यावच्छ्रीपरमागमो विजयते गोमट्टसाराभिध ॥ २ ॥

१८. काल और अन्तर का स्वरूप—. .. .. । पत्र संख्या–१२ । साइज–११×५ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ८७३ ।

रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

अथ काल अर अन्तर का स्वरूप निरुपण करिए है ॥ छ ॥ तिनि विषें आठ सांतर मार्गणा है तिनका स्वरूप

संख्या विधान निरूपणैं कें अर्थि गाथा तीन करि कहै है। नाना जीवनि की अपेक्षा विवक्षित गुणस्थान वा मार्गणास्थान नैं छोडि अन्य कोई गुणस्थान वा मार्गणास्थान नैं प्राप्त होइ। बहुरि उस ही विवक्षित गुणस्थान वा मार्गणास्थान को यावत्काल प्राप्त न हो इति सत्काल का नाम अंतर है।

अन्तिम—विवक्षित मार्गणा के भेद का काल विषैं विवक्षित गुणस्थान का अंतराल जेते कालि पाईए ताका वर्णन है। मार्गणा के भेद का पलटना भएं। अथवा मार्गणा के भेद का सद्भाव होतैं विवक्षित गुणस्थान का अंतराल भया था ताकी बहुरि प्राप्ति भए तिस अंतराल का अभाव हो है। ऐसे प्रसग पाइ काल का अर अंतर कथन कीया है सो जानना। ॥ इति सपूर्ण ॥

पोथी ज्ञान बाई की।

१६ **क्षपणासार टीका—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव** । पत्र सख्या—६६ । साइज—१४×६½ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७६ ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र कृत क्षपणासार की यह संस्कृत टीका है। मूल रचना प्राकृत भाषा में है।

२०. **गुणस्थान चर्चा**— । पत्र सख्या—५२ । साइज—१२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६२ ।

विशेष—चौदह गुणस्थानों पर विस्तृत चार्ट (संदृष्टि) हैं।

२१ प्रति न० २—पत्र सख्या—३६ । साइज—१२×७½ इंच । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६३ ।

२२ प्रति न० ३—पत्र संख्या—५१ । साइज—१०½×६ इंच । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६४ ।

२३ **गोमट्टसार—आ० नेमिचन्द्र** । पत्र संख्या—७२६ । साइज—१४×६½ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—× । लेखन काल—× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८६ ।

विशेष—७२६ से आगे पत्र नहीं है। प्रति सस्कृत टीका सहित है।

२४. प्रति न० २—पत्र स०—१६३ से ८४८ । साइज—१२½×५ इंच । लेखन काल—× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७८५ ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

२५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—६५ । साइज—११×५ इंच । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८७ ।

विशेष—जीवकाण्ड मात्र है गाथाओं पर सस्कृत में पर्यायवाची शब्द हैं।

२६. प्रति नं० ४—पत्र सख्या १७२ । साइज–१३×८ इञ्च । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६६२ ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । आगे के पत्र नहीं है ।

२७. प्रति नं० ५—पत्र संख्या–४० । साइज–१०×५½ इञ्च । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६६४ ।

२८. प्रति न० ६—पत्र सख्या–११ । साइज–११×५¼ इञ्च । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६३१ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टव्वा टीका सहित है ।

२६. प्रति नं० ७—पत्र सख्या–२४८ से ५३१ । साइज–२०×७¾ इञ्च । × । लेखन काल–सं० १७६६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८५ ।

विशेष—२४६ से २५३, ३७१ से ४४०, ४८८ से ५२८ तक पत्र नहीं हैं ।

यति नैण सागर ने प्रतिलिपि की थी । स० १७६६ में महाराजा जयसिंह के शासन काल में सवाई जयपुर में जोधराज पाटोदी द्वारा उस निमित्त (बनवाये हुए) ऋषभदेव चैत्यालय में गुलाबचन्द गोदीका ने प्रतिलिपि करवा कर इस ग्रंथ को भेंट किया था । केशववर्णि की कर्णाटक वृत्ति के आधार पर संस्कृत टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—सवत्सरे नव-नारद-मुनिंदुमिते १७६६ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पंचमीतिथौ सवाईजयपुरनाम्नि नगरे महाराजाधिराजसवाईजयसिंहराज्यप्रवर्तमाने पाटोदी गोत्रीय साह जोधराज कारित श्री ऋषभदेव चैत्यालय । श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकजित् श्री जगत्कीर्तिदेवास्तत्पट्टे प्रमाणद्वयावच्छिन्न प्रतिभाधा रक भट्टारकजित् श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा । तत्पट्टधारक कुमतिनिवारक केतुप्रमोदनिवारक भवभय-भजक भट्टारकाधिराजजित् श्री महेन्द्रकीर्ति देवाम्नाये खंडेलवाल वशोत्पन्न भौंवसा गोत्रीयमध्ये गोदीकेति नाम्ना प्रसिद्धा श्रेष्ठीजित श्री लूणकरणाख्यास्तत्पुत्र श्री भगवद्धर्म प्रकटनकरणपर साह जी रूपचन्द जी कस्तत्पुत्रः राद्धांतवित्तरणेत्वमितानादिमिथ्यात्वनिकरेण चिरंजीवजित श्री गुलाब चन्द्रेण इदं गोमट्टसार शास्त्र लिखाप्य भट्टारक जित् श्री महेन्द्र कीर्तिये प्रदत्त ॥

३०, गोमट्टसार भाषा—पं० टोडरमलजी (लब्धिसार क्षपणासार सहित) पत्र संख्या–१०५३ । साइज–१०×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–स० १८१८ माघ सुदी ५ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१२ ।

विशेष—कई प्रतियों का सम्मिश्रण है । बहुत से पत्र स्वयं पं० टोडरमलजी के हाथ के लिखे प्रतीत होते हैं । ग्रंथ का विस्तार ६०,००० श्लोक प्रमाण है ।

३१. प्रति नं० २—पत्र संख्या–११०४ । साइज–१५×७इञ्च । लेखन काल–स०१८६१ पौष बुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७१६ ।

विशेष—सदृष्टि के अलग पत्र हैं। ११८, १३३ तथा २०२ के पत्र नहीं हैं।

३२. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-१०३१। साइज-१२½×½ इंच। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७१८।

३३ प्रति नं० ४—पत्र संख्या-३११। साइज-१३½×८ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८११।

विशेष—केवल कर्मकाण्ड भाषा है।

३४ प्रति नं० ५—पत्र संख्या-२२। साइज-१०×६½इञ्च। लेखन काल-× अपूर्ण। वेष्टन नं० ८७१।

विशेष—जीवकाण्ड की भाषा मात्र है।

३५ गोमट्टसार कर्मकाण्ड टीका—सुमति कीर्ति। पत्र संख्या-४५। साइज-११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धांत। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०।

३६ गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा—पं० हेमराज। पत्र संख्या-३०। साइज-११½×४½ इंच। भाषा-हिंदी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७०६। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६६।

विशेष—पं० सेवा ने सरोजपुर में प्रतिलिपि की थी। ग्रंथ का प्रारम्भ और अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—पणमिय सिरसा णेमिं गुण रयण विहूसणं महावीरं।
सम्मत्तरयणनिलयं पयडि समुक्कित्तणं वोच्छं॥ १॥

अर्थ—अहं नेमिचंद्राचार्य प्रकृती समुत्कीर्तन वक्ष्ये। अहं हूं जु हौ नेमिचंद्र ऐसे नाम आचार्य सो प्रकृतिसमुत्कीर्तन प्रकृति हु कार है समुत्कीर्तन कथन जिस विषै ऐसा जु ग्रंथ कर्मकांड नामा तिसहि वक्ष्ये कहूंगा। किंकृत्वा कहा करि सिरसा नेमिं प्रणम्य सिरकरि श्री नेमिनाथ को नमस्कार करिकै। कैसे है नेमिनाथ गुणरत्न विभूषण—अनंत ज्ञानादिक जु गुण तेई हुवे रत्न तेई है विभूषण आभरण जिनके। बहुरि कैसे हैं महावीर महासुभट हैं कर्म के नासकरण कौं। बहुरि कैसे हैं सम्यक्त रत्न निलय। सम्यक्त रूप जु है रत्न तिसके निलय स्थानक है।

अन्तिम—अरु जिस काल यह जीव पूर्वोक्त प्रत्यनीक आदिक क्रिया विषैं प्रवर्तै, तब जैसी कुछ उत्कृष्ट मध्यम जघन्य शुभाशुभ क्रिया होई, तिस माफिक कर्म हैं का बंध करै स्थिति अनुभाग की विशेषता करि। तिस तै समय समय बंध जु करै सुतौ स्थित अनुभाग की हीनता करि। अरु जु प्रत्यनीक आदिक पूर्वोक्त क्रिया करि करै सुस्थित अनुभाग की विशेषता करि यह सिद्धांत जाणना। इय भाषा टीका पंडित हेमराजेन कृता स्वबुद्ध्यानुसारेण। इति कर्म कांड भाषा टीका सम्पूर्ण। इति सवत्सरे अस्मिन् विक्रमादित्यराजेसप्तदशसत सतषटोत्तर १७०६ अत्र सरोजपुरे सन्निधे पुस्तक लिख्यतं पंडित सेवा स्वपठनार्थं॥

३७ प्रति नं० २—पत्र संख्या-७६। साइज-११×५½ इञ्च। लेखन काल-सं० १८२५ आसोज सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६६।

विशेष—कोटा में प्रतिलिपि हुई थी।

३८. चर्चाशतक—द्यानतराय। पत्र संख्या-५३। साइज-११×८ इश्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-स० १६२४ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन न० ७८३।

विशेष-यह प्रति वधीचन्द साहामिका के शिष्य हरजीमल पानीपत वाले की हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

३६ प्रति नं० २—पत्र सख्या-४७। १४½×११½ इंच। लेखन काल-सं० १६३८ ज्येष्ठ बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन न० ७८४।

विशेष—प्रति बहुत सुन्दर है-हिन्दी टब्बा टीका सहित है। बीच २ में नक्शे आदि भी दिये हुए हैं।

४०. प्रति नं० ३—पत्र सख्या-६३। साईज-१२×५½ इच। लेखन काल-स० १६०६ माघ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन न० ८०८।

विशेष—प्रत्येक पत्र पर ३ पक्तियां हैं।

४१ चर्चासमाधान—भूधरदास जी पत्र संख्या-७६। साइज-१०½×५ इच। भाषा-हिन्दी। विषय—चर्चा। रचना काल-×। लेखन काल स० १८८४। पूर्ण। वेष्टन न० ३६१।

४२. प्रति नं० २—पत्र सख्या-११३। साइज-१०½× ५ इश्च। लेखन काल-स०१८८३। पूर्ण। वेष्टन न० ३६२।

४३. प्रति नं० ३—पत्र सख्या-६३। साइज-११×५½ इच। लेखन काल-सं० १८४८। पूर्ण। वेष्टन-३६३।

४४. चर्चासंग्रह—पत्र सख्या-२७२। साइज-१२×६ इश्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चर्चा। रचना-काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन न० ३५६।

विशेष—गोमट्टसार त्रिलोकसार, क्षपणासार आदि ग्रन्थों के आधार पर धार्मिक चर्चाओं को यहाँ संग्रह किया गया है। चर्चाओं के नाम निम्न प्रकार हैं चर्चा वर्णन, कर्मप्रकृति वर्णन, तीर्थकर वर्णन, मुनि वर्णन, नरक वर्णन, मध्यलोकवर्णन, अन्तरकालवर्णन समोसरमवर्णन श्रुतिज्ञानवर्णन। नरकनिगोदवर्णन। मोक्षसुखवर्णन, अन्तरसमाधिवर्णन, कुदेववर्णन आदि।

४५. चौबीस ठाणा चर्चा—आ० नेमिचन्द्र। पत्र सख्या-५६ से १२७। साइज—१२×६ इश्च। भाषा प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचाना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३२०।

विशेष—सस्कृत में टीका दी हुई है।

४६. प्रति नं० २—पत्र सख्या-१२३। साइज-११½×४½ इश्च। लेखन काल-सं० १७८३। पूर्ण। वेष्टन नं० १६६।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है। टीकाकार आनन्द राम है।

४७. चौबीसठाणा चर्चा भाषा—पत्र संख्या-५० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८८५ माह बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५६ ।

विशेष—भाषाटीका का नाम बाल बोध-चर्चा दिया हुआ है ।

४८. प्रति नं० २—पत्र संख्या-३० । साइज-६×५ इञ्च । लेखन काल-सं० १८२३ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५८ ।

विशेष—खुशालचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

४९. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या-३३ । साइज-१०× ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६१ ।

५०. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या-६ । साइज-६३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५४६ ।

५१ चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या-२८ । साइज-११३/४×५३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४५ ।

विशेष—हिंडोली में प्रतिलिपि हुई थी ।

५२ चौबीसठाणा पीठिका—पत्र संख्या-८ । साइज-१३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२७ ।

५३. चौबीसठाणा पीठिका—पत्र संख्या-४३ । साइज-११३/४×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१६ ।

५४. जीवसमास वर्णन—आ० नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-१४ । साइज-१२×५३/४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३२१ ।

विशेष—गोमट्टसार जीवकांड में से गाथाओं का संग्रह है ।

५५. प्रति नं २— पत्र संख्या-४५ । साइज-११×५ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२० ।

विशेष—गाथाओं पर संस्कृत में अर्थ दिया हुआ है ।

५६ ज्ञानचर्चा—पत्र संख्या-४६ । साइज-६३/४×५३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३५७ ।

विशेष—गोमट्टसार, त्रिलोकसार, क्षपणासार आदि ग्रंथों के अनुसार भिन्न २ चर्चाओं का संग्रह है ।

५७. तत्त्वसार—देवसेन । पत्र संख्या-४ । साइज-१०३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धांत । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७० ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५८. तत्त्वार्थसूत्र—उमास्वामि। पत्र संख्या-२३। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८७३। पूर्ण। वेष्टन न० ५१४।

विशेष—प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र तथा द्रव्य सग्रह की गाथायें दी हुई हैं।

५९. प्रति न० २—पत्र सख्या-३३। साइज-१०½×५इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ५२४।

विशेष—पत्र लाल रग के हैं तथा चारों ओर वेलें हैं।

६०. प्रति नं० ३—पत्र स०-२५। साइज-११×५½ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ५३१।

६१. प्रति न० ४—पत्र संख्या-७। साइज-१०½×७ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ५६८।

६२. प्रति नं० ५—पत्र संख्या-१४। साइज-११½×५½ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५६६।

६३. प्रति नं० ६—पत्र सख्या-७। साइज-१३½×६ इञ्च। लेखन काल-१६३३। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०६।

६४. प्रति नं० ७—पत्र सख्या-३-१६। साइज-१०×४½ इञ्च। लेखन काल-× अपूर्ण। वेष्टन नं० ६६६।

विशेष—एक पत्र में ४ पक्तियाँ हैं।

६५. प्रति नं० ८—पत्र सख्या-७। साइज-१०×४ इन्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १०४१।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

६६ प्रति न० ९—पत्र सख्या- ७२। साइज-७×५½ इच। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ९४८।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र तथा पूजाओं का भी सग्रह है।

६७. प्रति नं० १०—पत्र सख्या-२०। साइज-११½×५½ इच। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ९४२।

विशेष—तीन चौवीसी नाम तथा भक्तामर स्तोत्र भी है।

६८. प्रति न० ११—पत्र संख्या-४६। साइज-१०½×७½ इंच। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ८५३।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

६९. प्रति नं० १२—पत्र सख्या-४७। साइज-१०½×७½ इंच। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ८५१।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित हैं।

७०. प्रति नं० १३—पत्र संख्या-५० । साइज-१०½×७½ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८५० ।

विशेष – हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७१ प्रति नं० १४—पत्र संख्या-१५ । साइज-११×४½ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६० ।

७२. प्रति नं० १५—पत्र संख्या-१५ । साइज-१०×५ इञ्च । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०४ ।

७३ प्रति नं० १६—पत्र संख्या-१३ । साइज-६×४½ इञ्च । लेखन काल-सं० १८१२श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०५ ।

७४. प्रति नं० १७—पत्र संख्या-१० । साइज-६×४½इञ्च । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०६ ।

७५. प्रति नं १८—पत्र संख्या-६ । साइज-११½×६½ इञ्च X । लेखन काल-X । वेष्टन नं० ३०७ ।

विशेष—प्रत्येक पत्र के चारों ओर सुन्दर वेलें हैं ।

७६ प्रति नं० १६—पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । नं० ८८७ । वेष्टन नं० ४ ।

विशेष—सूत्रों पर संक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है । अक्षर मोटे हैं । एक पत्र में तीन पंक्तियाँ हैं ।

७७. प्रति नं० २०—पत्र संख्या-६३ । साइज-१०×५½ इञ्च । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है प्रति प्राचीन है ।

७८. प्रति नं० २१— पत्र संख्या-८६ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-सं० १६४६ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

विशेष—यह प्रति संस्कृत टीका सहित है जिसमें प्रभाचन्द्र कृत लिखा हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है । कहीं कहीं हिन्दी में भी टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—संवत् १६४६ वर्षे शाके १५१४ कार्तिक सुदी १५ गुरुवासरे मालपुरा वास्तव्ये महाराजाधिराज श्री कवर माधोसिंह जी राज्य प्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नयाम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्देव विरचिता । यह ग्रन्थ भीमराज वैद्य ने मनोहर सोंका से पढ़ने के लिये मोल लिया था ।

७६ तत्त्वार्थ सूत्र वृत्ति—पत्र संख्या-२८ । साइज-१०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५८७ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८ ।

विशेष—टीका में मूल सूत्र दिये हुये नहीं हैं । टीका संक्षिप्त है ।

प्रशस्ति--संवत् १५५७ वर्षे वैशाख सुदी ७ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मंडला चार्य रत्नकीर्ति शिष्येण ब्र० रत्नेन लिखापितं ।

८० तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—योगदेव । पत्र सख्या-१११ । साइज-१०×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६३८ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६८ ।

विशेष—भट्टारक प्रभाचन्द्र देव की आम्नाय के अजमेरा गोत्रवाले साह सातू व उनकी भार्या सुहागदे ने यह ग्रन्थ स० १६३८ में लिखवा कर षोडषकारण व्रतोद्यापन में मण्डलाचार्य चन्द्रकीर्ति को भेंट किया था ।

८१. तत्त्वार्थसूत्र—पत्र संख्या-१२३ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना-काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६७ ।

विशेष--सस्कृत तथा हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है तथा दोनों भाषाओं की टीकायें सरल हैं ।

८२ तत्त्वार्थसूत्र भाषा टीका—कनककीर्ति—पत्र सख्या-२७१ । साइज-६×५½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८३६ । वेष्टन नं० ८३४ ।

विशेष—नेण सागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पत्र १७५ से २७१ तक बाद में लिखे हुऐ हैं अथवा दूसरी प्रति के हैं ।

प्रारम्भ-मोक्ष मार्ग्गस्य नेतार भेत्तार कर्म्मभूभृतां । ज्ञातार विश्व तत्त्वानां वंदे तद्गुण लब्धये ॥ १ ॥ टीका-अह उमास्वामी मुनीश्वर मूल ग्रथ कारक । श्री सर्वज्ञ वीतराग वंदे कहतां श्री सर्वज्ञ वीतराग नै नमस्कार करू छूं । किसा इक छै श्री वीतराग सर्वज्ञ देव, मोक्ष (ख) मार्ग्गस्य नेतारं कहतां मोक्षमार्ग का प्रकासका करवा वाला छैं । और किसा इक छै सर्वज्ञ देव कर्म्म भूभृतां भेत्तार कहतां ज्ञानावरणादिक आठ कर्म त्यह रूपि पर्वत त्यांह का भेदिवा वाला छै ।

अन्तिम—कै इक जीव चारण रिधि करि सिध छै । कै इक जीव चारण बिना सिध छै । कै इक जीव घोर तप करि सिघ छै । कै इक जीव अघोर तप करि सिध छै । कै इक जीव उरध सिध छै । कै इक मध्य सिध छै । कै इक जीव अधो सिध छै । इह भांति करि घणा ही भेदा सों सिध हुआ छै । सो सिधांत सु समझि लीज्यो । इति तत्त्वार्थाधि गये मोक्ष शास्त्रे दसमीयां पोसतक लिखत नेण सागर का चीमनराम दोसी सवाई जैपुर में लिख्यों सवत १८४६ में पुरी कियो ।

८३ प्रति न० २—पत्र संख्या-१२२ । साइज ८×४ इच । लेखन काल- × । पूर्ण । वेष्टन न० ८२३ ।

विशेष—श्रुतसागरी टीका के प्रथम अध्याय की हिन्दी टीका हैं ।

८४. प्रति नं० ३—पत्रसख्या-२१६ । साइज-१०×७ इच । लेखन काल-स० १८४० । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३५ ।

विशेष— चैन सागर ने सांभर में लिपि की थी । प्रारम्भ के पत्र नहीं है यद्यपि संख्या १ से ही प्रारम्भ है ।

८५ प्रति नं ४—पत्र सख्या-११२ । साइज-१२×५½ इञ्च । लेखन काल-सं० १७३८ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७३८ ।

विशेष—दूसरे अध्याय से है। वेष्टन न० ७८७ के समान है।

८६ प्रति न० ५—पत्र सख्या-८२। साइज-११½×४½ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७४७। वेष्टन न० ८३४ के समान है।

८७. प्रति न० ६—पत्र संख्या-१३१। साइज-८½×४इञ्च। लेखन काल-वैशाख सुदी ५ सं० १७७६। पूर्ण। वेष्टन न० ८२३।

विशेष—पापडदा में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी। लिखितं ऋषि जत्रीराजेण। लिखापितं श्री संघेन नगर पापडदा मध्ये। दूसरे अध्याय से लेकर १० वें अध्याय तक की टीका है। यह टीका उतनी विस्तृत नहीं है जितनी प्रथम अध्याय की है।

८८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—जयचन्द्र छाबडा। पत्र संख्या-४४०। साइज-१०×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। रचना काल- सं०१८६५ चैत सुदी ५। लेखन काल-सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टन नं० ७३२।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपी की थी।

८६. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र सख्या-३३६। साइज-११×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। रचना काल सं० १६१४ वैशाख सुदी १०। लेखन काल-स० १६३६ कार्तिक सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ७२१।

विशेष—सदासुख जी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह वृहद् टीका है। टीका का नाम 'अर्थ प्रकाशिका' है। ग्रन्थ की रचना सं० १६१२ में प्रारम्भ की गई थी।

६०. तत्त्वार्थ सूत्र भाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र सख्या-१२३। साइज-८×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-सं० १६१० फाल्गुण सुदी १०। लेखन काल-स० १६१६ आषाढ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ७५२।

विशेष—सदासुखजी द्वारा रचित तत्त्वार्थ सूत्र की लघु भाषा वृत्ति है।

६१. प्रति न २—पत्र सख्या-१२७। साइज-११×५ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ७५३।

६२ तत्वार्थ सूत्र टीका भाषा—पत्र संख्या-१ से १००। साइज-१५×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन न० ७८०।

विशेष—१०० से आगेके पत्र नहीं है। प्रारम्भिक पद्य निम्न प्रकार है—

श्रीवृषमादि जिनेश वर, अंत नाम शुभ वीर।
मनवचकायविशुद्ध करि, वंदों परम शरीर ॥ १ ॥

करम धराधर भेदि जिन, मरम चराचर पाय ।
धरम बराबर कर नमू, सुगुरु परापर पाय ॥ २ ॥

९३ तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पत्र सख्या-३१ । साइज-१०½×७½ इश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ७०२ ।

९४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पत्र सख्या-७७ से १७८ । साइज-९×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ८३५ ।

९५. तत्त्वार्थबोध भाषा—बुधजन । पत्र संख्या-७७ । साइज-१०½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-१८७९ कार्तिक सुदी ५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न०७२३ ।

विशेष—२०२९ पद्य हैं । प्रति नवीन एव शुद्ध है रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

अंतिमपाठ— सुवस वसै जयपुर तहाँ, नृप जयसिंह महाराज ।
बुधजन कीनौं ग्रंथ तह निज परहित के काज ॥ २०२७ ॥

संवत् ठारासै विषै अधिक गुण्यासी वेस ।
कातिक सुदि ससि पचमी पूरन ग्रन्थ असेस ॥ २०२८ ॥

मंगल श्री अरहत सिद्ध मंगल दायक सदा ।
मगल साध महत, मंगल जिनवर धर्मवर ॥ २०२९ ॥

९६. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या-१२० । साइज-८×५½ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-स० १७७७ । पूर्ण । वेष्टन न० ३०३ ।

विशेष—तत्त्वार्थ सूत्र की यह टीका मुनि श्री धर्मचन्द्र के शिष्य प्रभाचन्द्र द्वारा विरचित है । मवसूदावाद में भट्टारक श्री दीपकीर्ति के प्रशिष्य एवं लालसागर के शिष्य रामजी ने प्रतिलिपि की थी । १०६ पत्र के आगे नेमिराजुल गृहमासा तथा राजुल पच्चीसी, शारदा स्तोत्र (भ० शुभचन्द्र) सरस्वती स्तोत्र मत्र सहित स्तोत्र और दिया हुआ है ।

९७. तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलकदेव । पत्र सख्या-३ से ११७ । साइज-११×७½ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६९१ ।

९८. प्रति न० २—पत्र संख्या-१ से ५३ । साइज-११×६¾ इच । लेखन काल-X । अपूर्ण वेष्टन न० ९४७ ।

९९. तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकालकार—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र सख्या-५३२ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७९५ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६४ ।

विशेष—ग्रन्थ श्लोक संख्या २००० प्रमाण है।

१००. तत्त्वार्थसार—पत्र संख्या-४। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल। पूर्ण। वेष्टन नं० ५१३।

१०१. त्रिभंगी संग्रह—पत्र संख्या-४५। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७२२ श्रावण सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ९३।

विशेष—साह नरहर दास के पुत्र साह गगाराम ने यह प्रति लिखवायी थी।

ग्रन्थ में निम्न त्रिभंगियों का संग्रह है—

बंध त्रिभंगी, उदयउदीरणा त्रिभंगी (नेमिचन्द्र), सत्ता त्रिभंगी, भावत्रिभंगी तथा विशेष सत्ता त्रिभंगी।

१०२ त्रिभंगीसार—श्रुतमुनि। पत्र संख्या-२६। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३०३।

१०३ द्रव्यसंग्रह—आ०नेमिचन्द्र। पत्र संख्या-११। साइज-१०½×७ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८३३ श्रावण सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ७५।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

१०४. प्रति नं० २—पत्र संख्या-१३। साइज-१२×५½ इञ्च। लेखन काल-सं० १७३६ कार्तिक सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६।

विशेष—संस्कृत तथा हिन्दी अर्थ सहित है।

१०५ प्रति नं० ३—पत्र संख्या-३६। साइज-१०×५इञ्च। लेखन काल-सं०१७८६ सावन सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ७७।

विशेष—पर्वतधर्मार्थीकृत बालबोधिनी टीका सहित है। लालसोट में भट्ट रतनजी ने प्रतिलिपि की थी।

१०६. प्रति नं० ४—पत्र संख्या-३। साइज-८½×६½ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७८।

१०७ प्रति नं० ५—पत्र संख्या-३। साइज-११×५½इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७९।

विशेष—पद्मनन्दि के शिष्य ब्रह्मरूप ने प्रतिलिपि की।

१०८ प्रति नं० ६ —पत्र संख्या-६। साइज-१०×४½ इंच। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८०।

विशेष—इसी प्रकार की ७ प्रतियां और हैं। वेष्टन नं० ८१ से ८७ तक हैं।

१०६. प्रति नं० १४—पत्र सख्या-६ । साइज-१२×५$\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८ ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

११०. प्रति नं० १५—पत्र सख्या-११ । साइज-१०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इच । लेखन काल-सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६ ।

विशेष—माधोपुर मे प० नगराज ने प्रतिलिपि की ।

१११. प्रति नं० १६—पत्र सख्या-६ । साइज-११×५ इन्च । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० ६० ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—शरदि पशुपतीक्षणाद्द गवस्वब्जाकिते पुण्य समय मासे अर्जुनेतरपक्षे तिथौ त्रयोदश्यां भौम वासरे सवाईजयनगरे कामपालगजे वृषभचैत्यालय पण्डितोत्तम विद्वद्वरजिच्छ्री रामकृष्णजित्क्तच्छिष्य विद्वद्वरेण सकलगुण निधान जिच्छ्री नगराजे जित्तच्छिष्य बाल कृष्णेन स्वपठनार्थं लिखितं ।

प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

११२. प्रति नं० १७—पत्र सख्या-६२ । साइज-१०$\frac{1}{2}$×५ इच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१

विशेष—सस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुऐ हैं।

११३. प्रति नं० १८—पत्र सख्या-७ । साइज-८$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६ ।

११४ प्रति नं० १६—पत्र सख्या-७ । साइज-१२×५$\frac{1}{2}$ इच । लेखन काल-सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन ५७ ।

विशेष—जीवराज छाबडा ने अपने पढने को प्रतिलिपि कराई ।

११५. प्रति नं० २०—पत्र सख्या-७ । साइज-१२×५$\frac{1}{2}$ इच । लेखन काल-सं० १६०१ । पूर्ण वेष्टन नं० ५८ ।

११६. द्रव्यसंग्रह वृत्ति—ब्रह्मदेव । पत्र सख्या-१७० । साइज-१०×६ इन्च । भाषा-सस्कृत विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४६ ।

११७. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सख्या-२६ से ५६ । साइज-१०×४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-गुजराती । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७५८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४२ ।

विशेष—वसुआ में प्रति लिखी गई थी । अमरपाल ने लिखवायी थी ।

११८. प्रति नं० २—पत्र संख्या-३५ । साइज-११½×५ इंच । लेखन काल-सं० १७४३ पौष सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४३ ।

विशेष—सग्रामपुर नगर मे प्रतिलिपि हुई ।

११६. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-३१ । साइज-१२×६ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४४ ।

विशेष—प्रतियाँ वर्षा में भीगी हुई हैं ।

१२०. प्रति नं० ४—पत्र सख्या-४८ । साइज-१२×५½ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७४५ ।

१२१. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्दजी । पत्र सख्या-३७ । साइज-१०½×७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धात । रचना काल-× लेखन काल-स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२६ ।

१२२. प्रति न २—पत्र सख्या-४६ । साइज-१०½×७ इञ्च । लेखन काल-स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७३० ।

१२३. प्रति न० ३—पत्र संख्या-४८ । साइज-१०½×६ इच । लेखन काल-सं० १८६८ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७४१ ।

विशेष—महात्मा देवकर्ण ने लवाण में प्रतिलिपि की । हंसराज ने प्रतिलिपि कराकर वधीचन्द के मन्दिर में स्थापित की । पहले तथा अन्तिम पत्र के चारों ओर लाइनें स्वर्ण की रगीन श्याही में है, अन्य पत्रों के चारों ओर वेलें तथा बूँटे अच्छे हैं । प्रति दर्शनीय हैं ।

१२४ द्रव्यसग्रह भाषा—वंशीधर । पत्र सख्या-३० । साइज-१०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धात । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८५७ ।

विशेष—प्रारंभ-जीवमजीवं दव्व इत्यादि गाथा की निम्न हिन्दी टीका दी हुई है ।

टीका—अह कहिये मैं जु हो सिद्धातचक्रवर्ति श्री नेमिचद्र नामा आचार्य सो त कहिये आदिनाथ महाराज है ताहि सिरसा कहिये मस्तक करि सव्वदा कहिये सर्वकाल विषै बंदे कहिये नमस्कार करू हूँ ।

अंतिम—

टीका—सो मुणिणाहा कहिये हे मुन्यों के नाथ हो जूय कहिये तुम जु हो ते एयं दव्वं सगहे कहिये इहु द्रव्यसग्रह ग्रन्थ है ताहि सोधयतु कहिये सौध्यो है मुनिनाथ हो तुम कैसाक हो.. ।

१२५. द्रव्यसग्रह भाषा—पत्र संख्या-८६ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८४१ ।

विशेष—पहिले द्रव्य सग्रह की गाथायें दी हुई हैं और उसके पश्चात् गाथा के प्रत्येक पद का अर्थ दिया हुआ है ।

१२६. द्रव्य का ब्योरा—पत्र सख्या-१८ । साइज-४×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धांत । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १००० ।

१२७ पचास्तिकाय—आ० कुन्दकुन्द । पत्र सख्या-३३ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन न० ११६ ।

विशेष—मूल मात्र है ।

१२८ पचास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सख्या-४३ । साइज-१२×५½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ि द्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८७२ फाल्गुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ११४ ।

१२९ प्रति न० २—पत्र सख्या-८० । साइज-१२×५½ इञ्च । लेखन काल-स० १८२५ आषाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

विशेष—सवलसिंह की पुत्री बाई रूपा ने जयपुर में प्रतिलिपि कराई थी ।

१३०. पचास्तिकाय प्रदीप—प्रभाचन्द्र । पत्र सख्या- २२ । साइज-१३×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ३८९ ।

विशेष—आ० कुन्दकुन्द कृत पञ्चास्तिकाय की टीका है । अन्तिम पाठ इस प्रकार है—

इति प्रभाचन्द्र विरचिते पचास्तिक प्रदीपे मूलपदार्थ प्ररूपणाधिकार समास: ॥

१३१. पंचास्तिकाय भाषा—पं० हेमराज । पत्र सख्या-१०४ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७२१ आषाढ बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन न० ३२१ ।

विशेष—आमेर में शाह रिषभदास ने प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्राचीन है । हेमराज ने पञ्चास्तिकाय का हिन्दी गद्य में अर्थ लिखकर जैन सिद्धान्त के अपूर्व ग्रन्थ का पठन पाठन का अत्यधिक प्रचार किया था । हेमराज ने रूपचन्द्र के प्रसाद से ग्रथ रचना की थी ।

१३२. पंचास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र सख्या-६२ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-स० १८९२ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७५ ।

विशेष—सघी अमरचन्द दीवान की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की गयी थी । ग्रन्थ में ५८२ पद्य हैं । रचना का आदि अन्त निम्न प्रकार है—

मंगलाचरण—

वंदू जिन जित क्रम अति इष्ट, वाक्य विशद त्रिभुवन हित मिष्ट ।
अतर हित धारक गुन वृन्द, ताके पद वंदत सत इंद ॥

अन्तिम पाठ—

पराकृत कुन्दकुन्द बखानी, ताका रहिस अमृतचन्द्र जानि ।
टीका रची सहस कृत वानी, हेमराज वचनिका आनी ॥ ५७७ ॥
करें सम्यक्त्व मिथ्यात्व हरें, भव सागर लील तैं तरें ।
महिमा मुख तैं कही न जाय, बुधजन वंदे मन वच काय ॥५७८ ॥
सांगही अमर चन्द दीवान, मोकू कही दयावर आन ।
मुन्नालाल फुनि नेमिचन्द सहमकित ग्यायक गुन वृन्द ॥
शब्द अर्थ धन यौ में लह्यो, भाषा करन तवें उमगह्यो ॥५८०॥
भक्ति प्रेरित रचना आनी, लिखो पढो बाचो भवि ज्ञानी ।
जो कहु यामें अशुध निहारो, मूलग्रंथ लखि ताहि सुधारो ॥
रामसिंह नृप जयपुर बसै सुदि आसोज गुरु दिन दशैं ।
उगणी सैं में घटि है आठ ता दिवस मैं रचयो पाठ ॥५८२॥

१३३. **भाव संग्रह—देवसेन** । पत्र संख्या–१ से ३४ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६२१ फाल्गुण बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १११ ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

विशेष – अथ श्री संवत् १६२१ वर्षे फाल्गुण बुदी ७ भौमवासरे । अथ श्री काष्ठा संघे माथुरान्वये पुष्करगणे, अग्रोतकान्वये गोइल गोत्रे पंचमीव्रत उद्धरण वीर साह जगरु तस्य भार्या देल्हाही तस्य पुत्र सा० बुजोखा तस्य भार्या वाल्हाही फतेहाबाद वास्तव्य । तयो पुत्रा पट् प्रथम पुत्र ...... ।

१३४ **प्रति नं० २**—पत्र संख्या–६१ । साइज–११× ५ इञ्च । लेखन काल–सं० १६०६ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२ ।

विशेष—शेरपुर निवासी पाटनी गोत्र वाले साह मलू ने यह शास्त्र लिखा था ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०६ मार्गसरी १० शुक्ले रेवती नक्षत्रे श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवा. तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री जिणचन्द्र देवा. तत्पट्टे भ०

श्री प्रभाचन्द्रदेवा. तत्शिष्य वसुन्धराचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये शेरपुर वास्तव्ये पाटणी गोत्रे साह श्रवणा तद्भार्या तेजी तयो पुत्रौ द्वौ प्र० सघी चापा द्वितीय सघी दूल्हा । रुघी माया तद्भार्या शृंगारदे तयो.पुत्राश्च चत्वार ।

प्रथम साह ऊधा द्वितीय साह दीपा तृतीय साह नेमा चतुर्थ साह मलू ।।साह ऊधा भार्या उर्धासरि तत् पुत्र साह पर्वत तद्भार्या पोसिरी । साह दीपा भार्या देवलदे । साह नेमा भार्या लाडमदे, तयोः पुत्र चि० लाला । साह मल्लू भार्या महमादे । साह दूलह भार्या बुधी तयो पुत्रास्त्रय' प्रथम मघी नानू द्वितीय संघी ठक्कुरसी तृतीय संघी गुणदत्त । सघी नानू भार्या नायकदे तयो पुत्र चि० कौजू । सघी ठक्कुरदे भार्या पाटमदे तयो' पुत्रौ द्वौ प्रथम साह ईसर तद भार्या अहकारदे, द्वि० चि० सेवा । साह गुणदत्त भार्या गारवदे । तयो पुत्रास्त्रय प्रथम चि० गेगराज द्वि० चि० सुमतिदास तृ० चि० धर्मदास एतेषा मध्ये साह मलू इद शास्त्र लिखाप्य पंचमीव्रतोद्योतनार्थं आचार्य श्री ललितकीर्ति आचार्य धनक राय दत्त ।

१३५. भावसग्रह—श्रुतमुनि । पत्र सख्या–१ से १४ । साइज–११½×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १५१० । पूर्ण । वेष्टन न० ११० ।

वशेष—कहीं २ सस्कृत में टीका भी है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५१० वर्षे आषाढ सुदि ६ शुक्ले गुज्जरदेशे कल्पवल्ली शुभस्थाने श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमत् काष्ठासघे नन्दीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्रीरामसेनान्वये भट्टारक श्री यश कीतिः तत्पट्टे भट्टारक श्री उदयसेन, आचार्य श्री जिनसेन पठनार्थं ।

१३६. लब्धिसार—आ० नेमिचन्द्र । पत्र सख्या–६६ । साइज–१२½×४¾ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १५५१ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० १०४ ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है । लेखक—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १५५१ वर्षे आषाढ सुदी १४ मगलवासरे ज्येष्ठानक्षत्रे श्री मेदपाटे श्रीपुरनगरे श्री ब्रह्मचालुकवशे श्रीराजाधिराज रायश्री सूर्यसेनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे, श्री नंदिसघे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे श्री शुभचन्द देवा पत्पट्टे श्री जिनचन्द्र देवा. तत् शिष्य मुनि रत्नकीर्ति तत् शिष्य मुनि लक्ष्मीचन्द्र' खडेलवालन्वये श्री साह गोत्रे साह काल्हा भार्या रानादे तत् पुत्र साह वीभा, साह माधव, साह लाला, साह डूगा । वीभा भार्या विजयश्री द्वितीय भार्या पूना । विजय श्री भार्या पुत्र जिणदास भार्या जौणादे, तत् पुत्र साह गगा, साह सांगा साह सहसा, साह चौडा । सहसा पुत्र पासा साम्रमिद लब्धिसारमिधानं निजज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं मुनि लक्ष्मीचन्द्राय पठनार्थं लिखापित । लिखित गोगा ब्राह्मण गौड ज्ञातीय ।

जयत्यन्वहमर्हतः सिद्धा सूर्युपदेशका' ।
साधवो मध्यलोकस्य शरणोत्तम मंगल ॥
श्री नागार्यतनूजातशांतिनाथोपरोधत ।
वृत्तिर्भव्यप्रबोधाय लब्धिसारस्य कथ्यते ॥

१३७. लब्धिसार टीका—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव। पत्र संख्या-६७। साइज-१४×६½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८७७।

विशेष—इस प्रति की सं० १५८३ वाली प्रति से प्रतिलिपी की गई थी।

१३८. प्रति नं० २—पत्र संख्या-२४। साइज-१४×६½ इंच। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ८७८

१३९. लब्धिसार भाषा—पं० टोडरमल। पत्र संख्या-१ से ४५। साइज-१२½×७½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६६०।

१४०. षट् द्रव्य वर्णन—पत्र संख्या-११। साइज-१२×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६२५।

१४१. सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद। पत्र संख्या-१२२। साइज-११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १५२१ चैत सुदी २। पूर्ण वेष्टन नं० ८०।

विशेष—लेखक प्रशस्ति पूर्ण नहीं है। केवल संवत् मात्र है। प्रति शुद्ध है।

१४२. सिद्धान्तसारदीपक—भ० सकलकीर्ति। पत्र संख्या-५ से २१। साइज १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०७।

विशेष—तृतीय अधिकार तक है।

१४३. प्रति नं० २—पत्र संख्या-१२ से ५०। साइज-१०½×६½ इंच। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०८।

१४४. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-३८ से २७५। साइज-१०×४½ इंच।। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० २००।

१४५. सिद्धान्तसारदीपक भाषा—नथमल विलाला। पत्र संख्या-२४५। साइज-१०½×७½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-सं० १८२४। लेखन काल-सं० १६३५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१५।

धर्म एवं आचार-शास्त्र

१४६. **अनुभवप्रकाश—दीपचन्द** । पत्र सख्या-२२ । साइज-१२½×८ इच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-स० १७८१ पौष सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८४५ ।

१४७ **अरहन्त स्वरूप वर्णन**—पत्र सख्या-३ । साइज-८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ११४४ ।

१४८ **आचारसार—वीरनन्दि** । पत्र सख्या-८२ । साइज-११×५½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८१६ वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० १७७ ।

विशेष—प्रति उत्तम है, क्लिष्ट शब्दों के संस्कृत में अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१४६. **आचारसारवृत्ति—वसुनदि** । पत्र सख्या-११० । साइज-१२×५½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३७ ।

विशेष—मूलकर्त्ता आ० वट्टकेर स्वामी हैं । मूल ग्र थ प्राकृत भाषा में है ।

१५० **उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण** । पत्र संख्या-६० । साइज-१३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-स० १६२७ श्रावण सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १५६ ।

विशेष—रचना का दूसरा नाम षटकर्मोपदेशरत्नमाला भी है । इस ग्र थ की ४ प्रतियां और हैं वे सभी पूर्ण हैं ।

१५१. **उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला—भडारी नेमिचन्द्र** । पत्र संख्या-११ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० १५७ ।

विशेष—महात्मा सीताराम ने नोनदराम के पठनार्थ लिपि कराई थी ।

१५२. **उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा** । पत्र संख्या-१० । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७७२ चैत्र सुदी १४ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३७६ ।

विशेष—भाषाकार के मतानुसार उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला की रचना सर्व प्रथम प्राकृत भाषा में धर्मदास गणि ने की थी । उसी ग्र थ का सक्षिप्त सार लेकर भडारी नेमिचन्द ने ग्रथ रचना की थी । भाषाकार ने भडारी नेमिचन्द की रचना की ही हिन्दी की है ।

प्रारम्भ—शुद्ध देव अरहत गुरू, धर्म्म पंच नवकार ।
नमै निरंतर जासु हिय, धन्यकती नर सार ॥१॥

पठइन गुणइन दानन देहि, तप आचार नहु नाहि करेहि ।
जो हिय एक देव अरिहंत, ताप नय न आताप करंत ॥२॥

अंतिम पाठ—

इम भडारी नेमिचंद, रची कितीयक गाह ।
सुमगरखत जे भवि पठत, जीनतु सिव सुख लाह ॥६१॥
यह उपदेश रतन माला सुभ, ग्रंथ रच्यौ भमदासगणी,
ता महि केतक गाह अनोपम नेमिचन्द भडार भणी ।
जिनवर धरम प्रभावन काजह भाप रच्यौ अनुबुद्धि तणी ।
जाके पढत सुनत सबी धारत आतम हुइ वर सिव रमणी ॥६२॥
संवत् सतरह से सतरि अधिक दोय पथ सेत ।
चैत मास चातुरदसी, पूरन भयौ सु एत ॥१६३॥

१५३. **उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला—भागचन्द्र** । पत्र संख्या-६० । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १६१२ आषाढ बुदी २ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०७ ।

१५४ **उपासकदशा सूत्र विवरण—अभयदेव सूरि** । पत्र संख्या-१८ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १७६ ।

विशेष—उपासक दशा सूत्र श्वे० सम्प्रदाय का सातवां अंग है जो दश अध्यायों में विभक्त है । संस्कृत में यह विवरण अति संक्षिप्त है । विवरण का प्रथम पद्य निम्न प्रकार है—

श्रीवर्द्धमानमानम्य व्याख्या काचिद् विधीयते
उपासकदशादीनां प्रायो ग्रर्थांतरेक्षिता ॥१॥

१५५ **उपासकाचार दोहा—लक्ष्मीचन्द्र** । पत्र संख्या-१७ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश (प्राचीन हिन्दी) । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२१ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७८ ।

विशेष—दोहों की संख्या २२४ है ।

१५६ **कर्मचरित्र बाईसी—रामचन्द्र** । पत्र संख्या-५ । साइज-६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५७ ।

विशेष—३ पत्र से आगे दौलतरामजी के पद हैं ।

१५७ **क्रियाकोश भाषा—किशनसिंह** । पत्र संख्या-११४ । साइज-१०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी

पद्य । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–स० १७८४ भादवा सुदी १५ । लेखन काल–स० १८८६ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१० ।

विशेष—भण्डार म ग्रन्थ की ११ प्रतिया और हैं जो सभी पूर्ण हैं ।

१५८ गुणतीसो भावना—पत्र सख्या–२ । साइज–११३/४×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १०७६ ।

विशेष—हिन्दी गद्य मे गाथाओं के ऊपर अर्थ दिया हुआ है । गाथाओं की सख्या २६ है ।

१५६ गुरोपदेश श्रावकाचार—डालूराम। पत्र सख्या–१३३ । साइज–१२३/४×६१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८८० ।

विशेष—पचेवर मे ग्र थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

१६० चारित्रसार (भावनासार सग्रह) चामुण्डराय । पत्र सख्या–११० । साइज–६३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचार शास्त्र रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १०५ ।

विशेष—प्रथम खड तक है तथा अतिम प्रशस्ति अपूर्ण है ।

१६१ चारित्रसार पजिका—पत्र सख्या–८ । साइज–११×४१/२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १०६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । चरित्रसार टिप्पण भी नाम दिया हुआ है । टिप्पण अति सक्षिप्त है ।

प्रारम्भिक मगलाचरण निम्न प्रकार है—

> नमोनतसुखज्ञानदृग्वीर्याय जिनेशिने ।
> ससारवारापारास्मिन्निमज्जज्जीवतापिने ॥१॥
> चारित्रसारे श्रुतसारं संग्रहे यन्मंदबुद्धे स्तमस्तावृत्त पद ।
> अव्यक्तये व्यक्तपदप्रयोगत प्रारम्यते विद्वद्भीप्टपंजिका ॥२॥

१६२ चारित्रसार भाषा—मन्नालाल । पत्र सख्या–२२५ । साइज–१०३/४×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–स० १८७१ । लेखन काल–स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३५५ ।

आदि भाग (पद्य)— श्री जिनेन्द्र चन्द्रा । परम मगलमादिशतु तराम् ।

> दोहा —परम धरम रथ नेमि सम, नेमिचन्द्र जिनराय ।
> मंगल कर अघ हर विमल, नमो सुमन–वच–काय ॥१॥

भव अथाह सायर परे, जगत जंतु दुख पात ।
करि गहि काढत तिनहि यह, जैन धर्म विख्यात ॥२॥
करत परम पद त्रिदश सुख, बाढत गुण विस्तार ।
नमों ताहि चित हरष धरि, करुणामृत रस धार ॥३॥

मध्यभाग (गद्य):—(पत्र सं० ६४) मदिरा को पीवै तथा और हू मादिक वस्तु भक्षण करै तब प्रमाद के वधन तै विवेक का नाश होय । ताके नाश होतै हित अहित का विचार होता नाहीं । ऐसैं धर्म कार्य तथा कर्म इन दोउन हूतै भ्रष्ट होहि तातैं इस मद्यवत तथा मादिक वस्तु का सर्वथा प्रकार त्याग ही करना जोग्य है । ऐसा जानना ।

ग्रंथोत्पत्ति वर्णन-प्रशस्ति'—

सर्वाकाश अनन्त प्रमान । ताके बीच ठीक पहचान ॥
लोकाकाश असंख्य प्रदेश, ऊरिध मध्य अधो भुमेश ॥१॥
मध्यलोक में जबू दीप । सो है सब द्वीपनि अवनीप ॥
ता मधि मेरु सुदर्शन जान । मानूं भूमि दंड है मान ॥२॥
ता दक्षिण दिश भरत सु नाम । क्षेत्र प्रकट सोहै सुरधाम ॥
ताके मध्य ढूंढाहड देश । बहु शोभा जुत लसै अशेष ॥३॥
तहां सवाई जयपुर नाम । नगर लसत रचना अभिराम ॥
बहु जिन मंदिर सहित मनोग्य । मानूं सुर गण बसने जोग्य ॥४॥
जगत सिंह राजा तसु जान । भूपत अरिगन करै प्रनाम ॥
तेजवंत जसवंत विशाल । रीझत गुन गन करत निहाल ॥५॥
जहां बसै बहु जैनी लोग । सेवत धर्म वमै दुख रोग ॥
तिन मधि सांगा वंस विशाल । जोगिदास सुत मन्नालाल ॥६॥
बालपने ते सगति पाय । विद्याभ्यास कियो मन लाय ॥
जैन ग्रंथ देखे कुछ सार । जयचंद नंदलाल उपकार ॥७॥
हस्तिनागपुर तीर्थ महान । तहि वंदन आयो सुख धाम ॥
इन्द्रप्रस्थ पुर शोभा होइ । देखैं भयो अधिक मन मोइ ॥८॥
तहां राज अँगरेज करंत । हुकम कंपनी छत्र फिरंत ॥
बादस्याह अकबर सिर सेत । सेवक जननि द्रव्य बहु देत ॥९॥
हरसुख राय खजाना वंत । तिनके सोहै धरम धरंत ॥
अगरवाल गोत्री गुण नाम । सुगनचन्द तसु पुत्र सुजान ॥१०॥
मंदिर तिनि नै रच्यो महंत । जिनवर तनो धुजा लहकंत ॥

बहु विधि रचना रचीं तसु मांहि । शोभा वरनत पार न पांहि ॥११॥

ताके दर्शन कर सुख राशि । प्रापत भई रंक निधि भासि ॥

कारन एक भयो तिहि ठाम । रहने को भाषू तसु नाम ॥१२॥

मंत्री जगतसिंह को नाम । अमरचन्द्र नामा गुणधाम ॥

रहैं बहुत सज्जन सुखदाय । धर्म राग शोभित अधिकाय ॥१३॥

मोतैं अधिक प्रीति मन धरै । तिनि अटकायो मैं हित खरैं ॥

ता कारण विरता तिहि पाय । सुगनचंद्र के कहै सुभाय ॥१४॥

चारित्रसार ग्रंथ की भाष । वचन रूप यह करी सुसाख ॥

ठाकुरदास और इन्दराज । इनि भाइन के बुद्धि समाज ॥१५॥

मदबुद्धितें अर्थ विशेष । तहि प्रतिमास्यो होय अशेष ॥

सुधी ताहि नीकै ठानियो । पक्षिपात मत ना मानियो ॥१६॥

अनेकांत यह जैन सिधंत । नय समुद्र वर कहि विलसंत ॥

गुरुवच पोत पाय भवि जीव । लहो पार सुख करत सदीव ॥१७॥

जयवंती यह होउ दिनेश । चन्द नखत उड्ड बजावत शेष ॥

पढो पढावो भव्य संसार । बढो धर्म जिनवर सुखकार ॥१८॥

संवत एक सात अठ एक । माघ मास सित पंचमि नेक ॥

मंगल दिन यह पूरण करी । नांदो विरधो गुण गण भरी ॥१६॥

दोहा—सुभ चिंतक जु लेखका दयाचंद यह जानि ।

लिख्यो ग्रंथ तिनि नै एहै बांचो पढो सुहसानि ॥

विशेष—ग्रंथ को एक प्रति और है लेकिन अपूर्ण है ।

१६३. **चिद्विलास-दीपचन्द**—पत्र सख्या-५० । साइज-१२½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल- सं० १७७६ फाल्गुण बुदी ५ । लेखन काल-सं० १७८४ वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३६ ।

१६४. **चौरासी बोल—हेमराज** । पत्र सख्या-१४ । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७१ ।

१६५. **चौवीस दडक**—पत्र संख्या-२८ । साइज-७×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल सं० १८५४ श्रावण सुदी ६ । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० ५४७ ।

विशेष—१४ वें पत्र के आगे बारह भावना तथा बाईस परीषह का वर्णन है । दडक में ११८ पद्य हैं ।

१६६. **चौबीस दंडक—दौलतराम** । पत्र संख्या-१ । साइज-७×२१½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८५ ।

१६७ **जिनगुण पच्चीसी**—पत्र संख्या-२२ । साइज-११×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८०५ ।

१६८. **जीवों की संख्या वर्णन**—पत्र संख्या-८ । साइज-७×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३६ ।

१६९ **ज्ञान चिन्तामणि—मनोहरदास** । पत्र संख्या-१० । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७२८ माह सुदी ८ । लेखन काल-सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८०१ ।

१७०. **ज्ञान मार्गणा**—पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६४ ।

विशेष—मार्गणाओं का वर्णन संक्षेप में दिया हुआ है ।

१७१. **ज्ञानानन्द श्रावकाचार—रायमल्ल** । पत्र संख्या-१११ । साइज-११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल सं० १९२१ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४६ ।

१७२. **ढाल गण-सूरत** । पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०६ ।

१७३ **त्रेपनक्रियाविधि—प० दौलतराम** । पत्र संख्या-१०८ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १७९५, भादवा सुदी १२ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७७० ।

विशेष—कवि ने यह रचना उदयपुर में समाप्त की थी ।

१७४ **दशलक्षणधर्म वर्णन**—पत्र संख्या-२६ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७६ ।

विशेष—दश धर्मों का हिन्दी गद्य में संक्षिप्त वर्णन है ।

१७५. **दर्शनपच्चीसी—आरतराम** । पत्रसंख्या-११ । साईज-११½×५½ इंच । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०३ ।

विशेष—फुटकर सवैया भी है । एक प्रति और है जिसका वेष्टन नं० ५०६ है ।

१७६ **देहव्यथाकथन**—पत्र संख्या-१९ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

विशेष—देह को किस २ प्रकार से व्यथा है इसका वर्णन किया हुआ है

१७७. **धर्म परीक्षा—आचार्य अमितगति** । पत्र सख्या–८८ । साइज–११½×५ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–स० १०७७ । लेखन काल–स० १७६२ पौष शुक्ला २ । पूर्ण । वेष्टन न० १८७ ।

विशेष—वृन्दावती गढ (वृन्दावन) में प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है । स० १७६२ मिति पौषमासे शुक्लपक्षे द्वितीया दिवसे वार शुक्रवार लिखितं गढ वृन्दावती मध्ये श्री राव बुधसिंह राज्ये नेमिनाथचैत्यालये भट्टारक श्री जगतकीर्ति आचार्य श्री शुभचन्द्रेन शिष्य नानकरामेन शुभं भवत् ।

ग्रंथ की एक प्रति और है जो स० १७२६ में लिखित है । वेष्टन न० १८८ है ।

१७८. **धर्म परीक्षा—मनोहरदास सोनी** । पत्र संख्या–१२४ । साइज–१०½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । (पद्य) विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७६३ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७९६ ।

विशेष—हिन्डौन में प्रतिलिपि हुई थी ।
इसी ग्र थ की पांच प्रतियां और हैं जो सभी पूर्ण हैं तथा उत्तम हैं ।

१७९. **धर्मविलास—द्यानतराय** । पत्र सख्या–२१६ । साइज–१०½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १९४२ । पूर्ण । वेष्टन न० ७२३ ।

विशेष—द्यानतरायजी की रचनाओं का सग्रह है ।

१८० **धर्मरसायन—पद्मनन्दि** । पत्र सख्या–१६ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २७ ।

विशेष—ग्रंथ की एक प्रति और है जो संवत् १८५४ में लिखी हुई है । वेष्टन न० २८ है ।

१८१. **धर्मसार चौपई—प० शिरोमणिदास** । पत्र सख्या–३६ । साइज–१०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १७३२ बैसाख सुदी ३ । लेखन काल–१८३६ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६६ ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । इसमें हिन्दी के ७६३ छन्द हैं । रचना काल निम्न पंक्तियों से जाना जा सकता है ।

सवत् १७३२ वैशाख मास उज्ज्वल पुनि दीस ।
तृतीया अक्षय शनौ समेत भविजन को मगल सुख देत ॥

१८२. **धर्मपरीक्षा भाषा—बा. दुलीचन्द** । पत्र सख्या– २७२ । साइज–११×५ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–स० १८६८ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ७८१ ।

विशेष—अंतिम पत्र नहीं है । मूल कर्त्ता आचार्य अमित गति हैं ।

१८३. **धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—चपाराम**। पत्र संख्या-१६० । साइज-१२×५½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-आचार । रचना काल-सं० १८६८ भादवा सुदी ५ । लेखन काल-सं० १८६० भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६० ।

विशेष—दीपचन्द के पौत्र तथा हीरालाल के पुत्र चम्पाराम ने सवाई माधोपुर में ग्रन्थ रचना की थी। विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है।

१८४. **धर्मसग्रह श्रावकाचार—प० मेधावी**। पत्र संख्या-४६ । साइज-११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत विषय-आचार । रचना काल-सं० १५४१ । लेखन काल-सं० १८३० । पूर्ण । वेष्टन नं० १८६ ।

विशेष—सवाई जयपुर में गोपतिराम ने प्रतिलिपि की थी।

१८५. **धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्र० नेमिदत्त**। पत्र संख्या-३० । साइज-१०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६३२ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८२ ।

विशेष—चपावती दुर्ग के आदिनाथ चैत्यालय में महाराजाधिराज श्री भगवतदासजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी।

१८६. **प्रति नं० २**—पत्र संख्या-१७ । साइज-११×५½ इंच । लेखन काल-सं० १६०६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८३ ।

विशेष—टोडा दुर्ग (टोडारायसिंह) में महाराजाधिराज श्री रामचन्द्र के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

१८७. **नरक दुःख वर्णन**—पत्र संख्या-३-६ । साइज-१२×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६१८ ।

१८८. **नरक दुःख वर्णन**—पत्र संख्या-३ । साइज-११½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०४७ ।

१८९. **नरक दुःख वर्णन**—पत्र संख्या-६२ । साइज-६×४½ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८१६ पौष बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१६ ।

विशेष—भाषा ढूंढारी है तथा उर्दू के शब्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है। नरकों के वर्णन के आगे अन्य वर्णन जैसे स्वर्ग, मार्गणायें तथा काल अन्तर आदि का वर्णन भी दिया हुआ है।

१९०. **पद्मनन्दिपंचविंशति—पद्मनन्दि**। पत्र संख्या-६२ । साइज-१०½×५ इंच । भाषा प्राकृत-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण वेष्टन नं० ३ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१६१. प्रति न० २—पत्र सख्या—६६ । साइज—१०½×४ इच । लेखन काल—स० १५३२ फागुन सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० ११ ।

विशेष—स० १५३२ फागुण सुदी प्रतिपदा सोमवासरे उत्तरानक्षत्रे शुभनामजोगे श्री कुन्दकुन्दाचार्यन्वये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री सिंह कीर्ति देवा तत् शिष्य प्रभाचन्द्र पठनाय दत्तं पुण्यार्थ इक्ष्वाकु वशे अश्वपतिना दत्तं शुभं भवतु ।

१६२ पद्मनंदिपच्चीसी भाषा—मन्नालाल खिंदूका । पत्र संख्या—१६८ । साइज—१०½×८ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १९१५ । लेखन काल—स० १९३५ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६७

१६३. परीषह विवरण—पत्र संख्या—३ । साइज—१३×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० १०५५ ।

१६४ प्रतिक्रमण—पत्र संख्या—५ । साइज—१०½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० १०६३ ।

१६५ प्रवोधसार—महा प० यश.कीर्त्ति । पत्र संख्या—२८ । साइज—८×३½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार धर्म । रचना काल—× । लेखन काल—स० १५२५ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० १७६ ।

विशेष—रचना में ४७८ पद्य हैं । प्रशस्ति अपूर्ण है जो निम्न प्रकार है—

सवत् १५२५ वर्षे मार्गसुदी १५ श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचायान्वये म० श्री जिनचन्द्र देवास्तत् शिष्य म० श्री हेमकीर्ति देवा' तस्योपदेशात् जैसवालान्वये इक्ष्वाकु वशे सा० - . . . .

१६६. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—बुलाकीदास । पत्र सख्या—१४३ । साइज—१२×५ इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—× । लेखन काल—स० १७८८ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६४ ।

विशेष—प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७. प्रायश्चित्तसमुच्चय—नदिगुरु । पत्र सख्या—१०० । साइज—१२×५½ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—× । लेखन काल—स० १८६६ श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० २६ ।

१६८. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—सकलकीर्ति । पत्र संख्या—६२ । साइज—११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

१६६. प्रति न० २—पत्र सख्या—१०८ । साइज—११×५ इच । लेखन काल—स० १६३२ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० १६० ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत्सरेस्मिन विक्रमादित्य १६३२ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ शुक्रवासरे मालवदेशे चन्देरीगढदुर्गे पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये तदाम्नाये महावादवादीश्वर मण्डलाचार्य श्री श्री श्री देवेन्द्रकीर्तिदेव । तत्पट्टे मं० आचार्य श्री त्रिभुवनकीर्ति देव । तत्पट्टे म० श्री सहस्रकीर्तिदेव । तत्पट्टे मण्डलाचार्य श्री पद्मनंदि देव । तत्पट्टे मण्डलाचार्य श्री यशःकीर्तिः । तत्पट्टे म० श्री ललितकीर्ति लिखितं पण्डित रत्न पठनार्थ इदं उपासकाचार ग्रंथ लिखितं ।

२००. प्रति नं० ४३—पत्र संख्या-१२२ । साइज-११×४½ इंच । लेखन काल-सं० १६४८ वैशाख बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६१ ।

विशेष—सहारनपुर नगर बादशाह श्री अकबर जलालुद्दीन के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

इस ग्रंथ की भण्डार में ५ प्रतियां और हैं जिनमें २ प्रतियां अपूर्ण हैं ।

२०१. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—सकलकीर्त्ति । पत्र संख्या-६२ । साइज-११¾×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८५ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है प्रथम पत्र नवीन है ।

२०२ प्रति नं० २—पत्र संख्या-७२ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

२०३. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-३८ । साइज-१४×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२७ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

विशेष—इसका दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य कोश भी है । प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीका का नाम त्रिपाठी है । संस्कृत पद्यों पर टीका लिखी हुई है ।

२०४. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—पंडित टोडरमलजी । पत्र संख्या-१११ । साइज-११×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १८२७ । लेखन काल-सं० १९३८ माघ सुदी १ । पूर्ण वेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष—ग्रंथ की २ प्रतियां और हैं लेकिन वे दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२०५. ब्रह्मविलास—भगवतीदास । पत्र संख्या-११६ । साइज १०½×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-१७५५ । लेखन काल-१८८६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७२६ ।

विशेष—भैय्या भगवतीदास की रचनाओं का संग्रह है । विलास की एक प्रति और है वह अपूर्ण है ।

२०६. बाईस परीषह वर्णन—पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×६½ इंच । रचनाकाल-× । लेखन काल-सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६० ।

विशेष—ग्रंथ गुटका साइज है ।

२०७ भगवती आराधना भाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र सख्या–५३४। साइज–११×७½ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–स० १६०८ भादवा सुदी २। लेखन काल–स० १६०८ माघ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६२।

२०८. मालामहोत्सव—विनोदीलाल। पत्र सख्या–३। साइज–११×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८६८ चैत्र सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन न० ५५६।

२०९ मूलाचार प्रदीपिका—भट्टारक सकलकीर्ति। पत्र सख्या–६१। साइज–११½×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–स० १८४३। पूर्ण। वेष्टन न० ३८।

विशेष—ग्रथ मे बारह अधिकार हैं। सालिगराम गोधा ने स्वपठनार्थ जयपुर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

२१० प्रति न० २—पत्र सख्या–१२७। साइज–१२×५ इञ्च। लेखन काल–स० १५८१ पौष सुदी २।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति स० १५८१ वर्षे पोषमासे द्वितीयाया तिथौ सोमवासरे अद्येह वीजापुर वास्तव्ये मेदपाट ज्ञातीय ज्योति श्री बलिराज सुत लीलाधर केन पुस्तिका लिखिता। श्री मूलसघे ब्रह्म श्री राजपाल तत् शिष्य ब्र० कर्मश्री पठनार्थ।

२११ मूलाचार भाषा टीका—ऋषभदास। पत्र सख्या–१२७। साइज–१५×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–स० १८८८ कार्तिक सुदी ७। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० ७८२।

विशेष—वट्टकेर स्वामी के मूल पर आधारित वसुनदि की आचार वृत्ति नाम की टीका के अनुसार भाषा हुई है।

प्रारम्भ—वदौ श्री जिन सिद्धपद आचारिज उवझाय।
साधु धर्म जिन भारती, जिन गृह चैत्य सहाय ॥१॥
वट्टकेर स्वामी प्रणमि, नमि वसुनदि सूरि।
मूलाचार विचार के भाखौ लखि गुण भूरि ॥२॥

अन्तिम पाठ—वसुनदि सिद्धान्त चक्रवर्त्ति करि रची टीका है सो चिरकाल पर्यन्त पृथ्वी विषें तिष्ठहु। कैसी है टीका सर्व अर्थनि की है सिद्धि जातैं। बहुरि कैसी है समस्त गुणनि की निधि। बहुरि ग्रहण करि है नीति जानैं ऐसो जो आचारज कहिये मुनिनि का आचरण ताके सूक्ष्म भावनि की है अनुवृत्ति कहिये प्रवृत्ति जातैं। बहुरि विख्यात है अठारह दोष रहित प्रवृत्ति जाकी ऐसा जो जिनपति कहिये जिनेश्वर देव ताके निर्दोष वचनि करि प्रसिद्ध। बहुरि पाप रूप मल की दूर करण हारी। बहुरि सुन्दर।

२१२ मोक्ष पैडो—बनारसीदास। पत्र सख्या–३। साइज–१०½×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० ५६४।

विशेष—एक प्रति और है।

२१३. मोक्षमार्ग प्रकाश—पं० टोडरमल। पत्र संख्या-२६० । साइज-१३½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (ढूंढारी)। विषय-धर्म । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं० २ ।

विशेष—प्रति संशोधित की हुई है ।

२१४. प्रति नं० २—पत्र संख्या- २०७ । साइज-१०×५½ इञ्च । लेखन काल-×। अपूर्ण । वेष्टन नं० ७११ ।

विशेष—यह प्रति स्वयं पं० टोडरमलजी के हाथ की लिखी हुई है । इसके अतिरिक्त ग्रंथ की ० प्रति और है लेकिन वे भी अपूर्ण हैं ।

२१५. मोक्षसुख वर्णन—पत्र संख्या-१३ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८७० ।

२१६. यत्याचार—वसुनंदि । पत्र संख्या-६७ से २०७ । साइज-१५×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६५ चैत्र सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८६ ।

विशेष—अमरचन्द दीवान के पठनार्थ ग्रंथ की प्रतिलिपि की गयी थी ।

२१७ रत्नकरंडश्रावकाचार—आ० समतभद्र । पत्र संख्या-१० । साइज-८½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०० भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१ ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । श्रावकाचार की ३ प्रतियां और हैं ।

२१८. रत्नकरंडश्रावकाचार टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या-५२ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४० ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र फिर से लिखवाये हुये हैं । टीका की एक प्रति और है ।

२१९. रत्नकरण्डश्रावकाचार—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या-४७६ । साइज-१२½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-सं० १९२० चैत्र सुदी १४ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७७६ ।

विशेष—प्रति उत्तम है । ग्रंथ की २ प्रतियां और हैं । दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२२०. व्रतोद्योतन श्रावकाचार—अभ्रदेव । पत्र संख्या-१७ । साइज-१०×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८३५ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६४ ।

२२१ वृहद् प्रतिक्रमण—पत्र संख्या-३७ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८० श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

विशेष—मुनिभुवनभूषण ने बाली में प्रतिलिपि की थी ।

२२२. श्रद्धान निर्णय—पत्र संख्या–२८ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ३८४ ।

विशेष—ज्ञानाबाई ओसवाल कोठ्यारी के पठनार्थ तेरह पंथियों के मंदिर में प्रतिलिपि की गई । धार्मिक चर्चाओं का सग्रह है । ग्र थ की एक प्रति और है ।

२२३. श्रावकक्रियावर्णन—पत्र सख्या–१६ । साइज–११×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५५० ।

२२४. श्रावक-दिनकृत्य वर्णन—पत्र सख्या–३–८ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ६३२ ।

विशेष—प्रति दिन करने योग्य कार्यों पर प्रकाश डाला गया है ।

२२५. श्रावकधर्म वचनिका—पत्र सख्या–१ । साइज–७½×३१ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६८४ ।

विशेष—स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा में से श्रावक धर्म का वर्णन है ।

२२६. श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र (छाया युक्त)—पत्र सख्या–२ से ३६ । साइज–६½×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६८२ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है संस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

२२७. श्रावकाचार—स्वामी पूज्यपाद । पत्र सख्या–५ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १७१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२८. श्रावकाचार—वसुनन्दि । पत्र सख्या–३५ । साइज–११×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १६३० । चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—ग्र थ की प्रतिलिपि मोजमाबाद (जयपुर) में हुई थी । ग्र थ की एक प्रति और है वह अपूर्ण है ।

२२९. श्रावकाचार—पद्मनन्दि । पत्र सख्या–६६ । साइज–११×४¾ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १७२ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२३०. श्रावकाचार—पत्र सख्या–२७ । साइज–११½×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचार शास्त्र ।

रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १७४ ।

विशेष—ग्रंथ पर निम्न शब्द लिखे हुये हैं जो शायद बाद के हैं—ये श्रावकाचार उमास्वामि का बनाया हुआ नहीं है कोई जैन धर्म का द्रोही का बनाया हुआ है । झूठा होगा साचत है ।

२३१ श्रावकाचार – पत्र संख्या-११ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७४ ।

२३२. श्रावकाचार—अमितगति । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६१८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८१ ।

२३३ श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्य । पत्र संख्या-१२ । साइज-११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७६७ वैसाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७० ।

२३४ षोडशकारण भावना वर्णन—पत्र संख्या-८० । साइज-११×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७८ ।

विशेष—दशलक्षण धर्म का भी वर्णन है ।

२३५ सम्मेदशिखरमहात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र संख्या-७८ । साइज-८×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७८५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०२ ।

२३६ सम्मेदशिखरमहात्म्य—मनसुखसागर । पत्र संख्या-१६५ । साइज-११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७८ ।

विशेष—लोहाचार्य विरचित 'तीर्थ महात्म्य' में से सम्मेदाचल महात्म्य की भाषा है । महात्म्य की एक प्रति और है जो अपूर्ण है ।

२३७ सम्यक्त्व पच्चीसी—भगवतीदास । पत्र संख्या-२ । साइज-६½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५४ ।

२३८. सम्यग्प्रकाश—डालूराम पत्र संख्या-५ । साइज-११×८ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १८७१ चैत्र सुदी १५ । लेखन काल-सं० वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४४ ।

२३९ सबोधपंचासिका—रइधू । पत्र संख्या-३ । साइज-११×६ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १० ।

विशेष—गाथाओं की संख्या ४६ है । अन्तिम गाथा निम्न प्रकार है—

सावण मासम्मिकया, गाहा व्धेण विरइ य सुणह ।

कहियं समुच्चयत्व, पइछिज्जत च सुहबोहं ॥४९॥

२४०. संबोधपंचासिका—द्यानतराय । पत्र संख्या–४ । साइज–८×६½ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ९१५ ।

२४१. संबोध सत्तरो सार । पत्र सख्या–५ । साइज–१०½×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । रचनाकाल–× । लेखन काल–स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन न० २०६४ ।

विशेष—पत्र ४–५ में सम्यक्त्व फल वर्णित है । भाषा पुरानी हिन्दी है ।

सत्तरी में ७० पद्य हैं । अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

जे नरा ध्यानज्ञान च स्थिरचित्तोऽर्थग्राहका. ।

क्षीयते अष्टकर्माणि सारसंबोधसत्तरी ॥७०॥

२४२. सागारधर्मामृत—प० आशाधर । पत्र सख्या–५१ । साइज–११×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–सं० १२९६ पौष बुदी ७ । लेखन काल–स० १६२५ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० १८० ।

२४३. सामायिक महात्म्य— पत्र सख्या–५ । साइज–७½×५ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ६६५ ।

२४४ सारसमुच्चय—कुलभद्र । पत्र सख्या–१९ । साइज–१०×४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–स० १५४५ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०९ ।

विशेष—सघी श्री छाजू अग्रवाल ने ग्र थ लिखवाया था । तथा श्री भैरोंबक्स ने प्रतिलिपि की थी ।

सारसमुच्चय का दूसरा नाम ग्र थसार समुच्चय भी है । इसमें ३२० श्लोक हैं ।

प्रारम्भ—

देवदेव जिनं नत्वा भवोद्भवविनाशन ।

वक्ष्येहं देशनां काचित् मतिहीनोऽपि भक्तित: ॥१॥

ससारे पर्यटन् जतुर्बहुयोनि–समाकुलो ।

शरीरं मानस दु:ख प्राप्नोतीति दारुणं ॥२॥

अन्तिम पाठ—

अय तु कुलभद्रेण भवविच्छित्ति–कारणं ।

दृष्टो बालस्वभावेन ग्र थ. सारसमुच्चय: ॥३२६॥

ये भक्त्या भावयिष्यन्ति, भवकारणनाशन ।

अचिरेणैवकालेन, सुख प्राप्स्यन्ति शाश्वत ॥३२७॥

सारसमुच्चयमेतेय पठति समाहिताः ।

ते स्वल्पेनैव कालेन पदं यास्यंत्यिनामयं ॥३२६॥

नम' परमसध्यान विघ्ननाशनहेतवे ।

महाकल्याणसंपत्ति कारिणोरिप्टनेमये ॥३३०॥

इति सारसमुच्चयाख्यो ग्र ंथः समाप्त' ।

२४५ **सारसमुच्चय—दौलतराम।** पत्र सख्या–१८। साइज–६½×६ इच । भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचना काल–X। लेखन काल–X। पूर्ण। वेप्टन नं० १०८२।

विशेष—सारसमुच्चय के अतिरिक्त पूजाओं का संग्रह है। सार समुच्चय में १०४ पद्य है। अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

सार समुच्चै यह कह्यो गुर आज्ञा परवांन।

आनंद सुत दौलति नैं मनि करि श्री भगवान ॥१०४॥

२४६. **सुगुरु शतक—जिनदास गोधा।** पत्र संख्या–७। साइज–९×२ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचनाकाल–स० १८००। लेखन काल–X। पूर्ण। वेप्टन नं० ५०२।

विशेप—१०१ पद्य हैं।

विषय–अध्यात्म एवं योग शास्त्र

२४७. **अध्यात्मकमल मार्त्तण्ड—राजमल्ल।** पत्र संख्या–१२। साइज–१०½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। रचना काल–X। लेखन काल–सं० १६२१ फाल्गुण सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० २३।

विशेष—सं० १९८२ में नदकीर्ति ने अर्गलपुर (आगरा) मे प्रतिलिपि की थी। ग्र ंथ ४ अध्यायों में पूर्ण होता है।

२४८. **अध्यात्म वारहखडी—दौलतराम।** पत्र सख्या–६७। साइज–६½×५½ इंच। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–अध्यात्म। रचना काल–सं० १७६८। लेखन काल–X। अपूर्ण। वेप्टन नं० ३८७।

२४६. **अष्टपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य** । पत्र सख्या–६ से ५७ । साइज–१०½×५ इच । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । अपूर्ण । वेष्टन न० ६३ ।

विशेष—ग्र थ की २ प्रतियां और हैं लेकिन वे दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२५०. **अष्टपाहुड भाषा—जयचन्द्र छाबड़ा** । पत्र सख्या ८१ से १२३ । साइज–११×८ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–स० १८६७ । लेखन काल–X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८१० ।

विशेष—ग्र थ की एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

२५१. **आत्मसबोधन काव्य—रइधू** । पत्र सख्या–२८ । साइज–११×४½ इश्च । भाषा–अपभ्र श । विषय–अध्यात्म । रचना काल–X । लेखन काल–स० १६१६ द्वितीय श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० २४ ।

विशेष—अलवर नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२५२. **आत्मानुशासन—आचार्य गुणभद्र** । पत्र सख्या–२३ । साइज–१०×४½ इश्च । भाषा-सस्कृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–X । लेखन काल–स० १७७० भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४ ।

विशेष—साह ईसर अजमेरा ने बून्दी नगर में प्रतिलिपि की थी । ग्र थ की २ प्रतिया और हैं ।

२५३. **आत्मानुशासन टीका—टीकाकार प० प्रभाचन्द्र** । पत्र संख्या–७१ । साइज–१०×४½ इश्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । रचनाकाल–X । लेखन काल–स० १५८१ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३ ।

विशेष—पत्र ३८ तक फिर से प्रतिलिपि की हुई है, नवीन पत्र हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है.—

स० १५८१ वर्षे चैत्र बुदी ६ गुरूवासरे घटपालीनाम नगरे राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र देवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये साह गोत्रे चतुर्विधदानवितरण कल्पवृक्ष साह काथिल तद्भार्या कावलदे तयो' पुत्राः त्रय' प्रथम साह गूजर, द्वितीय सा० राधै जिनचरणकमलचचरीकान् दान पूजा समुद्यतान् परोपकारनिरतान् मस्वस्थ चिन्तान् सम्यक्त्व प्रतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्त धर्मरंजितचेतसान कुटुम्ब साधारकान रत्नत्रयालकृत दिव्य देहान् अहाराभयशास्त्रदानसमुन्नितान् त्रयो साह वच्छराज. तद्भार्या पतिव्रता पद्मा तस्या पुत्र परम श्रावक साह पचाइणु तद्भार्या प्रतापदे तत्पुत्र साह दूलह एतेषां मध्ये सा० वच्छराज इद शास्त्र लिखायित सत्पात्राय मुनि श्री माघनन्दिने दत्तं कर्मक्षयार्थ । गौरवंश सेठ श्री खेऊ तस्य पुत्र पदारथ लिखित ।

२५४. **आत्मानुशासन भाषा—पं० टोडरमल** । पत्र सख्या–५६ । साइज १०×७ इच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–अध्यात्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । अपूर्ण । वेष्टन न० ७१०

विशेष—प्रति स्वय पं० टोडरमलजी के हाथ की लिखी हुई है । इस प्रति के अतिरिक्त ८ प्रतियां और हैं ।

उनमें से तीन प्रतियां अपूर्ण हैं ।

२५५ आत्मावलोकन—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र संख्या–६४ । साइज–११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १७७७ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६१ ।

२५६ आराधनासार—देवसेन । पत्र संख्या–१६ । साइज–१०½×४½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५ ।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पण दी हुई है । दो प्रतियां और हैं ।

२५७ चार ध्यान का वर्णन । पत्र संख्या–२३ । साइज–६×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–योग । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण वेष्टन नं० ५३७ ।

२५८ चौरासी आसन भेद । पत्र संख्या–११ । साइज–८×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १३६ ।

विशेष—पं० लूणकरण के शिष्य पं० खीवसी ने प्रतिलिपि की ।

२५९. ज्ञानार्णव—आचार्य शुभचन्द्र । पत्र संख्या–१२८ । साइज–१०½×५ । भाषा–संस्कृत । विषय–योग शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३० ।

विशेष—पं० श्री कृष्णदास ने प्रतिलिपि कराई थी । ग्रन्थ की २ प्रतियां और हैं ।

२६०. ज्ञानार्णव भाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र संख्या–३६६ । साइज–१०½×७½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–योग । रचना काल–सं० १८६६ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०० ।

२६१ ज्ञानार्णव भाषा । पत्र संख्या–१६ । साइज–१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–योग । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५१६ ।

विशेष—प्राणायाम प्रकरण का ही वर्णन है ।

२६२ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र संख्या–४४ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२८ ।

विशेष—प्राकृत भाषा में गाथा दी हुई है और फिर उन पर हिन्दी गद्य में अर्थ लिखा हुआ है ।

२६३ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र संख्या–१ से ५ । साइज–१२×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१६ ।

२६४ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र संख्या–६ । साइज–११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५१ ।

२६५. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्र देव । पत्र सख्या-२५१ । साइज-१०३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७६५ ।

विशेष—ब्रह्मदेव कृत सस्कृत टीका तथा दौलतरामकृत भाषा टीका सहित है ।

योगीन्द्रदेव कृत श्लोक सख्या-३४३, ब्रह्मदेव कृत सस्कृत टीका श्लोक सख्या ८५००, तथा दौलतराम कृत भाषा श्लोक सख्या ६८६० प्रमाण है । दो प्रतियों का मिश्रण है । अतिम पत्रों वाली प्रति में कई जगह अक्षर काटे गये है ।

२६६ प्रति न० २—पत्र सख्या-२४० । साइज-११×५ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७६६

२६७ प्रति न० ३—पत्र सख्या-२१८ । साइज-१०३/४×५ इञ्च । लेखन काल-स० १८६२ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६७ ।

२६७ प्रति न० ४—पत्र सख्या-१७६ । साइज-११३/४×५१/२ इच । भाषा-अपभ्र श । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०३ ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । टीका उत्तम है । टीकाकार का नामोल्लेख नहीं मिलता है । इन प्रतियों के अतिरिक्त ग्र थ की ४ प्रतियां और हैं ।

२६८ परमात्मपुराण-दीपचन्द । पत्र सख्या-१ से ३६ । साइज-१०×४३/४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ७६८ ।

विशेष—ग्रन्थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—अथ परमातम पुराण लिख्यते ।

दोहा—परम अखडित ज्ञानमय गुण अनत के धाम ।
अविनासी आनद अग लखत लहै निज ठाम ॥१॥

गद्य—अचल अतुल अनत महिम मडित अखडित त्रैलोक्य शिखर परि विराजित अनोपम अबाधित शिव दीप है । तामें आतम प्रदेश असख्य देस है । सो एक एक देस अनत गुण पुरुषन करि व्यापत है । जिन गुण पुरुषन कै गुण परणति नारी है । तिस शिवदीप को परमातम राजा है ताकै चेतना परिणति राणी है । दरसण ज्ञान चरित्र ए तीन मत्री हैं । सम्यक्त्व फोजदार है । सब देसका परणाम कोटवाल है । गुण सत्ता मन्दिर गुण पुरुषन के है । परमातम राजा का परमातम सत्ता महल बण्या तहा चेतना परणति कामिनी सो केलि करते अतेंद्रिय अबाधित आनद उपजै है ।

अन्त में (पृष्ठ ३६)—"परमातम राजा एक है परणति शक्ति भाविकाल मे प्रगट और और होने की है परिवर्त्तन घन काल में व्यक्त रूप परणति एक है सो ही वस राजा को रमावै है । जो परणति वतमान की कौ राजा भोगवे है सो परणति समय मात्र आत्मीक अनत सुख दे करि विलय जाय है । परमातमा में लीन होय है ।

२६६. **प्रवचनसार—कुन्दकुन्दाचार्य** । पत्र सख्या–८ से ४४ । साइज–१६X७½ इच । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८८ ।

२७०. **प्रवचनसार भाषा—हेमराज** । पत्र सख्या–३५ । साइज–१०½X५½ इन्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १७०६ । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१८ ।

विशेष—पद्य सख्या ४३८ है ।

२७१. प्रति नं० २—पत्र सख्या–११० । साइज–१२X८ इन्च । रचना काल–सं० १७०६ माघ सुदी ५ । लेखन काल–स० १७११ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० ७२७ ।

विशेष—श्री नन्दलाल अग्रवाल ने प्रतिलिपि कराई थी ।

स० १७११ वर्षे आश्विनि मासे शुक्ल पक्षे गुरुवासरे श्री अकब्बराबाद मध्ये पातशाह श्री शाहे जहान विजय राज्ये श्वेताम्बर ग्रासीदासेन अग्रवाल ज्ञातीय साह श्री नन्दलाल पठनार्थ । स० १७६१ शाह छाजूराम बज के पठनार्थ खरीदी थी ।

ग्रन्थ की ४ प्रतिया और हैं ।

२७२. **प्रवचनसार भाषा—वृन्दावन** । पत्र संख्या–१५३ । साइज–१३X७½ इन्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । रचना काल–स० १६०५ वैसाख सुदी ३ । लेखन काल–सं० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन न० ७२६ ।

विशेष—हीरालाल गगवाल ने लश्कर नगर मे प्रतिलिपि कराई थी ।

२७३. **मृत्युमहोत्सव भाषा—दुलीचन्द** । पत्र सख्या–१५ । साइज–१२X७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन न० ५३८ ।

२७४. **योगसार—योगीन्द्र देव** । पत्र सख्या– १३ । साइज–११X५½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–योग । रचना काल–X । लेखन काल–स० १६२१ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ५६ ।

२७५. प्रति नं० २—पत्र सख्या–१० । साइज–१०½X७½ इञ्च । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन न० ६१

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । गाथा स० १०८ । ४ प्रतियां और हैं ।

२७६. **योगसार भाषा—बुधजन** । पत्र सख्या–८ । साइज–१०X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–स० १८६५ । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन न० ३८२ ।

२७७ **योगीरासा—पाण्डे जिनदास** । पत्र संख्या–३ । साइज–१३½X५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन न० ११०४ ।

२७८. **वैराग्य पच्चीसी—भैया भगवतीदास**। पत्र सख्या-४ । साइज-७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-स० १७५० । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५५६ ।

२७९. **वैराग्य शतक** । पत्र सख्या-११ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१९ वैसाख सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १४४ ।

विशेष—जयपुर में नाथूराम के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी । गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । १०३ गाथायें हैं ।

प्रारम्भिक गाथा निम्न प्रकार है —

ससारमि असारे णत्थि सुह वाहि वेयणापउरे ।

जाणतो इह जीवो णऊणइ जिणदेसिय धम्मं ॥१॥

२८०. **षट्पाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य**। पत्र सख्या-६२ । साइज-६¾×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७३६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ६२ ।

विशेष—साह काशीदास आगरे वाले ने स्वपठनार्थ धर्मपुरा में प्रतिलिपि की । अक्षर सुन्दर एवं मोटे हैं । एक पत्र में ४-५ पंक्तियां हैं ।

२८१. प्रति नं० २—पत्र सख्या-३४ । साइज-११×५ इञ्च । लेखन काल-स० १७४४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६ ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । ग्रन्थ की २ प्रतियाँ और हैं ।

२८२. **समयसार कलशा—अमृतचन्द्राचार्य**। पत्र संख्या-४५ । साइज-११¾×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०२ श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

विशेष—सस्कृत में कहीं २ संकेत दिये हुए हैं । ग्रन्थ की दो प्रतिया और हैं ।

२८३. **समयसार टीका—अमृतचन्द्राचार्य**। पत्र सख्या-६८ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७८८ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—संवत्सरे वसुनागमुनींदुमिते १७८८ माद्रपद मासे शुक्ल पक्षे चतुर्दशी तिथौ ईसरदा नगरे राज्ये श्री अजितसिंहजी राज्य प्रवर्तमाने श्री चन्द्रप्रभुचैत्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये अंवावत्या: भट्टारकजित श्रीसुरेन्द्रकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीजित् श्रीजगतकीर्ति तत्पट्टस्थ: स्वगांभीर्यक्षमागुणनिर्जितसागरेलादि पदार्थ स्वपक्षातारितागमाविधे भ० शिरोमणि भट्टारक जित श्री १०८ श्रीमद्देवेन्द्रकीर्तिस्तैनेयं समयसारटीका स्वशिष्य मनोहर कथनार्थं पठनाय

तत्वबोधिनी सुगम निजबुद्धया पूर्व टीकामवलोक्य विहिता । बुद्धिमद्भि. बोधनीया प्रमादात् वा अल्पबुद्धया पत्रहीनाधिक मत्र भवेत तत् शोधनीय पाचनेय कृता मया किं बहुकथनेन वाचकानां पाठकानां मंगलावली समवो भवेत् श्री जिनप्रभप्रभक्तो ।

२८४ प्रति न० २—पत्र सख्या—१२७ । साइज—१२×६ इच । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२ ।

विशेष—सघ ही दीवान श्योजीराम ने अपने पुत्र कुंवर अमरचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी । श्योजीराम दीवान के मदिर जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

२८५. प्रति न० ३—पत्र सख्या—१६ । साइज—१३×७ इञ्च । लेखन काल—स० १८६६ आसोज सुदी ४ पूर्ण । वेष्टन न० ४५ ।

विशेष—सघही दीवान अमरचन्द पठनार्थ पिरागदास महुआ के ने प्रतिलिपि की ।

२८६ प्रति न० ४—पत्र सख्या—१०० । साइज—१२×५½ इच । लेखन काल—शक स० १८०० । पूर्ण । वेष्टन न० ४७ ।

विशेष—स० ख ख वसुइन्दुमिते वर्षे शाके माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ द्वितीयायां गुरुवारे अनेकवनवापीकूप-तडाग जिनचैत्यालयादि विराजमाने बहुविख्याते सकलनगरग्राम मट वादीनां शेखरीभूते पाति साह श्री मुहम्मदशाह तत् सेवक महाराजाधिराज महाराजा श्रीईश्वरसिंहराजय प्रवर्तमाने सवाईजैपुरनामनगरे तत्र श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये सोनी गोत्रे साह श्री प्रागदास जी कारापिते । श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कार गणे सरस्वति गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकजित श्री १०८ श्री महेन्द्रकीर्तिजी तस्य शासनधारी ब्रह्म श्री अमरचन्द्रस्तत् शिष्य प० श्री जयमल्लस्तत् शिष्य प० मनोहरदास तत् शिष्य प० श्री छीतमलस्तत् शिष्य प० श्री हीरानन्दस्तत् शिष्य गुणगरिष्ट बुद्धिवरिष्ट सकलतर्क मीमांसा अष्टसहस्री प्रमुखादीगुणानां व्याख्याने निपुण पडितोत्तम पडित जितश्रीचोखचन्द्रजीकस्य शिष्य सुखरामेण स्वशयेन स्वपठनार्थं ज्ञानावरणीकर्मक्षयर्थं लिपिकृता ।

२८७. प्रति न० ५—पत्र संख्या—३१ । साइज—१०×४½ इञ्च । लेखन काल—सं० १७२१ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

विशेष—सा० जोधराज ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२८८ **समयसार नाटक—बनारसीदास** । पत्र सख्या—१०८ । साइज—१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—स० १६६३ । लेखन काल—स० १८६७ श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७४८

२८९. प्रति न० २—पत्र सख्या—१६४ । साइज—८½×५½ इच । लेखन काल—स० १७०० कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७५६ ।

विशेष—श्रीमानुसास्म पठनार्थं लिखित । आमेर में प्रतिलिपि हुई । १४२ पत्र के आगे बनारसीदास कृत अन्य पाठ है । (गुटका)

२६० प्रति न० ३—पत्र सख्या–७६ । साइज–११३/४X४१/२ इच । लेखन काल–स० १७०३ सावन सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६७ ।

विशेष—सवत् १७०३ वर्षे श्रावणसितचतुर्दशीतिथौ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुदाचार्यान्वये भ० श्री चद्रकीत्तिजी भ० श्री नरेन्द्रकीर्त्तिजी तदाम्नाये सेव्या गोत्रे साह महेस भार्या धर्मा तया इदं समयसार नाम नाटक लिख्य आचार्य श्री सकलकीर्त्तिये प्रदत्तं ।

विशेष—समयसार नाटक की भण्डार में १६ प्रतिया और हैं ।

२६१. समयसार भाषा—राजमल्ल । पत्र सख्या–२६६ । साइज–११X५१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–अध्यात्म । रचना काल–X । लेखन काल–स० १७४३ पौष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६४ ।

विशेष—इति श्री समयसार टीका राजमल्लि भाषा समाप्तेय ।

२६२ प्रति न० २—पत्र सख्या–२७५ । साइज–११X८ इञ्च । लेखन काल–स० १७५८ अषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६६ ।

२६३. प्रति न० ३—पत्र सख्या–२०२ । साइज–१२X६ इञ्च । लेखन काल–स० १८२० । पूर्ण । वेष्टन न० ८१३ ।

विशेष—नैणसागर ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पुट्ठे पर बहुत सुन्दर वेल बूटे हैं ।

२६४ समयसार भाषा—जयचन्द छावडा । पत्र सख्या–३२० । साइज–१०३/४X७१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–स० १८६४ । लेखन काल–सं० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२० ।

२६५ समाधितत्र भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सख्या–१२० । साइज–१०X५१/२ इञ्च । भाषा–गुजराती । विषय–योग । रचना काल–X । लेखन काल–स० १७६३ कातिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७८६ ।

विशेष—६ प्रतियां और हैं । ग्रंथ की लिपि देवनागरी है ।

२६६ समाधितन्त्र भाषा । पत्र सख्या–१७२ । साइज–११X७१/२ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–योग । रचना काल–X । लेखन काल–स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन न० ८४६ ।

विशेष—चाकसू में लिपि हुई थी ।

२६७ समाधितत्र भाषा । पत्र सख्या–२० । साइज–११X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–योग । रचना काल–X । लेखन काल–स० १६३६ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६६ ।

२६८ समाधिमरण । पत्र सख्या–२८ । साइज–८X७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन न० ११३४ ।

२९९. समाधिमरण । पत्र संख्या–१६ । साइज–११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८७ ।

३००. समाधिमरण भाषा । पत्र संख्या–२० । साइज–६½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८३४ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८८ ।

३०१ समाधिमरण भाषा । पत्र संख्या–१६ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७५ ।

३०२. समाधिशतक—आ० समन्तभद्र । पत्र संख्या–१३ । साइज–१२½×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४६ ।

विशेष—हिन्दी में पद्यों पर अर्थ दिया हुआ है ।

३०३. स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामीकार्त्तिकेय । पत्र संख्या–२८७ । साइज–१२×५½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—प्रति भ० शुभचन्द्रकृत टीका सहित है । टीका संस्कृत में है । ग्रंथ की ३ प्रतियां और हैं ।

३०४. स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र संख्या–१५० । साइज–११×५ इञ्च । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १८८३ श्रावण बुदी ३ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०३ ।

३०५. प्रति नं० २—पत्र संख्या–११६ । साइज–१०×७½ इञ्च । लेखन काल–सं० १८६३ श्रावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०४ ।

विषय–न्याय एवं दर्शन शास्त्र

३०६. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र संख्या–२६७ । साइज–११½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय शास्त्र । रचनाकाल–× । लेखन काल–सं० १९२७ चैत्र बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३ ।

विशेष—जयपुर में घासीलाल शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

३०७. तर्कसंग्रह—अन्नभट्ट । पत्र संख्या–५ । साइज–११×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५१ ।

विशेष—सांगानेर में पं० नगराज ने प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ की एक प्रति और है।

३०८. **देवागमस्तोत्र—समंतभद्र**। पत्र सख्या–११। साइज–६३/४×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–न्याय शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० २८७।

विशेष—एक प्रति और है।

३०९. **देवागमस्तोत्र भाषा—जयचन्द्र छाबडा**। पत्र सख्या–८४। साइज–११×५१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–न्याय शास्त्र। रचना काल–सं० १८६६ चैत्र बुदी १४। लेखन काल–स० १९८४ पौष बुदी १५। पूर्ण। वेष्टन न० ४९१।

३१०. **नयचक्र भाषा—हेमराज**। पत्र सख्या–१७। साइज–१०३/४×४३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल–स० १७२६। लेखन काल–सं० १८६३। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८३।

३११. **न्यायदीपिका—यति धर्म भूषण**। पत्र सख्या–३७। साइज–११×५१/२ इन्च। भाषा–सस्कृत। विषय–न्याय शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०१।

विशेष—ग्रन्थ की एक प्रति और है।

३१ . **न्यायदीपिका भाषा—पन्नालाल**। पत्र संख्या–१०२। साइज–१२×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–न्याय शास्त्र। रचनाकाल–स० १९३५ मगसिर सुदी ६। लेखन काल- ×। पूर्ण। वेष्टन न० ३९८।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति का अन्तिम भाग निम्न प्रकार है:—

अन्तिम पाठ—

> आर्य क्षेत्र मधि ढूंढाहड़ में जयपुर अदभुत नगर महा।
> ताके अधिपति नीति नुपण अति रामसिंह नृप नाम कहा॥
> मंत्री पद में रायबहादुरजीवनसिंह सुनाम लहा।
> ताको गृह मति संघी भावह पन्नालाल सु धर्म चहा॥
> श्रावक धर्म्मी उत्तम कर्म्मा, है मर्मी जिन वचनन के।
> नाम सदासुख नाशित सब दुख दोष मिटावन के॥
> तास निकट जिन श्रुत निति प्रति सुनत सुनत मन समता पाय।
> न्याय शास्त्र को रहिस ग्रहण हित न्यायदीपिका हमें पढाय॥
> तास वचनिका विशद करन कौं आनद हृदय पढायो है।
> करी वीनती त्रिभुवन गुरू तैं अर्थ समस्त लखायो है॥
> फतेलाल जित पंडित वर अति धर्म प्रीति को धारक है।
> शब्दागम तैं तथा न्याय तैं अर्थ समर्थन कारक है॥

तिनके निकट विशद फुनि कीनी, अर्थ विभ्रम निवारन कों।
करी वचनिका स्व पर हित कों पढौ भव्य भ्रम टारन कों ॥
विक्रम नृप के उगणीसै पर तीस पांच सत चीना है।
मगसिर शुक्ला नवमी शशि दिन ग्रन्थ सम्पूरन कीना है ॥

चोपई—श्री जिन सिद्ध सूरि उवझाय सर्व साधु हे मंगलदाय।
तिनके चरण कमल उरलाय, नमन करें निति शीश नवाय ॥

३१३ परीक्षामुख—आचार्य माणिक्यनंदि । पत्र संख्या–७ । साइज–१०×८३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८ ।

३१४. परीक्षामुख भाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र संख्या–११७ । साइज–१०½×७½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–दर्शन । रचना काल–सं० १८६३ श्रावण सुदी ७ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

३१५. प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य । पत्र संख्या ४५ । साइज–११×८ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८ ।

विशेष—माणिक्यनंदि कृत परीक्षामुख की टीका है ।

३१६ मितिभाषिणीटीका—शिवादित्य । पत्र संख्या–१७ । साइज–१०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण वेष्टन नं० १४३ ।

विशेष— प्रति प्राचीन है ।
प्रारम्भ का दूसरा पद्य.—

विघ्नेशादीन् नमस्कृत्य माधवार्य प्रसन्नवत्ती ।
शिवादित्यकृते टीकां करोति मितभाषिणि ॥२॥

३१७ सप्तपदार्थी—श्रीभावविद्येश्वर । पत्र संख्या–८ । साइज १०½×४ । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६८३ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४३ ।

विशेष—पं० हर्ष ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

अंतिम —यमनियमस्वाध्यायधारणासमाधियोगी मयानयनपाशुपताचार्य श्री भावविद्येश्वरविरचिता वाग्विद्याविलासविचित्रवाग्वस्वार्थपरायचमत्कार पाश्वर्यमया परापरन्यायवैशेषिकमहाशास्त्रसमुद्धरणशालिन विरचिता सप्तपदार्थी समाप्ता ॥

३१८ स्याद्वादमंजरी—मल्लिषेण । पत्र संख्या–३४ । साइज–१३×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४० ।

३१६. स्याद्वादमंजरी—मल्लिषेण । पत्र सख्या-५६ । साइज-१०×४½ । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । टीका काल-शक सं० १२१४ । लेखन काल-सं० १७६७ माह सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७१ ।

विशेष—उदयपुर में प्रतिलिपि हुई । मल्लिषेण उदयप्रभसूरि के शिष्य थे ।

विषय—पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान

३२०. अकृत्रिम चैत्यालयपूजा—चैनसुख । पत्र सख्या-६४ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १६३० । लेखन काल-स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७८ ।

विशेष—पूजा की एक प्रति और है ।

३२१. अकृत्रिमचैत्यालयपूजा—प० जिनदास । पत्र सख्या-३६ । साइज-८½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन न० ८८६ ।

विशेष—लक्ष्मीसागर के शिष्य पं० जिनदास ने रचना की थी ।

३२२. अकृत्रिमचैत्यालयपूजा ... । पत्र संख्या-१२३ । साइज-१२½×८½ इंच । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× ।लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७२ ।

३२३. अढाईद्वीपपूजा—डालूराम । पत्र सख्या-१२४ । साइज-१२×८ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८५६ । लेखन काल-स० १६८७ । पूर्ण । वेष्टन न० ४७३ ।

विशेष—ग्रंथ का मूल्य पन्द्रह रुपया साढे पांच आना लिखा हुआ है ।

३२४. अढाईद्वीपपूजा ... । पत्र सख्या-३१६ । साइज-१०½×५ इच । भाषा-सस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५२ । फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२७ ।

विशेष—ग्रंथ के पुट्ठे पर १२ तीर्थंकरों के चिन्हों के चित्र है । चित्र सुन्दर है ।

३२५. अढाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण । पत्र सख्या-१०६ । साइज-१०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०६ श्रावण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१५ ।

३२६. अकुरारोपणविधि—इन्द्रनन्दि । पत्र संख्या-६१ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८१ ।

३२७. अभिषेकपाठ .... । पत्र संख्या-३१ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८८ ।

३२८. अष्टाह्निकापूजा ... । पत्र संख्या-२५ । साइज १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७६ ।

३२६. अष्टाह्निकापूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-२३ से ३० । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३० ।

विशेष—१—२२ तक के पत्र नहीं हैं ।

३३०. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा । पत्र संख्या-१८ । साइज-११×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३६ ।

३३१. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४८ ।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी में दर्शन पाठ है ।

३३२. आदिनाथपूजा—पत्र संख्या-७ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३३ ।

३३३. इन्द्रध्वजपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र संख्या-२४ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३२५ ।

विशेष—रूचिकगिरि उत्तर दिगचैत्यालय की पूजा तक पाठ है ।

३३४. कमलचन्द्रायणव्रतपूजा । पत्र संख्या-३ । साइज-१३×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५६ ।

३३५ कर्मदहनपूजा । पत्र संख्या-१५ । साइज-६×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५६ ।

३३६. कर्मदहनपूजा । पत्र संख्या-२० । साइज-८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०७ ।

३३७ कर्मदहनपूजा । पत्र संख्या-५२ । साइज-१३×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७४ ।

३३८. कर्मदहनपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-२७ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-सं० १६३६। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६०।

विशेष—इस पूजा की ५ प्रतियां और हैं।

३३६. कर्मदहनपूजा · · । पत्र सख्या-१५। साइज-१०×५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ३५०।

३४०. कर्मदहनव्रतपूजा · । पत्र सख्या-११। साइज-१०½×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-सं० १६३४। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६२।

विशेष—पूजा मन्त्र सहित है। एक प्रति और है।

३४१. कर्मदहनव्रतमत्र · । पत्र संख्या-१०। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-स० १६३५। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६१।

३४२. गणधरवलयपूजा—सकलकीर्ति। पत्र सख्या-६। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ३२४।

३४३ गिरनारक्षेत्रपूजा · · ·। पत्र सख्या-४६। साइज-१०½×८ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-स० १६३८। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४६।

विशेष—प्रतिलिपि कराने में तीन रुपये साढे पाच आने लगे थे ऐसा लिखा हुआ है।

३४४. चतुर्विंशतिजिनपूजा · । पत्र सख्या-११३। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४०।

३४५ चतुर्विंशतिजिनकल्याणकपूजा—जयकीर्ति। पत्र सख्या-५३। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-स० १६८४ चैत्र सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४१।

विशेष—सं० १६८४ वर्षे चैत सुदी ७ सोमे वहली नगरे श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमत्काष्ठासंघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री रत्नभूषण, भ० श्री जयकीर्ति, आचार्य श्री नरेन्द्रकीर्ति, उपाध्याय श्री नेमकीर्ति, ब्र० श्री कृष्णदास, पूरकमल ब्रह्म श्री हरिजी ब्र० वर्द्धमान, ब्र० वीरजी, प० रहीदास लिखितं

३४६. चतुर्विंशतिजिनपूजा—वृन्दावन। पत्र संख्या-६६। साइज-११×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-स० १६३५। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१८।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

३४७. चतुर्विंशतिजिनपूजा—सेवाराम। पत्र संख्या-६२। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा। रचना काल-सं० १८५४। लेखन काल-X। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४१६।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है। २ प्रतियां और हैं।

३४८. चतुर्विंशतिजिनपूजा—रामचन्द्र। पत्र संख्या-६१। साइज-११×६३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२०।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं।

३४९. चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा। पत्र संख्या-४५। साइज-१०१/२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३३८।

३५०. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा। पत्र संख्या-४। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २७७।

३५१ चतुर्विधसिद्धचक्रपूजा—भानुकीर्त्ति। पत्र संख्या-११६। साइज-७१/२×६३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६३०। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३२।

विशेष—वृहद् पूजा है। ग्रन्थकार तथा लेखक दोनों की प्रशस्ति हैं।

भ० भानुकीर्ति ने साधु तिहुणपाल के निमित्त पूजा की रचना की थी। साधु तिहुणपाल ने ही इस पूजा की प्रतिलिपि करवायी थी।

३५२. चारित्रशुद्धिविधान—भ० शुभचन्द्र। पत्र संख्या-६४। साइज ११३/४×५। भाषा-संस्कृत। विषय-विधि विधान। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २६२।

विशेष—'१२३४ व्रतों का विधान' यह भी इस रचना का नाम है।

३५३. प्रति नं० २। पत्र संख्या-२ से ३५। साइज १०१/४×४१/२ इञ्च। लेखन काल-सं० १५८४ कातिक बुदी ८। अपूर्ण। वेष्टन नं० ५१०।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। भाष्य दिये हुए हैं।

प्रशस्ति—संवत् १५८४ वर्षे कार्तिक बुदी अष्टमी वृहस्पतिवारे लिखित प० गोपाल कर्मक्षयार्थ पात्री (क्षत्री) क्षुल्लिकाबाई सोना पद्मा इद दत्तं श्री पार्श्वनाथचैत्यालये दुर्वलाणापत्तने।

३५४. चौवीसतीर्थंकरजयमाल—पत्र संख्या-८। साइज-१३×५। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६५७ वैसाख सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० ११४६।

३५५. चौसठऋद्धिपूजा—स्वरूपचन्द। पत्र संख्या-३३। साइज-१२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १९१० श्रावण सुदी ७। लेखन काल-सं १९६६। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१२।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

३५६. **जलगालनक्रिया—ब्रह्म गुलाल** । पत्र संख्या-५ । साइज-८×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१६ वैसाख बुदी । पूर्ण । वेष्टन नं० १००६ ।

विशेष—रूडमल मोंसा ने नारनोल में प्रतिलिपि की थी ।

३५७ **जिनसहस्रनामपूजा—धर्मभूषण** । पत्र संख्या-६३ । साइज-११×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२६ ।

३५८. **जिनसहस्रनामपूजा भाषा—स्वरूपचन्द बिलाला** । पत्र संख्या-८२ । साइज-११×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६१६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८१ ।

३५६. **जिनसंहिता**—पत्र संख्या-७ । साइज-१०½×४¾ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५६० सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६५ ।

विशेष—संवत् १५६० वर्षे श्रावण सुदी ५ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा: तत्पट्टे म० शुभचन्द्रदेवा: तत्पट्टे म० जिनचन्द्रदेवा: तत् शिष्य मुनि श्री रत्नकीर्त्ति मुनि श्री हेमचन्द्र तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सेठी गोत्रे सा० ताल्ह भार्या पदी तत्पुत्र साह जील्हा भार्या सुहागिणि इदं शास्त्रं सत्पात्राय दत्तं । इति जिन संहितायां विमानहोम शान्तिहोम गृहहोम विधि समाप्तमिति ।

नवीन गृह प्रवेश आदि के अवसर पर होम विधि आदि दी हुई है ।

३६०. **तीनलोक पूजा—टेकचन्द** । पत्र संख्या-४०४ । साइज-१२×११½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२८ सावन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६८ ।

विशेष—ग्रन्थ का मूल्य २७।) लिखा है ।

३६१. **तीसचौवीसीपूजा भाषा—वृन्दावन** । पत्र संख्या-८५ । साइज-१२½×८½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८७६ माघ सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४११ ।

३६२. **तीसचौबीसीपूजा भाषा** " " । पत्र संख्या-५ । साइज-१२×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६०८ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१० ।

विशेष—लघु पूजा है ।

३६३. **तेरहद्वीपपूजा** । पत्र संख्या-४२ । साइज-११½×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६१६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१७ ।

३६४. **दशलक्षणजयमाल—रइधू** । पत्र संख्या-८ । साइज-६½×५ इन्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७ ।

विशेष—संस्कृत में अर्थ दिया हुआ है। तीन प्रतियां और हैं।

३६५. दशलक्षणजयमाल—भाव शर्मा। पत्र संख्या-६। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४५।

विशेष—एक प्रति और है।

३६६. दशलक्षणजयमाल । पत्र संख्या-२। साइज-११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८१।

३६७. दशलक्षणपूजा—सुमतिसागर। पत्र संख्या-११। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७१६। पूर्ण। वेष्टन नं० २४७।

३६८. दशलक्षणपूजा । पत्र संख्या-१४। साइज-११½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३०।

विशेष—पूजा में केवल जल चढाने का मंत्र प्रत्येक स्थान पर दिया है। अन्त में ब्रह्मचर्य धर्म वर्णन की जयमाल में आचार्यों का नाम भी दिया गया है।

३६९ दशलक्षणव्रतोद्यापन पूजा । पत्र संख्या-३७। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १९२६। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४८।

३७० द्वादशांगपूजा । पत्र संख्या-६। साइज-७×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ११४३।

३७१. देवगुरूपूजा । पत्र संख्या-३। साइज-१३×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११८७।

३७२ देवपूजा । पत्र संख्या-७। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८४।

३७३. देवपूजा । पत्र संख्या-२ से १४। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५२।

३७४. देवपूजा । पत्र संख्या-८। साइज-१२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८३६।

३७५. देवपूजा । पत्र संख्या-५। साइज-९½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८८२।

३७६. देवपूजा · · । पत्र सख्या–७ । साइज–१०½×५ इश्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८३ ।

३७७. देवपूजा · · · । पत्र सख्या–५ । साइज–६×४½ इश्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८४ ।

३७८. धर्मचक्रपूजा—यशोनंदि । पत्र सख्या–२३ । साइज–१०½×४½ इश्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२६ ।

विशेष—प० खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३७९. नन्दीश्वरपूजा · । पत्र सख्या–२ । साइज–११×४ इश्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४२ ।

विशेष—जयमाला प्राकृत भाषा में है ।

३८०. नन्दीश्वर उद्यापन पूजा · । पत्र सख्या–६ । साइज ११½×७ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८३४ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४३ ।

विशेष—पत्रों के चारों ओर सुन्दर वेलें हैं ।

३८१. नन्दीश्वरजयमाल टीका ·· ·····। पत्र सख्या–११ । साइज–६×४½ इन्च । भाषा–प्राकृत हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८४१ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४६

विशेष—श्री अमीचन्द ने जोबनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

३८२. नन्दीश्वरविधान · · । पत्र संख्या–२३ । साइज–१०×७ इश्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचनाकाल–× । लेखन काल– सं० १६०६ अषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०४ ।

विशेष—विजैलाल लुहाडिया ने प्रतिलिपि कर बधीचन्दजी के मन्दिर चढ़ाई थी ।

३८३. नन्दीश्वरव्रतविधान · । पत्र सख्या–५० । साइज–११½×१२ इश्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०० ।

विशेष—पूजा का नाम पञ्चमेरू पूजा भी है ।

३८४. नवग्रहनिवारणजिनपूजा ··· । पत्र सख्या–७ । साइज–७½×७½ इश्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६७ ।

३८५. नांदीमंगलविधान · · । पत्र संख्या–२ । साइज–११×६ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । रचनाकाल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६१ ।

३८६. नित्यपूजासंग्रह ।　पत्र संख्या–११८ । साइज–११½×५½ इंच । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६२१ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

३८७. नित्यपूजा　। पत्र संख्या–४१ । साइज–१०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०६ ।

३८८. नित्यपूजा　। पत्र संख्या–३७ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०७ ।

विशेष—प्रतिदिन की जाने वाली पूजाओं का संग्रह है ।

३८९. नित्यपूजा　। पत्र संख्या–२१ । साइज–१३×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३५ ।

३९० नित्यपूजापाठ　। पत्र संख्या–३० । साइज–६¾×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १९५९ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७० ।

३९१ नित्यपूजासंग्रह　। पत्र संख्या–३१ । साइज–११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५६ ।

३९२. निर्वाणपूजा　। पत्र संख्या–२ । साइज–९×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२८ ।

३९३. निर्वाणक्षेत्रपूजा　। पत्र संख्या–२२ । साइज–१०½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४५ ।

३९४. निर्वाणक्षेत्रपूजा–स्वरूपचन्द । पत्र संख्या–३३ । साइज–१२½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–सं० १९१९ कार्तिक सुदि १३ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४६ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

३९५. पद्मावतीपूजा　। पत्र संख्या–८ । साइज–१०×३½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५० ।

३९६. पंचकल्याणकपूजा—पं० जिनदास । पत्र संख्या–५३ । साइज–१२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–सं० १६४२ फागुण सुदी ५ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४० ।

३९७. पंचकल्याणकपूजा—सुधासागर । पत्र संख्या–२६ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत ।

विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६४ ।

३६८. पचकल्याणकपूजा— पत्र सख्या-३६ । साइज-११×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १६२६ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६७ ।

३६६. पचकुमारपूजा—जवाहरलाल । पत्र संख्या-३ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६४ ।

४००. पंचपरमेष्ठीपूजा—यशोनन्दि । पत्र सख्या ११४ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५१ ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं ।

४०१. पंचपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र सख्या-३५ । साइज-१०×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १८६० । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४५३ ।

विशेष—महात्मा सदासुखजी ने माधोराजपुरा में प्रतिलिपि की थी । पूजा की ६ प्रतियां और हैं ।

४०२. पंचमंगलपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-२१ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५८ ।

४०३. पचमेरुपूजा—टेकचन्द । पत्र सख्या-४३ । साइज-११×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १६२० । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७७ ।

४०४. पचमेरुपूजा—भूधरदास । पत्र संख्या-४ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६६ ।

विशेष—धानतराय कृत अष्टाह्निका पूजा भी है ।

४०५. प्रतिष्ठासारसंग्रह—वसुनंदि । पत्र संख्या-१३५ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१६ ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । ग्रन्थ का आरम्भिक भाग निम्न प्रकार है—

आरम्भ —विधानुवादसत्सूत्राद्वाग्देवीकल्पतस्तथा ।

चन्द्रप्रज्ञप्तिसंज्ञाच्च सूर्यप्रज्ञप्तिम् यतः ॥४॥

तथा महापुराणार्थाँ छ्रावकाध्ययनश्रुतात् ।

सार संगृह्य वक्ष्येहं प्रतिष्ठासार संग्रहे ॥५॥

इ वसुनंदि नामा आचार्य हू सो प्रतिष्ठासार संग्रह नामा जो ग्रंथ ताहि कहूं गो—कहा करिकै सिद्ध अरिहंत

शेस जो वर्द्धमान पर्यन्त जिन प्रवचन कहता शास्त्र गुरु कहता सर्व साधु यातैं नमस्कार करि कै कैसे छईं वे सिद्ध, सिद्ध भयो है आत्म स्वरूप जिनकै ' .....।

४०६. पल्यविधानपूजा—रत्ननंदि । पत्र संख्या-६ । साइज-१३×६½ इन्च । भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३१ ।

विशेष—पूजा की एक प्रति और है।

४०७. पार्श्वनाथ पूजा ' । पत्र संख्या-३ । साइज-१३×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११४१ ।

४०८. पुष्पांजलिव्रतोद्यापन । पत्र संख्या-११ । साइज-६×६½ इन्च । भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५४२ ।

विशेष—वृहत् पूजा हैं।

४०९ पूजनक्रियावर्णन—बाबा दुलीचन्द । पत्र संख्या-३० । साइज-१२×७½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५१८ ।

४१०. पूजासग्रह । पत्र सख्या-१०० । साइज-७½×५½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०६६ ।

विशेष—चतुर्विंशति तथा अन्य नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है। पूजा सग्रह की तीन प्रतियां और है।

४११. पूजासंग्रह ' । पत्र संख्या-३८ । साइज-१२×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६०२ ।

विशेष—इसमें देव पूजा तथा सरस्वती पूजा है।

४१२. पूजासंग्रह ' । पत्र सख्या-६ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१४ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा, दशलक्षण, रत्नत्रय, सोलहकारण, पचमेरु तथा नन्दीश्वर द्वीप पूजाएं है। पूजा सग्रह की ४ प्रतियां और है।

४१३. पूजासंग्रह '' ''। पत्र सख्या-२७१ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३१७ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक ३७ पूजाएं तथा निम्न पाठ है—

(१) तत्वार्थ सूत्र (२) स्वयभू स्तोत्र (३) सहस्रनामस्तोत्र ।

४१४. पूजा संग्रह । पत्र संख्या-३३ । साइज-१३×६३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३२ ।

विशेष—इसमें पल्यविधान, सोलहकारण, कजिका व्रतोद्यापन आदि पूजायें है ।

४१५. पूजासंग्रह । पत्र संख्या-२६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३७ ।

सुखसंपत्तिपूजा, जिनगुणसंपत्तिपूजा, लघुमुक्तावलीपूजा का संग्रह है ।

४१६. २ क्कामरपूजा—उद्यापन—श्री भूषण । पत्र संख्या-२४ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७८ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४६ ।

४१७. रत्नत्रयजयमाल । पत्र संख्या-२ । साइज-१२×५१/२ इंच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८७ ।

४१८. रत्नत्रयजयमाल । पत्र संख्या-३ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६८ ।

४१९. रत्नत्रयपूजा । पत्र संख्या-१० । साइज-११×६१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२१ ।

४२०. रत्नत्रयपूजा । पत्र संख्या-५ । साइज-१०३/४×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०४३ ।

४२१. रत्नत्रयपूजा भाषा—द्यानतराय । पत्र संख्या-२२ । साइज-११×५३/४ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

४२२. रत्नत्रयपूजा भाषा । पत्र संख्या-३६ । साइज-११×७१/२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९३७ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१४ ।

४२३. रत्नत्रयपूजा भाषा—पत्र संख्या-३ से ५४ । साइज १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९३७ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं । एक प्रति और है किंतु वह भी अपूर्ण है ।

४२४. रोहिणीव्रतोद्यापन—कृष्णसेन तथा केसवसेन । पत्र संख्या-३१ । साइज-१०१/२×४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६३ ।

४२५. लब्धिविधानउद्यापनपूजा । पत्र संख्या–७ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३४ ।

४२६. बृहत्शांतिकविधान । पत्र संख्या–१३ । साइज–१०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-विधान । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १९११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४० ।

विशेष—मुन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४२७. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा । पत्र संख्या–७ । साइज–१०½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८९८ ।

४२८. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा—जौहरीलाल । पत्र संख्या–४६ । साइज–१४½×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–सं० १९४६ श्रावण सुदी १४ । लेखन काल–स० १९७१ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०८ ।

४२९ विमलनाथपूजा । पत्र संख्या–१ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६२ ।

४३०. विमलनाथपूजा । पत्र संख्या–११ । साइज–१०½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६८ ।

४३१ शांतिचक्रपूजा । पत्र संख्या–३ । साइज– १३×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८५ ।

४३२. शास्त्रपूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या–३ । साइज–१३×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६२ ।

४३३. श्रुतोद्यापनपूजा । पत्र संख्या–८ । साइज–१०½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१५ ।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है ।

४३४. षोडशकारणमंडलपूजा—आचार्य केसवसेन । पत्र संख्या–५० । साइज–११×५ इञ्च । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८७८ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३३ ।

४३५. षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा—ब्र० ज्ञानसागर । पत्र संख्या–३२ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३४ ।

४३६ षोडशकारणजयमाल । पत्र संख्या–१०८ । साइज–११×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी ।

विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७७।

विशेष—रत्नत्रयजयमाल (नथमल) तथा दशलक्षणजयमाल भी हैं।

४३७. षोडशकारणजयमाल—रइधू। पत्र संख्या-२२। साइज-११X५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। रचना काल-X। लेखन काल-सं० १८७६ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ५।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने इसी मन्दिर में प्रतिलिपि की थी। गाथाओं पर संस्कृत में उल्था दिया हुआ है। एक प्रति और है।

४३८. षोडशकारणजयमाल ...... । पत्र संख्या-७। साइज-१०½X५ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३४।

विशेष—रत्नत्रय तथा दशलक्षण जयमाल भी है।

४३९. षोडशकारणजयमाल । पत्र संख्या-२०। साइज-१०½X४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ३३०।

विशेष—दो प्रतियां और हैं।

४४०. षोडशकारणपूजा ...... । पत्र संख्या-१६। साइज-११X७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन न० ३३६।

४४१. षोडशकारणपूजा । पत्र संख्या-२। साइज-११½X५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन न० ४८२।

विशेष—प्रति एक और है।

४४२. सम्मेदशिखरपूजा—रामचन्द्र। पत्र संख्या-७। साइज-११½X५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ५७१।

४४३. सम्मेदशिखरपूजा ...... । पत्र संख्या-३१। साइज-८½X६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-सं० १९२४। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४२।

४४४. सरस्वतीपूजा ...... । पत्र संख्या-१०। साइज-५X१० इच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन न० ११२३।

विशेष—अन्य पूजाएँ भी हैं।

४४५. सरस्वतीपूजा भाषा—पन्नालाल। पत्र संख्या-६। साइज-१४X८½ इञ्च। भाषा-हिन्दी।

विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६२१ ज्येष्ठ सुदी ५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०६ ।

४४६. सहस्रगुणपूजा—भ० धर्मकीर्ति । पत्र संख्या-७३ । साइज-११½X५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७६५ वैसाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४८ ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४४७. सहस्रनामगुणितपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र संख्या-१०४ । साइज-८X५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७१० कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२८ ।

४४८. सिद्धचक्रपूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-६ । साइज-१२X५½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४४९. सुगन्धदशमीपूजा । पत्र संख्या-८ । साइज-१२X६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२६ ।

४५०. सोलहकारणपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-७० । साइज-१२X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १९३५ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५८ ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

४५१. सोलहकारणपूजा .... । पत्र संख्या-१३ । साइज-११X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३५ ।

विशेष—द्यानतराय कृत रत्नत्रय, दशलक्षण, पञ्चमेरु तथा अढाई द्वीप की पूजा भी है ।

४५२. सोलहकारणपूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-५ । साइज-६X६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

विशेष—दशलक्षण पूजा भी है ।

४५३ सोलहकारण भावना ...... । पत्र संख्या-१४ । साइज-११X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२७ ।

४५४. सोलहकारण जयमाल ..... । पत्र संख्या-२ । साइज-८X७ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचनाकाल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५७ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४५५. सोलहकारण विशेष पूजा । पत्र संख्या-१२ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३५ ।

४५६ सौख्यव्रतोद्यापन—अक्षयराम । पत्र संख्या-१४ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७४ ।

विशेष—जयपुर में श्योजीलालजी दीवान ने प्रतिलिपि कराई ।

विषय-पुराण साहित्य

४५७ आदिपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या-३४६ । साइज-१२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८६ मगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० १३३ ।

विशेष—तीन तरह की प्रतियों का मिश्रण है । आचार्य पद्मकीर्ति के शिष्य छाजू ने प्रतिलिपि की थी ।
एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४५८. आदिपुराण—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या-२०६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८३० आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० १३२ ।

विशेष—श्री मोतीराम लुहाड़िया ने प्रतिलिपि कराई थी । १ से १३१ तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं ।
एक प्रति और है ।

४५९. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-२४१ । साइज-१२×६ इञ्च । लेखन काल-सं० १६७९ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५३ ।

विशेष—चपावती (चाकसू) में प्रतिलिपि हुई थी ।

४६०. आदिपुराण भाषा—दौलतराम । पत्र संख्या-६०६ । साइज-१२×७ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । रचना काल-सं० १८२४ । लेखन काल-सं० १८५५ मंगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५१ ।

विशेष—४ प्रतियां और हैं लेकिन वे अपूर्ण हैं ।

४६१. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-२०१ से १३१० । साइज-१०½×७ इञ्च । लेखन काल-सं० १८२४ आसोज बुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७१३ ।

विशेष—प्रति स्वयं ग्रन्थकार के हाथ की लिखी हुई प्रतीति होती है, जगह जगह संशोधन हो रहा है ।

४६२. उत्तपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या-३२४ । साइज-१२X७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-१६.० । विषय-पुराण । रचनाकाल-X । लेखन काल X । पूर्ण । वेष्टन न० २५८ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

४६३. उत्तरपुराण—खुशालचन्द । पत्र सख्या-५४४ । साइज-१२$\frac{1}{2}$X६$\frac{1}{2}$इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-स: १७६६ । लेखन काल-सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६४२ ।

विशेष—दूसरी २ प्रतियां और हैं और वे दोनों ही पूर्ण हैं ।

४६४ नेमिनाथपुराण—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र सख्या-१७४ । साइज-११X४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६४४ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२८ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है । २ प्रतियां और हैं । ग्रन्थ का दूसरा नाम हरिवंश पुराण भी है ।

४६५ पद्मपुराण भाषा—खुशालचन्द । पत्र सख्या-३४४ । साइज-१०$\frac{1}{2}$X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-सं० १७८३ । लेखन काल-स० १८५० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६३ ।

विशेष—एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४६६ पद्मपुराण भाषा—पं० दौलतराम । पत्र सख्या-२ से ४१७ । साइज-१५X६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिंदी । रचना काल-स० १८२३ । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ६४० ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं लेकिन वे भी अपूर्ण हैं ।

४६७. पाण्डवपुराण—बुलाकीदास । पत्र सख्या-२०२ । साइज-११X६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-स० १७५४ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४४ ।

विशेष—एक प्रति और लेकिन वह अपूर्ण है ।

४६८. पाण्डवपुराण—भ० शुभचन्द्र । पत्र सख्या-२६५ । साइज-११$\frac{1}{2}$X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-सं० १६०८ । लेखन काल-स० १७६७ वैशाख सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११८ ।

विशेष—हंसराज खंडेलवाल की स्त्री लाडी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाकर प० गोरधनदास को भेंट की थी ।

४६९. पुराणसारसंग्रह—भ० सकलकीर्ति । पत्र सख्या २११ । साइज-१२X५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८२३ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५६ ।

४७०. भरतराज दिग्विजय वर्णन भाषा—पत्र सख्या-५६ । साइज-१२X५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । रचना काल-X । लेखन काल-स० १७३८ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० ६८० ।

विशेष—जिनसेनाचार्य प्रणीत आदि पुराण के २६ वें पर्व का हिन्दी गद्य है। गद्य का उदाहरण निम्न प्रकार है।

हे देव तुम्हारा विहार कैं समय जाणु कर्म रूप वैरी को तर्जना कहतां दूर करतो संतो ऐसो महा उद्धत सबद करि दिसां का मुख पूरया है। जानै ऐसो परगट नगारा को टंकार सबद भगवान के विहार समय पग पग के विषै हो रहे। (पत्र सख्या ३३)

४७१. वद्ध मानपुराण भाषा—पं० केशरीसिंह। पत्र सख्या—२०३। साइज—११$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पुराण। रचना काल—सं० १८७३ फागुण सुदी १२। लेखन काल—स० १८७४ चैत बदी १४। अपूर्ण। वेष्टन न० ६७८।

विशेष—७५ से ६४ तक पत्र नहीं हैं। ग्रन्थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—जिनेशं विश्वनाथाय अनंतगुणसिंधवे।
धर्मचक्रभृते मूर्द्धा श्रीमहावीरस्वामिने नमः ॥१॥

श्री वद्ध मान स्वामी कू हमारो नमस्कार हो। कैसेक हैं वद्ध मान स्वामी गणधरादिक के ईस हैं, अर ससार के नाथ हैं अर अनन्त गुणन के समुद्र है, अर धर्म चक्र के धारक हैं।

गद्य का उदाहरण—

अहो या लोक विषै ते पुरुष धन्य हैं ज्यां पुरुष न का ध्यान विषै तिष्ठताचित्त उपसर्ग के सैकंडेन करिहू किंचित् मात्र ही विक्रिया कू नहीं प्राप्ति होय है ॥७॥ तहां पीछे वह रूद्र जिनराज कूं अचलाकृति जाणि करि लज्जायमान भयायका आप ही या प्रकार जिनराज की स्तुति करिवे कूं उद्यमी होता भया।

अन्तिम प्रशस्ति—

नगर सवाई जयपुर जानि ताकी महिमा अधिक प्रवानि।
जगतसिंह जहां राज करेह गोत कुछाहा सुन्दर देह ॥६॥
देस देस के आवे जहां, भांति भांति की वस्ती तहां।
जहां सरावग वसै अनेक कैईक कै घट मांही विवेक ॥७॥
तिन में गोत छावडा मांहि, बालचद दीवान कहांहि।
ताके पुत्र पांच गुणवान, तिन में दोय विख्यात महान् ॥८॥
जयचद रायचंद है नाम स्वामी धर्मवती कीने काम।
राजकाज में परम प्रवीन, सधर्म ध्यान में बुद्धि सुचीन ॥९॥
सघ चलाय प्रतिष्ठा करी, सब जग में कीर्ति विस्तरी।
और अधिक उत्सव करि कहा रामचंद संगही पद लहा ॥१०॥
[illegible]त दीवान जयचद के पांच, सबकी धरम करम में सांच।

तब रूचि उपजी यह मन माहि, वीर चरित की भाषा नांहि ॥१२॥
जो याकी अब भाषा होय, तौ यामै समुभै सहु कोय ।
यह विचार लखिकै बुधिवान, पंडित केशरीसिंह महान ॥१३॥
तिन प्रति यह प्रार्थना करी, याकी करो वचनिका खरी ।
तब तिन अर्थ कियो विस्तार, ग्रंथ संस्कृत के अनुसारी ॥१४॥
यह खरड़ो कीनी तब तिनै, ताकी महिमा को कवि भनै ।
पुनि व्याकरण बोध बुधिवान, वसतपाल साहवडा जान ॥१५॥
तानै याको सोधन कीन, मूलग्रंथ अधुसारि सुवीन ।
बुधि अनुसारि वचनिका भयी, ताकू गुरजन हसियो नहीं ॥१६॥

× × × × ×

दोहा—संवत अष्टादश सतक, और तहत्तरि जानि ।
सुकल पक्ष फागुण भली, पुण्य नक्षत्र महान ॥२१॥
सुकवार शुभ द्वादसी, पूरण भयौ पुराण ।
वाचै सुनै जु भव्यजन, पावै गुण अमलान ॥२२॥

इति श्री भट्टारक सकलकीर्ति विरचिते "श्री वर्द्धमान पुराण संस्कृत ग्रंथ की देस भाषा मय की वचनिका पंडित केशरीसिंह कृत संपूर्ण" । मिती चैत सुदी १४ शनिवार सं० १८७८ का मैं ग्रंथ लिख्यौ ।

४७२. वर्द्धमानपुराणसूचनिका । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७६ ।

४७३. वर्द्धमानपुराण भाषा । पत्र सख्या-७ । साइज-११×७½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८४६ ।

४७४. शान्तिनाथपुराण—अशग । पत्र संख्या-६८ । साइज-१०×६½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८३४ अषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६ ।

४७५. शान्तिनाथपुराण—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-१६६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३० ।

विशेष—ग्रन्थ सख्या श्लोक प्रमाण ४३७५ है । एक प्रति और है ।

४७६. हरिवंशपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सख्या-३५५ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६ ।

विशेष—प्रति नवीन है । २ प्रतियां और हैं ।

४७७. **हरिवंशपुराण—पं० दौलतराम** । पत्र संख्या-५३० । साइज-११×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-सं०१८२६ । लेखन काल-स० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

विशेष—रूपचन्द ने प्रतिलिपि की थी । दो प्रतियां और हैं ।

४७८. **हरिवंशपुराण—खुशालचन्द** । पत्र सख्या-१६१ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-सं० १७८० वैशाख सुदी ३ । लेखन काल-सं० १८३१ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४५ ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं ।

विषय-काव्य एवं चरित्र

४७९. **उत्तरपुराण—महाकवि पुष्पदंत** । पत्र सख्या-३२४ से ८३८ । साइज-१०×५½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५५७ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७ ।

विशेष—३२४ से पूर्व आदि पुराण है ।

प्रशस्ति—स० १५५७ कार्तिकमासे शुक्लपक्षे पूर्णमास्यां तिथौ गुरुदिने अद्यो श्री घनौघेन्द्रगे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसघे भारतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा: तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्ति देवा· तत्पट्टे भ० श्री विद्यानन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषण देवा: तस्य शिष्य भ० महेन्द्रदत्त, नेमिदत्त तैः भट्टारक श्री मल्लिभूषणाय महापुराण पुस्तक प्रदत्त' ।

४८०. **कलावतीचरित्र—भुवनकीर्त्ति** । पत्र संख्या-४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६५ ।

४८१. **गौतमस्वामीचरित्र—आचार्य धर्मचन्द्र** । पत्र सख्या-३२ । साइज-१२×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६२२ । लेखन काल-सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१३ ।

४८२. **चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर** । पत्र संख्या-१२३ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३१ ।

विशेष—१२३ से आगे के पत्र नहीं है। प्रति नवीन है। ग्रंथ की पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति मण्डलसूरिश्रीभूषण तत्पट्टे गच्छे भट्टारक श्री धर्मचन्द्र शिष्य कवि दामोदर विरचिते श्री चन्द्रप्रभचरित्रे चन्द्रप्रभकेवलज्ञानोत्पत्ति वर्णनो नाम द्वाविंशतितम सर्गः।

४८३ **चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनदि**। पत्र संख्या-११२। साइज-११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८६६ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० २३०।

विशेष—फतेहलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी। काव्य की १ प्रति और है।

४८४. **चेतनकर्मचरित्र—भैया भगवतीदास**। पत्र संख्या-१५। साइज-१०×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १७३२ ज्येष्ठ बुदी ७। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७।

विशेष—ग्रंथ की ३ प्रतियां और हैं।

४८५. **जम्बूस्वामीचरित्र—महाकवि वीर**। पत्र संख्या-११४। साइज-१२×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-काव्य। रचना काल-स० १०७६ माह सुदी १०। लेखन काल-सं० १६०१ असाढ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन न० २२६।

विशेष—ग्रन्थकार एव लेखक प्रशस्ति दोनों पूर्ण हैं। राजाधिराज श्री रामचन्द्रजी के शासनकाल में टोडागढ में आदिनाथ चैत्यालय में लिपि की गई थी।

खडेलवाल वंशोत्पन्न साह गोत्र वाले सा० हेमा भार्या हमीर दे ने प्रतिलिपि करवाकर मण्डलाचार्य धर्मचन्द्र को प्रदान की थी। लेखक प्रशस्ति निम्न है।

संवत् १६०१ वर्षे आषाढ सुदी १३ भौमवासरे टोडागढवास्तव्ये राजाधिराजरावश्रीरामचन्द्रविजयराज्ये श्री आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भ० शुभचन्द्रदेवा' तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मडल श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये साह गोत्रे जिनपूजापुरन्दरान गुणश्रेयोनृपतिः साह महसा तद भार्या सुहागदें तत्पुत्र साह मेघचन्द्र द्वि० कौजू। साह मेघचन्द्र भार्या मायाकदे द्वितीय नवलादे। तत्पुत्र साह हेमा द्वि० साह हीरा तृतीय साह छाजू। साह हेमा भार्या हमीर दे तत्पुत्र चि० मीखा। साह हीरा भार्या हीरादे। साह कौजू भार्या कौतुकदें तत्पुत्र साह पदारथ द्वि० खीवा। सा० पदारथ भार्या पारमदे तत्पुत्र सा० धनपाल। साह खीवा भार्या खिवसिरी तत्पुत्र डूगरसी एतेषा मध्ये सा० हेमा भार्या हमीर दे एतत् जम्बूस्वामीचरित्र लिखाप्य रौहिर्णिव्रत उद्योतनार्थं मडलाचार्या श्री धर्मचन्द्राय प्रदत्तं।

४८६ **जम्बूस्वामीचरित्र—ब्र० जिनदास**। पत्र संख्या-३१। साइज-११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन म० २२७।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है। एक प्रति और है।

४८७. **जम्बूस्वामीचरित्र - पांडे जिनदास** । पत्र संख्या–३० । साइज–१०½×५ इन्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १६४२ भादवा बुदी ५ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८० ।

विशेष—अकबर के शासनकाल में रचना की गई थी । दो तरह की लिपि है ।

४८८. **जिनदत्तचरित्र – गुणभद्राचार्य** । पत्र संख्या–४८ । साइज–१०½×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२० ।

विशेष—पं० नगराज ने प्रतिलिपि की थी । २ प्रतियां और हैं ।

४८६. **जिणयत्तचरित्त (जिनदत्तचरित्र)—पं० लाखू** । पत्र संख्या–१८० । साइज–११½×५½ इन्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १२७५ । लेखन काल–सं० १६०६ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२१ ।

विशेष—सं० १६०६ मगसिर सुदी ५ आदित्यवार को रणथमौर महादुर्ग में शान्तिनाथ जिन चैत्यालय में सलेमशाह आलम के शासन के अन्तर्गत खिदिरखान के राज्य में पाटनी गोत्र वाले साह श्री दूलहा ने प्रतिलिपि करवाकर आचार्य ललित कीर्ति को भेंट की थी ।

४६०. **णायकुमारुचरिए (नागकुमारचरित्र)—महाकवि पुष्पदन्त** । पत्र संख्या–६६ । साइज–८½×४½ इन्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १५१७ वैसाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१२ ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १५१७ वर्षे वैसाख सुदी ५ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टालकार भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा । शिष्यणी बाई मानी निमित्ते नागकुमार पंचमी कथा लिखाप्य कर्मक्षय निमित्ते प्रदत्तं ।

४६१ **प्रति नं० २** । पत्र संख्या–६० । साइज–१०½×५ इन्च । लेखन काल–सं० १५२८ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३४ ।

प्रशस्ति—संवत् १५२८ वर्षे श्रावण सुदि १ बुधे श्रवणनक्षत्रे सुभनामायोगे श्री नयनवाह पत्तने सुरत्राण अलावदीनराज्यप्रवर्त्त माने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य जैनन्दि आत्म कर्म क्षयार्थ निमित्ते इद णायकुमार पंचमी लिखापितं । खंडेलवाल वंशोत्पन्न पहाड्या गोत्र वाले अरजन भार्या क्षेलूई ने प्रतिलिपि कराई ।

४६२ **द्विसंधानकाव्य सटीक—मूलकर्त्ता–धनंजय, टीकाकार नेमिचन्द्र** । पत्र संख्या–१६६ । साइज- १४×६½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४ ।

अंतिम पुष्पिका—इति निरवद्यविद्यामंडनमंडितपंडितमण्डलीमंडितस्य षटतर्कचक्रवर्तिनः श्रीमत्विनयचन्द्र-पंडितस्य गुरोरंतेवासिनो देवनंदिनाम्न शिष्येण सकलकलोद्भवचारुचातुरीचंद्रिकाचकोरेण नेमिचन्द्रेण विरचितायांद्विसंधान कविर्धनंजयस्य राघव पांडवीयापरानमकाव्यस्य पदकौमुदीनां दधानायां टीकायां श्रीरामव्यावर्णो नाम अष्टादश सर्ग ।

टीका का नाम पदकौमुदी है।

४६३ धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्त्ति । पत्र सख्या-४६ । साइज-११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३७ ।

प्रशस्ति—संवत् १६५६ वर्षे कार्तिक सुदी ७ रविवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दा चार्यान्वये भट्टारक जशकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री ललितकीर्तिदेवा तत् शिष्य "ब्र०" श्रीपाल स्वयं पठनार्थं गृहीत । लिखित चन्देरीगढदुर्गे वास्तव्य अकबर पातिसाहि राज्ये प्रवर्तते ।

४६४. धन्यकुमार चारित्र—ब्र०नेमिदत्त । पत्र संख्या-३० । साइज-१०$\frac{1}{2}$×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय- चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २३८ ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्र जीर्ण हैं।

४६५. धन्यकुमार चरित्र—खुशालचन्द । पत्र संख्या-५० । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१८ ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं।

४६६. प्रद्युम्नचरित्र—पत्र संख्या-१६० । साइज-६×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११११ ।

४६७ प्रद्युम्नचरित्र--पत्र सख्या—३४ । साइज-११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १४११ भादवा सुदी ५ । लेखन काल-स० १६०५ आसोज सुदी ३ मंगलवार । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१२ ।

विशेष—प्रद्युम्न चरित्र की रचना किसी अग्रवाल व धुने की थी । रचना की भाषा एवं शैली अच्छी है । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—सारद विणु मति कवितु न होइ, सरु आखरु यावि बूझई कोइ ।
　　सीस धार पणमई सरसुती, तिहि कहुँ बुधि होइ कत हुती ॥१॥
　　सबु को सारद सारद करइ, तिस कउ अंतु न कोऊ लहई ।
　　जिणवर मुखह ज्ञणि गाय वाणि, सा सारद पणवहु परियाणि ॥२॥
　　अठदल कमल सरोवरु वासु, कासमीर पुरल (हु) निवासु ।
　　हस चढीकर लेखणि देइ, कवि सधारु सरसई पणमेई ॥३॥

सेत वस्त्र पदमवतीण, करहं अलावणि बाजहि वीण।
आगम जाणि देहु वहुमती पुणु दुइ जे पणवई सरस्वती ॥४॥
पदमावती दड कर लेइ, जालामुखी चक्केसरी देइ।
अवमाइ रोहिणी जो सारु, सासण देवी नवइ सधारु ॥५॥
जिणसासण जो विघन हरेइ, हाथ लकुटि लै ऊमो होइ।
भवियहु दुरिउ हरइ असरालु अगिवाणीउ पणउ खित्रपाल ॥६॥
चउवीसउ स्वामी दुख हरण, चउवीस के जर मरण।
जिण चउवीस नउ घरि मोउ, करउ कवितु जइ होइ पसाउ ॥७॥
रिषभु अजितु समउ तहि भयउ, अभिनंदनु चउत्थउ वन्नयउ।
समति पदमु प्रभु अवरु सुपासु, चंदप्पउ आठमउ निकासु ॥८॥
सुविधु नवउ सीतलु दस भयउ, अरु श्रेयसु ग्यारह जयउ।
वासुपूजु अरु विमल अनतु, धमु संति सोलहउ पहु पहुंत ॥९॥
कुंथु-सतारह अरु सु अत्यार, मल्लिनाथ एगुणासी वार।
मुणिसुव्रत नमिनेमि वावीस, पासु वीरु महुदेहि असीस ॥१०॥
सरस कथा रसु उपजई घणाउ, निसुणहु चरित पजूमह तणउ।
सवतु चौदहसै हुइ गये, ऊपर अधिक ग्यारह भये।
भादव दिन पचइ सो सारू, स्वाति नक्षत्र सनीश्चर वारु ॥१२॥

मध्यभाग—प्रद्युम्न रुक्मणी के यहां आपहुचे हैं किन्तु यह प्रकट न हो पाया कि रुक्मणी का पुत्र आगया। पुत्र आगमन के पूर्व कहे हुए सारे संकेत मिल गये हैं किंतु माता पुत्र को देखने के लिये अधीर हो रही है—

षण षण रूपिणि चढइ अवास, षण षण सो जोवइ चोपास।
मोस्यो नारद कह्यउ निरुत, आज तोहि घर आवइ पूत ॥३८४॥
जे मुनि वयण कहे प्रमाण, ते सवई पूरे सहिंनाण।
च्यारि आवते दीठे फले, अरुआचल दीठे पीयरे ॥३८५॥
सूकी वापी भरी सुनीर अपय जुगल भरि आये षीर।
तउ रूपिणि मन विमउ भयउ, एते ब्रह्मचारि तहां गयउ ॥३८६॥
नमस्कार तव रूपिणि करइ, धरम विरधि खूडा उचरइ।
करि आदरु सो विनउ करेइ, कणय सिंघासणु वैसण देहु ॥३८७॥
समाधान पूछई समुझइ, वह भूखउ २ बिललाई।
सखी बुलाइ जणाइ सार, जैवण करहु म लावहु वार ॥३८८॥

जीवण करण उठी तखिणी, सुदरी मयण श्रमी यमीणी ।
नाजु न चुरइ चूल्हि धु धाइ, वाह मूखउ २ चिललाइ ॥३८६॥

अंतिम—मइसामी कउ कीयउ वखाणु, तुम पञ्चन पायउ निरवाणु ।
श्रगरवाल की मेरी जात, पुर श्रगरो ए मुहि उतपाति ॥६७५॥
सघणु जणणी गुणवइ उर धरिउ सा महाराज घरह श्रवतरिउ ।
एरछ नगर वसते जानि, सुणिउ चरित मइ रचिउ पुराण ॥६७६॥
सावय लोय वसहि पुर माहि, दह लखण ते धर्म्म कराइ ।
दस रिस मानइ दुतीया भेउ भावहिं चितह जीणेसरु देउ ॥६७७॥
एहु चरितु जो वांचइ कोइ, सो नर स्वर्ग देवता होइ ।
हलु वइ धर्म्म खपइ सो देव, मुकति वरगण मागइ एम्व ॥६७८॥
जो फुणिसुणइ मनह धरि भाउ, श्रसुभ कर्म ते दूरिहि जाइ ।
जो र वखाणइ माणुसु कवणु, ताहि कहु तू सइ देव परदमणु ॥६७९॥
श्ररु लिखि जो रि खियावइ साधु, सो सुर होइ महा गुणरधु ।
जो र पढावइ गुण किउ निलउ, सो वर पावइ कंचण मलउ ॥६८०॥
यहु चरितु पु न भडारू, जो वरु पढइ सु नर महसारु ।
तहि परदमणु तुही फल देइ, सपति पुत्र श्रवरु जसु होइ ॥६८१॥
हउ वुधि हीणु न जाणौ केम्बु, श्रखर मातह गुणउ न भेउ ।
पढित जणह नमू कर जोडि हीण श्रधिक जण लावहु खोडि ॥६८२॥

॥ इति परदमण चरित समाप्त ॥

४९८. पार्श्वपुराण—भूधरदास । पत्र संख्या–१०१ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–काव्य । रचना काल–स० १७८९ । लेखन काल–स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६४७ ।

विशेष—२६ प्रतियां श्रौर हैं ।

४९९. प्रीतिंकरचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सख्या–२१ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० २१० ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति श्रपूर्ण है ।

५००. वाहुवलिदेव चरिए (वाहुवलि देव चरित्र)—प० धनपाल । पत्र सख्या–२६७ । साइज–११½×४½ इञ्च । भाषा–श्रपभ्रंश । विषय–चरित्र । रचना काल–स० १४५४ वैसाख सुदी १३ । लेखन काल–स० १६०२ श्रापाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २५२ ।

विशेष—ग्रंथकार व लेखक प्रशस्ति पूर्ण है। लेखक प्रशस्ति का अन्तिम भाग इस प्रकार है—

एतेषां मध्ये ढूंढाहड देशे कछुवाहा राज्यप्रवर्तमाने अमरसर नगरेतिनामस्थितो धनधान्य चैत्यचैत्यालयादि सोभालंकृत तत्रैव राज्य पदाश्रितो राजश्री सूजा उधरणायो राज्ये वसन सघही लाखा तेनेदं बाहुबलि चरित्र लिखाप्य ज्ञानपात्र आचार्य धर्मायदत्तं।

५०१. भद्रबाहुचरित्र—आचार्य रत्ननंदि। पत्र संख्या-४३। साइज-१०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७२०। पूर्ण। वेष्टन नं० २५०।

विशेष एक प्रति और है।

५०२. भद्रबाहुचरित्रभाषा—किशनसिंह। पत्र संख्या-२०२। साइज-११×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १७८०। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०८।

विशेष—पत्र ५५ के बाद निम्न पाठों का संग्रह है जो सभी किशनसिंह द्वारा रचित हैं—

विषय-सूची	कर्त्ता	रचना संवत्
एकावली व्रत कथा	किशनसिंह	×
श्रावक मुनि गुण वर्णन गीत	"	×
चौवीस दंडक	"	१७६४
चतुर्विंशति स्तुति	"	×
णमोकार रास	"	१७६०
जिनभक्ति गीत	"	×
चेतन गीत	"	×
गुरूभक्ति गीत	"	×
निर्वाण कांड भाषा	"	१७८३ सगामपुर में रचना की
चेतन लोरी	"	×
नागश्री कथा (रात्रि भोजन त्याग कथा)	"	१७७३
लब्धि विधान कथा	"	१७८२ आगरे में रचना की गयी थी

५०३. भविसयत्तपंचमीकहा—धनपाल। पत्र संख्या-१३१। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २१७।

श्लोक संख्या ३३००।

विशेष—ग्रन्थ की ३ प्रतियां और हैं। दो प्राचीन प्रतियां हैं।

५०४. भविसयत्तचरिय—(भविष्यदत्तचरित्र) श्रीधर । पत्र सख्या–१०४ । साइज–११½×५ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १६६१ चैत्र सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१४ ।

विशेष—राजमहल नगर में प्रतिलिपि हुई थी । ग्रथ श्लोक सख्या १५०७ प्रमाण है ।

५०५. प्रति नं० २ –पत्र संख्या–८१ । साइज–११×५ इन्च । लेखन काल–स० १६४६ चैत्र सुदी ११ पूर्ण । वेष्टन नं० २१५ ।

प्रशस्ति—सवत् १६४६ वर्षे चैत्र सुदी ११ मगलवार अवावती नगरे नेमिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा, तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री धर्मचन्द्रदेवा, तत्पट्टे भट्टारक ललितकीर्तिदेवाः समस्त गोठि अवावती   खडेलवालान्वये भांवसा गोत्रे इदं शास्त्र घटापितं ।

५०६ प्रति नं० ३—पत्र संख्या–७७ । साइज–११×५ इन्च । लेखन काल–सं० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१६ ।

विशेष—कहीं २ कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए है ।

प्रशस्ति—संवत् १६०६ वर्षे वैसाख मासे कृष्ण पक्षे द्वादशी तिथौ बुद्ध–वासरे अनुराधा नक्षत्रे श्री मूलसघे गढ रणस्तभ शाखागरे सेरपुर नाम्नि पातिशाह मल्लेण साहि राज्य प्रवर्तमाने श्री शान्तिनाथ जिण चैत्यालये श्री   लसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवा, तत्पट्टे भट्टारक जिन-चन्द्र देवा, तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्र देवा तत् शिष्य भ० श्री धर्मचन्द्र देवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये पाटोदी गोत्रे सा० बेला तद्भार्या सारौ   .. . . एतेषां मध्ये सा० वोहिथ भार्या लाली इदं शास्त्र लिखाप्य भ० श्री धर्मचन्द्राय घटापितं कल्याण व्रतोद्यापनार्थं ।

५०७. भोजचरित्र—पाठक राजवल्लभ । पत्र सख्या–३८ । साइज–११×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३५ ।

विशेष—ग्रथ की अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्री धर्मघोषगच्छे श्री धर्मसूरि संताने स्वाध्वी पट्टे श्री महीतिलक सूरि शिष्य पाठक राजवल्लभ कृते भोज चरित्रे समाप्त । स० १६०७ वर्षे फागुण मासे शुक्ल पक्षे सप्तम्यां तिथौ शुक्रवासरे अलवरगढ मध्ये लिखितं ।

५०८ महीपालचरित्र—मुनिचारित्र भूषण । पत्र संख्या–५४ । साइज–१०½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचनाकाल–× । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन नं० २११ ।

विशेष—श्लोक सख्या–६६५ प्रमाण ग्रन्थ है ।

५०९. यशस्तिलकचम्पू—सोमदेव । पत्र सख्या–५६ । साइज–१२½×५ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६३ ।

विशेष—८ पेज तक टीका दे रखी है।

५१०. यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति । पत्र सख्या-१७ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० २४२ ।

विशेष—१७ से आगे पत्र नहीं हैं।

५११. यशोधरचरित्र—ज्ञानकीर्ति । पत्र सख्या-६५ । साइज-१४×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६५६ माघ सुदी ५ । लेखन काल-स० १६६४ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० २४१

विशेष—महाराजा मानसिंहजी के शासन काल में मौजमाबाद में प्रतिलिपि हुई थी।

५१२. यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र सख्या-२-३५ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७५६ भादवा सुदी १ । अपूर्ण । वेष्टन नं० २४० ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है। प० पेमराज ने प्रतिलिपि की थी।

५१३. यशोधरचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सख्या-३४ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २३६ ।

विशेष—चार प्रतियां और हैं।

५१४ यशोधरचरित्र—परिहानन्द । पत्र संख्या-३४ । साइज-११×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६७० । लेखन काल-सं० १८३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१८ ।

विशेष—आदि अत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—सुमर देव अरहत महत, गुण अति अगम लहै को अतु ।
जाकै माया मोह न मान, लोकालोक प्रकासक ज्ञान ॥
जाकै राग न मोह न खेद, छितिपति रक न जाके भेद ।
राधे हरष न विरचै वक्कु, सुमरत नाम हरै अघ चक्कु ॥
अलख अगोचर अन्तुक अंतु, मगलधारि मुकति कौ कन्तु ।
गुण वारिध मो रसना एक, अलप वुद्धि अर तुच्छ विवेक ॥
द्वै कर जोडि नऊ सरस्वती, वढै वुद्धि उपजै शुभ मती ।
जिन वानी मानी जिन आनि, तिनकौ वचन चल्यो परवान ॥
विवुध विहगम नव घन वारि, कवि कुल केलि सरोवर मार ।
भव सागर तू तारन नाव, कुनय कुरग सिंघनी भाव ॥
ते नर सुन्दर ते नर वली, जिनका पुहमि कथा बहु चली ।

तिनकी तें सारद वर दीयो, सुखसुरितासु श्रमल जल पीयो ॥
सुमरि सुमरि गुण ज्ञान गंभीर, वरैं सुमति श्रव घटहिं सरीर ।
जिनमुद्रा जे धारण धीर, भव आताप बुझावन नीर ॥
तिनके चरण चित्त महि धरैं, चिर अनुसार कवित उच्चरैं ।
गुरु गणधर सुमरो मन माहि, विघन हरन करि करि तूं छांह ॥८॥
नगर आगरो वसै सुवासु, जिहपुर नाना भोग विलास ।
वसीह साहु बहु धनी असंखि, वनजहि वनज सागर हिनखि ॥
गुणी लोग छत्तीसौं कुरी, मथुरा मडल उत्तम पुरी ।
और वहुत को करैं बखाउ, एक जीभ को नाहीं दाउ ।
नृपति नूरदीसाह सुजान, अरि तम तेज हर नमो मान ॥

मध्य भाग—सुनिरी माइ कहीं हो एह, जो नर पावै उत्तम देह ।
सत पंडित सज्जन सुखदाइ, सबै हित करहि न कोपै राइ ॥
जो बोलै सो होइ प्रमान, जह बैठे तह पावै मान ।
वैर भाव मन धरै न कोइ, जो देखै ताकौं सुख होइ ॥७४॥
यह सब जानि दया को अग, उत्तम कुल अरु रूप अनग ।
दीरघ आव परै ता तनी, सेवहि चरन कमल वह गुनी ॥७५॥

अन्तिम भाग—संवत् सोलह सै अधिक सत्तरि सावण मास ।
सुकल सोम दिन सप्तमी कही कथा मृदु भास ॥
अग्रवाल वर वंस गोमना गांव को ।
गोयल गोत प्रसिद्ध चिह्न ता ठांव को ॥
माता चंदा नाम, पिता भैरू भन्यो ।
परिहानंद कही मनमोद अंग न गुन नां गन्यो ॥५६८॥

इति श्री यशोधर चौपई समाप्ता ।

सवत् १८३६ का मैं घटतौ पाना पुरी कियाँ पुस्तक पहेली लिख्यो छे । पुस्तक लूटि मैं आयो सो यौं निछरावलि देर यौं गाजी का आया का पचा वाचै पछै त्याह भव्य जीवानैं पुन्य होयसी ।

५१५. यशोधरचरित्र—खुशालचन्द । पत्र संख्या-४१ । साइज-६३/४×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७८१ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१४ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

५१६. **यशोधरचरित्र टिप्पण** .. । पत्र सख्या–२६ । साइज–११×४½ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६० ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव जीर्ण है, पत्र गल गये हैं । चतुर्थ सधि तक है ।

५१७. **यशोधर चौपई—अजयराज** । पत्र सख्या १२ से ५१ । साइज–६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १७६२ कार्तिक बुदी २ । लेखन काल–सं० १८०० चैत बुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६६ ।

विशेष – चूहडमल पाटनी बस्सी वाले ने आमेर में प्रतिलिपि कराई थी ।

५१८. **वड्ढमाणकहा (वर्द्धमान कथा)—नरसेन** । पत्र सख्या–२७ । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–अपभ्र श । विषय–चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल–सं० १५८४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६१ ।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८४ वर्षे चैत्र सुदी १४ शनिवारे पूर्वानक्षत्रे श्री चपावतीकोटे राणा श्री श्री श्री संग्रामस्य राज्ये, राइ श्री रामचन्द्र राज्ये, श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्र देवा, प्रभाचन्द्रदेवा ॥ श्री खडेलवालान्वये अजमेरा गोत्र साह लोल्हा भार्या धनपइ तस्य पुत्र साह प्यौराज भार्या रतना तस्य पुत्र शान्तु तस्य भार्या सातिश्री तस्य पुत्र स्यौन् द्वितीय साह चापा भार्या सोना तस्य साह होला तस्य भार्या ।

५१९. **वड्ढमाणकव्व (वर्द्धमानकाव्य)—प० जयमित्रहल** । पत्र सख्या–२ से ५६ । साइज–६½×४ इञ्च । भाषा–अपभ्र श । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १५५० वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३८ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५० वर्षे वैशाख सुदी ३ रोहिणी शुभनाम योगे श्री गैयोली पत्तने राजाधिराजः अरिमानमर्दनराजश्री चापादेव राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे भ० शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० जिनचन्द्र देवा तत् शिष्य मुनि श्री रत्नकीर्ति देव ।

५२० **वर्द्धमानचरित्र— सकलकीर्ति** । पत्र सख्या–१०४ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६ ।

५२१. **वरागचरित्र—वर्द्धमान भट्टारक देव** । पत्र सख्या–६० । साइज–११½×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल–सं० १६३१ फागुण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४७ ।

विशेष—सांगानेर में महाराजाधिराज भगवतसिंहजी के शासनकाल में खडेलवालवशोत्पन्न भौंसा गोत्र वाले साह

नानग आदि ने प्रतिलिपि कराई थी।

विशेष— २ प्रतियां और है।

५२२. **विदग्धमुखमडन—धर्मदास** । पत्र संख्या-२२ । साइज-१०½×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२५ चैत्र सुदी ३ सोमवार । पूर्ण । वेष्टन नं० १५२ ।

विशेष—नगराज ने प्रतिलिपि की थी।

५२३. **षट्कर्मोपदेशमाला—अमरकीर्ति** । पत्र संख्या-८६ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५५६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५८ ।

विशेष —प्रति प्राचीन है—

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५६ वर्षे चैत्र बुदी १२ शनिवासरे शतभिखानक्षत्रे राजाधिराज श्रीमाणविजयराज्ये मीलोडा ग्रामे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० सिंघकीर्ति देवास्तत् शिष्य ब्रह्मचारी रामचन्द्राय हूं बड जातीय श्रेष्ठी हारा भार्या ईजा सुत श्रुतश्रेष्ठी देवात भ्रातृ श्रेष्ठी नाना भार्या हूवी द्वतीय भार्या रूपी तयोः सुत श्रुतश्रेष्ठी लाला भार्या वानू तत् भ्रातृ श्रेष्ठी वेला भार्या वीली षट्कर्मोपदेश शास्त्र लिखाय प्रदत्तं ।

५२४ **शालिभद्र चौपई—जिनराज सूरि** । पत्र संख्या-१४ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६१८ । लेखन काल-सं० १७६४ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७५ ।

५२५. **श्रीपालचरित्र—ब्र० नेमिदत्त** । पत्र संख्या-५५ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १५८५ आषाढ सुदी ५ । लेखन काल-सं० १८६? सावन बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२५

विशेष—मालवा देश में पूर्णाशा नगर में आदिनाथजी के मन्दिर में ग्रंथ रचना हुई थी।

छाजूलालजी साह के पिता शिवजीलालजी साह ने ज्ञानावरणीक्षयार्थ श्रीपाल चरित्र की प्रतिलिपि कराई थी। एक प्रति और है।

५२६. **श्रीपालचरित्र—कवि दामोदर** । पत्र संख्या-५७ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०६ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२४ ।

५२७. **श्रीपालचरित्र—दौलतराम** । पत्र संख्या-४६ । साइज-८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२० ।

विशेष—आराधना कथा कोष में से कथा ली गई है।

५२८. श्रेणिकचरित्र—भ० विजयकीर्ति । पत्र संख्या–२५० । साइज–१०½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १८२० । लेखन काल–स० १८८० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१५ ।

५२९. श्रेणिकचरित्र—जयमित्रहल । पत्र सख्या–६० । साइज–१०½×५½ इच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० २३६ ।

५३०. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल । पत्र सख्या–१३६ । साइज–१०½×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन न० ६०४ ।

विशेष—५ प्रतियां और हैं ।

५३१. श्रीपालचरित्र । पत्र सख्या–३५ । साइज–१३×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८५६ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० ६२७ ।

विशेष—ग्रथ के मूलकर्त्ता भ० सकलकीर्त्ति थे । २ प्रतियां और है ।

५३२ सीताचरित्र—कवि बालक । पत्र सख्या–१६१ । साइज–६½×५¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–चरित्र । रचना काल–स० १७१३ । लेखन काल–स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन न० ६०३ ।

विशेष—चपावती (चाकसू) में प्रतिलिपि हुई थी । सीता चरित्र की भण्डार में ५ प्रतियां और हैं ।

५३३ सिद्धचक्रकथा—नरसेनदेव । पत्र सख्या–३८ । साइज–१०×४½ इच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–स० १५१५ । पूर्ण । वेष्टन न० ७७८ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५१५ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १५ रवौ नैणवाहपत्तने सुरत्राण अलावदीन राज्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा. तत्पट्टे जिनचन्द्रदेवा तस्य शिष्य मुनि अनतकृति लवकचुकान्वये जदवंसे काकलिभरच्छगोत्रे साह सीथे भार्या दीवा तस्य पुत्र साह साम्हरि भार्या जसंवरूप नाराइण लघु भ्राता कान्ह एतेषु मध्ये नाराइण पठनार्थ लिखापित ।

५३४. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या–३८ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २३२ ।

५३५. सुदर्शनचरित्र—विद्यानंदि । पत्र सख्या–५० । साइज–११×५ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन न० २३३ ।

विशेष—टोंक निवासी गंगवाल गोत्र वाले सा० राजा ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

५३६. हरिवंशपुराण—महाकवि स्वयंभू । पत्र सख्या–१ से ४०६ । साइज–१३×५ इन्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १५८२ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० १२३ ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है। पुराण की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इय रिट्ठणेमिचरिय धवलइयासिय सयभुएवउच्चरए तिहुयणसयंभुइए समाणिय कन्हकित्ति हरिवंस ॥ गुरुपव्ववासमय सुयणयाणुकूकम जहाजायासयेमिकद्दहश्राहिय एधिश्रो परिसम्मतिश्रो ॥६॥ सवि १११० ॥ इति हरिवंस पुराण समाप्त ॥६॥ ग्रंथ सख्या सहस्र १८००० पूर्वोक्त ॥ ६ ॥

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५८२ वर्षे फाल्गुण सुदी १३ त्रयोदशीदिवसे शुक्रवासरे श्रवणनक्षत्रे शुभजोगे चपावतीगढनगरे महाराज श्री रामचन्द्रराज्ये श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खडेलवाला वंशे साहगोत्रे जिनपूजापुरदरान बहुशास्त्रपरिमलित सुन्दरो, जिनचरणारविंद षट्पदनीतिशास्त्रपरिगत, विशदजिनशासन-समुद्धरणधीर, पचाणुव्रतपालनैकधीर, सम्यक्त्वालकृतशरीराभेदाभेदरत्नत्रयराधकात्रिपचासक्रियाप्रतिपालक शंकाघष्टदोषरहित सवेगाद्यगुणयुक्ति दुस्थितजनविश्राम, परम श्रावक साह काघिल, भार्या कावलदे तया पुत्रा । द्वितीय पुत्र जिनचरणकमलचचरीकान, दानपूजाश्रयान् इव समुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रशस्तचित्तान् सम्यक्त्वगुणप्रतिपालकान श्री सर्वज्ञोक्तधर्मानरजितचेतसान् कुटुबभारधुरधरान रत्नत्रयालकृतदिव्यदेहान् श्राहारभैषजशास्त्रदानमदाकिनीय पूरितचित्तान् श्रावकाचारप्रतिपालननिरतान् सा राघौ साधी (साध्वी) भार्या रैनदे तस्य चतुर्थ पुत्र द्वितिय पुत्र. जिणविंबचैत्यविहारउद्धरणधीरान् चतुर्विधसघमनोरथपूर्णान, चिन्तामणि गुण ...... सपूर्णान् बहुलक्षणलक्षितदिव्यदेहान स्वजनानदकारी देवशास्त्रगुरूया (णां) भक्तिवतान त्रिकालसामायिकपूत प्रतिपालकान परमाराधकपुरन्दर, निजकुलगगनद्योतनदिवाकर व्रतनियमसजमरत्नत्रयरत्नाकर कन्यावलिप्रस्तरन्तमूलखडन चतुर्विध-मुखमडन, निजकुलकमलविकासनैकमार्त्तण्डान्, मार्गस्थकल्पवृक्षान् सरस्वतिकठाभरणान् त्रेपनक्रियाप्रतिपालकान एतान् गुणसयुक्तान परम श्रावक विनयवंत साधु सा० हाथु भार्या श्रीमती इव साध्वी हरिषदे तस्य द्वौ पुत्रौ प्रथम पुत्र जिणशासन-उद्धरणधीर राजभागधारवितरणप्रवीण सा० पासा भार्या द्वौ प्रथम लाडी द्वितीय वाली तस्य पुत्र चिरजीव बालधवल सा० हरराज। सा० हाथु द्वितीय पुत्र देवगुरूशास्त्रशासनविनयवत सा० श्राशा भार्या हकारदे। सा० राघौ-तृतीय पुत्र सा० दासा भार्या सिंदूरी तस्य द्वौ पुत्रौ प्रथम पुत्र सा० मविसी भार्याभावलदे द्वितीय पुत्र सा० नानू सा० कादू। सा० दासा तस्य द्वितीय पुत्र सा० धर्मसी भार्या दारादे। सा० राघौ चतुर्थ पुत्र सा० घाट तस्य भार्या राणी   घाट पुत्र द्वौ, सा० हेमराज   मुनिमाघनदाय दत्त म्।

५३७ होलिकाचरित्र—छीतर ठोलिया। पत्र सख्या–५। साइज–१०×५ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। रचना काल–सं० १६६० फागुण सुदी १५। लेखन काल–सं० १८७४। पूर्ण। वेष्टन न० ५७०।

५३८ होलीरेणुकाचरित्र—जिनदास। पत्र सख्या–३१। साइज–११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा–सस्कृत। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–स० १७५६। पूर्ण। वेष्टन न० ६०८।

विशेष—पाडे जसा ने स्वयं प्रतिलिपि की थी।

—:o:—

विषय—कथा एवं रासा साहित्य

५३६ अष्टाह्निकाकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सख्या–१० । साइज–१०½×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० २७५ ।

विशेष—कथा की रचना जालक की प्रेरणा से हुई थी । कथा की तीन प्रतियां और हैं ।

५४० आदित्यवारकथा—भाऊ कवि । पत्र संख्या–१७ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । रचनाकाल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १०६६ ।

५४१. आदित्यवारकथा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सख्या–४६ । साइज–५½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । रचना काल–स० १७४४ । लेखन काल–सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६६ ।

विशेष—कामा में प्रतिलिपि हुई थी । पत्र २० से सूरत की वारहखडी दी हुई है ।

५४२. कवलचन्द्रायणव्रतकथा । पत्र सख्या–६ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६८ ।

५४३ कर्मविपाकरास—ब्र० जिनदास । पत्र संख्या–१७ । साइज–१०¾×४¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–रासा साहित्य । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७७६ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ ।

विशेष –भाषा में गुजराती का बाहुल्य है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७७६ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे एकादशी गुरुवासरे श्री रत्नाकर तटे श्री खमातवदरे गौसाई कान्हड–गिरेण लिखितेमिदं पुस्तक ब्र० सुमतिसागर पठनार्थं ।

५४४. गौतमपृच्छा । पत्र सख्या–३५ । साइज–१०×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४८ ।

विशेष—

प्रारम्भ— वीरजिनं प्रणम्यादौ बालानां सुखबोधकां ।
श्रीमद् गौतमपृच्छायाः क्रियते वृत्तिमद्भुतां ॥१॥
नमि ऊण तित्थनाह जाणतो तहय गोयमो भयवं ।
अबुहाण बोहणत्थं धम्माधम्मफल वुच्छे ॥२॥
नत्वा तीर्थनाथ जाणन् तथा गौतम. भगव ।
अबोधान् बोधनार्थं धर्म्माधर्म्मफलं प्रपच्छे ॥३॥

अन्तिम पाठ—पाठक पद संयुक्तै कृता चेयं कथानिका ।
श्रीमद् गौतमपृच्छा सुखमाधुरबोधका ॥
लिखत चेला हमार विजय ।
इति गौतमपृच्छा संपूर्ण. ।

५४५ **चन्दनषष्ठिव्रतकथा—विजयकीर्ति** । पत्र संख्या-६ । साइज-११½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६६० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०१ ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड ने प्रतिलिपि कराई थी ।

५४६. **चन्द्रहंसकथा—टीकम** । पत्र संख्या-४४ । साइज-११½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७०८ । लेखन काल-सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७६ ।

विशेष—रचना के पद्यों की संख्या ४५० है । रचना का प्रारम्भ और अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—श्रोंकार अपार गुण, सब ही अक्षर आदि ।
सिद्ध होय ताको जप्यां, आखिर एह अनादि ।
जिन वाणी मुख उचरे, ओं सबद सरुप ।
पडित होय मति वीसरो, आखिर एह अनूप ॥२॥

अन्तिम पाठ—सांभरि स्यों दश कोसा गांव, पूर्व दिशा कालख है ठाम ॥४४०॥
ता माहे व्यापारी रहैं, धर्म्म कर्म्म सो नीति की कहैं ।
देव जिनालय है तिहां भलो, श्रावग तिहां कथा सांभलों ॥४४१॥
विधि सों पूजा करे जिन तनी, मन में प्रीति सु राखैं घणी ।
भगड़ू तहांतणों हुजदार, वस लुहाड्या में सिरदार ॥४४२॥
भोज राज साहिब को नांव, देई बडाई सौंप्यों गांव ।
सब सों प्रति चलावै साह, दोष न करै कदै मन माहि ॥४४३॥
पुत्र दोइ ताकै घरि भला सुजाणि, पिता हुक्म करें परवान ।
कालु और नराईनदास, ईहगातणीय जोव आस ॥४४४॥
भाई बधु कुटंब परिवार, विधि सों करें सबन की सार ।
साहमी तणो विनौ अति करें, सति वचन मुख उचरै ॥४४५॥
जिती भलाई है तिहि माहि, एक जीभ वरणन नही जाई ।
सब ही को दिल लीया हाथि, जिमै वैठि आपनै साथि ॥ ४४६
असी छगति खेंचियो भार, जाणें ताकौ सब संसार ।
संवत आठ सतरासै वर्ष, करता चौपई हुवो हर्ष ॥ ४४७ ॥

पंडित होइ हसो मति कोई, बुरा भला आखरू जो होइ ।
जेठमास अर पखि अधियार, जाणै दोईज अरविवार ॥ ४४६ ॥
टीकम तणी बीनती एहु, लघु दीरघु सवारे जु लेह ।
सुणत कथा होई जे पास, हो तिन के चरनण को दास ॥
मनधर कृपा एह जो कहै, चन्द्र हस जोमि सुख लहै ॥
रोग विजोग न व्यापै कोई, मनधर कथा सुनै जे सोई ॥ ४५० ॥

॥ इति चन्द्रहंस कथा सपूर्ण ॥

सवत् १८१२ वर्षे शाके १६७७ आषाढकृष्णा तिथौ ६ बुधवासरे लिपि कृत ॥ जोसी स्योजीराम ॥ लिखापित धर्ममूरति धरमात्मा साह जी श्री डालूराम॥

५४७. चित्रसेनपद्मावतीकथा—पाठक राजवल्लभ । पत्र सख्या-१६ । साइज-६½×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन न० १०७४ ।

५४८. दर्शनकथा—भारामल्ल । पत्र सख्या-६८ । साइज-८×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२७ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८४ ।

विशेष — एक प्रति और है ।

५४६ दानकथा—भारामल्ल । पत्र संख्या-३६ । साइज-११×५½ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५६८ ।

विशेष—मूल्य १।॥) लिखा हुआ है ।

५५०. नागश्रीकथा (रात्रिभोजनत्यागकथा)—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सख्या-२८ । साइज-११×४½ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६७४ फाल्गुन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० १६८

विशेष—बाई तेजश्री वैजवाड में प्रतिलिपि कराई । पहला पत्र बाद का लिखा हुआ है । एक प्रति और है ।

५५१. नागश्रीकथा (रात्रि भोजन त्याग कथा)—किशनसिंह । पत्र सख्या-२० । साइज-११×५½ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७७३ सावन सुदी ६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६० ।

विशेष—३ प्रतिया और हैं ।

५५२. नागकुमारचरित्र—नथमल विलाला । पत्र संख्या-१०३ । साइज-११½×५¾ इश्व । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-सं० १८३७ माघ सुदी ५ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६१३ ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

५५३. निशिभोजनत्यागकथा—भारामल्ल । पत्र सख्या-२० । साइज-८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९२७ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

५५४ नेमिव्याहलो—हीरा । पत्र संख्या-११ । साइज-१३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १८४८ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५० ।

विशेष—इसमें नेमिनाथ के विवाह की घटना का विस्तृत वर्णन है–परिचय निम्न प्रकार है—

साल अठारासें परमाण, ता पर अडतालीस वखाण । पोष कृष्णा पांचैं तिथि आणि, वारग्रहस्पति मन में आण ॥८०॥

वूंदी को छै महा सुथान, ती में नेम जिनालय जान । ती मध्ये पंडित वर माग, रहै कवीश्वर उपमा गाय ॥८१॥

ताको नाउ जिनदास, महां विचक्षण रहत उदास । सखि हीरो छै ताको नाम, ती करया नेम गुण गान॥८२॥

इति श्री नेमि व्याहलो सपूर्ण । लिखत-चम्पाराम । छन्द सख्या ८२ है ।

पत्र ५ से आगे बीनती सभ्भाय, रतन माहकृत, ज्ञानचौपडसभाय, माणकचन्द कृत, धूलेट के ऋषभ देव का पद–तथा पेमराज कृत राजुल पच्चीसी-और हैं ।

५५५. नेमिनाथ के दश भव । पत्र सख्या-४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७५ ।

५५६ पुण्याश्रवकथाकोप—दौलतराम । पत्र सख्या-२६६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं०१७७७ भादवा सुदी ५ । लेखन काल-सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६३ ।

विशेष—श्लोक संख्या ८००० है । ग्रंथ महात्मा हरदेव लेखक से लिखा था । ४ प्रतियां और हैं ।

५५७. पुरन्दर चौपई – ब्र० मालदेव । पत्र सख्या-१४ । साइज-६½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६८ ।

विशेष—

अन्तिम पद्य—सील वडो सवि धम में व्रत पालो रे ।

अनुकूल कोठ प्रधान । सी०

रतनागरी कछु पाईयें । चिंता रतन समान । सी० ॥ ७३ ॥

माव देव सूरी गुण नीलो । ब्र० । वड गछ कमल दिणंद ॥ सी० ॥

तासु सीस इम कहइ । ब्र० । मालदेव आणद ॥ सी० ॥७४॥

अगर्या सील तो जे कह्यो । ब्र० अनुमोदीजै तेय । सी०

जो विरुद्ध किंपी कह्यो ब्र० । मीछा दुक्कड तेय । सी० ॥७५॥

५५८. राजाचन्द की चौपई । पत्र संख्या-५१ । साइज-५×१० इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८१२ श्रावण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६८ ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्र नहीं हैं । पत्र ३५ से फुटकर पद्य हैं ।

५५९. राजुलपच्चीसी । पत्र संख्या-७ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५३६ ।

विशेष—७ से आगे पत्र नहीं हैं ।

५६०. व्रतकथाकोशभाषा—खुशालचन्द । पत्र संख्या-६७ । साइज-१२½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-स० १७८३ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५६२ ।

विशेष—निम्न कथायें है ।

(१) जेष्ठजिनवरव्रतकथा (२) आदित्यवारव्रतकथा (३) सप्तपरमस्थानव्रतकथा (४) मुकुट सप्तमीव्रतकथा (५) अक्षयनिधिव्रतकथा (६) षोडशकारणव्रतकथा (७) मेघमालाव्रतकथा (८) चन्दनषष्ठीव्रतकथा (९) लब्धि विधानव्रतकथा (१०) पुरन्दरकथा (११) दशलक्षणव्रतकथा (१२) पुष्पांजलिव्रतकथा (१३) आकाशपचमीव्रतकथा (१४) मुक्तावलीव्रतकथा (१५) निर्दोषसप्तमीव्रतकथा (१६) सुगधदशमीव्रतकथा ।

५६१. रोहिणी कथा । पत्र संख्या-९ । साइज-५½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०५१ ।

५६२. वैताल पच्चीसी । पत्र सख्या-६-६२ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ९७५ ।

विशेष—अवस्था जीर्ण है । आदि तथा अन्तिम पाठ नहीं है । छठी कथा का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

अथ छठी बारता लिखत ॥ तब राजा वीर विक्रमादीत फेरि जाये सीस्यौ के रूख जाये चढयौ अर अतग ने उतारि करि ले चल्यौ ॥ तब राह मैं अतग वेताल बोल्यो ॥ हे राजा रात्रि को समौ राह दुरि ॥ पैडो कटै नही ॥ कथा बारता कहयास्यो राह कटै सो हू येक कथा कहूँ छूं ॥ तु सुणि ॥

५६३ शनिश्चरदेव की कथा । पत्र सख्या-१३ । साइज-६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५२ माघ सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन न० १०३६ ।

विशेष—सेवाराम के पठनार्थ नन्दलाल ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

५६४. शीलकथा—भारामल्ल । पत्र सख्या-३३ । साइज-७×९ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-१९८५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०० ।

विशेष—सं० १८८६ की प्रति की नकल है। कापी साइज है। दो प्रति और हैं।

५६५. शीलतरंगिनीकथा-अखैराम लुहाड़िया। पत्र संख्या-८२। साइज-६×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२५ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०१।

विशेष—आरतराम गंगवाल ने प्रति लिपि की थी।

५६६ सप्तपरमस्थान विधान कथा—श्रुतसागर। पत्र संख्या-६। साइज-१२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८३० वैशाख बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० ६८।

विशेष—पं० गुलाबचन्द ने प्रतिलिपि की। संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी हैं। एक प्रति और है।

५६७. सप्तव्यसन कथा—आ० सोमकीर्ति। पत्र संख्या-७६। साइज-१०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-सं०१५२६ माघ सुदी १। लेखन काल-सं० १७८१। पूर्ण। वेष्टन नं०१६७।

५६८ सम्यक्त्वकौमुदी—मुनिधर्मकीर्ति। पत्र संख्या-१२ से ६२। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचनाकाल-×। लेखन काल सं० १६०२ श्रावण सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टन नं० १३६।

विशेष—किशनदास अग्रवाल ने प्रतिलिपि कराई थी। शंकरदास ने प्रतिलिपि की थी।

५६६ सम्यक्त्वकौमुदी कथा भाषा । पत्र संख्या-४०। साइज-६½×६½ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ५८३।

विशेष—४० से आगे पत्र नहीं है।

५७०. सम्यक्त्वकौमुदी कथा—जोधराज गोदीका। पत्र संख्या-५६। साइज-१०×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। रचना काल-सं० १७२४ फाल्गुन बुदी १३। लेखन काल-सं० १८३० कार्तिक बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० ५८२।

विशेष—हरीसिंह टोंग्या ने चन्द्रावतों के रामपुरा में प्रति लिपि की। एक प्रति और है।

५७१. सम्यग्दर्शन के आठ अंगों की कथा ... । पत्र संख्या-६। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २८०।

५७२. सुगन्धदशमीव्रत कथा—नयनानंद। पत्र संख्या-८। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १५२४ भादवा बुदी ६ आदित्वार। पूर्ण। वेष्टन नं० ५८१।

विशेष—इति सुगंधदशमी दुजिय संधि समाप्ता।

५७३ सिद्धचक्रव्रत कथा—नथमल। पत्र संख्या-११। साइज-१२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी।

विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२१ ।

५७४. हनुमत कथा—ब्र० रायमल्ल । पत्र सख्या-७१ । साइज-११X४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १६१६ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ६०६ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

विषय-व्याकरण शास्त्र

५७५. जैनेन्द्र व्याकरण—देवनन्दि । पत्र सख्या-४६५ । साइज-११X५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० २०८ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । प्रारम्भ के ३० पत्र जीर्ण हैं । एक प्रति और है वह भी अपूर्ण है ।

५७६. प्रक्रियारूपावली—प० रामरत्न शर्मा । पत्र संख्या-८६ । साइज-११X५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय व्याकरण । रचनाकाल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १५ ।

५७७. मट्टीभट्टी—भट्टी । पत्र सख्या-२ से २८ । साइज-१०X४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ७०० ।

५७८ शब्दरूपावली । पत्र सख्या-५६ । साइज-६½X४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०४ ।

५७६ सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्र सख्या-४६ । साइज-१०½X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

विषय-कोश एवं छन्द शास्त्र

५८०. **अमरकोश—अमरसिंह**। पत्र संख्या-२५। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत विषय-कोष। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १३४।

५८१. **एकाक्षर नाममाला—सुधाकलश**। पत्र संख्या-४८। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोष। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १५६।

५८२ **छन्दरत्नावली—हरिराम**। पत्र संख्या-२६ साइज-११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-छन्द शास्त्र। रचना काल-सं० १७०८। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६११।

विशेष—कुल २११ पद्य हैं—

अंतिम—ग्रंथ छद रत्नावली सारस याको नाम।

मूखन मरती तैं भयो कहै दास हरिराम ॥२११॥

इति श्री छद रत्नावली सपूर्ण।

रागनमनिधीचंद कर सो समत सुमजानि।

फागुण सुदी त्रयोदशी मांडुलिखी सो जानि ॥

५८३. **छन्दशतक—कवि वृन्दावन**। पत्र संख्या-३१। साइज-४½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-छन्द शास्त्र। रचना काल-सं० १८९८ माघ सुदी २। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५०३।

५८४. **नाममाला—धनजय**। पत्र संख्या-१६। साइज-१०×४ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोष। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८५१ चैत सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० १३७।

विशेष—खीवसिंह के शिष्य खुशालचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

५८५. **रूपदीपपिंगल—जैकृष्ण**। पत्र संख्या-१०। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-छन्दशास्त्र। रचना काल-सं० १७७६ भादवा सुदी २। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५७३।

विशेष—रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—सारद माता तुम बडी बुधि देहि दर हाल।

पिंगल की छाया लियै बरनू बावन चाल ॥१॥

गुरु गणेश के चरण गहि हियै धारके विष्णु।

कुंवर भवानीदास का सुगत करै जै किष्ण ॥२॥

रूप दीप परगट करूं भाषा बुद्धि समान ।
बालक कू सुख होत है उपजे अक्षर ज्ञान ॥३॥
प्राकृत की वानी कठिन भाषा सुगम प्रतिच ।
कृपाराम की कृपा सूं कंठ करै सब शिष्य ॥४॥
पिंगल सागर सम कह्यो छंदा भेद अपार ।
लघु दीरघ गुण अगण का बरनूं बुद्धि विचार ॥५॥

अंतिम— दोहा—गुण चतुराई बुधि लहै भला कहै सब कोइ ।
रूप दीप हिरदै धरै सो अक्षर कवि होय ॥

सोरठा—निज पुहकरण न्यात तिस में गोत कटारिया ।
सुनि प्राकृत सों बात तैसे ही भाषा करी ॥

दोहा—बांवन बरनी चाल सब, जैसी उपजी बुद्धि ।
भूल भेद जाको कह्यो, करो कवीश्वर सुद्ध ॥
संवत सत्रहसै वरसे और छहत्तर पाय ।
भादों सुदी दुतिया गुरू भयो ग्रंथ सुखदाय ॥५६॥

॥ इति रूपदीप पिंगल समाप्त ॥

५८६. श्रुतबोध—कालिदास । पत्र संख्या–५ । साइज–९×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छन्द शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८९८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ९०१ ।

विषय–नाटक

५८७. ज्ञानसूर्योदय नाटक—वादिचन्द्रसूरि । पत्र संख्या–२९ । साइज–११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–नाटक । रचना काल–सं० १६४८ माघ सुदी ८ । लेखन काल–सं० १६८८ जेष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६५ ।

विशेष—मधूक नगर में ग्रंथ रचना हुई । जोशी राघो ने मोजमाबाद में प्रति लिपि की ।

५८८. ज्ञान सूर्योदय नाटक भाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र संख्या-४८ । साइज-१०½×७½ इञ्च । । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । रचना काल-सं० १९१७ । लेखन काल-सं० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०२ ।

५८९. प्रबोधचन्द्रोदय—मल्ल कवि । पत्र संख्या-१५ । साइज-८×६ । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक रचना काल-सं० १६०१ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८९९ ।

विशेष—इस नाटक में ६ अंक हैं तथा मोह विवेक युद्ध कराया गया है । अन्त में विवेक की जीत है । बनारसीदास जी के मोह विवेक युद्ध के समान है । रचना का आदि अंत भाग इस प्रकार है—

प्रारंभिक पाठ—अभिनंदन परमारथ कीयो, अरु ह्वै गलित ज्ञान रस पीयो ।
नाटिक नागर चित में वर्स्यो, ताहि देख तन मन हुलस्यो ॥१॥
कृष्ण भट्ट करता है जहां, गंगा सागर भेटे तहां ।
अनुमै को घरु जानें सोइ, ता सम नांहि विवेकी कोई ॥२॥
तिन प्रबोधचन्द्रोदय कीयो, जानों दीपक हाथ ले दीयो ।
कर्ण सूर सुपावै स्वाद, कायर और करै प्रतिवाद ॥३॥
इन्द्री उदर परायन होइ, कबहू पै नहीं रीझी सोइ ।
पंच तत्व अवगति मन धारयो, तिहि भाषा नाटिक विस्तारयो ॥४॥

काम उवाच—जो रति तू बूझति है मोहि, व्यौरो सबै सुनाऊ तोहि ।
वै विमात मैया है मेरे, ते सब सुजन लागैं तेरे ॥
पिता एक माता द्वै गाऊँ, यह व्योरो आगे समझाऊं ।
ज्यो राघो अरु लंकपति राऊ, यो हम ऊन भयो जुध को चाऊ ॥

विवेक— श्री विवेक सैन्याह कराई, महाबली मनि कही न जांई ।
न्याय शास्त्र वेगि बुलाया, तासौं कहीवसीठ पठायौ ॥
तब वह गयो मोह कै पासा, बोलन लागै वचन उदासा ।
मथुरादासनि रति जो कीजै, मागै ते विरला सो जीजै ।
राइ विवेक कही समझाई, ए व्यौहार तुम छोडो भाई ।
तीरथ नदी देहुरे जेते, महापुरुष के हिरदे ते ते ॥
या र तुम न सतावौ काही, पश्चिम खुरासान को जाही ।
न्याय विचार कही यो वाता, अतिसै क्रोध न अंग समाता ॥

अंतिम पाठ—

पुरुष उवाच–तव आकास भयो जैकारा, और समैं मिटि गयौ विचारा।

पुरुष प्रकट परमेश्वर आहि, तिसौं विवेक जानियौ ताहि ॥

अव प्रभु भयो मोखि तन धरिया, चन्द्र प्रवोध उदै तव करीया।

सुमति विवेकरु सरधा सांति, काम देव कारन कौं कांति ॥

इनकी कृपा प्रसन्न मन मुवो, जोहो आदि सोइ फिरि हुवो।

विष्णु भक्ति तेरे पर सारा, कृत कृत भयो मिल्यौ अनुवारा ॥

अव तिह संग रहेगो एही, हौं भयो ब्रह्म विसरीयो देही।

विष्णु भक्ति तूं पहुँची आइ, कीयो अनद जु सदा सहाइ ॥

अरु चिरकाल के मनोरथ पूजे, गयो शत्रु साल हैं दूजे।

जो निरवत्ति वासना होइ, तातैं प्यारा औरन कोइ ॥

अद्वैत राज अनैम पदलयो, अचितैं चिंतवत अचित भयो।

जा सिर ऊपर सनक सनदा, अरु वसिष्ठ वेदै ताहि वंदा।

कृष्ण भट्ट सोइ रस गाया, मथुरादास सारु सोई वाता ॥

वंदे गुरु गोविद् के पाइ, मति उनमान कथा सो गाइ।

इति श्री मल्लकवि विरचिते प्रवोधचन्द्रोदय नाटके षष्टमां अक समाप्त।

५६०. मदनपराजय भाषा—स्वरुपचन्द बिलाला। पत्र सख्या–६३। साइज–११×७½ इन्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। रचना काल–स० १९१८ मंगसिर सुदी ७। लेखन काल–सं० १९१८। असाढ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन न० ४७१.।

विशेष—सवत शत उगणीस अरु अधिक अठारा मांहि।

मार्गशीर्ष सुदी सप्तमी दीतवार सुखदाहि ॥

तादिन यह पूरण करयो देश वचनिका मांहि।

सकल सघ मगल करो ऋद्धि वृद्धि सुख दाय ॥

इति मदनपराजय ग्रंथ की वचनिका संपूर्ण। स० १९१८ का मिती असाढ सुदी ७ शुक्रवार सपूर्ण।

लेखन काल संभवत: सही नहीं है।

५६१. मदनपराजय नाटक—जिनदेव। पत्र संख्या–४१। साइज–१२½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नाटक। रचना काल–×। लेखन काल–स० १७८१। माह सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन न० २५।

विशेष—वसवा नगर में आचार्य ज्ञानकीर्ति तथा प० त्रिलोकचन्द्र ने मिलकर प्रतिलिपि की।

५९२. मोहविवेक युद्ध—बनारसीदास । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७२ ।
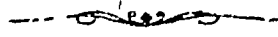
विषय—लोक विज्ञान

५९३. अकृत्रिम चैत्यालयों की रचना । पत्र संख्या-१० । साइज-११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६६ ।

५९४ त्रिलोकसार बंध चौपई—सुमतिकीर्त्ति । पत्र संख्या-१० । साइज-१०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८०७ ।

विशेष—

अंतिम—अतीत अनागत वर्तमान, सिद्ध अनंता गुणना धाम ।
भावे भगति समरू सदा, सुमति कीरति कहति अघतरु यदा ॥३०॥
मूलसंघ गुरु लक्ष्मीचंद मुनीदत्त सपाटि वीरजचंद ।
मुनिन्द ज्ञानभूषण तस पाटि चंग प्रभाचन्द यदी मलरंगि ॥३१॥
सुमति कीरति सूरि वर कहिसार त्रैलोक्य सार धर्म ध्यान विचार ।
जे भणि गणि ते सुखिया थाय एयशा रूपधरी मुगति जाय ॥३८॥

५९५. त्रिलोक दर्पण कथा—खड्गसेन । पत्र संख्या-२१८ । साइज-८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-सं० १७१३ । लेखन काल-स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७४ ।

विशेष—यह प्रति संवत् १७३६ की प्रति से लिपि की गई है ।

५९६. त्रिलोकसार—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-१८७ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२ ।

विशेष—टीकाकार माधवचन्द्र त्रैविद्याचार्य हैं । जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।
एक प्रति और है ।

५६७ त्रिलोकसार भाषा ....। पत्र संख्या–२ से ५० । साइज–११$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–लोक विज्ञान । रचना काल–X । लेखन काल–X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६३५ ।

५६८. त्रिलोकसार भाषा—उत्तमचन्द । पत्र संख्या–२२५ । साइज–१४$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–लोक विज्ञान । रचना काल–सं० १८४१ ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८१ ।

विशेष –दीवान श्योजीरामजी की प्रेरणा से ग्रंथ रचना की गयी थी जैसा कि ग्रंथ कर्त्ता ने लिखा है—

अंतिम दोहा—संवत् अष्टादश सत इकतालीस अधिकानि ।
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वादशी रविवारे परमानि ॥
त्रिलोकसार भाषा लिख्यो उत्तिमचंद विचारि ।
भूल्यो होऊ तो कछु लीज्यो सुकवि सुधारि ॥
दीवाण श्योजीराम यह कियो हृदय में ज्ञान ।
पुस्तग लिखाय श्रवणा सुणू राखो निस दिन ध्यान ॥

॥ इति ॥

गद्य– प्रथम पत्र —"तहा कहिए है ।" मेरा ज्ञान स्वभाव है सो ज्ञानावरण के निमित्त तैं हीन होय मति श्रुत पर्याय रूप भया है तहा मति ज्ञान करि शास्त्र के अक्षरनि का जानना भया । बहुरि श्रुतज्ञान करि अक्षर अर्थ के वाच्य वाचक सम्बन्ध है । ताका स्मरणतैं तिनके अर्थ का जानना भया । बहुरि मोह के उदयतैं मेरे उपाधिक भाव रागादिक पाइये है ... ।

५६९ त्रैलोक्यदर्पण ... । पत्र संख्या–२६ । साइज–११$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–लोक विज्ञान । रचना काल–X । लेखन काल–X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७८ ।

विशेष—बीच २ में चित्रों के लिए जगह छोड़ी हुई है ।

६०० त्रैलोक्यदीपक—वामदेव । पत्र संख्या–८६ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–लोक विज्ञान । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १८१२ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०० ।

विशेष—पं० खुशालचन्द्र ने लालसोट में प्रतिलिपि की ।

६०१. प्रति नं० २ । पत्र संख्या–६५ । साइज–११×५$\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल–सं० १५१६ असाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१ ।

विशेष—पत्र सं० २७ तक नवीन पत्र है इससे आगे प्राचीन पत्र हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति सं० १५१६ वर्षे आषाढ सुदी ५ भौमवासरे झुंझुणू शुभ स्थाने शाकंभूपति प्रजाप्रतिपालक समसखानविजयराज्ये ॥ श्रीमूलान्वये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० पद्मनंदि देवा स्तत्पट्टे भ० श्री शुभ-

चन्द्र देवास्तत् पट्टालंकार पटतर्कचूडामणि भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मुनि सहस्रकीर्ति तत्शिष्य ब्र० तिहुणा खंडेलवाला वंशे श्रेष्टि गोत्रे सं मोरना भार्या माहुस्तत्पुत्र स० मारवीरेन सघत्री पदमानद भ्राता कल्हाण्य. सं० पदमा भार्या पद्म श्री पुत्रा त्रयो हेमा, गजर, महिराज । कल्हा भार्या जाजी पुत्र घोराज पूतपाल एतैं पंचमी उद्यापन निमित्तं इद त्रैलोक्यदीपकं नामा कर्मक्षय निमित्तं सद्गुरवे प्रदत्तं ।

विषय—सुभाषित एवं नीति शास्त्र

६०२. उपदेशशतक—बनारसीदास । पत्र संख्या–२५ । साइज–८×४½ । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । रचना काल–सं०–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५५३ ।

६०३. गुलालपच्चीसी—ब्रह्म गुलाल । पत्र संख्या–४ । साइज–१०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । रचना काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७४ ।

६०४. जैनशतक—भूधरदास । पत्र संख्या–२७ । साइज–९×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । रचना काल–सं० १७८१ । पौष बुदी १३ लेखन काल–सं० १९१४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५११ ।

विशेष—उत्तमचन्द्र गुशरप की भार्या ने चढाया ।

६०५. नन्दबत्तीसी—मुनि विमलकीर्ति । पत्र संख्या–११ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । (पद्य) । विषय–नीति शास्त्र । रचना काल–सं० १७०१ । लेखन काल– सं० १७५० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२ ।

विशेष— २ श्लोक तथा १०१ पद्य हैं ।

६०६ नीतिशतक - चाणक्य । पत्र संख्या–२१ । साइज–६×६ । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३० ।

६०७ बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र संख्या–५१ । साइज–८½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४३ ।

६०८. **भावनावर्णन** । पत्र सख्या–३ । साइज–१२×६ । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–सुभाषित । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ११३६ ।

विशेष—हेमराज ने प्रतिलिपि की थी

६०६. **रेग्वता—बख्तीराम** । पत्र सख्या–६ । साइज–६×३½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल × । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ११४२ ।

विशेष—स्फुट रचनाऐ हैं ।

६१०. **सद्भाषितावली भाषा** । पत्र संख्या–३० । साइज–१२½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न०७०६ ।

विशेष—लेखक की मूल प्रति ही है, प्रति सशोधित है । पद्य सख्या ५०५ है । ग्रंथ के मूल कर्ता भ० सकलकीर्ति हैं ।

६११. **सुबुद्धिप्रकाश—थानसिंह** । पत्र संख्या–१४६ । साइज–१०½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) विषय–सुभाषित । रचना काल–स०१८४७ फागुण बुदी ६ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ८३० ।

रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ केवल ज्ञानानद मय परम पूज्य अरहत ।
समोसरण लक्ष्मी सहित राजै नमूं महत ।।१।।
अष्ट कर्म अरि निष्ट कर अष्ट महागुण पाय ।
सिष्टि इष्ट अष्ट धरा लही सिद्ध पद जाय ।।२।।
पचसार आचार मुखि गुण छत्तीस निवास ।
सिसा दिक्षा देत हैं आचारज शिव वास ।।३।।

अन्तिम पाठ—श्रीमति सांति सुनाथ जी सांति करौ निति आप ।
विघन हरौ मंगल करौ तुम त्रिभुवन के बाप ।।६०३
सांति सुमुद्रा रावरी सांति चित्त करि तोहि ।
पूजौ वदौ भाव सौ खेम कुसल करि मोहि ।।६०४।।
देस प्रजा भूपति सकल ईत भीत करि दूर ।
सुख संपति धन धाम जस क्रिया भाव रख पूर ।।६०६।।
फागुन वदि षष्टी सुगुर ठारासत सैताल ।
पूरण ग्रंथ सुसांति रखि विषै कियौ गुनमाल ।।६०६।।
पढिसी सुनिसी वांचसी करसी चरचा सार ।
मनवंछित फल पायसी तिनकौ करौ जुहार ।।६०७।।

इति श्री समुद्धि प्रकास भाषा ग्रंथ जिनसेवक थानसिंह विरचित संपूर्ण ।

कवि अवस्था वर्णन—भरत क्षेत्र में देस ढूढारि । तामैं वन उपवागि रसाल ॥
नदी वावडी कूप तडाग । ताकौ देखत उपजै राग ॥
कुकुट उडि बैठे जिहि ठाम । यो समवरती तामैं गाम ॥
धन कन गोधन पूरत लोग । तपसी चौमासे दे जोग ॥
ता मधि अवावति पुरसार । चौगिरदां परवृत अधिकार ॥
वस्ती तल उपरि सांवनी । ज्यौ दाडिम बीजन तैं वनी ॥
ताकौ जैसिंघ नामां भूप । सूरज वंस विषै ● अनूप ।
न्यायवंत बुधिवंत विसाल । परजापालक दीन दयाल ॥
दाता सूर तेज जिम भान । ससि अहला दीन्यौं जसखानि ॥
हय गय रथ सिवकादि अपार । अंत मंत्री प्रोहित परिवार ॥
हदि सौ विभौ कुवेर भंडार । वद्ध समूह तियां वहुवार ॥
पंडत कवि भाटादि विसेख । षट दरसन सबही कौ भेष ॥
अपनै अपनै धर्म सुचलै । कोऊ काहू पै नही मिलै ॥४१॥
यद्यपि सिव धर्मी भूपति जान । मंत्री जैनी मुखि अधिकाहि ॥
जैनी सिव के धाम उतंग । सिखर धुजा छत कलस सुचंग ॥
राग दोष आपस मैं नाहि । सबकैं प्रीति भाव अधिकाहि ॥
सब ही भूपन मैं सिरदार । छत्रपती चलि इन अनुसार ॥
दुतिय पुरी सांगावति जानि । दक्षिण दिसि षट कोस प्रमांन ॥
पुरी तले सरिता मनुहार । नाम सुरसती सुध जलधार ॥४४।
नगर लोक धनवान अपार । विविध भांति करिं है व्योहार ॥
ऊचे सिखर कलस धुज जहां । पंच जैन मन्दिर हैं तहां ॥
धर्म दया सज्जन गुन लीन । जैनी व्रहौत वसै परवीन ॥
वंस खण्डेलवाल मम गोत । ठोल्या वहु परिवारी गोत ॥
यासौ वास हमारौ सही । हेमराज दादो मम कही ॥
पुनि अनुसारि सकल घर मध्य । सामग्री दीपै सब रिद्धि ॥

दोहा—वडो मलूक सुचंद सुत, दूजौ मोहन राम ।
लूणकर्ण तीजो कह्यौ चौथौ साहिब राम ॥
सबकैं सुत पुत्री घना मोहन राम सुतात ।
मेरौ जन्म संगावति मांहिं भयौ अवदात ॥

अवावति सागावति नगर वीच जै भूप ।
आप वसायौ चाहि करि जैपुर नाम अनूप ॥
सूत वध सवही किये हाट सुघट बाजार ।
मिंदर कोटि सुकांगरे दरवाजे अधिकार ॥
सतखमौ जु बनाइयो, अपनै रहनै काज ।
चित्र महल रचना करी, बाग ताल महाराज ॥
साहूकार बुलाइया लेख भेज बहु देस ।
हासिल चाष्यौ न्याय जुत लोभ अधिक नहिं लेस ॥
सुखी भये सवही जहा अधिक चल्यौ व्यौपार ।
सांगावती आंबावती उजरी तव निरधार ॥५४॥
आय वसै जैपुर विषै कीन्है घर अरु हाटि ।
निज पुनि के अनुसार तैं सुखित भयौ सव ठाठ ॥५५॥
षोडश संवत्सर भयौ सव ही कौ सुख भ्रात ।
जैसिंह लोकांतर गयौ पिछली सुनि अव बात ॥
सब ईसुर मुख भूपती ईसर सिद्ध सु नाम ।
अति उदार प्राक्रम बडौ सव ही कौ आराम ॥
न्यायवत सवही सुखी दड मूल कछु नाहिं ।
काहू कौ दीन्है नहीं जुगलाचार न रहाय ॥
काल दोष तै नीच जन सगराखि वछंवारि ।
तीन वर्ण के ऊच जन तिनकौ मानधराय ॥
आप हठी काहू तनी मानी नाहीं वात ।
पिछले मत्र थकी जिके कियौ भूप को घात ॥

अडिल्ल— दखिणी लियौ बुलाय गांव वाहिर रहे ।
मिलि कै जांहि दिवान दाम देने कहे ॥
लघु भ्राता माधव कूं वेगि मिलाय कै ।
लेख भेजियौ राज करौ तुम आय कै ॥
माधव आगै सिव धरमी मुखियौ भयो ।
जैन्यासौं करि द्रोह वच मैं लै लियौ ॥
देव धर्म गुरु श्रुत कौ विनय विगारियौ ।
कीयौ नांहि विचारि पाप विस्तारियौ ॥

दोहा— भूप अरथ समझ्यो नहीं मन्त्री के वसि होय ।
दंड सहर में नाखियो दुखी भये सब लोय ॥
विविध भांति धन घटि गयौ पायौ बहुत कलेस ।
दुखी होय पुर कौ तजो तब ताकौ पर देस ॥

सोरठा— मरथपुर में आय कछू काल बैठे रहे ।
पुनि जयपुर में जाय विणज गणि रहबो करै ॥
माधव के दरबार विणज कियौ सुख सौं रहे ।
आगैं सुनि चित धारि माधो की जो वारता ॥६५॥

अडिल्ल— दुखी रोग धन हीन होय परगति गयौ ।
जासु पुत्र पृथ्वी हरि राजा पद भयौ ॥
इंस्या करि लघु आप वृतांत जु लैगयौ ।
अनुजराज परतापसिंघ पीछै भयौ ॥
सिवमत जिनमत देवधन विप्र अतिथि जो कोय ।
ग्रहण कियौ वसि लौम तैं पाप पुण्य नहिं जोय ॥
ई' अन्याय के जोग तौ दुखी लोग हम जोय ।
ह्वै उदास पुर छौंडियो सुख इ छन्या उर होय ॥

सोरठा— जादौ वंस विसाल नगर करोरी को पती ।
नाम भूप गोपाल, विणज हमारो थो सदा ॥
पीछै तुरछमपाल बैठ्यौ वास इहां कर्‌यो ।
राख्यौ मान विसाल, हाट सुघट उद्यम कियौ ।
मानिक्पाल नरेस तुरसमपाल सुपद लयौ ।
मद कषाय महेस, राग दोस मध्य रत है ॥
जाकै शत्रु न कोय, सबसौं मिलि राज जु करै ।
रैत खुसी कछु जोय, थिरता पातैं इन करी ॥
पिता रह्यो इहि थान, हम जैपुर में ही रहे ।
लघु भ्राता सुत जानि, तिन व्योपार कियो घनौं ॥
नैन सुख है नाम, नानिग राम जु तनुज हैं ।
बहु स्यानौ अभिराम, राजदुवार में प्रगट है ॥
गन्यांतर मैं तात, गयौ जु टीकौ करण कौ ।

आये तव तैं भ्रात, इहां रहे थिरता करी ॥७५॥
देवल साधरमी जहां पूजा धर्मक थान ।
परियन खांन सुपांन की, थिति सगति विद्वान ॥
अैसी अछ्या रूप जो कीजे सुबुधि प्रकास ।
भाषामय अर बहु रहसि रहैसि यामैं मासि ॥७७॥
नैना को लघु भ्रात, नाम गुलाब सु जासु को ।
श्रुत सुनि के हरषात, सुबुधि दैन कौ श्रुत रच्यौ ॥

६१२. सुभाषित । पत्र संख्या–६ । साइज–८×५ इन्च । विषय–सुभाषित । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ११५४ ।

६१३. सुभाषितरत्नावलि—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र संख्या–१८ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय सुभाषित । रचनाकाल–× । लेखन काल स० १५८० वैसाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० १६७ ।

बीच २ में नये पत्र भी लगे हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

विशेष—संवत् १५८० वर्षे वैसाख सुदी ६ गुरौ श्री टोडानग्रमध्ये राजाधिराजमुकुटमणिसूर्यसेनराज्ये श्री सोलंकी वंशे श्री प्रभाचन्द्र देवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये वाकुलीवालगोत्रे साह नेमदास तस्य भार्या सिंगारदे तत्पुत्र पासा तस्य भार्या दुतिय पुत्र साह जैला तस्य भार्या गौरादे तत्पुत्र गिरराज । इदं शास्त्र लिखापितं बाई माता कर्म क्षयनिमित्तं ।

विशेष—सात प्रतियां और हैं । सभी प्रतियां प्राचीन हैं ।

६१४ सुभाषितार्णव । पत्र संख्या–१ से ४८ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५० ।

विशेष – प्रति प्राचीन है । संस्कृत में संकेत भी दिये हुए हैं । पत्र २३ वां बाद का लिखा हुआ है ।

६१५ सुभाषितावलि भाषा । पत्र सख्या–७८ । साइज–६½×६½ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । रचनाकाल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० १०२४ ।

विशेष —६७६ पद्यों की भाषा है अन्तिम पत्र नहीं है ।

प्रारम्भ—

श्री सरवज्ञ नमूं चितलाय, गुरू सुगुरू निरग्र थ सुभाय ।
जिन वाणी ध्याउ निरकार, सदा सहाई भवि गण तार ॥१॥

ग्रन्थ सुभाषित जिन वरणयौ, ताकौ श्ररथ कछु इक लगौ।
निज पर हित कारणि गुण खांनि, भाखू भाषा सुणहु सुजान ॥
सीख एक सद्गुरु की सार, सुणि धारौ निज चित्तमझारि।
मनुषि जनम सुख कारण पाय, एसी क्रिया करहु मन लाय ॥३॥

६१६ सूक्तिमुक्तावली - सोमप्रभसूरि। पत्र संख्या-१४। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३०८।

विशेष- ८ प्रतियां श्रौर हैं।

६१७ सूक्ति संग्रह " । पत्र संख्या-२०। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १४५।

विशेष—जैनेतर ग्रन्थों में से सूक्तियों का संग्रह है।

६१८. हितोपदेशवत्तीसी—वालचन्द। पत्र संख्या-३। साइज-६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५६३।

विषय—स्तोत्र

६१६. अकलंक स्तोत्र • । पत्र संख्या-५। साइज-८¾×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६२६। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५६।

६२० अकलंकाष्टक भाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र संख्या-१६। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-स० १६१५ श्रावण सुदी २। लेखन काल-स० १६३५ माघ बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ५०५।

६२१. आराधना स्तवन—वाचक विनय सूरि। पत्र संख्या-५। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-स० १७२६। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०४।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री विजयदेव सूरिंद पटधर, तीरथ जग मइ इणि जगि ।
तप गच्छपति श्री विजयप्रभसूरि सूरि तेजइ भगमगइ ॥२॥
श्री हीर विनय सूरी सीस वाचक श्री कीर्तिविजय सुर गुरु समो ।
तस सीस वाचक विनय विणयइ, धरयो जिन चोवीस मो ॥३॥
सइ सत्तर सवत् उगणसीयइ रही राते रचउ मासे ए ।
विजय दसमी विजय कारयां कीउ गुण अभ्यासए ॥४॥
नरमव आराधना सिद्धि साधन सुकृत लीला विलासए ।
निर्जरा हेत इठवन रचिउ नामइ पुण्य प्रकासए ॥५॥

६२२. आलोचना पाठ । पत्र सख्या–१ से १२ । साइज–१०½×४½ इच । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तवन । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । एक एक प्रति और है ।

६२३. इष्टछत्तीसी । पत्र संख्या–८ । साइज–६½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५३ ।

६२४. इष्टछत्तीसी—बुधजन । पत्र संख्या–६ । साइज–१२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२३ ।

६२५. ऋषिमंडलस्तोत्र—गौतम गणधर । पत्र संख्या–७ । साइज–८×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६० ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६२६. एक सौ आठ (१०८) नामों की गुणमाला—द्यानत । पत्र संख्या–३ । साइज–८×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५८ ।

६२७. एकीभावस्तोत्र—वादिराज । पत्र संख्या–६ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६४ ।

विशेष—संक्षिप्त संस्कृत टीका सहित है । ५ प्रतियां और हैं ।

६२८. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । पत्र संख्या–६ । साइज–११×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६७ ।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई थी । अन्त में शान्तिनाथ स्तोत्र भी है । ७ प्रतियां और हैं ।

६२६. **कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा—बनारसीदास** । पत्र संख्या ११ से २६ । साइज—८×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १८८० ज्येष्ठ सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८० ।

विशेष—नानूलाल बज ने प्रतिलिपि की १६ से २६ तक पत्र नहीं हैं । २७ से २६ तक सोलह कारण पूजा जयमाल है ।

६३०. **कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा—अखयराज** । पत्र संख्या—७ से २६ । साइज ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—स्तोत्र । रचना काल—× । लेखन काल—× । अपूर्ण । वेष्टन न० ११०५ ।

६३१. **चौबीस महाराज को विनती—रामचन्द्र** । पत्र सख्या—७ । साइज—१०½×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० ४०५ ।

६३२. **ज्वालामालिनी स्तोत्र** ... । पत्र सख्या—८ । साइज—८×४¼ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५७ ।

६३३. **जिन दर्शन** । पत्र संख्या—३ । साइज—६½×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२७ ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

६३४. **जिनपजरस्तोत्र—कमलप्रभ** । पत्र सख्या—३ । साइज—८×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५६ ।

६३५. **जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य** । पत्र सख्या—१२ । साइज—११×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० ४७६ ।

विशेष—लक्ष्मीस्तोत्र भी दिया हुआ है । दो प्रतियां और हैं ।

६३६. **जिनसहस्रनाम—पं० आशाधर** । पत्र संख्या—८ । साइज—१०½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—× । लेखन काल—स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८६ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६३७. **जिनसहस्रनाम टीका—प० आशाधर (मूल कर्त्ता) टीकाकार श्रुतसागर सूरि** । पत्र सख्या—१२१ । साइज—१०×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १८०४ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२ ।

विशेष—प्रति सुन्दर एव शुद्ध है ।

६३८. **जिनसहस्रनाम भाषा—बनारसीदास** । पत्र संख्या–७ । साइज–११×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–सं० १६९० । लेखन काल–सं० १९७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६० ।

६३९. **जिन स्तुति** ... । पत्र संख्या–५ । साइज–१२×५½ इच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–स्तवन । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८५ ।

६४०. **दर्शन दशक—चैनसुख** । पत्र संख्या–२ । साइज–११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६४१. **दर्शन पाठ** । पत्र संख्या–४ । साइज–११×५ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७७ ।

विशेष—दर्शन विधि भी दी है ।

६४२. **निर्वाणकाण्ड गाथा** । पत्र संख्या–१२ । साइज–४×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६० ।

विशेष—गुटका साइज है । तीन प्रतियां और हैं ।

६४३. **निर्वाणकाण्ड भाषा—भैया भगवतीदास** । पत्र संख्या–२ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४९ ।

६४४. **पद व भजन संग्रह** ... । पत्र संख्या–७९ । साइज–१३×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४९३ ।

विशेष—जैन कवियों के पदों का संग्रह है ।

६४५. **पद व भजन संग्रह** । पत्र संख्या–२०६ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद संग्रह । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४९१ ।

विशेष—निम्न रागिनियों के भजन हैं—

राग भैरु,	भैरवी,	रामकली,	ललित,	सारंग,	विलावल,	टोडी,
पत्र — १–९	१९–२२	२३–४०	४१–४९	५०–७१	७२–१०५	१०६–११४
पूरवी,	मल्हार,	ईमण,	सोरठ,	आसावरी,		
११५–११८	११९–१३१	१३१–१५०	१५६–२०४	२०६		

इनके अतिरिक्त नेमिदशाभवर्णन भी दिया हुआ है ।

६४६. पद संग्रह ··· । पत्र संख्या-४ । साइज-८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद (स्तवन) । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५४ ।

६४७. पद संग्रह ··· । पत्र संख्या-४७ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१३ ।

६४८. पद संग्रह । पत्र संख्या-१ से ६ । साइज-१०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६३३ ।

६४९. पद संग्रह ··· । पत्र संख्या-१ (लंबा पत्र) । साइज-१५½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८२ ।

विशेष—किशनदास तथा द्यानतराय के पद है ।

६५० पद संग्रह—ब्रह्मदयाल । पत्र संख्या-८ । साइज-४½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६१ ।

६५१. पद संग्रह ··· । पत्र संख्या-१ । साइज-१४×२७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६७ ।

विशेष—लंबा पत्र है ।

६५२. पद संग्रह ··· । पत्र संख्या-१७ । साइज-६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६८ ।

६५३. पद संग्रह ··· । पत्र संख्या-३५ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १११७ ।

६५४ पद संग्रह ··· । पत्र संख्या-१४ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १११४ ।

६५५. पद्मावती अष्टक वृत्ति ··· । पत्र संख्या-१६ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६३ ।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत टीका सहित है ।

६५६. पद्मावतीस्तोत्र ··· । पत्र संख्या-६ । साइज-८¾×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५४ ।

६५७. पद्मावतीस्तोत्र । पत्र सख्या-४ । साइज-१०½×६ इश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-स० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६७ ।

६५८. पंचमंगल—रूपचन्द । पत्र सख्या-२ से १२ । साइज-६½×४½ इश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६५६ पार्श्वनाथ स्तोत्र । पत्र संख्या-१० । साइज-८×४½ इश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ५५४ ।

६६०. पार्श्व लघु पाठ । पत्र सख्या-३ । साइज-१०×४ इश्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५६ ।

६६१. बडा दर्शन । पत्र सख्या-६ । साइज-११½×५½ इश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०७ ।

विशेष— पत्र ३ से आगे रूपचन्द कृत पच मंगल पाठ हैं ।

६६२ विनती सग्रह । पत्र संख्या-५ । साइज-६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३५ ।

६६३. विनती—किशनसिंह । पत्र सख्या-१ । साइज-६×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १०१५ ।

६६४. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंगाचार्य । पत्र संख्या-१२ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-स[illegible] । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६७४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४८६ ।

विशेष—१० प्रतियां और हैं ।

६६५. भक्तामरस्तोत्र भाषा—हेमराज । पत्र संख्या-१० । साइज-१०½×६½ इश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२५ ।

६६६. भक्तामर स्तोत्र सटीक—मानतुगाचार्य टीकाकार । पत्र संख्या-४ । साइज-११½×४½ इश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचनाकाल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० २६६ ।

विशेष—श्वेताम्बरीय टीका है, ४४ पद्य हैं तथा टीका हिन्दी में हैं ।

एक प्रति और है जिसमें मत्र आदि भी दिये हुए हैं

६६७. भक्तामर स्तोत्र टीका ...... । पत्र संख्या-१२ । साइज-८½×६¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६४६ ।

विशेष—१२ से आगे पत्र नहीं हैं ।

६६८. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र संख्या-४५ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १६६७ अषाढ सुदी ५ । लेखन काल-सं० १६८१ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५ ।

विशेष—आचार्य भुवनकीर्त्ति के लिए घाटपुर में लालचन्द ने यह पुस्तक प्रदान की ।

६६९. भूपालचतुर्विंशति—भूपाल कवि । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २८१ ।

विशेष—१ प्रति और है ।

६७०. मंगलाष्टक । पत्र संख्या-२ । साइज-१३×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४५ ।

६७१ लघु सामायिक पाठ । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४४ ।

६७२. लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मनंदि । पत्र संख्या-२ । साइज-६×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२१ ।

६७३ विषापहारस्तोत्र—धनंजय । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६६ ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं, जिनमें एक संस्कृत टीका सहित है ।

६७४. विषापहारस्तोत्र भाषा—अचलकीर्त्ति । पत्र संख्या-५ । साइज-८×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४४ ।

६७५. वृहद्शान्ति स्तोत्र । पत्र संख्या-१४ । साइज-१०×४ इन्च । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०१ ।

विशेष—प्रारम्भ में भयहार स्तोत्र, अजित शांति स्तोत्र, व भक्तामर स्तोत्र हैं ।

६७६. वीरतपसज्झाय...... । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५८ ।

भाषा गुजराती है। ६५ पद्य हैं

प्रारम्भ में ३४ पद्य में कुमति निघटिन श्रीमधर जिनस्तवन है।

६७७. शान्तिस्तवनस्तोत्र । पत्र सख्या-३ । साइज-८¾×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५३ ।

६७८. सरस्वतीस्तोत्र—विरंचि । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ५२६ ।

विशेष—सारस्वत स्तोत्र नाम दिया हुआ है। ब्रह्मांड पुराण के उत्तर खंड का पाठ है।

६७६. स्तोत्र पाठ संग्रह । पत्र संख्या-४० । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ३०० ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है—

(१) निर्वाण काण्ड	—
(२) तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वाति
(३) भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य
(४) लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव
(५) जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य
(६) मृत्यु महोत्सव	—
(७) द्रव्य संग्रह गाथा	नेमिचन्द्राचार्य
(८) विषापहार स्तोत्र	धनजय

६८०. स्तोत्र संग्रह । पत्र संख्या-२१ से ६५ । साइज-११¾×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र । लेखन काल-स० १६२६ । अपूर्ण । वेष्टन न० ६२४ ।

६ स्तोत्रों का संग्रह है।

६८१. स्तोत्र । पत्र सख्या-८ । साइज-१२×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७२ ।

विशेष—अक्षर मोटे हैं तथा प्रति प्राचीन है।

६८२. स्वयंभूस्तोत्र—समंतभद्र । पत्र सख्या-४ । साइज-११¾×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० २६७ ।

विशेष—विसर्जन पाठ भी है। दो प्रतियां और हैं।

६८३ समतभद्रस्तुति (वृहद् स्वयभू स्तोत्र) — समतभद्र । पत्र संख्या—१४ । साइज—११½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० २६४ ।

६८४ साधु वदना । पत्र सख्या—८ । साइज—१०½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । रचना काल—× । लेखन काल—स० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७३ ।

६८५ सामायिक पाठ । पत्र सख्या—२६ । साइज—७×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० ५४ ।

विशेष—गुटका साइज है तथा निम्न सग्रह और है

निरजन स्तोत्र—पत्र सख्या ३

सामायिक—पत्र सख्या

चौवीस तीर्थंकर स्तुति—पत्र सख्या—२८ से २५

निर्वाण काण्ड गाथा—पत्र सख्या—२५ से २६

६८६. सामायिक पाठ । पत्र सख्या—६१ । साइज—११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—× । लेखन काल—पौष वदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० १४८ ।

विशेष—जोशी श्रीपति ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७ सामायिक पाठ भाषा—त्रिलोकेन्द्रकीर्ति । पत्र सख्या—६४ । साइज—६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी विषय—स्तोत्र । रचना काल—स० १८३२ वैशाख बुदी १४ । लेखन काल—स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८२२ ।

प्रारम्भ—श्री जिन वंदौं भाव धरि जा प्रसाद शिव बोध ।
जिन वाणी अरु जैन गुरु वदौ मान निरोध ॥
सामायिक टीका करी प्रभाचन्द मुनिराज ।
सस्कृत वाणी जो निपुण ताहि के वो काज ॥२॥
जो व्याकरण विना लहै सामायिक को अर्थ ।
सो भाषा टीका करू अल्पमती जन अर्थ ॥३॥

अन्तिम—अठरासै और बत्तीस सवत् जाणो विसवा वीस ।
मास भलौ वैसाख बखाण क्रिसन पक्ष चोदसि तिथि जाण ॥
शुक्रवार शुभ वेला योग पुर अजमेर वसै भवि लोग ।
मूल सघ नद्याम्नाय बलात्कार गण है सुखदाय ॥
गच्छ सारदा अन्वयसार कुन्दकुन्द मुनिराज विचार ।

श्री भट्टारक कीर्ति निधान विजयकीर्ति नामैं गुण खान ॥
तिन इह भाषा टीका करी प्रभाचन्द टीका अनुसरी।

दोहा—संस्कृत शब्द नहीं लिख्यौ सब मानक इण माहि।
किहां किहां लिखियो कठिन घणी बधाई नाहि ॥
यू भावारथ सूचिनी इह टीका को नाम।
जाणों बांचो उर धरो ज्यूं सीझै शिव काम ॥
प्रभाचन्द की मति कहां किहां हमारी बुद्धि।
रवि की कान्ति किहौ किहां अर दीपक की शुद्धि ॥
पै हम मति माफिक करी इण में अर्थ विरुद्ध।
जो प्रमाद वसि होय सो सुमति कीजिये शुद्ध ॥

सोरठा—भाषा टीका एह कीई जिनेसर भक्ति भसि।
जो चाहो शिव गेह इण को पाठ करो सदा ॥१॥

इति श्रीमद्भट्टारक श्री तिलोकेन्द्रकीर्त्ति विरचिता सामायिक टीका भावार्थसूचिनी नाम्नी सिद्धमगमत्।

गद्य का उदाहरण—भलो है पार्श्व कहतां सामधि जैह को अैसा हे सुपार्श्वनाथ भगवन् आप जय जय कहतां बार बार जयवंता रहो। आपनै म्हारो बारबार नमस्कार होवो। (पत्र ३८)

६८८. **सामायिक वचनिका—जयचन्द छाबड़ा।** पत्र संख्या–५०। साइज–१२×५$\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४०५।

विशेष—एक प्रति और है।

६८६. **सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनन्दि।** पत्र सख्या–३। साइज–११×५$\frac{१}{४}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५५।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं जिसमें एक हिन्दी टीका सहित है।

विपय–संग्रह

६६०. **गुटका नं० १** । पत्र संख्या–१५५ । साइज–१०X७ इञ्च । भाषा–प्राकृत–संस्कृत । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१८ ।

मुख्यतया निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	—
आराधनासार	देवसेन	"	—
तत्वसार	देवसेन	"	—
समाधि शतक	पूज्यपाद	संस्कृत	—
त्रिभंगीसार	नेमिचन्द	प्राकृत	—
श्रावकाचार दोहा	लक्ष्मीचन्द	"	—

६६१. **गुटका नं० २** । पत्र संख्या–१२६ । साइज–८½X६ इञ्च । भाषा–प्राकृत–संस्कृत । लेखन काल–सं० १८१५ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१६ ।

विशेष—पूजा पाठ तथा सिंदूरप्रकरण आदि का संग्रह है । करौली में पाठ संग्रह किये गये थे । श्री राजाराम के पुत्र मौजीराम लुहाडिया ने प्रति लिखवाई थी ।

६६२ **गुटका नं० ३** । पत्र संख्या–६८ । साइज–६X६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चर्चा । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६० ।

विशेष - धार्मिक चर्चाओं का सग्रह है ।

६६३ **गुटका नं० ४** । पत्र संख्या–११६ । साइज–८½X६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । लेखन काल–X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३७३ ।

विशेष —अष्टकर्म-प्रकृति वर्णन तथा तीनलोक वर्णन है ।

६६४. **गुटका नं० ५** । पत्र संख्या–१८१ । साइज–१०½X७ इञ्च । भाषा -हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३३ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
पार्श्व पुराण	भूधरदास	हिन्दी	पत्र १–७२
चौवीस तीर्थ कर पूजा	रामचन्द्र	"	७३–१२६
देवसिद्धपूजा एवं	—	हिन्दी	१२६–१८१
अन्य पाठ संग्रह	—	"	

६६५. **गुटका नं० ६** । पत्र संख्या–१५२ । साइज–७×६¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३७ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चाणक्य नीति शास्त्र	चाणक्य	संस्कृत	×
वृन्दविनोद सतसई	वृन्द	हिन्दी	७१० पद्य हैं ।
विहारी सतसई	विहारी	हिन्दी	७०६ पद्य हैं ।
कोकसार	आनंद कवि	हिन्दी	४४४ पद्य हैं ।

६६६. **गुटका न० ७** । पत्र संख्या–१५२ । साइज–६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर आदि पञ्च स्तोत्र	—	संस्कृत
तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वाति	"
सुदर्शनरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
भविष्यदत्त चौपई	"	"

६६७. **गुटका नं० ८** । पत्र संख्या–१८७ । साइज–८½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–सं० १७२७ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४८ ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—

प्रवचनसार भाषा	हेमराज	हिन्दी	
पद	रूपचन्द	"	
परमार्थ दोहा शतक	"	"	लेखन काल १७२१
पञ्च मगल	"	"	

भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	”	
चिन्तामणि मान बावनी	मनोहर कवि	”	२० पद्य है । अपूर्ण
कलियुग चरित	—	”	१० पद्य हैं ।

६६८. गुटका नं० ६ । पत्र संख्या–१३८ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–सं० १८१० पूर्ण । वेष्टन नं० ४४६ ।

विशेष—सामायिक पाठ हिन्दी टीका सहित तथा अन्य पाठों का संग्रह है ।

६६६. गुटका नं० १० । पत्र संख्या–४४ । साइज–६×४ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–सं० १८८४ अषाढ सुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

७००. गुटका नं० ११ । पत्र संख्या–२६४ । साइज–६×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी–प्राकृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५१ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	—
कल्याणमंदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	”	—
कर्मकाण्ड गाथा	नेमिचन्द्र	प्राकृत	—
द्रव्यसंग्रह गाथा	”	”	—
तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	—
नाम माला	—	”	—
चौरासी बोल	हेमराज	हिन्दी	—
निर्वाण काण्ड	—	प्राकृत	—
स्वयम्भू स्तोत्र	समंतभद्र	संस्कृत	—
परमानद स्तोत्र	—	”	—
दर्शन पाठ	—	”	—
करुणाष्टक	—	”	—
पार्श्वस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	”	—
पार्श्वस्तोत्र	—	”	—
चौबीस तीर्थंकर पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी	—
पूजा संग्रह	—	” संस्कृत	—

स्तुति	—	हिन्दी

पदसग्रह—रूपचन्द्र, दीपचन्द, टेकचन्द, हर्षचन्द, धर्मदास, भूधरदास और बनारसीदास आदि कवियों के हैं।

७०१. गुटका नं० १२। पत्र सख्या-७२। साइज-१०×७½ इश्व। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४८६।

विशेष—पूजाओं का सग्रह है।

७०२ गुटका नं० १३। पत्र सख्या-६४। साइज-६×६½ इश्व। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-स० १८४२। पूर्ण। वेष्टन नं० ५८८।

विशेष—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चौवीस ठाणा चर्चा	—	हिन्दी	
कुदेव स्वरूप वर्णन	—	"	
मोक्षपैडी	बनारसीदास	"	

७०३. गुटका नं० १४। पत्र सख्या-४३। साइज-७×४¾ इन्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ५८६।

विशेष—पूजा संग्रह, कल्याणमन्दिर स्तोत्र समयसार नाटक भाषा-(बनारसीदास) आदि पाठों का सग्रह है।

७०४. गुटका नं० १५। पत्र सख्या-२६२। साइज-८×६ इश्व। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-स० १७५६। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३५।

सूची	कर्त्ता का नाम	पत्र	भाषा	विशेष
श्रीपालरास	ब्रह्मरायमल्ल	१-२६	हिन्दी	रचनाकाल १६३० आषाढ सुदी १३
प्रद्युम्नरास	"	२६-४४	"	१६२८ भादवा सुदी २
नेमीश्वररास	"	४४-५६	"	१६१५ श्रावण सुदी १३
सुदर्शनरास	"	५६-७६	"	१६२६ वैशाख सुदी ७
शीलरास	विजयदेव सूरि	७६-८८	"	—
अठारह नाता का वर्णन	लोहट	८८-६२	"	—
धर्मरास	—	६२-१६४	"	—
रविवार की कथा	भाऊ कवि	१०४-११३	"	—
अध्यात्म दोहा	रूपचन्द	११३-११७	"	१०३ दोहे हैं।

सीताचरित्र	कविवालक	११७–२३७	,,	—
पुरन्दर चौपई	मालदेव सूरि	२३७–२५६	,,	लेखनकाल १७५६
योगसार	योगचन्द्र	२५७–२६२	,,	—

७०५. गुटका न० १६। पत्र संख्या–३७६। साइज–६×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० ६३१।

निम्न पाठों का संग्रह है—

जिनसहस्रनाम पूजा	धर्मभूषण	संस्कृत	पत्र १–१५६
समवशरण पूजा	लालच द		
	विनोदीलाल	हिन्दी	१५७–३७६ रचना काल–१८३४

७०६. गुटका न० १७। पत्र सख्या–२० से ४१०। साइज–६×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन न० ६३६।

मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है—

रचना का नाम	कर्त्ता का नाम	भ.षा	विशेष
पंथीगीत	छीहल	हिन्दी	
परमात्म प्रकाश	योगी द्रदेव	अपभ्र श	
घनारसी विलास के कुछ अ श	वनारसीदास	हिन्दी	
सीताचरित्र	कवि वालक	,,	रचना काल १७१२
पद सग्रह	—	,,	विभिन्न कवियों के पदों का सग्रह है
मांगी तु गीतीर्थ वर्णन	परिखाराम	,,	
दोहा शतक	हेमराज	,,	अध्यात्म, र० का० स० १७२५ कार्तिक सुदी ५, १०१ पद्य हैं।
दोह शतक	रुपचन्द	,,	अध्यात्म १०१ पद्य हैं।
सिन्दूर प्रकरण	वनारसीदास	,,	
भक्तामर स्तोत्र टीका	अखयराज श्रीमाल	,,	स्तोत्र अतिम पद्य हेमराज कृत है।
सवोध पचासिका	त्रिभुवनच द	,,	
अणुव्रत की जखडी	—	,,	
अकृत्रिम चैत्यालय की जयमाल	—	,,	
पद—चेतन यो घर नाहीं तेरो	मनराम	,,	

पद—जिय तैं नर भवि यों ही खोयो	मनराम	हिन्दी	
रोगापहार स्तोत्र	"	"	
पद—सुख घडी कब आवली नहीं हो हर्षकीर्ति संसार मझार—		"	१२ अतरे हैं।

७०७. गुटका नं० १८। पत्र सख्या–१६४। साइज–७×६ इश्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३७।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामर भाषा	हेमराज	"	—
कर्म बत्तीसी	अचलकीर्त्ति	"	र० का० १७७७ पावा नगर में रचना की गयी थी।
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	"	—
मेघ कुमार गीत	पूनो	"	—
सिन्दूर प्रकरण	बनारसीदास	"	—
बनारसी विलास के पद एवं पाठ	"	"	—
जम्बूस्वामी पूजा	पांडे जिनराय	"	ले० का० १७८६ पौष सुदी १०

विशेष—जबलपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

विशेष—१२० पत्र से आगे की लिपि पढने में नहीं आता।

७०८ गुटका नं० १६। पत्र सख्या–२२। साइज–५×४½ इश्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८०४।

विशेष—जीवों की संख्या का वर्णन है।

७०६ गुटका नं० २०। पत्र सख्या–१३५। साइज–६½×१० इश्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १७८८। पूर्ण। वेष्टन नं० ८३८।

निम्न पाठों का संग्रह है—

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी	रचना काल सं० १६६१
बनारसी विलास	"	"	—
कर्म प्रकृति वर्णन	"	"	—

७१०. गुटका नं० २१ । पत्र संख्या–२४१ । साइज ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–सं० १८१७ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८५८ ।

निम्न पाठों का संग्रह है ।

चौदह मार्गणा चर्चा	—	हिन्दी	विशेष
स्वर्ग नर्क और मोक्ष का वर्णन	—	,,	
अन्तर काल का वर्णन	—	,,	
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	

७११. गुटका नं० २२ । पत्र संख्या–३१ । साइज–६½×७ इंच । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६५ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

७१२. गुटका नं० २३ । पत्र संख्या–१० । साइज–८×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६८ ।

विशेष—सम्मेद शिखर पूजा एवं रामचन्द्र कृत समुच्चय चौबीसी पूजा संग्रह है ।

७१३. गुटका नं० २४ । पत्र संख्या–३८ । साइज–६½×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७० ।

विशेष—

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
दशलक्षण जयमाल	—	हिन्दी
मोक्ष पैडी	बनारसीदास	,,
मनोध पंचासिका	द्यानत	,,
पंचमंगल	रूपचन्द	,,
पद	परमानन्द	,,
योगसार	योगीन्द्र देव	अपभ्रंश

७१४. गुटका नं० २५ । पत्र संख्या–२५३ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत–प्राकृत । विषय–संग्रह । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ९७१ ।

विशेष—गुटके में लगभग ३० से अधिक पाठों का संग्रह है जिनमें मुख्य निम्न पाठ है—

नाम ग्रंथ	कर्त्ता	भाषा	विशेष
नेमीश्वर जयमाल	भंडारी नेमचंद	अपभ्रंश	पत्र १५
गीत	बूचा	हिन्दी	पद्य ४
नेमीश्वर गीत	छीत्हल	हिंदी	पत्र २०
शांतिनाथ स्तोत्र	गुणभद्र	संस्कृत	सरल संस्कृत में है। गुरुभद्र की जगह गुणभद्र भी नाम मिलता है। स्तोत्र सुन्दर है।
जिनवरस्वामी वीनती	सुमतिकीर्त्ति	हिन्दी	
मुनिसुव्रतानुप्रेक्षा	पं० योगदेव	अपभ्रंश	
हंसा भावना	ब्रह्म अजित	हिन्दी	पत्र १६० तक कुल ३७ पद्य हैं
मेघ कुमार गीत	पूनो	हिन्दी	पत्र २१४
जोगीरासा	जिणदास	"	"
ग्यारह प्रतिमावर्णन	नि कनकामर	"	२१६
पद—रेमन काहे को भूलि रह्यो विषया वन भारी	छीहल	"	२१६ ४ पद्य हैं
नेमिराजमति वेलि	ठक्कुरसी	"	२२८
जिण लाडू गीत	ब्रह्मरायमल्ल	"	२२८
पचेंद्रिय बेल	ठक्कुरसी	"	२२७
सार मनोरथमाला	साह अचल	"	२-३
विज्झुच्चर अणुपेहा	—	अपभ्रंश	२४०
भरतेश्वर वैराग्य	—	"	२४१
रोष (क्रोध) वर्णन	गोयम	"	२४२
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	—
पट्टावलि भद्रबाहु से पद्मनंदि तक	—	संस्कृत	—

७१५. गुटका नं० २६। पत्र संख्या-२७६। साइज-५५ इन्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १७१८। पूर्ण। वेष्टन नं० ६७२।

विषय सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
पंचमगतिवेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	रचना काल-सं० १६८३। लेखन काल सं० १७१४। मधुपुरा में चूहड़मल ने प्रतिलिपि की थी। अंत में इसका नाम चहुंगतिवेलि भी दिया है।

समयसार नाटक　　　　　बनारसीदास　　　　　हिन्दी
　　　　　　　　　　　　　　　　　　रचना काल सं० १६६३ । ले० का० सं० १७५४ ।

कृष्ण रूक्मणी बेलि　　　　　पृथ्वीराज राठौड　　　　　हिन्दी　　　रचना काल सं० १६४४ ।
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ले० काल सं० १७५४ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

३ नुसखे　　　　　—　　　　　हिन्दी

(१) शिलाजीत शुद्ध करने की विधि ।

(२) फोडे फुंसियों की औषध ।

(३) घोड़ा के जहवाद' रोग की औषध ।

सिंदूरप्रकरण　　　　　बनारसीदास　　　　　हिन्दी　रचना काल सं० १६६१ ।
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　लेखन सं० १७५२ ।

विशेष—राजसिंह ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी ।

७१६. गुटका नं० २७ । पत्र संख्या—३०१ । साइज—११×६ इञ्च भाषा—हिन्दी प्राकृत । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७३ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	११५ गाथा हैं ।
सुबोधपंचासिका	,,	,,	५० ,,
परमात्मप्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	३४५ ,,
योगसार	,,	,,	१०८ पद्य हैं ।
सुप्पय दोहा	—	प्राकृत	७१ ,,
द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीचन्द	,,	४७ ,,
नयमाल संग्रह	—	,,	—
समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	—
बनारसीविलास	,,	,,	ले० का० सं० १७०३ मगसिर सुदी ६
त्रिलोकसार चौपाई	सुमतिकीर्ति	,,	रचनाकाल सं० १६२७

प्रारम्भ—सुमतिनाथ पंचमो जिनराय । सरसति सद्गुर सेवइपाय ॥
त्रिलोकसार चौपाइ कहु । तेहि विचार सुणो तम्हे सहु ॥१॥
अलोकाकास माहि छै लोक । अधोमध्य उर्द्ध छै थोक ॥
छ द्रव्ये भर्यो लोकाकास । अलोक माहि केवल आकास ॥२॥

घन घनोदधि तनु आधार। वातें वेधै त्रिणि प्रकार ॥
छाल वेढ्यौ तर वर जेम। लोक.कास कहैं छं जेम ॥३॥

अंतम—श्री मूलसंघ गुरु लक्ष्मीचन्द। तास पाटि वीरचन्द मुणिंद ॥
ज्ञानभूषण तसु पाटि चग। प्रभाचंद वादी मनरंग ॥५७॥
सुमतिकीर्त्ति सरोवर कहिसार। त्रिलोकसार धर्म ध्यान विचार ॥
जे भणै गुणै ते सुखिय थाय। रयण भूषण घरि मुगति जाई ॥५८॥
वीर वदन विनिर्गत वाक। सुणता पामि ससारा नाक ॥
भावक जन भवि ज्यौ जोय। सुमतिकीर्त्ति सुख सागर होय ॥५६॥
सिंहपुरी वसी श्रृंगार। दान सील तप भावन अपार ॥
साहता भाइ सिंघा धपसार। कुअरजी कुयेर अर दातार ॥६०॥
सवत सोलनि सत्तावीस। माघ शुक्ल नै वारसि दिस ॥
कोदादी रचिये ए सार। भवि भगत भावो भासार ॥६१॥

इति श्री त्रिलोकसार धर्मध्यान विचार चउपई वद्ध रासा समाप्ता।

मान बावनी	मनोहर	हिन्दी	५२ पद्य हैं।
लघु बावनी	"	"	"
जोगी रासो	जिणदास	"	४० पद्य हैं।
द्वादशानुप्रेक्षा	—	"	—
निर्वाण कांड गाथा	—	प्राकृत	—
द्वादशानुप्रेक्षा	श्रीधू	हिन्दी	—
चेतन गीत	जिणदास	"	५ पद्य हैं।
उदर गीत	छीहल	"	४ पद्य हैं।
पंथी गीत	"	"	६ पद्य हैं।
पंचेद्रिय बेलि	ठकुरसी	"	रचना काल स० १५८५ कार्तिक सुदी १३
थिरचर जखडी	जिणदास	"	
गुण गाथा गीत	ब्रह्म वर्द्धमान	"	१७ पद्य
जखडी	रूपचन्द	"	—
परमार्थ गीत	"	"	—
जखडी	दरिगह	"	—
दोहा शतक	रूपचन्द	"	१०१ पद्य हैं।

सुदर्शन जयमाल	—	प्राकृत	—
दशरथ जयमाल	—	,	—
मेघकुमार गीत	पूनो	हिन्दी	११ पद्य
पंच कल्याणक पाठ	रूपचन्द	”	—
द्वादशानुप्रेक्षा	—	”	—

७१७ गुटका नं० २८ । पत्र संख्या-२६० । साइज-६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८०३ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७४ ।

विशेष—पूजाओं तथा पदों का वृहद् संग्रह है । बनारसीदास कृत मांझा भी है जो अज्ञात रचना है ।

७१८. गुटका नं० २६ । पत्र संख्या-७७ । साइज ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८४१ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७६ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
पद	जगजीवन	हिन्दी
नेमिनाथ का ब्याहला	नाथू	”
निर्वाण काण्ड भाषा	भगवतीदास	”
पद	मनराम	”
साधुओं के आहार के समय ४६ दोषों का वर्णन	भगवतीदास	रचना काल सं० १७५०

विशेष संतोष राम अजमेरा सांगानेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

७१६ गुटका नं० ३० । पत्र संख्या-१५१ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७७ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	
बनारसी विलास	”	”	
पंचमंगल	रूपचंद	”	,
योगी रासो	जिणदास	”	

७२० गुटका नं० ३१ । पत्र संख्या-७५ । साइज-१०½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८६ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	पत्र संख्या
वाणिक प्रिया	कवि सुखदेव	१–१७ रचना काल स० १७६० लेखन काल स० १६५५

विशेष– इसमें ३२१ पद्य हैं। व्यापार सम्बन्धी बातों का वर्णन किया गया है।

स्नेहसागर लीला	बक्षी हसराज	१८ से ७०

विशेष—वणिक प्रिया का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम सिध श्री गनेसाय नम श्री सरुसते न्म. जानुकी वलभाइ न्म' अथा लिखते वनक प्रिया ॥

चौपई—गुर गने [स] कहै सुखदेव, श्री सरसुती बतायो भेव।
वनिक प्रिया वनिक वाचयौ, दिया उजियार हाथ कै दयौ ॥१॥

दोहा—गोला पूरव पच बिसे वारि विहारीदास।
तिनके सुत सुखदेव कहि, वनिक प्रिया प्रकास ॥२॥
वनिकनि को वनिक पिया, मडसारि कौ हेत ॥
आदि अत श्रोता सुनो, मतो मत्र सौ देत ॥३॥
माह मास कातक करे, सवतु सौधे साठ।
मते याह के जो चले कबहू न आवै घाट ॥२॥

चौपई—फागुन देव दलजु आइयौ सकल वस्तु सुरपति चाइयौ ॥
चार मास इहिरै है आइ पुन पताल सूता हो जाइ ॥५॥

मध्य भाग—अथा जेठ वस्तु लीबे को विचार।

दोहा—तीन लोक दमऊ दिसा, सुरनर एक विचार।
जेठै वस्तु विकात है पावस की दरकार ॥१४०॥
घटै घटी सो घटि गई, वस्तु बेच षतकार।
बिक्री कौ दिन वाहरौ कीजे वाच विचार ॥१४१॥
जेठी बिक्री जेठ की सब जेठन मिल माख।
सकल वस्तु पानी भई जौ पानी लौ राख ॥१४२॥

चौपई—ग्रीष्म ऋतु बरसै लछिमी बैच वस्तु न आवै कमी।
यहि मत जौ न मान है कोइ, बीधै सारै व्याज गये सोइ ॥१४३॥
जेठै वस्तु न धरिये धाइ, अपनै होइ तौ वेचो जाइ।
साहु सम्हारै रहियौ वाकी, जलके बरसै दुलभ गहकी ॥१४४॥

अतिम भाग—

दोहा—देखी सुनी सो मैं कही, मत्री जो मति मान ।
जानी ज्ञाति जो न सब को आगे की ज्ञान ॥३१७॥

चौपई – मतौ हथियार हाथ लै जोर, साहु सुमकुरन करत कछु मोर ।
मारगह्नान हर मन मानियो, दिल फुसाद हरष न वानियो ॥३१८॥
कवि सोधे संवत्सर साठ, इह मत चलै परै नहि घाट ।
इहि मति अन्नु पेट भर खाई, एही चीरन की पहराई ॥३१६॥

दोहा—वनक प्रिया में सुम असुम सबही गयो बताइ ।
जिहि जैसी नीकी लगै तैसी की जो जाइ ॥३२०॥
सत्रह सै सत्रह बरस संवत्सर के नाम ।
कवि करता सुखदेव कह लेखक मायाराम ॥३२१॥
इति वनिक प्रिया सपूर्ण समाप्ता ।

भादौ सुदी १२ शुक्रवासरे सं० १८४५ मुकाम छिरारी लिखत लाला उदैतसिंघ राजमान छिरारी वारे जो वाचै ताको राम राम ।

दोहा—लिखी जथा प्रत देखकै कहि उदेत प्रधान ।
जो वाचै श्रवननि सुनै ताको मोर प्रनाम ॥

७२१ गुटका नं० ३२ । पत्र संख्या–१६८ । साइज–६¾×४¾ इंच । भाषा–हिन्दी–संस्कृत–प्राकृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८७ ।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
लघु सहस्रनाम	—	संस्कृत	पूर्ण
योगीरासो	जिणदास	हिन्दी	,,
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	,,
,, भाषा	—	हिन्दी	अपूर्ण
वैराग्य गीत	देवीदास नन्दन भगि	,,	पूर्ण
पद संग्रह	जिणदास	,,	जेठ बदी १३ सं० १६७१ में लाहौर में रचना तथा लिपि हुई ।
द्रव्य संग्रह	आ० नेमिचन्द्र	प्राकृत	,, लेखन काल सं० १६६६
द्वादशानुप्रेक्षा	—	प्राचीन हिंदी	

धर्मतरुगीत — जिणदत्त — हिन्दी — पूर्ण
(मत तरु सींचि हो मालिया)

पद — रूपचन्द — हिन्दी — "
(जिय पर सौं कत प्रीति करीरे)

पद संग्रह

आदिनाथजी की आरती — बालचन्द — हिन्दी

लेखन काल १७६६

नेमिनाथ मंगल — — हिन्दी — "

बीस तीर्थंकरों की जयमाल — — " — "

विशेष—"पद संग्रह जिणदत्त" का नाम "जिणदत्त विलास" भी दिया है।

७२२. गुटका नं० ३३। पत्र संख्या–४१। साइज–३×३, इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६८८।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
जिनदर्शन	—	संस्कृत
संबोध पंचासिका	धानतराय	हिन्दी
पंचमंगल	रूपचन्द	"

७२३. गुटका नं० ३४। पत्र संख्या–७। साइज–४×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६८६।

विशेष—नित्य पूजा का संग्रह है।

७२४. गुटका नं० ३५। पत्र संख्या–२१। साइज–६×५३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६६४।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

७२५. गुटका नं० ३६। पत्र संख्या–४६। साइज–४×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत। लेखन काल–सं० १७३६। पूर्ण। वेष्टन नं० ६६५।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

संबोध पंचासिका — गोतम स्वामी — प्राकृत — संस्कृत टीका सहित है।

एकीभाव स्तोत्र — वादिराज — संस्कृत

७२६. गुटका नं० ३७। पत्र संख्या–१८८। साइज–८×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १००१।

विशेष—केवल पूजाओं का संग्रह है।

७२७. गुटका नं० ३८। पत्र संख्या–८४०। साइज–७½×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १८२३। पूर्ण। वेष्टन नं० १००२।

ग्रन्थ–नाम	कर्त्ता का नाम	भाषा	र० का० सं०	ले० का०	विशेष
यशोधर चरित्र भाषा	खुशालचन्द	हिन्दी	१७८१	सं० १८२३	
विशेष—छीतरमल सेठी ने प्रतिलिपि की।					
चौवीस तीर्थकरों के नांव गांव वर्णन		हिन्दी	—	सं० १८२३	
विशेष—नरहेड़ा में प्रतिलिपि हुई।					
षट् द्रव्य चर्चा	—	हिन्दी	—	सं० १८२३	
विशेष—छीतरमल सेठी ने नरहेडा में प्रतिलिपि की।					
तीन लोक के चैत्यालयों का वर्णन	—	हिन्दी	—	—	
निश्चय व्यवहार दर्शन	—	"	—	सं० १८२३	
विशेष—छीतरमल सेठी वासी लूणूटको ने लाडखा यों के रामगढ में खेतसी काला की पुस्तक से उतारी।					
कवित्त पृथ्वीराज चौहाणका	—	हिन्दी	—	—	

महाराज प्रथीराज लेण परधान पठायो।
लेण काजि लाखीक वडम चवाण सवायो॥
दाहिमैंक वासि लाख अखु मालिन लीना।
देखि स्यंघ गाडरी कोट का आरम्भ कीना॥
ग्यारा सै ५दरोचरै गढ नागौर अजीत गिर।
सुम लगन तीज वैसाख सुदि नींव देय थाप्यो नगर॥
ऐसी अष्ट उपासना खान पान पैरान।
ऐसा लो मिलिवो सही तो मिलिन वो प्रमाण॥

वपापहार भाषा	अचलकीर्त्ति	हिन्दी	रचना काल १७१५ नारनौल में रचना हुई।
भक्तामर भाषा	—	"	
कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	"	सं० १८२३

विशेष—छीतरमल सेठी ने लिखा।

पाशाकेवली (अवजद केवली)	—	हिन्दी	—
पुण्याश्रवकथाकोश	किशनसिंह	,,	रचनाकाल सं० १७७३
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	जोधराज गोदीका	,,	—

७२८ **गुटका नं० ३६।** पत्र संख्या–५१। साइज–६×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १००३।

विशेष—पत्र २६ तक रूपचन्द के पदों का संग्रह है इसके आगे जगतराम तथा रूपचन्द दोनों के पद हैं। करीब २०० पद एवं भजनों का संग्रह है।

७२६ **गुटका नं० ४०।** पत्र संख्या–१६। साइज–६×५¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १८२३ ज्येष्ठ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० १००४।

विशेष—मृगीसंवाद वर्णन है। २५७ पद्य संख्या है। रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि पाठ—सकल देव सारद नमौ प्रणमौ गौतम पाय।

कथा करूं रलियामणी सदगुरु तणौ पसाय ॥१॥

जवू द्वीप सुहामणौ, महिधर मेर उतंग।

जहिये दक्षिण दिसि भलौ, भरत क्षेत्र सुचंग ॥२॥

अन्तिम पाठ—एणि समै आयौ केवली, रुधा चरण वचन मुनि भणी।

तीनि प्रदक्षणा दीधी सार, धरम उपदेस सुण्यौ तिण वार ॥२५६॥

दोहा—दोइ भेद धरमा तणा मुनी श्रावक करि हेत।

मन वच काया पालता, दोइ लोक सुख देत ॥२५७॥

इति श्री मृगीसंवाद चौपइ कथा संपूरण। लिखितं सेवाराम राघौदास ख्या... । पोथी पंडित रायचन्दजी सिख प० चोखचन्दजी वासी टौंक का की सू देउरा ख्यौंधूका भये। मिती जेठ सुदी २ सोमवार संवत् १८२३ का।

७३० **गुटका नं० ४१।** पत्र संख्या–२३४। साइज–६×५। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १००५।

विशेष—मुख्य २ पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है।

विषय सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
नवतत्व वर्णन	—	प्राकृत	हिन्दी अर्थ दिया हुआ है।

पद संग्रह	—	हिन्दी	श्वेताम्बर जैन कवियों के पद हैं।
ज्ञान सूखडी	शोभचन्द्र	,,	रचनाकाल सं० १७६७
भक्तामरस्तोत्र	मानतु ंगाचार्य	संस्कृत	—
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,	—
क्षमा बत्तीसी	समयसुन्दर	हिन्दी	—
शत्रु जयोद्धार	प० भानुमेरु का शिष्य नयसुन्दर	,,	सं० १७७० बैशाख सुदी ६

७३१. गुटका न० ४२। पत्र संख्या–६०। साइज ६×६½ इन्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० १००७।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
पद	द्यानतराय	हिन्दी
पद	रूपचन्द	,,
पद	रामदास	,,
जखडी	रूपचन्द	,,
भक्तामरस्तोत्र भाषा	गंगाराम पांड्या	,,

विशेष—इसमें संस्कृत की ४८ वीं काव्य का ४७ वें पद्य में निम्न प्रकार अनुवाद है।

हे जिन तुम्हारे गुण कमन पहुप माल,
भक्ति प्रतीति भावधरि कैं बनाई है।
प्रेम की सुरुचि नाना वरन सुमन धरि,
गुणगण उत्तम अनेक सुखदाई है॥
जेई भव्य जन कठ धारि हैं उछाह करि,
फुलकित अंग ह्वै कें आनद सो गाई है॥
तेई मानतु ग करि मुकति वधू सो हेत,
गगन सरित राम सोभा सुख धाई है॥

हुक्का निषेध	भूधरमल्ल	हिन्दी
विनती (प्रभु पाइ लागू करूं सेव थारी)	जगतराम	गुजराती, लिपि हिन्दी।
विषापहारस्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी रचना काल स० १७१५ मारनोल
पद–मैं पायो दुख अपार बसि।ससार में–	द्यानतराय	हिन्दी

पद	दीपचन्द	हिन्दी
पद	हरीसिंह	"
पद—डोरी थे लगावो जी प्रभुजी के नांव सू	नाथू	"
अक्षरमाला	मनराम	"
दश क्षेत्रों की चौवीसी के नाम	—	"
१५ प्रकार के पात्र वर्णन	—	"
पद	किशोरदास	"

७३२. **गुटका न० ४३** । पत्र सख्या-४२० । साइज-८३/४×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १७८२ । पूर्ण । वेष्टन न० १००८ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा		विशेष
श्रेणिक चरित्र की कथा	—	हिन्दी गद्य		अपूर्ण
प्रीत्यंकर चौपई	नेमिचन्द	हिन्दी पद्य	लेखनकाल सं० १७८२	पूर्ण

विशेष—तुलसीराम चांदवाड ने पांडे रूपचन्द की पुस्तक से सं० १७८२ सावन सुदी १५ में पलवल में प्रतिलिपि की । पोथी बिजैराम भौंसा की ।

नेमीश्वररास (हरिवंश पुराण) नेमिचन्द्र " र. का. सं. १७६६ ले. का. सं. १७८२

विशेष—सं० १७७६ की प्रति से बिजैराम भौंसा ने प्रतिलिपि की थी । १३०८ पद्य हैं । ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है ।

चन्दराजा की चौपई — र का. सं० १६०३ फागुन सुदी २ ले का. सं० १७८२

विशेष—आमानपुरी (गिरनार के पश्चिम दिशा में) के राजा चन्द की कथा है । बिजैराम भौंसा ने मथुरा में प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम चदन मलियागिरि कथा भी है । कथा बडी है ।

विशेष—चद राजा की चौपई का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—दोहा—सिधि सुबुधि दातार तुव गौरी नद कुमार । चद कथा आरम्भ किय सुमति देहि अपार ॥१॥

ब्रह्म सुता सरस्वती तुव हस चढी अति रूढ । तुव पसाय वाणी विमल होय मया मति मूढ ॥२॥

चौपई—प्रथम समरौहु सरजन हार, जो जिन धर्म रच्यौ गढ गीरनारि ।

मेरु समौ दीसै सिरधार, तिहु' लोक तिहि कौ वीसतार ॥३॥

समरौ सकर दोय कर जोडि, सुमरौ सुर तेतीसौ कोडि ।
सदगुर कैहू लागौ पाय, भुलौ अखिर यौ समुझाय ॥४॥
सोलासैर तीडोतरैजाणि, चंद कथा ज्यौ चढै परमाणी ।
मै म्हारी मति सारु कहु, अखिर मात्र पदा सो लहु ॥५॥

दोहा—फागुण मास वसंत रिति, दुतिया सुरु गुरु रीति ।
चद कथा आरम्भ कीयौ धूरौ बुधि तुरत ॥६॥
आमानपुरी अपि दिसि पछिम दिसा गिरनारी ।
वेह सजोग असौ रच्यौ चद परमला नारी ॥७॥

अन्तिम—अरध रेखा अचपला जोगि । तीजी और परमला भोग ।
याकै सत्य सार्‌या सब काज, विलसै चद आपणौ राज ॥
॥ इति श्री राजा चद चौपई सपूर्ण ॥

बीस विरहमान तथा तीस चौवीसी के नाम	—	हिन्दी	पूर्ण
तीन लोक कथन	—	,,	पत्र सं० २३२ से ३६५ तक
वेलि के विषै कथन (चतुर्गति की वेलि)	हर्षकीर्ति	,,	पूर्ण
कर्म हिंडोलणा	—	,,	—

विशेष—इस गुटके की प्रतिलिपि महाराम च   से की पुस्तक सं जैपुर में स० १७६४ में हुई थी ।

सम्यक्त्व के आठ अंगो का कथा सहित वर्णन		,, गद्य	—
चेतनशिक्षा गीत	—	,, पद्य	—
पद—उठ्ठ तेरो मुख देखूं नाभि जिनंदा	टोडर	,,	—

७३३ **गुटका नं० ४४** । पत्र सख्या—२५ । साइज—४×३ इन्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० १००९ ।

विशेष—नरक दोहा एव पद सग्रह है ।

७३४ **गुटका न० ४५** । पत्र संख्या—२५ । साइज—४३/४×४१/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१० ।

विशेष—विनती संग्रह है।

७३५ गुटका नं० ४६। पत्र सख्या-२५। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०११।

विशेष—शिखर विलास, निर्वाणकांड एव आदिनाथ पूजा है।

७३६. गुटका नं० ४७। पत्र संख्या-३८। साइज-८½×६ इञ्च भाषा-सस्कृत। लेखनकाल-स० १८८१ पूर्ण। वेष्टन न० १०१३ (क)।

विशेष—पूजा सग्रह है।

७३७ गुटका नं० ४८। पत्र संख्या-१६६। साइज-७×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत-प्राकृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन १०१२ (ख)।

विशेष—पूजाओं, यशोधरचरित्र रास (सोमदत्तसूरि) तथा स्तोत्रों का संग्रह है।

७ ८ गुटका नं० ४६। पत्र सख्या-१६७। साइज-८×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। लेखन काल-स० १७६५। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१३ (ग)।

विशेष मुख्यत. नित्य नैमित्तिक पूजाओं का सग्रह है।

७३६ गुटका नं० ५०। पत्र सख्या-२०२। साइज-५½×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१४।

विशेष—कल्याण मन्दिर स्तोत्र को सिद्धसेन दिवाकर कृत लिखा है। स्तोत्र एव पूजाओं का संग्रह है। अजयराज पाटणी कृत पत्र १३१ पर एक रचना संवत् १७९३ की है जो पाक शास्त्र सम्बन्धी है। रचना का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है।

प्रारंभ—श्री जिनजी की कहू रसोई। ताको सुणत बहुत सुख होइ॥
तुम रूसो मत मेरे चमना। खेलौ बहुविधि घरके अगना॥
देव अनेक बहोत खिलावै। माता देखि बहुत सुख पावै॥१॥

मध्यमें—छिमक चणा किया अति भला। हलद मिरच दे घृत में तला॥
मेसी रोटी अधिक बणाई। आरोगो त्रिभुवन पति राई॥२४॥

अंतिम—अजैराज इह कियो बखाण। भूल चूक मति हसौ सुजाण॥
संवत सत्रासै त्रेणावै। जेठ मास पूरण। हवै॥५८॥

जिनजी की रसोई में सब प्रकार के व्यंजनों एवं भोजनों के नाम गिनाये हैं। भगवान की बाल लीला का अच्छा वर्णन किया है। भोजन के बाद वन विहार आदि का वर्णन भी है।

रसोई वर्णन दो जगह दिया हुआ है। एक में ३६ पद्य हैं वह अपूर्ण है। दूसरे में ४३ पद्य हैं तथा पूर्ण है।

पद—सेवग पर महर करो जिनराइ	अजयराज	१० अंतरे हैं। पत्र १०५-११३
मेघ कुमार गीत	पूनो	३१ पद्य हैं।
शांतिनाथ जयमाल	अजयराज	६ पद हैं।
पद—प्रभु हस्तनागपुर जनम जाय		
„ श्री जिनपूज सुहावणी	„	१४ पद हैं।
„ मन मनरकट चनेक आतम जपिवादे।	„	१५ पद्य हैं।
चौबीस तीर्थंकर स्तुति	„	२० पद हैं।
अहो सिवगामी खेलों हो मुनिजन रचि सुध संजम फाग सुहावणों	„	७ पद
बाल्य वर्णन	„	४ पद
श्री सिरियांस सकल गुण धार	„	८ पद
नंदीश्वर पूजा	„	६ पद
आदिनाथ पूजा	„	— पूर्ण
चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा	„	
पार्श्वनाथजी का सालेहा	„	रचना सं० १७९३ ज्येष्ठ सुदी १५
पंचमेरु पूजा	„	
महावीर, नेमीश्वर आदि सभी तीर्थंकरों के पद	„	—
सिद्ध स्तुति	„	—
बीसतीर्थंकरों की जयमाल	„	—
वंदना	„	—

७४०. गुटका न० ४६। पत्र संख्या—२६६। साइज—६½×६ इंच। भाषा—हिन्दी—संस्कृत। लेखन काल—सं० १८०३ कार्तिक सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१७।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
आयुर्वेद के नुसखे	—	हिन्दी (पद्य)	—
८४ शिक्षा की बातें	—	„	—
पंचम गति की वेलि	हर्षकीर्त्ति	„ (पद्य)	रचना काल सं० १६८३

चेतन शिक्षा गीत	किशनसिंह	हिन्दी	—
णमोकार सिद्ध	अजयराज	,,	—
पद	ऋषभनाथ	,,	—
(मोहि त्यारो जी सरणे तुम आइयो)			
बधावा	—	,,	—
(जहां जन्मे हो स्वामी नामकुमार)			
राजुल पच्चीसी	लालचंद, विनोदीलाल	,,	—
पद	विश्व भूषण	,,	—
(जिण जपि जिण जपि जीयडा)			
विनती	पूनो	हिन्दी	—
सहेलीगीत	सुंदर	,,	—
विनती	कनककीर्त्ति	,,	—
मंगल	विनोदीलाल	,,	—
ज्ञान चिन्तामणि	मनोहरदास	,,	कुल १२८ पद्य हैं।
पच परमेष्ठि गुण	—	हिन्दी गद्य	—
सूतक भेद	—	,,	—
जोगी रासा	जिणदास	,, पद्य	४१ पद्य हैं।
धर्मरासा	—	,,	—
सुदर्शन शील रासो	ब्र० रायमल्ल	,,	—
जम्बूस्वामी चौपई	जिणदास	,,	—

विशेष—जिणदास का पूर्ण परिचय दिया हुआ है। जयचद साह ने लिपि की थी।

श्रीपाल रासो	ब्र० रायमल्ल	,,	

विशेष—जयचद साह ने चाकसू में सं० १८३२ में प्रतिलिपि की।

विषापहार भाषा	अचलकीर्त्ति	हिन्दी	—

७४१. गुटका नं० ५२। पत्र सख्या–१८८। साइज–६×६ इश्च। भाषा–प्राकृत अपभ्रंश। लेखन काल–स०-१५७०। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१८।

ग्रन्थ–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
मुनिसुव्रतानुप्रेक्षा	प० योगदेव	अपभ्रंश	१५८५ वै० सुदी १३
योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	,,	

उपासकाचार	पूज्यपाद	संस्कृत	
परमात्मप्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	
षट्पाहुड सटीक	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	
आराधनासार	देवसेन	,,	टीका सहित है।
समयसार गाथा	कुन्दकुन्दाचार्य	,,	,,
ज्ञानसार गाथा	—	,,	

७४३ गुटका नं० ५३। पत्र संख्या–११३। साइज–६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०२०।

विशेष—प्रथम संस्कृत में पंच स्तोत्र आदि हैं फिर उनकी भाषा की गई हैं।

७४४. गुटका नं० ५४। पत्र संख्या–३२। साइज–६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०२२।

विशेष—देवब्रह्म कृत विनती संग्रह है।

७४५. गुटका नं० ५५। पत्र संख्या–६८। साइज–६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०२१।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है।

७४६. गुटका नं० ५६। पत्र संख्या–५३। साइज–६$\frac{1}{2}$×६ इंच। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०२३।

विशेष—चारों गति दुःख वर्णन, राजुल पच्चीसी, जोगी रासो, अठारह नाता का चोढाल्या के अतिरिक्त वृन्द, दीपचन्द, विश्वभूषण, पूनो, रामदास, अजयराम, भूधरदास के पद भी हैं।

७४७. गुटका नं० ५७। पत्र संख्या–१६०। साइज–७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी। लेखनकाल–सं० १७६० ज्येष्ठ सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० १०२५।

विशेष—भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य डालूराम ने प्रतिलिपि की थी।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
प्रद्युम्न रासो	ब्र० रायमल्ल	हिंदी	रचना सं० १६२८
नेमिकुमार रासो	,,	,,	,, १६१५
सुदर्शन रासो	,,	,,	,, १६३३
हनुमत कथा	,,	,,	,, १६१६

७४८ गुटका नं० ५८ । पत्र संख्या—५८ । साइज—६½×४½ इन्च । भाषा—हिन्दी—सस्कृत । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२६ ।

विषय—सूची	कर्त्ता का नाम ।	भाषा ।
तीर्थमाला स्तोत्र	—	संस्कृत
जैन गायत्री	—	"
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	प्राचीन हिन्दी
पद	अजयराम	हिन्दी
कक्का बत्तीसी	"	"
पद सग्रह	"	"
सिन्दूर प्रकरण	बनारसीदास	"
परमानन्द स्तोत्र	—	सस्कृत

७४६. गुटका नं० ४६ । पत्र सख्या—५७ । साइज—५×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२७ ।

विषय—सूची ।	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
वैराग्य पच्चीसी	भगवतीदास	हिन्दी	—
चेतन कर्म चरित्र	"	"	रचनाकाल सं० १७३६
वज्रदन्त चक्रवर्ति की भावना	—	"	
स्फुट पद	—	"	—

७५०. गुटका नं० ६० । पत्र सख्या २८० । साइज—६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी—सस्कृत काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२८ ।

विशेष—मुख्यत. पूजाओं का सग्रह है ।

७५१. गुटका नं० ६१ । पत्र सख्या—२१६ । साइज—६×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०२६ ।

विशेष—मुख्यत पूजा सग्रह है । कुछ जगतराम कृत पद सग्रह भी है ।

७५२. गुटका नं० ६२ । पत्र सख्या—३४ । साइज—६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३० ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह भाषा एवं निर्वाणकाण्ड भाषा आदि हैं ।

७५३ गुटका नं० ६३। पत्र संख्या–३०। साइज–४×४½ इञ्च। भाषा हिन्दी। लेखन काल–सं० १८१६। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३१।

विशेष - शनिश्चर देव की कथा है।

७५४ गुटका नं० ६४। पत्र संख्या–५७। साइज–६×३½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३२।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चरचाशतक	द्यानतराय	हिन्दी	
ढाल गण	—	„ ६२ पद्य	
स्तुति	द्यानतराय	„	

७५५ गुटका नं० ६५। पत्र संख्या–२१०। साइज–६×७½ इञ्च। भाषा–प्राकृत–संस्कृत। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३३।

विशेष—षड्भक्ति पाठ, आराधनासार, जिनसहस्रनाम स्तवन आशाधर कृत, तथा अन्य स्तोत्र संग्रह है।

७५६. गुटका नं० ६६। पत्र संख्या–७४। साइज–५½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १८८० आषाढ बुदी १। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३४।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा		विशेष
जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	रचना काल सं० १७८१	—
धर्मविलास	द्यानतराय	„	—	—

७५७. गुटका नं० ६७। पत्र संख्या–११०। साइज–५½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३५।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

७५८ गुटका नं० ६८। पत्र संख्या–४६ से १४३। साइज–७½×२¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १८१० मगसिर सुदी १५। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०३७।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
बिहारी सतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	अपूर्ण
नागदमन कथा	—	„	पूर्ण

आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

आरम्भ—वलतो सारद वरणउ, सारद पूरो पसाय ।

पवाडो पन्नग तणौ जादुपति कीधौ जाय ॥

प्रभु आणये पाडीया देत वडा चादन्त ।

केइ पालण पौढीया केई पय पान करत ॥

अन्तिम—सुणौ सुणौ समवाद नद-नदम अहि नारी ।

समझा पार संभार हूवो द्रोपत अनहारी ॥

अनत अनंत के सगु अह वधाई रमीयो स्वरत राधा रमण दहू कर भुज काली दवण ।

त्रिभुवन सुणण महि रख तन गमण तास आवो गमण ॥

७५६. गुटका नं० ६६ । पत्र संख्या-४२ । साइज-६×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३८ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र हैं ।

७६०. गुटका नं० ७० । पत्र संख्या-६४ । साइज-७½×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३६ ।

विशेष—कर्म प्रकृति गाथा-नेमिचन्द्राचार्य कृत एव द्रव्य संग्रह तथा स्तोत्र संग्रह है ।

७६१. गुटका नं० ७१ । पत्र संख्या-७१ । साइज-५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४० ।

विशेष—पद संग्रह, भक्तामर स्तोत्र भाषा चौपई बंध ऋद्धि मंत्र मूलमंत्र गुण संयुक्त षट् विधान सहित है ।

७६२. गुटका नं० ७२ । पत्र संख्या-२०६ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७६ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है अवस्था जीर्ण है ।

७६३. गुटका नं० ७३ । पत्र संख्या-६३ । साइज-६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०७७ ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है । कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

७६४. गुटका नं० ७४ । पत्र संख्या-१० । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०७८ ।

विशेष—पूजा तथा पद संग्रह है ।

७६५ गुटका नं० ७५ । पत्र संख्या–३५ । साइज–६½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८० ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

७६६ गुटका नं० ७६ । पत्र संख्या–६० । साइज–६½×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८१ ।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चतुर्विंशति जिन स्तुति	पद्मनंदि	संस्कृत	
वहत्तरि जिनेन्द्र जयमाल	—	"	
स्वयम्भू स्तोत्र	आ० समन्तभद्र	"	
द्रव्य संग्रह	—	प्राकृत हिन्दी	
तपोद्योतन अधिकार सत्तावनी	—	संस्कृत	

७६७. गुटका नं० ७७ । पत्र संख्या–६० । साइज–५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८३ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखों का संग्रह है ।

७६८. गुटका नं० ७८ । पत्र संख्या–६४ । साइज–६×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । विषय–संग्रह । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०८४ ।

फुटकर कवित्त	—	हिन्दी	अपूर्ण
कवित्त	कवि पृथ्वीराज	"	संगीत संबंधी कवित्त है ।
कवित्त	गिरधर	"	—
कवित्त खुणस (कमी) और खुशी के	—	"	६ कवित्त है ।
सर्वसुखजी के पुत्र अभयचन्दजी की पुत्री–की जन्म पत्री (चांदवाई)	—	"	जन्म सं० १६१०
चिट्ठी चांदवाई की सर्वसुखजी आदि को		"	सं० १६१६
दसोत्तरा (पहेलियां)	—	"	२५ पहेलियां उत्तर सहित है ।
पहेलियां	—	"	" "
दोहे	वृंद	"	अपूर्ण
कुंडलियां (गणित प्रश्नोत्तर)	—	"	पूर्ण

फुटकर दोहे तथा कुंडलिया	गिरधरदास	हिन्दी	अपूर्ण
कवित्त	खेमदास	"	
भावों का कथन	—	"	अपूर्ण
छह ढाला	धानतराय	"	लेखनकाल सं० १९१६ चंदो के पठनार्थ ने लिखा गया था।
मध्यमलोक चैत्यालय वर्णन	—	"	—
बधाई	बालक-धर्मीचंद	"	पूर्ण
जखडी	भूधरदास	"	"
उपदेश जखडी	रामकृष्ण	"	"

७६९. **गुटका नं० ७९**। पत्र संख्या-६५। साइज-१०×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत प्राकृत। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०८५।

विशेष—गुणस्थान चर्चा, कर्म प्रकृति वर्णन, तथा तीर्थंकरों के कल्याणकों के दिनों का वर्णन है। कल्याणक वर्णन अपभ्रंश में हैं। रचनाकार मनसुख हैं।

७७०. **गुटका नं० ८०**। पत्र संख्या-३१। साइज-८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८६।

विशेष—नवलराम, जगतराम, हरीसिंह, भूधरदास, धानतराय, मलजी, बखतराम, जोधा आदि के पदों का संग्रह है।

७७१. **गुटका नं० ८१**। पत्र संख्या-६६। साइज-६½×६¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८७।

विशेष—पदों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त परमार्थ जखडी तथा जोगी रासा भी है। भूधरदास, जगतराम, धानत, नवलराम, बुधजन आदि के पद हैं।

७७२. **गुटका नं० ८२**। पत्र संख्या-६०। साइज-६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८८।

विशेष—जिन सहस्र नाम भाषा, प्रश्नोत्तर माला, कवित्त, एवं बनारसी विलास आदि हैं।

७७३. **गुटका नं० ८३**। पत्र संख्या-६०। साइज-६×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८९

विशेष—पदों का भजनों का संग्रह है।

७७४. गुटका नं० ८४ । पत्र संख्या-३८ । साइज-६½×८इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६० ।

विशेष—षट द्रव्य आदि की चर्चा, नरक दुःख वर्णन, द्वादशानुप्रेक्षा आदि हैं ।

७७५. गुटका नं० ८५ । पत्र संख्या-१४ से १४६ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०६१ ।

विशेष—सामान्य पाठों के अतिरिक्त कुछ नहीं है । बीच के बहुत से पत्र नहीं हैं ।

७७६. गुटका नं० ८६ । पत्र संख्या-१३१ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८२ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

७७७ गुटका नं० ८७ । पत्र संख्या-१४ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-× । । वेष्टन नं० १०६३ ।

विशेष— क चर्चाओं का संग्रह है ।

७७८. गुटका नं० ८८ । पत्र संख्या-५८ । साइज-६×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६४ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
दीतवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१५७ पद्य
शनीश्चर देव की कथा	—	,, (गद्य)	ले० का० सं० १७६८ चैत सुदी २
सारातंबोल की वार्त्ता	—	,,	—
पार्श्वनाथ स्तवन	—	,,	—
विनती	—	,,	—
नेमशील वर्णन पद	—	,,	ले० का० सं० १८११

७७९. गुटका नं० ८९ । पत्र संख्या-६१ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६५ ।

विशेष—गुटके में पूजा संग्रह तथा स्वर्ग नरक का वर्णन दिया हुआ है ।

७८०. गुटका नं० ९० । पत्र संख्या-११० । साइज-५×३½ इञ्च । भाषा-हिंन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६६ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
अक्षरबद्द केवली	—	हिन्दी	
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	
,, भाषा	हेमराज	हिन्दी	
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमदचन्द्र	संस्कृत	
अध्यात्म फाग	—	हिन्दी	
साधु वंदना	बनारसीदास	,,	
बारहभावना	—	,,	
संबोधपंचासिका	—	प्राकृत	
स्तोत्रसंग्रह	—	संस्कृत	

७८१. गुटका नं० ६१ । पत्र संख्या-२०४ । साइज-६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १७८६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०६८ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा		
कंसलीला	—	हिन्दी	४६ पद्य है ।	
मोरध्वज लीला	—	,,	१५ पद्य है ।	
महादेव का व्याहलो	—	,,	लेखनकाल	१७८७
भक्तमाल	—	,,		
सुदामा चरित	—	,,	,,	१७८७
गंगायात्रा वर्णन	—	,,		
कछवाहा राजाओं की वंशावली	—	,,		
तारातमोल की वार्ता	—	,,		
नासिकेतोपाख्यान	नंददास	,,	,,	१७८६
महाभारत कथा	लालदास	,,		
देहली के राजाओं की वंशावलि	—	,,	,,	१७८८
ई चरित	—	,,		

७८२. गुटका नं० ६२ । पत्र संख्या-१३१ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६८ ।

विषय–सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
अजितशान्ति स्तोत्र	उपाध्याय मेरुनदन	हिन्दी	३२ पद्य
सीमंधरस्वामी स्तवन	उपाध्याय भगतिलाभ	,,	१८ पद्य
पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनराज सूरि	सस्कृत	—
विघ्नहरस्तोत्र	—	प्राकृत	१४ गाथा
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	—
शनिश्चरस्तोत्र	दशरथ महाराज	,,	—
पार्श्वनाथ जिनस्तवन	—	,,	ले० का० सं० १७१६ पौष सदी २
जिनकुशल सूरि का सुन्दर चित्र है और चित्रकार जग जीवन है।			
थमण पार्श्वनाथ स्तवन	कुशललाभ	हिन्दी	राजरंगगणि ने लिपि की थी। १८ पद्य
चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	जिनरंग	,,	१५ पद्य
राजुल का बारह मासा	पदमराज	,,	४ पद्य अपूर्ण
श्री जिनकुशल सूरि स्तुति	उपाध्याय जयसागर	,,	१५ पद्य पूर्ण
पार्श्वनाथ स्तवन	रंगवल्लभ	,,	६
आदिनाथ स्तवन	विजय तिलक	,,	२१ पद्य
श्री अजितशांति स्तोत्र	—	प्राकृत	३६ गाथा
भयहर पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	,,	२१ गाथा पूर्ण
सर्वाधिष्टायक स्तोत्र	—	,,	२६ गाथा
कोकसार	आनंद कवि	हिन्दी	
नैणसी (नैनसिंहजी) के व्यापार का प्रमाण	—	,,	सं० १७२६
पार्श्वनाथ स्तोत्र	कमल लाभ	,,	७ पद्य
,, लघुस्तोत्र	समयराज	,,	पूर्ण
सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन	—	,,	
चिंतामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	भुवनकीर्ति	,,	
पार्श्वनाथ स्तोत्र	मनरंग	,,	
,,	जिनरंग	,,	
ऋषभदेव स्तवन	—	,,	रचनाकाल सं० १७०० लेखनकाल सं० १७२०
फलवधी पार्श्वनाथ स्तवन	पदमराज	,,	

पार्श्वनाथ स्तवन	विजयकीर्ति	हिन्दी	पूर्ण
महावीरस्तवन	जिनवल्लभ	संस्कृत	पूर्ण ३० श्लोक
प्रतिमास्तवन	राजसमुद्र	हिन्दी	
चतुर्विंशति जिनस्तोत्र	जिनरंगसूरि	"	
बीस विरहमान स्तुति	प्रेमराज	"	
पंचपरमेष्ठि मंत्र स्तवन	"	"	
सोलहसती स्तवन	"	"	
प्रबोध बावनी	जिनरंग	"	रचना सं० १७३१, ५४ पद्य हैं।
दानशील संवाद	समयसुन्दर	"	पूर्ण
प्रस्ताविक दोहा	जिनरंगसूरि	"	

इसका दूसरा नाम "दूहा बंध बहुत्तरी" भी है। ७२ दोहा हैं। लेखनकाल स० १७४५। बापना नयणसी के पठनार्थ कृष्णगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

अखयराज बाफना के पुत्र की कुंडली	—	"	स० १७७२

७८३ गुटका नं० ६३। पत्र सख्या–८ से ५८ तक। साइज–५½×५¾ इंच। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०६६।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
जैन रासो	—	हिन्दी	लेखनकाल स० १७६८ जेठ सुदी १५

विशेष—दौलतराम पाटनी ने कस्बा मनोहरपुर में लिखा था। प्रारम्भ के १८ पद्य नहीं हैं।

सिद्धिप्रिय स्तोत्र	देवनंदि	सस्कृत	२६ पद्य, इसे लघु स्वयम्भू स्तोत्र भी कह
तीर्थंकर बीनती	कल्याणकीर्त्ति	हिन्दी	रचनाकाल सं० १७२३ चैत बुदी ३
पद	विश्वभूषण	"	
पंच मंगल	रूपचन्द	"	अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के ७ पत्र तथा ६, १० और १२ वां पत्र नहीं हैं। ५४ मे आगे पत्र खाली हैं।

७८४. गुटका नं० ६४। पत्र सख्या–२६। साइज–५×७ इंच। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११००।

विशेष—

बारहखडी	सूरत	हिन्दी	पत्र स० १ से १६
बाईस परीषह	—	"	१७–२६ अपूर्ण

७८५ गुटका नं० ९५ । पत्र सख्या-२२ । साइज-५×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११०१ ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

७८६ गुटका नं० ९६ । पत्र सख्या-११४ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखनकाल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०२ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
श्रावकनी सज्भाय	जिनहर्ष	हिन्दी	—
अजितशांति स्तवन	—	,,	—
पचमी स्तुति	—	सस्कृत	—
चतुर्विंशतिस्तुति	समयसुन्दर	हिन्दी	—
गौडीपार्श्वस्तवन	—	हिन्दी	—
बारहखडी	—	—	अपूर्ण
वैराग्य शतक	भर्तृहरि	सस्कृत	लेखनकाल स० १७७३

विशेष—रुग्रामपुर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रति हिन्दी टीका सहित है, टीकाकार इन्द्रजीत है ।

अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति श्री सकलमौलिमडनमनिश्रीमधुकरनृपतितनुज श्रीमदिन्द्रजीतविरचितायां विवेकदीपकायां वैराग्यशतं समाप्त ।

नाकौडा पार्श्वनाथ स्तवन	समयसुन्दर	हिन्दी	पूर्ण
पद (अखियां आज पवित्र भई मेरी)	मनराम	हिन्दी	—

७८७ गुटका नं० ९७ । पत्र सख्या-१० । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०३ ।

विशेष—पद, चन्द्र गुप्त के सोलह स्वप्न (भावमङ्) जखडी, सोलह कारण भावना (कनककीर्त्ति) सग्रह है ।

७८८ गुटका नं० ९८ । पत्र सख्या-६४ । साइज-५½×४ इंच । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०४ ।

विशेष—स्तोत्र एव पूजा सग्रह है ।

७८९ गुटका नं० ९९ । पत्र सख्या-६५ । साइज-५×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०६ ।

विशेष—नित्य पाठ पूजा आदि का संग्रह है।

७६० गुटका नं० १०० । पत्र संख्या–१८ । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०७ ।

विशेष—पद व स्तोत्रसंग्रह है ।

७६१. गुटका नं० १०१ । पत्र संख्या–२०० । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०८ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	
चतुर्विंशति स्तुति	शुभचन्द्र	”	
श्रीपाल स्तोत्र	—	”	
पद संग्रह	—	”	
त्रेसठ शलाका पुरुषों का वर्णन	ब्र० कामराज	”	कामराज का परिचय दिया हुआ है ।
श्रीपाल स्तुति	कनककीर्ति	”	
अजित जिननाथ की विनती (मोई प्यारो लागैजी)	चन्द्र	”	पूर्ण

७६२ गुटका नं० १०२ । पत्र संख्या–१७७ । साइज–६×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों के अतिरिक्त मुख्य निम्न पाठ हैं—

नाम	कर्ता	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	—
श्रीपाल दर्शन	—	”	—
षटमाल वर्णन	श्रुतसागर	”	पूर्ण

प्रारम—दोहा—प्रथम जिनेसुर वंद करि भगति भाव उर लाय ।
कह वर्णन षटमाल कछु ।

चौपाई—एक समै श्री वीर जिणंद, विपुलाचल आये गुण वृंद ।
श्री जिनजी कै अतिसै भाय, सब जीवन को बैर पलाय ।

घटरित वन ते फल फूलत भये, माली लखि इचरज लहये।
समोसरण कि महमा माल, ऐसे मन चितवै वनपाल।

अंतिम—ए पटमाल वरण महान, पुरिव वरन कियौ गुणधाम।
तिन वाणि सुणि वरणन कियो, और व्याकरण नहि देखियो।
तैंमे चर्न कणि मोती विधियो सुतसिषलता पै गम कियो।
नैंमे बुधि जन वाणि भख्त वरण कियौ माषा गुण माल॥

दोहा—देस काठहड विरजि में रदनस्थ राजान।
ताके पुत्र हैं भलो सूरिजमल गुणधाम॥
तेज पुज रवि है भलो, न्याय नीति गुणवान।
ताको सुजस है जगत में, तपै दूसरो मान॥
तिनह नगर जु वसाइयो, नाम भरतपुर ताम।
सा राजा समकिद्रिष्टि है भला, परवि च्यारि उपवास॥
जिन मदिर तह बणत है, जिन महमा प्रकास।
इन्द्र पुरि अभिराम हैं सोभा सुरग निवास॥
ताहा नगर को चौधरि, विवहरि नेणिदास।
तिनकै मदर उपरो, श्री जिन मंदिर धवास॥
श्री जिन सेवग है भलो श्री जिनहि को दास।
वाह के वार गोत्र है भलो, हम भया जिणदास॥
ताहि समिपै आय करि वर्षा कियो हर विलास।
वासि सांगानेर को जाति छ अग्रवाल॥
मुगिल गोत उदोत है सगही रामसघ को लाल।
उत्तर दिसम वैराठि है नग्र भलो, काहलो करू बखान॥
पांडव से पुनिवान नर तिस्रो काढियो ग्रान।
ताहि नगर को नाणिकचर संगही पदारथ जानि॥
वाकै पेसो ख्यानि को ऐ दोष जिये आनि।
माहचन्द्र भटारग भलो सुरचंद्र के पाट॥
कासटामगा गच्छ में व्रत अन्या अठाट।
निज गुरु सु विनति करि, पाप हरण के काजि॥
स्वामी तुम उपदेस दोह, तारै धर्म जिहाज।

तब गुरुमुख वाणि खिरी, सुणो बात गुणवान ॥
सिध षेत्र बंदन करो, पुरि वर्म · · टान ।
तब गुरु के उपदेस तै चतुरविधि सग ठानि ॥
सजन भ्राता संग ले आये उजत मिलान ।
जिन बाईस मों पूजि करि, भली भगति वर आनि ।
अष्ट द्रव्य ले निरमला हरे करम वसु खानि ।
चतुर सग निज आहार दे अंग प्रभावना सार ॥
सर्व सग की भगति सु भयो सु जै जै कार ।
सब भ्राता निज हेत करि, धरौ ज सगहि नाम ॥
तातै संगहि कहत सब नहि क्यिो पतेसटा धाम ॥
संवत अठारा सै भला ऊपरि एकाइस जानि ।
जेठ सुकल पंचमि भली श्रुतसागर बखाणि ॥
सुवाति नषित्र है भलो व्रत हो रविवार ।
फकिरचंद उपदेस तै रच्यो माल विस्तार ॥
हमारो मित्र है सही जाति ज्ञ पलिवाल ।
वह वसतु हैं हींडोण में अबै रहै भरतपुर रसाल ॥
तिनसु हम मेलो भयो शुभ उदै कै काल ।
उनहि का संजोग तै करि भाषा षटमाल ॥

इति षटमाल वर्णन सपूर्ण ·· ·· विलास अग्रवाल बांचै तीने जुहार वच्या ।

७६३. गुटका नं० १०४ । पत्र संख्या–६४ । साइज–५×४३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११११२ ।

विशेष—हिन्दी पदों का सग्रह हैं ।

७६४. गुटका न० १०५ । पत्र सख्या–१३ से ५० । साइज–६×४१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १११३ ।

७६५. गुटका नं० १०६ । पत्र संख्या–१५६ । साइज–५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १११५ ।

विशेष—पद सग्रह है ।

७६६. गुटका नं० १०७ । पत्र संख्या–४५ । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–स० १८०१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १११६ ।

७६७. गुटका नं० १०८ । पत्र संख्या–१६० । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १११८ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठ हैं—

श्रीपाल की स्तुति		हिन्दी	पूर्ण
राहुलपच्चीसी	ललचचद विनोदीलाल	”	”
उपदेश पचीसी	बनारसीदास	”	”
कर्मघटावलि	कनककीर्ति	”	”
पद तथा आलोचना पाठ	—	”	”
पद	हरीसिंह	”	”
पचमगल	रूपचंद	”	अपूर्ण
विनती–वदू श्री जिनराई	कनककीर्ति	”	” ले० का० १७८० आणंदा चांदवाड ने प्रतिलिपि की ।
कल्याणमदिर भाषा	बनारसीदास	”	पूर्ण
भखडी	—	”	”
रविवार कथा	—	”	”

७६८. गुटका न० १०६ । पत्र संख्या–२४० । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १११६ ।

विशेष—स्तोत्र तथा पदों का संग्रह है । अक्षर बहुत मोटे हैं । एक पत्र में तीन तथा चार पंक्तियां हैं ।

७६६. गुटका न० ११० । पत्र संख्या–७२ । साइज–६×४ इन्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ११२० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

सामायिक पाठ	—	संस्कृत
रजस्वला स्त्री के दोष	—	”
सूतक वर्णन	—	”
स्तोत्र संग्रह	—	”

८००. गुटका न० १११ । पत्र संख्या–१३ । साइज–६×५ इन्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ११२२ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

८०१ गुटका नं० ११२ । पत्र संख्या-८ । साइज-७×६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११२६ ।

विशेष—दर्शन तथा पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि हैं ।

८०२ गुटका नं० ११३ । पत्र संख्या-४ । साइज-१४×८ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११४० ।

विशेष—सिद्धाष्टक, १२ अनुप्रेक्षा-डालूराम कृत, देवाष्टक, पद-डालूराम, गुरू अष्टक आदि हैं ।

८०३. गुटका नं० ११४ । पत्र संख्या-१० । साइज-४×४ । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११४८ ।

विशेष—दर्शन शास्त्र पर संग्रह है ।

८०४. गुटका नं० ११५ । पत्र संख्या-५ । साइज-५×४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४६ ।

विशेष—बीस तीर्थंकर नाम व निर्वाण काल है ।

८०५. गुटका नं० ११६ । पत्र संख्या-२०८ । साइज-६×४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११५५ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चैत्री विधि	अमरमणिक	हिन्दी	—
पार्श्व भजन	सहजकीर्ति	”	
पचमी स्तवन	समयसुन्दर	”	
पोसा पडिकम्मण उठावना विधि	—	”	
चउवीस जिनगणधर वर्णन	सहजकीर्ति	”	
वीस तीर्थंकर स्तुति	”	”	
नन्दीश्वर जयमाल	—	”	
पार्श्व जिन स्थान वर्णन	सहजकीर्ति	”	
सीमंधर स्तवन	—	”	
नेमिराजमति गीत	जिनहर्ष	”	
चौवीस तीर्थंकर स्तुति	—	”	
सिद्धचक्र स्तवन	जिनहर्ष	”	

गुरु विनती	—	हिन्दि
सुबाहु रिषि सधि	माणिक सूरि	"
अंगोपांग फुरकन वर्णन	—	"
ब्रह्मचर्य नव वाडि वर्णन	पुण्यसागर	"
लघु स्नपन विधि	—	"
अष्टाह्निका स्नपन विधि	—	"
मुनि माला	—	"
क्षेत्रपाल का गीत	—	"

८०६. गुटका नं० ११७ । पत्र संख्या–२० से ३१ । साइज–१०×४½ । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× अपूर्ण । वेष्टन नं० ११८४ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
नूरकी शकुनावली	नूर	हिन्दी	अपूर्ण
आयुर्वेद के नुसखे	—	"	"
वायगोला का मंत्र तथा अभ्रक मारण विधि	—	"	"
नूरकी शकुनावली	नूर	"	

विशेष—माईछंद में लिखा है।

मातृका पाठ	—	"
मंत्र स्तोत्र	—	"
आयुर्वेद के नुसखे	—	"

८०७. गुटका नं० ११८ । पत्र संख्या–५३ से ८६ । साइज–६×५½ इन्च । भाषा–प्राकृत–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११८५ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
समाधि मरण	—	प्राकृत	५३ से ६२ पत्र तक
मोढा	हर्षकीर्ति	हिन्दी	६४ से ६७ पत्र तक

प्रारम्भ – राग सोरठी:—

म्हारो रे मन मोढा तू तो गिरनारथा उठि आयरे ।
नेमिजी स्यौं युं कहिज्यो राजमती दुक्ख ये सौसे ॥म्हारो०॥

अंतिम— मोक्ष गया जिण राजइ प्रभु गढ गिरनारि मझार रे ।
राजल तो सुरपति हुवो स्वामी हर्षकीर्ति सुकारो रे ॥ म्हारो० ३० ॥
॥ इति मोडो समाप्ता ॥

भक्ति वर्णन	—	प्राकृत	६८ से ८५ तक
पद	—	हिंदी	८६ पत्र पर

प्रारम्भ—जय अरहत सत भगवत देव तू त्रिभुवन भूप ।

८०८. गुटका नं० ११६ । पत्र सख्या-२० । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १२१६ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशे
पद	महमद	हिन्दी	—

प्रारम्भ—भूलो मन भमरा रे कांई भमै ।

अंतिम भाग—महमद कहै वमत वोरीये ज्यों क्यू आवै साथी ।
लाहा आपण उगाहीलें लेखो साहिब हाथी ॥

सवैया	बनारसीदास	हिन्दी
नववाडसज्झाय	जिनहर्ष	"

विशेष—अंतिम—रूप कूप देखि करि रे माहि पडै किम अंध ।
दुख मायो जायो नही हो कहै जिनहरष प्रबंध ॥
सुगुण रे नारि रुप न जोइये रे ॥ १० ॥

इति नववाडसज्झाय सपूर्ण ।

राजुल बारहमासा	—	हिन्दी	अपूर्ण ।
पार्श्वनाथ स्तुति	भावकुशल	गुजराती	पूर्ण

अंतिम—भवि भवि दीज्यो देव सेव इक ताहरी ।
थिर सिर तुम्ह भी आण आस ए माहरी ॥
पदम सुन्दर उवझाय पसाय गुण भयो ।
भाव कुशल भरपूर सुख संपति घणो ॥

इति पार्श्व जिन स्तुति ॥

सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तुति रामविजय पूर्ण
लें० का० सं० १७६० चैत सुदी ५

अतिम—सेव्यो श्री जिनराज । आपै अविचल राज ॥
रामविजय भणीइए । सु प्रसन तूँ धणीए ॥
इति श्री सखेश्वर पार्श्वनाथ जिन स्तुति । इमें लिखिता भाव कुशलेन । श्री केमरि वाचन कृते ॥

नद छत्तीसी — सस्कृत अपूर्ण
शृंगार ले० का० स० १७६३ पौष मदी ?

विशेष—केवल १७ से ३६ तक पद्य है । बाई केसर के पठनार्थ लिपि की गई थी ।

नेमिनाथ बारहमासा हिन्दी (गु०) १४ पद्य हैं ।

विशेष—रागभरा राजीमती लियो सजम भार ।
कहै जाण मेंहर जसुमालीया मुगत मंझार ॥१४॥
वियोग शृंगार का अच्छा वर्णन है ।

बुधरास हिन्दी अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के पत्र गल गये हैं ।

अतिम—गांठि गरथ मत लूखो खाय ।
भूखो मत चालै सियालै । जीमर मत चालै उन्हालै ॥
बांमण होय अणन्हायो ।
कापथ हो पर लेखो भूले । ए तिनु किण हीनै तोलै ॥१२०॥
एह बुधसार तणोर विचार । आलन आणै इण ससार ॥
मणै पालय रोपम युता । राज करो पसार संजुता ॥२१०॥
॥ इति बुधरास संपूर्ण ॥

तमाखू की जयमाल आणद मुनि । हिन्दी पूर्ण

विशेष—प्रारम्भ—प्रीतम सेती वीनवै प्रमदा गुण विज्ञान ।
मोरा लाल मन मोहण एकै चितै तू समाल ॥ चतुर सुजाण ॥

अंतिम—दया धरम जाणी करी सेवो सदगुरु साध मोरा लाल ।
आणद मुनि इम उच्चरे जग मांही जस वाध मोरा लाल ॥
चतुर तमाखु परिहरो ।
॥ इति तमाखू जयमाल सपूर्ण ॥
॥ लिखतं ऋषि हीरा ॥

८०६. गुटका नं० १२० । पत्र सख्या–२२ । साइज–५३⁄४×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल– । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२१७ ।

विशेष—जीवों की सख्या का वर्णन दिया हुआ है ।

८१० गुटका नं० १२१ । पत्र सख्या–५६ । साइज–६×४१⁄२ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२१८ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
कक्का बत्तीसी	अजयराज	हिन्दी	
पद	वारी हो शिव का लोभी	"	
नारी चरित्र	—	"	
मनुष्य की उत्पत्ति	—	"	
पद	दीपचद	"	
श्री जिनराजै ज्ञान तणै अधिकार ॥			
विनती	अजयराज	"	
श्री जिन रिखब महत गाऊ ॥		"	
उपदेश बत्तीसी	राज	"	

८११ गुटका नं० १२२ । पत्र सख्या–३५ । साइज–४३⁄४×६१⁄२ इन्च । भाषा–हिन्दी । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२१९ ।

विशेष—मतिसागर सेठ की कथा है । पद्य सख्या १८१ है । प्रारम्भ में मत्र जंत्र भी दिये हुए

८१२. गुटका नं० १२३ । पत्र सख्या–८६ । साइज–८३⁄४×६३⁄४ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२० ।

विशेष—गुणस्थान की चर्चा एवं नवल तथा भूधरदास के पद और खडेलवाल गोत्रोत्पत्ति वर्णन है ।

८१३. गुटका नं० १२४ । पत्र संख्या–५० । साइज–६३⁄४×४३⁄४ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२१ ।

निम्न पाठों का संग्रह है —

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	हिन्दी	
नेमिकुमार बारहमासा	—	"	

नेमि राजमति जखडी	हेमराज	”

जखडी का अंतिम—नीम दिन अरु निरधारजी।

हेम भणे जीन जानिये। ते पावै भव पार जी॥

दिल्ली में प्रतिलिपि हुई थी।

तिलोकचंद पटवारी गोधा चाकसू वाले ने सं० १७८२ में प्रतिलिपि की थी।

फल पासा (फल चिंतामणि) तीर्थंकरों की जयमाल एवं पार्श्वनाथ की विनती आदि और हैं।

८१४. गुटका नं० १२५। पत्र संख्या–७२। साइज–६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२२२।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
जिनराज स्तुति	कनककीर्ति	हिन्दी (गुजराती)	ले० का० सं० १७५६ फागुण सुदी ६ सांगानेर में प्रतिलिपि हुई।
चिन्तामणि स्तोत्र	—	”	—
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	”	र० का० सं० १७०४ आषाढ सुदी ५। ले० का० सं० १७५०
नेमीश्वर लहरी	—	हिन्दी	—
पचमेरु पूजा	विश्वभूषण	”	—
अष्ट विधि पूजा	सिद्धराज	”	—
आदित्यवार कथा (छोटी)	—	”	—
फुटकर कवित्त—	—	”	—
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	”	—
भक्तिमंगल	”	”	—
नित्यपूजा	—	हिन्दी	पूर्ण
जिनस्तुति	रूपचन्द	”	”
आदीश्वरजी का बधावा	न्यायकीर्ति	”	”
सम्यक्त्वी का बधावा	—	”	अपूर्ण

८१५. गुटका नं० १२६। पत्र संख्या–१०२। साइज–६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १७०४ अषाढ सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२२४।

विशेष—पूजाओं के अतिरिक्त निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	
सहेली सबोधन	—	,,	
बडा कक्का	मनराम	,,	
ज्ञानचिंतामणि	मनोहर	,,	

८१६. गुटका नं० १२७। पत्र संख्या–६२। साइज–६×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२२६।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
कर्म प्रकृति वर्णन भाषा	—	हिन्दी	—
चौवीस तीर्थंकर पूजा	अजयराज	,,	ले० का० स० १८०३ अषाढ बुदी २
ध्यान बत्तीसी	बनारसीदास	,,	
पद	दीपचद	,,	
जोगीरासा	जिनदास	,,	
जिनराज विनती	—	,,	१४ चरण हैं।

८१७. गुटका नं० १२८। पत्र सख्या–१०२। साइज–६×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२२८।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
कक्का बत्तीसी	गुलाबराय	हिन्दी	ले० का० स० १८०३ कार्त्तिक सुदी ५
विशेष—हीरालाल ने प्रतिलिपि की।			
सबोध पचासिका भाषा	बिहारीदास	,,	र० का० १७५८ कार्त्तिक बुदी १३।
विशेष—बिहारीदास आगरे के रहने वाले थे।			
आदिनाथ का बधावा (बाजा बाजीआ घणा जहां जनम्यां हो प्रभु रीखबकुमार)			
पच मगल	रूपचन्द	,,	
पद (मस्तग आजि हो पवित्र मोहि भयो)		,,	
आठ द्रव्य की भावना	जगराम	,,	
जैन पच्चीसी	नवलराम	,,	
पद संग्रह	जोधराज बनारसीदास आदि के पद हैं।		
चार मित्रों की कथा	अजयराज	,,	र० का० १७२१ जेठ सुदी १३। ले० का० सं० १८२१ अषाढ बुदी ६।

वज्रनाभि चक्रवर्ति की वैराग्य भावना	भूधरदास	हिन्दी

८१८ गुटका न० १२६। पत्र संख्या-१६। साइज-८½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन न० १२३०।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

८१६. गुटका न० १३०। पत्र संख्या-७३ से ११४। साइज-५¾×३¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन न० १२३२।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है। प्रारम्भ के ७१ पत्र तथा ७४, ७५ पत्र नहीं है।

८२०. गुटका नं० १३१। पत्र संख्या-१६। साइज-६×३¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-सं० १६३६ भादवा सुदी ११। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२३८।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है। जयपुर नगर स्थित चैत्यालयों की सूची दी हुई है।

८२१. गुटका नं० १३२। पत्र संख्या-१५६। साइज-६½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन न० १२३६।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा, साधु वंदना, भक्तामर भाषा आदि पाठ हैं बीच में कही २ पत्र नहीं है।

८२२. गुटका न० १३३। पत्र संख्या-१७०। साइज-४½×२½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२३८।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	—
चतुर्दशी कथा	हरिकृष्ण पाण्डे	"	—
पंच मंगल	रूपचन्द	"	—
नित्य पूजा पाठ	—	संस्कृत	—
जिन वाणी स्तुति	—	"	—

स्नपन पूजा, क्षेत्रपाल पूजा आदि नैमित्तिक पूजा-संग्रह भी है।

८२३. गुटका न० १३४। पत्र संख्या-१७०। साइज-६×३¾। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२३६।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
नेमीश्वर विनती	—	हिन्दी	७ पद्य हैं।
पुण्य पाप जग मूल पच्चीसी	भगवतीदास	"	२७ पद्य हैं।
४६ दोष रहित आहार वर्णन	—	"	—
जिन धर्म पच्चीसी	भगवतीदास	"	अपूर्ण
पद संग्रह	जगतराम	"	—
पद	शोभाचन्द	"	—
(भज श्री रिषव जिनिंद कूं)			
पद	जिणदास	"	—
(जैन धर्म नहीं कीना नरदेही पाई)			
पद	जीवनराम	"	—
(अश्वसेन राय कुल मंडन उग्र वंश अवतारी)			
सप्त व्यसन कवित्त	—	"	—

जिनके प्रभु के नाम की भई हिये प्रतीति।
विस्नराय ते नर भजे नरक वास भयभीत ॥

सोलह स्वप्न (स्वप्न बत्तीसी)	भगवतीदास	"	—

विशेष—अन्तिम—निज दौलत पावै भया हरै दोष दुख रास ॥
भरत चक्रवर्त्ती के १६ स्वप्नों का वर्णन है।

पद	कृष्ण गुलाब	"	—
(समरि जिनद समरना है निदान)			
छहढाला	बुधजन	"	ले० का० सं० १८१७।
शम्भूराम ने प्रतिलिपि की थी।			
ननद भौजाई का भगडा	आनंदवर्धन	"	—
चतुर्विंशति स्तुति	विनोदीलाल	"	—
पद संग्रह	बनारसीदास एवं भूधरदास	"	—
बाईस परीषह	भूधरदास	"	—
बरखा चउपइ	अजयराज	"	—
बारहखडी	—	"	—

८२४ गुटका नं० १३५। पत्र संख्या-७४। साइज-६½×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२४०।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
दर्शन सार	देवसेन	प्राकृत	५२ गाथाएं हैं।
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	—	"	१२६ "
सामुद्रिक श्लोक	—	संस्कृत	—
सोलह कारण पायडी	—	"	१० श्लोक हैं।
सप्त ऋषि पूजा	—	"	—
राज पट्टावली	—	"	—
राजाओं के वंशों की पट्टावलि संवत् ८२६ से १६०२ तक की दी हुई है।			
सज्जन चित्त वल्लभ	मल्लिषेणाचार्य	"	—
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	—	प्राकृत	—

विशेष—गुटके के अन्त के ४ पृष्ठ आधे फटे हुये हैं।

८२५ गुटका नं० १३६। पत्र संख्या-१४८। साइज-७×६। भाषा-हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२४१।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१५४ पद्य हैं।
भावना बत्तीसी	अमितिगति	संस्कृत	—
अनादिनिधन स्तोत्र	—	"	—
कर्म प्रकृति वर्णन	—	"	—
१४८ प्रकृतियों का वर्णन है तथा ८ गुणस्थान तक सात मोहनीय की प्रकृतियों का व्यौरा भी है।			
त्रिभुवन विजयी स्तोत्र	—	संस्कृत	—
गुणस्थान जीव संख्या समूह वर्णन	—	हिन्दी	—
७ वें गुणस्थान से १४ वें गुणस्थान तक एक समय में कितने जीव अधिक से अधिक व कम से कम हो सकते हैं इसका व्यौरा है।			
चौबीस ठाणा चर्चा	—	हिन्दी	—
त्रेषटशलाका पुरुषों की नामावलि	—	"	—

परमानद स्तोत्र	—	संस्कृत	—
नेमीश्वर के दश भवातर	ब्रह्म० धर्मरुचि	हिन्दी	—

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है।
बू दी गढ में भासज कीधी भणिसी जे नर नारी जी।
श्री संघ मगल कारणि कीधी भयौ धर्मरुचि ब्रह्मचारीजी॥

निर्वाण काण्ड गाथा	—	प्राकृत	—
लघु सहस्त्र नाम	—	सस्कृत	—
विषापहार स्तोत्र	धनजय	,,	—
वडा कल्याण	—	हिन्दी	—

तीर्थंकरों के गर्भ जन्मादिक कल्याणों की तिथिया दी है।

पल्य विधान	—	,,	—
गुरुभक्ति स्तोत्र	—	प्राकृत	—
णमोकार महिमा	—	हिन्दी	—
पल्य विधान कथा	—	सस्कृत	—

८२६. गुटका नं० १३७। पत्र संख्या–८४। साइज–६¾×४½ इन्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२४२।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पच मगल	रूपचन्द	हिन्दी	—
तीन चौवीसी एव बीस तीर्थंकरों की नामावलि	—	,,	—
विनती सग्रह	—	,,	—
बारह भावना	भूधरदास	,,	—
वज्रनाभि चक्रवर्त्ती की वैराग्य भावना	—	,,	—

८२७. गुटका नं० १३८। पत्र संख्या–६ से ४१। साइज–६×४½ इन्च। भाषा–हिन्दी–सस्कृत। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० १२४३।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पूजा सग्रह	—	सस्कृत	—

विशेष—देव पूजा बीस विरहमान सिद्ध पूजा आदि का सग्रह है।

समुच्चय चौवीस तीर्थंकर पूजा	अजयराज	हिन्दी	पूर्ण

पंचमेरु पूजा	—	हिन्दी	अपूर्ण
तीन चौबीसी तीर्थ करों की नामावलि	—	,,	पूर्ण
समुच्चय चौबीस तीर्थ कर जयमाल	—	,,	—

८२८. गुटका नं० १३६ । पत्र संख्या—२३ से ७० । साइज—६¾×५ । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । लेखन काल—× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२४४ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पद्मावती पूजा	—	संस्कृत	अपूर्ण
चन्द्रप्रभस्तुति	—	हिन्दी	पूर्ण
(चन्द्रप्रभु जिन ध्यायज्यौं । मवि हो चन्द्रप्रभु जिन ध्यायज्यौं ॥ टेक			
पंच बधावा	—	,,	—
आदिनाथ स्तुति	—	,,	अपूर्ण
आरती विनती	—	,,	ले० का० सं० १७७७ मगसर सुदी ४
पद	—	,,	ले० का० सं० १७७८ पौष बुदी १०
विनती	—	,,	—
पूजा	—	,,	—
दर्शनपाठ	—	संस्कृत	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	,,	—
सीख गुरुजनों की	—	हिन्दी,	—
कल्याणमंदिर भाषा	बनारसीदास	,,	ले० का० सं० १७९५ आसोज सुदी ८
देवपूजा	—	,,	ले० का० सं० १७९६ श्रावण बुदी २

विशेष—गुलाबचन्द पाटनी की पोथी है । सांगानेर में प्रतिलिपि की गई थी ।

८२९. गुटका नं० १४० । पत्र संख्या—१० से १२० । साइज—५×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी—संस्कृत । लेखन काल—× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२४५ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
समयसार भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामर स्तोत्र एवं पूजा	—	संस्कृत	—

सिद्धि प्रिय स्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	—
कल्याणमंदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	—
विषापहार स्तोत्र	धनंजय	"	—
नेमीश्वरगीत	जिनहर्ष	हिन्दी	—
जखडी	अनतकीर्ति	"	रचना काल सं० १७५० भादवा सुदी १०
नेमीश्वर राजमति गीत	विनोदीलाल	"	—
मेघकुमार गीत	पूनो	"	—
मुनिवर स्तुति	—	"	—
ज्येष्ठजिनवर कथा	—	"	—

गुटके के प्रारम्भ के ८ पत्र नहीं हैं।

८३०. गुटका नं० १४१। पत्र संख्या-१२। साइज-७×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२५३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

८३१. गुटका नं० १४२। पत्र संख्या-१५ से ४८। साइज-६×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८११। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२५४।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पार्श्वनाथ जयमाल	—	संस्कृत	—
कलिकुंड पूजा	—	"	—
चिंतामणिपूजा	—	"	—
शान्ति पाठ	—	"	—
सरस्वती पूजा	—	"	ले० का० सं० १८११ जेठ बुदी १
क्षेत्रपाल पूजा	—	"	—
महावीर विनती	—	हिन्दी	—

विशेष—चाँदनगांव के महावीर की विनती है। इसमें ११ अतरे हैं। अन्य पाठ भी है

८३२. गुटका नं० १४३। पत्र संख्या-६०। साइज-४½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-सं० १८१३। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२५५।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

(१) निर्वाण काण्ड, भक्तामर भाषा, पंच मंगल, कल्याण मंदिर आदि स्तोत्र ।

(२) ४८ यन्त्र विधि सहित दिए हुए हैं एवं उनके फल भी दिये हुए हैं । ये भक्तामर स्तोत्र के यंत्र नहीं हैं ।

(३) गज करणादि की औषधि, हितोपदेश भाषा, लाला तिलोकचंद की सं० १८१२ की जन्म कुंडली भी दी हुई है ।

(४) कवित्त—केई खंड खंड के निरदन कूं जिति आयो ।

पलक में तोरि डार्‌या क्लिो जिन धारको ॥

म्हा मगरूर कोऊ सूझत न सूर ।

राहु केत सौ गरूर ह्वै वहीया वढे सारकौ ॥

मोर है हजार च्यारि असवार और ।

लगी नहीं वार जोग विरच्यौ नजार कौ ॥

माधव प्रताप सेती जैपुर सवाई मांझ ।

मारि कडार्‌यो मगज महाजना मलारकौ ॥

(५) नौ कोठे में बीस का यंत्र—

यंत्र का फल भी दिया हुआ है ।

८३३. गुटका नं० १४४ । पत्र संख्या–२२ । साइज–६×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

८३४. गुटका नं० १४५ । पत्र संख्या–७५ । साइज–६×४ इन्च । भाषा–हिन्दी– । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५७ ।

विशेष—बखतराम कृत आसावरी है पद्य संख्या ३६ है ।

८३५. गुटका नं० १४६ । पत्र संख्या–३ से २७ । साइज–६×४ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५८ ।

विशेष—पंच मंगल पाठ तथा चौबीस ठाणां का ब्यौरा है।

८३६ गुटका नं० १४७। पत्र संख्या–१५ से ६१। साइज–६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखनकाल–सं० १८३८ आषाढ बुदी ७। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२५६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है तथा सूरत की बारह खडी है जिसके ११३ पद्य हैं।

८३७. गुटका नं० १४८। पत्र संख्या–२७६। साइज–७½×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १७६६ ज्येष्ठ बुदी ११। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२६०।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
हनुमत कथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—
भविष्यदत्त कथा	—	„	ले० का० सं० १७२७ फाल्गुण सुदी ११
जैनरासो	—	„	—
साधु वंदना	बनारसीदास	„	—
चतुर्गति वेलि	हर्षकीर्ति	„	—
अठारह नाता का चौढाला	साह लोहट	„	—
स्फुट पाठ	—	„	—

८३८ गुटका नं० १४९। पत्र संख्या–२०। साइज–६½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२६५।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

८३९ गुटका नं० १५०। पत्र संख्या–११०। साइज–५½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२६६।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

८४०. गुटका नं० १५१। पत्र संख्या–१६४। साइज–६½×५¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखनकाल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२६७।

विशेष—पद व स्तोत्रों का संग्रह है।

८४१. गुटका नं० १५२। पत्र संख्या–१३०। साइज–६¾×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत–प्राकृत। लेखन काल–सं० १७६३। पूर्ण। वेष्टन नं० १२६६।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं, जयमाल तथा भाऊ कवि कृत आदित्यवार कथा आदि का संग्रह है।

८४२. गुटका नं० १५३ । पत्र संख्या-२४ । साइज-६¾×४¾ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७० ।

मुख्यत. निम्न पाठों का संग्रह है.—

भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	—
बारह खडी	जीवतलाल	हिन्दी	—

प्रारम्भ—कवा कैवल कृष्ण मन जब लग रहै शरीर ।
वहोर न ऐसा दाव है, आन पडेगी भीड ॥१॥

अन्तिम—हा हा ईह सबै हसत हो, हरजन हमें न कोइ ।
वैसे हँस खाली गये ए सुर रहे सुम जोय ॥
जे सुर रहे सुम जोय होय तीनु रे पुरक ।
होनहार थी रहे सुरापन गऐ सु धरक ॥
सुरग मृत पाताल काल ग्रह वाली ।
माइदतलाल वह साहिब खाली ॥

॥ बाराखडी संपूर्ण ॥

८४३. गुटका नं० १५४ । पत्र संख्या-१७ । साइज-६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२७१ ।

विशेष—जगराम, नवल, सालिग मार्गचंद, आदि कवियों के पद हैं तथा बनारसीदास कृत कुछ कवित्त और सवैये भी हैं ।

८४४. गुटका नं० १५५ । पत्र संख्या-६४ । साइज-६½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १६०५ आसोज सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२७२ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
सुगुरु शतक	जिनदास	हिन्दी	र० का० सं० १८१२ चैत सुदी ६
मोक्ष पैडी	बनारसीदास	,,	—
बारह भावना	भगवतीदास	,,	—
निर्वाण काण्ड भाषा	,,	,,	र० का० सं० १७४३ आसोज सुदी १०
जैन शतक	भूधरदास	,,	र० का० सं० १७८१ पौष सुदी १३

८४५ गुटका नं० १५६ । पत्र संख्या-८४ । साइज-७×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७३ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजादि का संग्रह एवं ६३ शलाका पुरुष तथा १६१ पुण्य जीवों का व्यौरा दिया हुआ है।

८४६ गुटका नं० १५७। पत्र संख्या-२३४। साइज-११½×५¾ इन्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। लेखन काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२७४।

रचना का नाम	कर्त्ता	भाषा	विशेष
समयसार वचनिका	—	हिन्दी	ले. का. स० १६६७ चैत्र सुदी ७।

प्रशस्ति—सं० १६६७ चैत्र शुक्ल पक्षे तिथौ सप्तम्यां अबावती मध्ये राजा जैसिंघ प्रतापे लिखाइतं सहि देवसी जी। लिखतं जोसी अखिराज प्रसिद्धा।

पद संग्रह	बनारसीदास, रुपचद	,,	—
धर्म धमाल	धर्मचद	,,	ले का. सं० १६६६ श्रावण सुदी ८।
आत्म हिंडोलना	केशवदास	,,	—
वणिजारी रास	रुपचद	,,	ले. का. सं० १६६६ श्रावण सुदी ८।
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	,,	—
कर्म छत्तीसी	—	,,	
ज्ञान बतीसी	बनारसीदास	हिन्दी	—
चद्रगुप्त के सोलह स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	,,	—
द्वादशानुप्रेक्षा	आलू	,,	—
शुभाषितार्णव	—	सस्कृत	—

८४७. गुटका नं० १५८। पत्र संख्या-१२६। साइज-६×४ इन्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। सपूर्ण। वेष्टन नं० १२७५।

विशेष—मुख्य रूप से निम्न पाठों का सग्रह है—

पूजा स्तोत्र एवं पद सग्रह	—	हिन्दी	—
जिनगीत	अजयराज	,,	—
शिवरमणी को विवाह	,,	,,	१७ पद्य हैं।

किशनसिंह, अजयराज, द्यानतराय, दीपचद आदि कवियों के पदों का सग्रह है।

८४८. गुटका नं० १५६। पत्र सख्या-१५ से ६४। साइज-६×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२७६।

विशेष—चन्द्रायण व्रत कथा है। पद्य संख्या १ ८ से ६३७ तक है। कथा गद्य पद्य दोनों में ही है। गद्य का उदाहरण निम्न प्रकार है—

जदी सारा लोगा कही। आप तो जाणी प्रवीण छौ। जसा वल ग्यान कुला सो तो काम को नहीं। अर पीहर सासर आदर नहीं अर जमारो अधीको षोसर होई। जीसु काइ कहवाम आव। अर वणो तो तीलौय लीखो छो। जीसु आपका मनम आवतो क्वर नै बुलाइ लीनावो॥

८४६. **गुटका नं० १६०**। पत्र संख्या-१३ से १४४। साइज-६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १७२८ कार्तिक बुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२७७।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति की पूजा	—	संस्कृत	पत्र १३ से १४
सिद्धि प्रिय स्तोत्र टीका	—	हिंदी	१८ से ३२
योगसार	योगचन्द्र	”	३३ से ४६
			ले० का० सं० १७३५ चैत्र सुदी ५। सांगानेर में लिखा गया।
अनित्य पचासिका	त्रिभुवनचद	”	पत्र ४७ से ५६, ५५ पद्य हैं।
अष्टकर्म प्रकृति वर्णन	—	”	६० से ६८
मुनीश्वरों की जयमाल	जिणदास	”	६८ से ७२
पंचलब्धि	—	संस्कृत	७२ से ७३
धमाल	धर्मचद	हिंदी	७३ से ७४
जिन विनती	सुमतिकीर्त्ति	”	पत्र ७४ से ७८, २३ पद्य हैं।
गुणस्थान गीत	ब्रह्मवर्द्धन	”	७८ से ८१
समकित भावना	—	”	८१ से ८४
परमार्थ गीत	रुपचद	”	८४ से ८५
पंच बधावा	—	”	८५ से ८८
मेघकुमार गीत	पूनो	”	८८ से ८९
भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	”	८९ से ९५
मनोरम माला	—	”	९५ से ९६
पद	स्यामदास जिनदास आदि	”	९६ से १०१

मोह विवेक युद्ध	बनारसीदास	हिन्दी	१०१ से ११०
योगीरासो	जिनदास	”	१११ से ११३
जखडी	रूपचंद	”	११४ से १२८
पंचेन्द्रिय बेलि	ठक्कुरसी	”	११४ से १२६
			र० का० स० १५८५
पंचगति की बेलि	हर्षकीर्ति	”	१२६ से १३२
पथीगीत	छीहल	”	१३२ से १३४
पद	रूपचंद	”	१३४ से १३६
द्वादशानुप्रेक्षा	—	”	१३७ से १४४

८५०. गुटका न० १६१ । पत्र संख्या-१५० । साइज-८$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२७८ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
सवैया	केशवदास	हिन्दी	अपूर्ण ।
सोलह घडी जिन धर्म पूजा की	—	”	—

कन्हीराम गोधा ने लिपि की ।

पंच बधावा	प० हरीवैस	”	ले. का. १७७१
पार्श्वनाथ स्तुति	—	”	र. का. सं. १७०४ आषाढ सुदी ५ ।
पद	हर्षकीर्ति	”	१३ पद्य हैं ।

प्रारम्भ—जिन जपु जिन जपु जीयडा भुवण मैं सारोजी ।

अंतिम—सुभ परणाम का हेत स्यौं उपजै पुनि अनतो जी ।

हरष कीरती जीन नाम सुमरणी दीनी मति चुको जी ।

जिन जपु जिन जपि जीवडो ॥

आदिनाथ जी का पद	कुशलसिंह	हिन्दी	ले. का. सं. १७७१

मयाचंद गगवाल ने रौझडी में लिपि की थी ।

नेमिजी की लहर	पं० डूंगो	”	—
सुगुरु सीख	मनोहर	”	—

साह हरीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	"	ले. का स १७६३
अठारह नाता का चोढाला	लोहट	"	—
नेमिनाथ का बारहमासा	श्यामदास गोधा	"	ले स १७८६ आषाढ सुदी १४।

अंतिम—बाराजी मासो नेम को राजल सोलैहगी गाइ जी।

नेम जी मुक्ति पहुतण श्यामदास गोधा उरि लायो आदुराइतो।

इति बारहमासा सपूर्ण।

कक्का	—	हिन्दी	ले० का० सं० १७७४

यंत्र २० का ८ कोष्ठकों का—
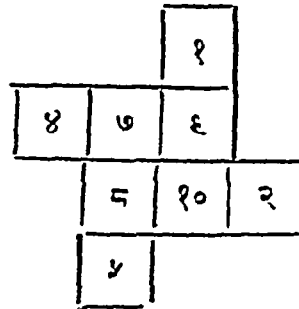
बारह भावना	भगवतीदास	हिन्दी	ले० का० सं० १८५० मानमल ने प्रतिलिपि की थी।
कर्म प्रकृति	—	"	—

८५१. गुटका नं० १६२। पत्र सख्या-५१ से २१२। साइज-८×३½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १२७९।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
माली रासा	जिणदास	हिन्दी	पत्र ६३
नेमीश्वर राजमति गीत	—	"	६५
नेमिनाथ राजुल गीत	हर्षकीत्ति	"	६८

प्रारम्भ—म्हारो रे मन मोरड़ा गिरनारयाँ उडि कैसो रे।

अंतिम—मोषि गयो जिण राजह गढ गिरनारि मभारे।
राजमति सुरपति हुई हरष कीरति सुख करारे।

नेमीश्वर गीत	हर्षकीर्त्ति	"	६६
आचार रासा	—	"	७०

बंदेतान जयमाल	—	सस्कृत	पत्र ७२
गीत	हेमराज	हिन्दी	७२

चौबीस तीर्थंकर स्तुति के २ पद्य हैं।

जीयडा गीत	—	"	७४

विशेष—तु मेरो पीव साजना रे हु तेरी वर नारि मेरा जीवडा।
तुम विन खिण एक ना रहो रे लाल तुझमे प्रेम पियार मेरा जीवडा।
काया कामिणी वीनउ रे लाल ॥१॥ ६ पद्य हैं।

पूजा संग्रह	—	संस्कृत हिन्दी	६८
श्री जिनस्तुति	ब्र० तेजपाल	"	११६
श्रीजिन नमस्कार	यशोनंदि	"	११७, ११ पद्य हैं।
धर्म सहेली	मनराम	"	१६३, २० पद्य हैं।
मेघकुमार गीत	पूनो	"	१६६, २१ पद्य हैं।
पद	कवि सुन्दर	"	१६७, १० पद्य हैं।
जीवकी भावना	—	"	१७२, ६ पद्य हैं।
ऋषभनाथ वेलि	—	"	१७३
नेमि राजुल गीत	बुगरसी बैनाडा	"	१७५
पचेन्द्रिय वेलि	ठक्कुरसी	"	१७६ र. का. सं. १५८५
कर्म हिंडोलना	हर्षकीर्ति	"	१८१
नेमिगीत	—	"	१८४
नेमिराजमती गीत	—	"	१८६ १७ पद्य हैं।
दीतवार कथा	भाऊकवि	"	—
बारह खडी	—	"	—
सीता की धमाल	लक्ष्मीचंद	"	२०२
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	२१२

स्फुट एवं अवशिष्ट साहित्य

८५२. अइमताकुमार रास—मुनि नारायण । पत्र सख्या–८ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) गुजराती मिश्रित । विषय–कथा । रचना काल–सं० १६८३ । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११६१ ।

विशेष—१ तथा ५ वां पत्र नहीं हैं ।

अन्तिम—अरिहत वाणी हृदय आणी पूरा इति निज आसए ।

श्री रत्नसीह गणि गछ नायक पाय प्रणमी तासए ॥३३॥

सवत सोल त्रिहासी आ वर्षि बुधि वदि पोस मासए ।

कल्प वल्ली मांहि रंगिइ रच्यउ सु दर रास ए ॥३४॥

वाचारिषि शिष्य समरचद मुनी विमल गुण आवासए ॥३५॥

८५३. अजीर्ण मजरी—पत्र सख्या–८ । साइज–६½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४१ ।

८५४. अर्द्धकथानक—बनारसीदास । पत्र संख्या–६ से ३० । साइज–६×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–आत्म चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११६३ ।

विशेष—कवि ने स्वय का आत्म चरित लिखा है ।

८५५ अर्हन् सहस्रनाम—पत्र सख्या–६ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२०३ ।

विशेष—चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र एव मंत्र भी दिया हुआ है । पडित श्री सिंघ सौभाग्य गणि ने प्रतिलिपि की थी ।

८५६. आदिनाथ के पंच मगल—अमरपाल । पत्र संख्या–८ । साइज–६×६ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७७२ सावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२१० ।

विशेष—सं० १७७२ में जहानाबाद के जैसिंहपुरा में स्वय अमरपाल गंगवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अंतिम छंद—अमरपाल के चित सदा आदि चरन ल्यो लाइ ।

भव भव मांझि उपासना रहो सदा ही आइ ॥

जिनवर स्तुति दीपचन्द की भी दी हुई है ।

८५७. किशोर कल्पद्रुम - शिव कवि । पत्र सख्या-१८४ । साइज-८३/४×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पाक शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १०१२ ।

विशेष—इति श्री महाराजि नृपति किशोरदास आज्ञा प्रमाणेन शिव कवि विरचित ग्रथ किशोर कल्पद्रु मे सिखरादि विधि वरनन नाम नवविंसत साखा समाप्ता । ६२० पद्य तक है । आगे के पत्र नही हैं ।

८५८ कुवलयानंद कारिका—पत्र सख्या-८ । साइज-१२×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-रस अलकार । रचना काल-× लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०७१ ।

विशेष—एक प्रति और है । इसका दूसरा नाम चन्द्रालोक भी है ।

८५६. ग्रन्थ सूची—पत्र सख्या- । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सूची । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ११५० ।

८६० चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न—पत्र संख्या-३ । साइज-६३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६६३ ।

विशेष—सम्राट् चन्द्रगुप्त को जो सोलह स्वप्न हुये थे उनका फल दिया हुआ है ।

८६१ चौबीस ठाणा चौपई—साह लोहट । पत्र सख्या-६२ । साइज-११३/४×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धात । रचना काल-स० १७३६ मगसिर सुदी ५ । लेखन काल-स० १७६३ फाल्गुण सुदी १४ शाके १६२३ । पूर्ण । वेष्टन न० ४२७ ।

विशेष—कपूरचन्द ने टोंक म प्रतिलिपि की थी । प्रशस्ति में लोहट का पूर्ण परिचय है ।

रचना चौपई छन्द में है जिनकी संख्या १३०० है । साह लोहट अच्छे कवि थे जो श्री धर्मा के पुत्र थे । प० लक्ष्मीदास के आग्रह से इस ग्रथ की रचना की गयी थी । भाषा सरल है ।

प्रारभ—श्री जिन नेमि जिनदचंद वदिय आनद मन ।
सिध सुध अकलक व्यक सर मरि सयक तन ॥
ए अष्टादश दोष रहत उन अभ्रत कोइय ।
ए गुण रत्न प्रकास सुजस जग उन मजोइय ॥
ए ज्ञान वहै यमृत स्रवै इवें सांति वहै सीतधर ।
ए जीव स्वरूप दिखाय दे वहै लखावै लोक वर ॥

अतिम—बुध सज्जन सव ते अरदास, लवि चौपई करोमत हासि ।
इनकी पारन कोऊलही, मैं मोरी मति सारु कही ॥१८५॥

लाख पचीस निन्यायव कोडि एक अब सुध लीज्य जोडि ।

सो रचना लख ज्योन लाय । जंत्रग कदे धरु बनाय ॥१८६॥

८६२. जखडो—पत्र संख्या-२ । साइज-११¾×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४६ ।

८६३. जीतकल्पावचूरि—पत्र संख्या-५ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६२ ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण भी दिया हुआ है ।

८६४ **दस्तूर मालिका-वंशीधर** । पत्र संख्या ६ । साइज १०×७ । भाषा-हिन्दी । विषय-अर्थशास्त्र । रचना काल सं० १७६५ । लेखन काल-X । अपूर्ण एवं जीर्ण । वेष्टन नं० १२८० ।

विशेष—इसमें व्यापार संबंधी दस्तूर दिये हुए हैं ।

आरंभ— जो घरत गनपति प्रातै मै घरत जे लोइ ।

गुन वदत इक्दत के सुर मुनि जन सब कोइ ॥ १ ॥

हीव श्रक चक धुज पग पर प्रय पाप प्रसाद ।

वंसीधर बरननि कियौ सुनत होय यहलाद ॥ २ ॥

जदि यद्दुनी लेखे घनै लेखे के करतार ।

मटकत विनि दस्तूर है अटकत बारबार ॥ ३ ॥

सूध पथ जो जनिरिंगें पहुचहि मजल ऊताल ।

रहिवीना विसराइ है सकट वकट जाल ॥ ४ ॥

पातसाहि आलम अमिल सालिम प्रबल प्रताप ।

आलम मे जाको सबै घर घर जापत जाप ॥ ५ ॥

छत्र साल भुवपाल कौं राजन राज विसाल ।

सकल हिन्दु उग जाल में मनौ इन्द्रदुत जाल ॥ ६ ॥

ताके अता सोमिजे सक्तसिंघ वलवान ।

उग्रमईगा रव हके नंद दीह दलवान ॥ ७ ॥

सहर सक्तपुर राज ही सब समाज सब ठौर ।

परम धरम सुकरन जहा सबै जगत सिर मौर ॥ ८ ॥

सवत सत्रासैका पैंसठ परम पुनीत

करि बरननि यहि ग्रंथ को छद चरनन करि मीत ॥ ९ ॥

अथ कपडा खरीद को दस्तूर —

जिते रुपैया मोल को गज प्रत जो पट लेइ ।

गिरह एक आना तिते लेख लिखारी देइ ॥ १० ॥

आना ऊपर होय गज प्रति रुपिया अक ।

तीन दाम अठ असु बद मइ प्रति लिखौ निसक ॥ ११ ॥

इसमें कुल १४३ तक पद्य हैं । प्रति अपूर्ण है ।

८६५ **नख शिख वर्णन** — पत्र सख्या-६ से १६ । साइज-६×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-शृंगार रस । रचना काल-× । लेखनकाल-स० १८०६ । अपूर्ण । वेष्टन न० १०१३ ।

विशेष—वखतराम साह ने लिखी थी ।

८६६ **नित्य पूजा पाठ सग्रह** । पत्र सख्या-१० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०५ ।

८६७. **पत्रिका**—पत्र सख्या-१ ।साइज-× । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-प्रतिष्ठा का वर्णन । रचना काल-× । लेखनकाल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १२६१

विशेष—स० १६२१ में जयपुर में होने वाले पच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की निमत्रण पत्रिका है ।

८६८. **पद संग्रह — जौंहरीलाल** । पत्र सख्या-२४ । साइज-१०½×५½ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पद । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२१२ ।

विशेष—२४ पदों का सग्रह है ।

८६६ **पन्नाशाहजादा की बात**—पत्र सख्या-२० । साइज-६½×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६० आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ५५ ।

विशेष—श्राविका कुशाला ने बाई केशर के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

२० से आगे के पत्र पानी में भीगे हुए हैं । इनके अतिरिक्त मुख्य पाठ ये हैं—

पद	हरीसिंह	
सुमति कुमति का गीत	विनोदीलाल	१८७२
जोगीरासा	जिणदास	—

८७०. **परमात्म प्रकाश—योगीन्द्रदेव** । पत्र सख्या-५ से १४ । साइज-११½×५ इन्च । भाषा-अपभ्र श । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५६७ चैत्र सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन न० ११६६ ।

विशेष—ईडर के दुर्ग में लेखक डूंगर ने प्रतिलिपि की।

अंत में यह भी लिखा है.—श्रीमूलसघे श्री मत् हर्ष सुकीर्ति न पुस्तक मिद ॥ वसुपुरे ॥

८७१. **पल्य विधान पूजा—रत्न नंदि** । पत्र संख्या—६ । साइज—१०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२११ ।

८७२. **पाठ संग्रह**—पत्र संख्या—६१ । साइज—१२×५ इंच । भाषा—संस्कृत—प्राकृत । विषय—संग्रह । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६७ ।

विशेष - आशाधर विरचित प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है ।

८७३ **पाठ संग्रह**—पत्र संख्या—२० । साइज—१२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८० ।

विशेष—इष्ट छत्तीसी, एकीभाव, स्तोत्र भक्तामर स्तोत्र, निर्वाणकांड, परंज्योति, कल्याण मन्दिर और विषापहार स्तोत्र हैं ।

८७४. **पाठ संग्रह—भगवतीदास** । पत्र संख्या—३ । साइज—१०×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

मूढाष्टक वर्णन—
सम्यक्त्व पच्चीसी—
वैराग्य पच्चीसी— र० का० सं० १७५० ।

८७५. **पाठ संग्रह**—पत्र संख्या—२५ । साइज—१२×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७५ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, सहस्र नाम, तथा तत्वार्थ सूत्र का संग्रह है ।

८७६ **पाठ संग्रह**—पत्र संख्या—१० । साइज—८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । लेखन काल— । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६६ ।

विशेष—सास बहू का झगडा आदि पाठों का संग्रह है ।

८७७ **बनारसी विलास—बनारसीदास** । पत्र संख्या—७ से ८७ । साइज—११½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—संग्रह । रचना काल—× । संग्रह काल—१७०१ । लेखन काल—सं० १७०८ माघ सुदी ६ । अपूर्ण वेष्टन नं० ७३६ ।

विशेष—सकलकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी। प्रारम्भ के २१ पत्र फिर लिखवाये गये हैं।

८७८ प्रति नं० २। पत्र सख्या–१३७। साइज–१०$\frac{1}{2}$×५ इन्च। लेखन काल–स० १७०७ फागुण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६३।

विशेष—३ प्रतियां और हैं।

८७९ **बुधजन विलास—बुधजन**। पत्र सख्या–११९। साइज–१०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सग्रह। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७२०।

८८ **मजलसराय की चिट्ठी**—पत्र सख्या–२२। साइज–६×४ इन्च। भाषा–हिन्दी। विषय–यात्रा वर्णन। रचना काल–×। लेखन काल–स० १८४७ भादवा बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन न० १२६४।

विशेष—मजलसराय पानीपत वाले की चिट्ठी है। चिट्ठी के अन्त में पदों का सग्रह भी है।

८८१ **रागमाला**—पत्र सख्या–९। साइज–६$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। भाषा–सस्कृत–हिन्दी। विषय–सगीत शास्त्र रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ९०६।

८८२. **लघु क्षेत्र समास**—पत्र सख्या–४६। साइज–६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–लोक विज्ञान। रचना काल–×। लेखनकाल–×। पूर्ण। जीर्ण। वेष्टन नं० ११८८।

विशेष—मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा में है जो रत्नशेखर कृत है। यह इसकी टीका है।

८८३. **लीलावती भाषा**—पत्र संख्या–१ से २४। साइज–१०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गणित शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३४।

८८४. **वर्द्धमानचरित्र टिप्पण**—प। संख्या–३८ से ५१। साइज–१०$\frac{1}{2}$×५ इन्च। भाषा–सस्कृत। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–स० १४८१ आसोज सुदी १०। अपूर्ण। वेष्टन न० १२६३।

विशेष—वर्द्धमानचरित्र सस्कृत टिप्पण। यह टिप्पण जयमित्रहल के वड्ढमाण कव्व (अपभ्रंश) का सस्कृत टिप्पण है। टिप्पण का अन्तिम भाग ही अवशिष्ट है।

८८५. **व्यसनराजवर्णन—टेकचन्द**। पत्र संख्या–१८। साइज–१२×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–विविध। रचना काल–स० १८२७। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० ८७८।

विशेष—सप्त व्यसनों का वर्णन है पद्य संख्या २५६ है।

८८६. **श्रावक धर्म वर्णन**—पत्र सख्या–१०। साइज–४$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विशेष–आचार शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० १२२३।

विशेष—गुटका साइज है।

८८७ सज्झाय—विजयभद्र । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७१ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त आनंद विमल सूरि की सज्झाय भी दी हुई है ।

८८८ साधर्मी भाई रायमल्लजी की चिट्ठी—रायमल्ल । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । रचना काल-सं० १८२१ माह बुदी ६ । लेखन काल-सं० १८२१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०८ ।

विशेष—रायमल्लजी के हाथ की चिट्ठी है ।

८८९ शालिभद्र सज्झाय—मुनि लावंन स्वामी । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७२६ चैत्र बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७० ।

विशेष—रामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

८९० हरिवंश पुराण—महाकवि धवल । पत्र संख्या-२१६ से ३३६ । साइज-१२×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण एवं जीर्ण । वेष्टन नं० १२५० ।

जयपुर मे ठोलियों क मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत एक कलात्मक पुट्ठा
जिस पर चौवीस तीर्थङ्करों के रगीन चित्र दिये हुये हैं।
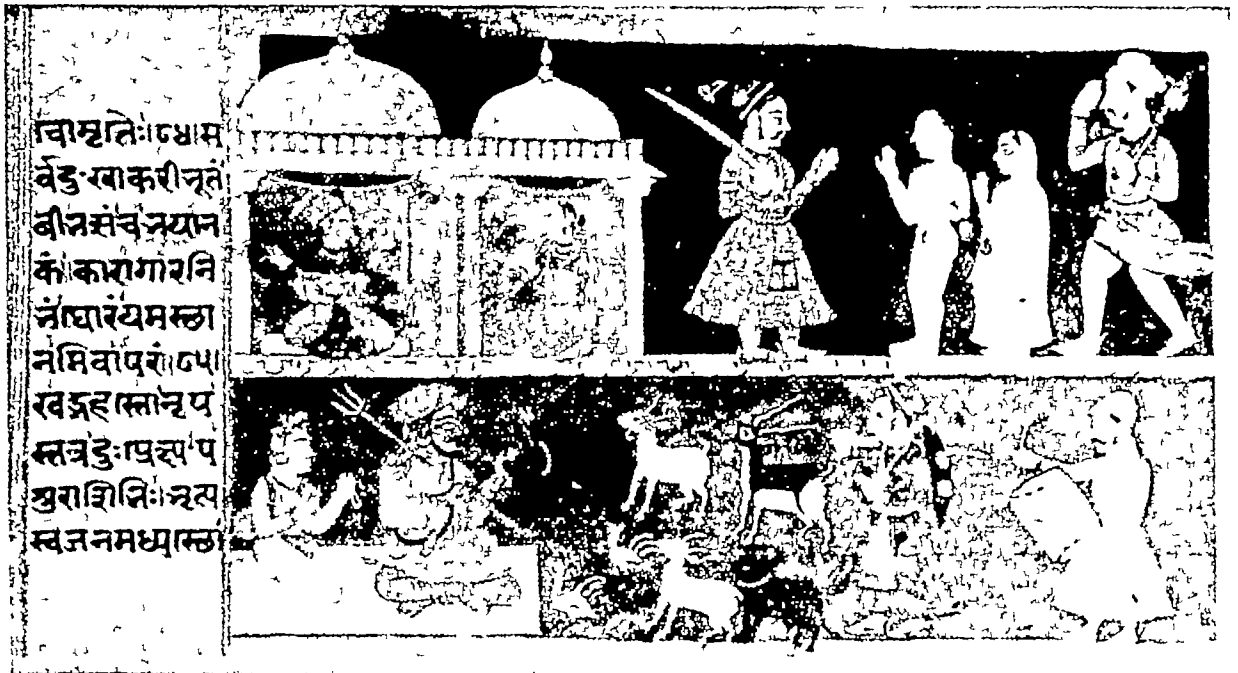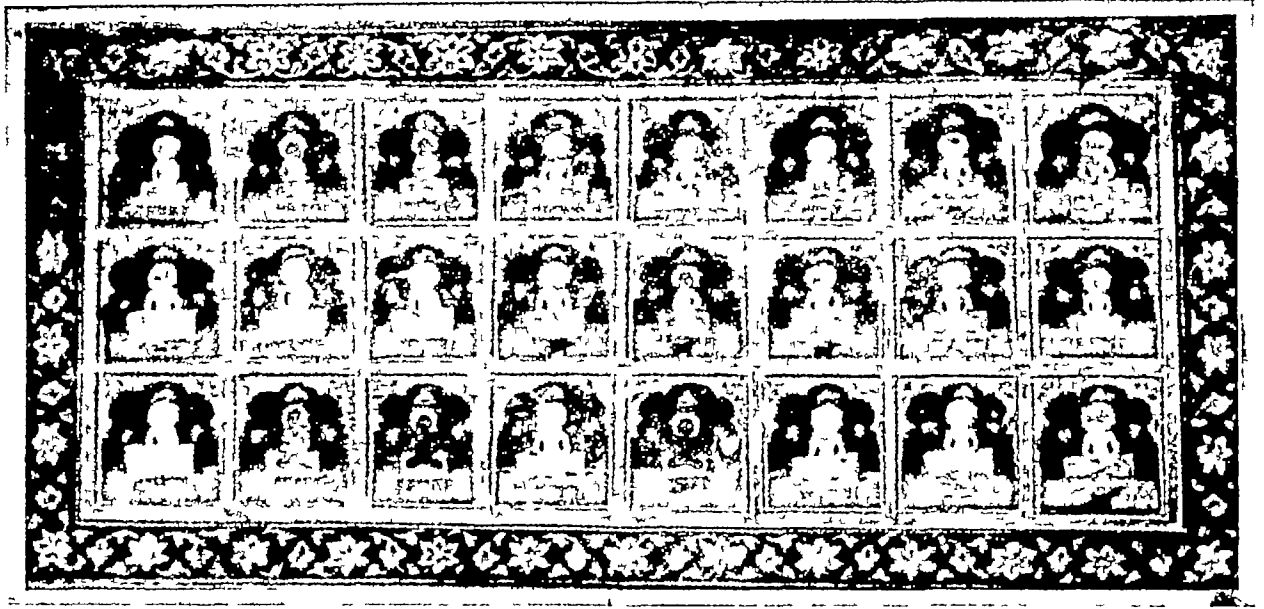
★ ★ ★

जयपुर के दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत
यशोधर चरित्र के सचित्र प्रति का एक चित्र।

श्री दि० जैन मन्दिर ठोलियों

के

ग्रन्थ

विषय—सिद्धान्त एवं चर्चा

१ आगमसार—मुनि देवचद्र। पत्र सख्या-४६। साइज-१०×४३ इच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-स० १७७६। लेखन काल-स० १७६६। पूर्ण। वेष्टन न० ४०४।

प्रारम्भ—अथ भव्य जीव नें प्रतिबोधवा निमित्तै मोक्ष मार्गनी वचनिका कहै छै। तिहां प्रथम जीव अनादि काल नों मिथ्याती थौ। काल लवधि पामी नें तीन करण करै छै प्रथम यथाप्रवति करण १ बीजौ अपूरव करण २ तीजौ अनिवृत्ति करण ३ तिहां यथा प्रवृत्ति कहै छै।

अन्तिम—सवत् सतर छिहोतरै मन सुद्ध फागुण मास।

मोटै कोट मरोट मे वसतां सुख चौमास ॥५॥

सुविहत खतर गच्छ सुथिर जुगवर जिणचद्र सूर।

पुण्य प्रधान प्रधान गुण पाठक गुणेय भूर ॥६॥

तास सीस पाठक प्रवर जिन मत परमत जाण।

भविक कमल प्रतिवोधवा राज सार गुर भाण ॥७॥

ज्ञान धरम पाठक प्रवर खम दम गुणे आगाह।

राज हंस गुरु सकति सहज न करै सराह ॥८॥

तास सीस आगम रूची जैन धर्म को दास।

देवचद आनद मय कीनौ ग्रथ प्रकाश ॥६॥

आगम सारोद्धार यह प्राकृत सस्कृत रूप।

ग्रथ कियो देवचद मुनि ज्ञानामृत रस कूप ॥१०॥

धर्मामृत जिन धर्म रति भविजन समकित वत।

सुद्ध अमर पढउ लषण ग्रथ कियौ गुण वत ॥११॥

तत्व ज्ञान मय ग्रथ यह जो रवै बालावोध।

निज पर सत्ता सब लखै श्रोता लहै सुबोध ॥१२॥

ता कारण देवचद कीनो भाषा ग्रंथ ।
भणसी गुणसी जे भविक लहसी ते सिव पथ ॥१३॥
कथक शुद्ध श्रोता रूची मिल ज्यो ए सयोग ।
तत्व ज्ञान श्रद्धा सहित बल काया नीरोग ॥१४॥
परमागम सु राचज्यो लहस्यो परमानद ।
धर्म राग गुरु धर्म सु' धरि ज्यों ए सुख वृन्द ॥१५॥
ग्र थ कियो मनरंग सु सित पख फागुण मास ।
सोमवार अरु तीज तिथि सफल फली मन आस ॥१६॥

इति श्री आगमसार ग्र थ सपूर्ण । स० १७६६ वर्षे मार्गसीस सुदी १२ भृगुवासरे वेधमनगरमध्ये रावत देवीसिंह राज्ये लिपि कृत भट्ट षखैराम पठनार्थ । बाई भाणा थी ।

२. आश्रवत्रिभंगी । पत्र सख्या–११० । साइज–१२×५ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धा त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ३२२ ।

विशेष—पत्र २० से ८५ तक सत्ता त्रिभगी तथा इससे आगे भाव त्रिभगी हैं । गुणस्थान तथा मार्गणा का वर्णन है ।

३. कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सख्या–२१ । साइज–११×४$\frac{3}{4}$ इश्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धा त । रचना काल–× । लेखन काल– । पूर्ण । वेष्टन न० १६७ ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

४ कर्मप्रकृति वृति—सुमतिकीर्त्ति । पत्र संख्या–४६ । साइज–११$\frac{1}{2}$×५ इश्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८५५ वैसाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३७८ ।

विशेष—जयपुर में शान्तिनाथ चैत्यालय में प० आनन्दराम के शिष्य श्री चद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

५ गुणस्थान चर्चा—पत्र सख्या–११० । साइज–१२×५ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७६० । पूर्ण । वेष्टन न० ३१३ ।

विशेष—गोमट्टसार के आधार से हैं ।

६ गुणस्थान चर्चा । पत्र सख्या–४४ । साइज–१२$\frac{1}{2}$×६ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ३१४ ।

विशेष—गोमट्टसार के आधार से वर्णन है ।

७ **गोमट्टसार (कर्मकाण्ड)—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र सख्या–४२ । साइज–१०×४¾ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६५ ।

विशेष—संस्कृत हिन्दी टीका सहित है । केवल कर्म प्रकृति का वर्णन है ।

८ **गोमट्टसार जीवकाण्ड भाषा—पं० टोडरमल** । पत्र सख्या–१६६ । साइज–१३×८ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–सं० १८१८ । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२८ ।

विशेष—ग्रन्थ की एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

९ **गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा—हेमराज** । पत्र सख्या–१०१ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७२० मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६ ।

विशेष—दीना ने रामपुर में प्रतिलिपि की थी ।
एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है । इस प्रति के पुट्ठे पर सुन्दर चित्रकारी है ।

१० **चरचा संग्रह** । पत्र संख्या–१५ । साइज–१०½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चर्चा (धर्म) । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

११. **चर्चाशतक—द्यानतरायजी** । पत्र सख्या–२८ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चर्चा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । २ प्रतियां और हैं ।

१२. **चर्चा समाधान–भूधरदासजी** । पत्र संख्या–१११ । साइज–१०½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–सं० १८०६ माघ सुदी ५ । लेखन काल–सं० १८१३ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ ।

विशेष—प्रति निहालचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

१३ **चौबीस ठाणा चर्चा - नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र सख्या–३५ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७४१ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० १८६ ।

विशेष—जहानाबाद मध्ये राजा के बाजार में पंडित माया राम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई । तीन प्रतियां और हैं । ये संस्कृत टब्बा टीका सहित हैं ।

१४. **चौबीस ठाणा चर्चा—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र सख्या ८ । साइज–११½×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—पत्र सख्या ४ से आगे कलियुग की वीनती है भाषा–हिन्दी तथा ब्रह्मदेव कृत है

१५ ज्ञान क्रिया संवाद—पत्र संख्या-३ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८६ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१७ ।

विशेष—श्लोक संख्या-१५ हैं । तृतीय पत्र पर धर्मचर्चा भी दी हुई है ।

१६ तत्त्वसार दोहा—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र संख्या-५ । साइज-११×८½ इञ्च । भाषा-गुजराती लिपि देवनागरी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३९७ ।

आरम्भ—समय सार रस सामलो, रे समरवि श्री समिसार ।
समय सार सुख सिद्धनां, सीभि सुवख विचार ॥१॥
अप्पा अप्पि आपमुं रे आपण हेर्ति आप ।
आप निमित्त आपणो ध्यानुं रहित सन्ताप ॥२॥
ध्यार प्राण प्रीणित सदा रे निश्चय न्याय वियाण ।
सत्ता सुख वर बोधमि चेतना चुव प्राण ॥३॥
ध्यार प्राण व्यवहार थी रे दश टीसि एह भेद ।
इंदिय बल उस्सास सु आयु तणा बहु छेद ॥४॥

अन्तिम—भणो भणीयण २ भक्तिमर मारि चेता चिद्रूप ।
चिंतता चिधि चेतन चतुर भाव आवए ॥
सातु धात देहवेगलो अमल सक्ल सु विमल भावए ।
आतम सरुप परूवण पटव्यो पावन संत ।
ध्याजो ध्यानि ध्येयसु ध्याता धार महंत ॥६०॥
सात गिव कर २
भान निज भाव शुद्ध चिदानन्द चींततो मूको माया मोह गेह देहए ।
सिद्ध तणा सुखजि मल हरहि आतमा भावि शुभ ए हए ॥
श्री विजय कीर्ति गुरु मनि धरी ध्याउ शुद्ध चिद्रूप ।
भट्टारक श्री शुभचंद्र भणि था तु शुद्ध सरूप ॥६१॥

॥ इति तत्वसार दुहा ॥

१७ तत्वार्थरत्नप्रभाकर—भट्टारक प्रभाचन्द्र देव । पत्र संख्या-१०६ । साइज-११½×८ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १७७ ।

विशेष—यह तत्वार्थ सूत्र की टीका है । सरल संस्कृत में है । कहीं २ हिन्दी भी दृष्ट होती है । ६ अध्याय तक है ।

अध्याय ६ सूत्र-३४ हिंसानुरत्ते-रौद्र ध्यान कथयति तद्यथा प्रकार ४ भवन्ति । हिंसानद कोई । जीव घात नैं काइ । सूली चोर सती होय, संग्रामु होय तजइ आनन्दु सुखु मानइ त हिंसानन्दु होइ । रौद्र ध्यान प्रथम पद नरक कारण इति ज्ञात्वा । हिंसानद न कर्त्तव्य ।

इति तत्वार्थ रत्नप्रभाकर ग्रन्थे सर्वार्थसिद्धौ मुनि श्री धर्मचद्र शिष्य प्रभाचन्द्र देव विरचिते ब्रह्म जैयतु साधु हाबदेव भावना पदयानिमित्ते सवरनिर्जरा पदार्थकथन मनुष्यत्वेन नव सूत्र विचारप्रकरण ।

बीचमें २ से ७ पत्र भी नही हैं ।

१८. तत्वार्थसार—अमृतचद्र सूरि । पत्र सख्या-२४ । साइज-१२×८½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेख। काल-× । पूर्ण । वेष्टन २१४ ।

प्रति प्राचीन है ।

१६ तत्वार्थसूत्र—उमास्वाति । पत्र सख्या-१४८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १२५ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०. प्रति न० २ । पत्र सख्या-५० । साइज-८×५½ इञ्च । लेखन काल-स० १८७६ चैत्र सुदी ६ पूर्ण । वेष्टन न० १३३ ।

विशेष—सूत्रों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । चार प्रतियां और हैं किंतु वे मूल मात्र हैं ।

२१. तत्वार्थसूत्र टीका (टव्वा) । पत्र सख्या-२५ । साइज-१३×७½ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८१२ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७० ।

विशेष—लाला रतनलाल ने कस्बा शमसाबाद में प्रतिलिपि की ।

२२. प्रति न० २ । पत्र सख्या-४६ । साइज-१२½×८ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० ३६७ ।

प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२३. तत्वार्थसूत्र भाषा टीका -कनककीर्त्ति । पत्र सख्या-१८२ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७४४ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ४७ ।

विशेष—कनककीर्ति ने जोशी जगन्नाथ से लिपि कराई ।

उमा स्वाति रचित तत्त्वार्थ सूत्र पर श्रुतसागरी टीका की हिन्दी व्याख्या है । एक प्रति और है ।

२४ त्रिभगीसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-३६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४३ ।

विशेष – एक प्रति और है।

२५　**त्रिलोकसारसदृष्टि—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र संख्या-८३ । साइज-११½×८½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८८८ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५ ।

विशेष—जयपुर में श्रवक धानजी ने महात्मा दयाचन्द से प्रतिलिपि कराई थी।

२६　**द्रव्यसग्रह—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र संख्या-६ । साइज-११¾×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—४ प्रतियां और है।

२७　**प्रति नं० २** । पत्र संख्या-४७ । साइज-१०×८ इञ्च । लेखन काल-सं० १७५० फागुन सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६४ ।

विशेष—हिन्दी और संस्कृत में भी अर्थ दिया है

२८　**द्रव्यसग्रह टीका—ब्रह्मदेव** । पत्र संख्या-१११ । साइज-११×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल सं० १४१६ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७६ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १४१६ वर्षे भादवा सुदी १३ गुरौ दिने श्रीमद्योगिनीपुरे सकल राज्य शिरोमुकुट माणिक्य मरीचिवृत चरणकमल पाद पीठस्य श्रीमत् पेरोज साहि सकल साम्राज्य धुरा विभ्राणस्य समये वर्त्तमाने श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे भट्टारक रत्नकीर्ति तस्य कपत्व गुर्वीकुर्वाणां श्री प्रभाचन्द्राणां तस्य शिष्य ब्रह्म नाथू पठनार्थं अग्रोतकान्वये गोहिल गोत्रे सरयल वास्तव्य परम श्रावक साधू साउ भार्या वीरो तयो पुत्र साधु उधस भर्या वालही तस्य पुत्र कुलधर भार्या पाणधरही तस्य पुत्र सहपाली भार्या लोधा हो भरहपाल लिख्या पित कर्म क्षयार्थं । कनलदेव पडित लिखितं । शुभ संवत् ।

२९.　**द्रव्यसग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी** । पत्र संख्या-२६ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गुजराती लिपि देवनागरी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं १८४३ फागुन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८ ।

विशेष—पं० केशरीसिंह ने अलवर में प्रतिलिपि की थी।

३०.　**नामकर्म प्रकृतियों का वर्णन**—पत्र संख्या-१६ । साइज-११¾×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६१ ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

३१.　**पंचास्तिकाय टीका मूलकर्त्ता-आ० कुन्दकुन्द । टीकाकार अमृतचंद सूरि** । पत्र संख्या-६५ । साइज-१३½×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १५४ ।

विशेष – २ प्रतियां और हैं।

३२. **पंचास्तिकाय भाषा टीका – पांडे हेमराज** । पत्र सख्या–१६१ । साइज १०½×५½ इच । भाषा–प्राकृत हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल– सं० १७१६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

विशेष—रामपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३. **पाक्षिक सूत्र**—पत्र संख्या–६ । साइज–६½×३½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× , पूर्ण । वेष्टन न० ४२४ ।

३४ **भगवती सूत्र**—पत्र संख्या–५७८ से ८५४ । साइज १३×६½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८६४ आसोज सुदी १ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १६२ ।

विशेष—टब्बा टीका गुजराती, लिपि हिन्दी में है। निहालचन्द के शिष्य तुलसा ने किशनगढ़ नगर में प्रतिलिपि की थी ।

३५. **भावसग्रह—पडित वामदेव** । पत्र सख्या–३४ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८५८ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ ।

विशेष—सवाई जयपुर में शान्तिनाथ चैत्यालय (इसी ठोलियों के मन्दिर में) विबुध आनन्दराम के शिष्य श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३६ **भावसग्रह—देवसेन** । पत्र सख्या–२० । साइज–११½×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ३० ।

३७. **भावसग्रह—श्रुतमुनि** । पत्र सख्या–१३ । साइज–११½×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–स० १५६६ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० २८६ ।

विशेष—ब्रह्म हरिदास ने प्रतिलिपि की । ३ प्रतियां और हैं ।

३८ **रत्नसंचय—विनयराज गणि** । पत्र सख्या–१४ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७७० कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० २०७ ।

श्री विद्यासागर सूरि के शिष्य लक्ष्मीसागर गणि ने प्रतिलिपि की थी। प० जीवा वाकलीवाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

३९. **लब्धिसार टीका–माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव** । पत्र सख्या–७७ । साइज–११×७½ इञ्च । भाषा–सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल×–स० १८८४ फागुन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० १८२ ।

४०. **विशेष सत्ता त्रिभंगी** । पत्र संख्या-२६ । साइज-१२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३०३ ।

४१ **सिद्धान्तसार दीपक—सकलकीर्ति** । पत्र संख्या-२२८ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२१ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५० ।

विशेष—कुल १६ अधिकार हैं तथा ग्रंथ (श्लोक) संख्या ४८१६ है । २ प्रतियां और हैं ।

४२ **सिद्धान्तसार संग्रह—आचार्य नरेन्द्रसेन** । पत्र संख्या-६६ । साइज-१२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२३ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण वेष्टन नं० २५ ।

विशेष—जयपुर में चंद्रप्रभ चैत्यालय में पंडित रामचन्द्र ने माधवसिंह के राज्य में प्रतिलिपि की थी । श्लोक संख्या २८१६ । एक प्रति और है ।
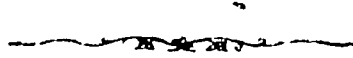
विषय-धर्म एवं आचार शास्त्र

४३. **अनुभव प्रकाश—दीपचंद कासलीवाल** । पत्र संख्या-५५ । साइज-८½×७½ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७७६ । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० ११६ ।

४४. **आचार शास्त्र** । पत्र संख्या-२२ । साइज-११×४ । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-× । लेखन का-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०० ।

४५. **आचारसार—वीरनंदि** । पत्र संख्या-१०८ । साइज-११½×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० २५१ ।

विशेष—कुल १२ अधिकार हैं। प्रारम्भ के पत्र जीर्ण हो चुके हैं।

४६ उनतीसबोल दंडक—पत्र संख्या-१०। साइज-१०×४$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २६५।

४७. उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला भाषा—भागचंद। पत्र संख्या-४३। साइज-१०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इंच। विषय-धर्म। रचना काल-सं० १६१२ आषाढ बुदी ३। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६।

विशेष—मूलग्रंथ की गाथाएँ भी दी हुई है।

४८. उपासकाध्यन—आ० वसुनंदि। पत्र संख्या-५५। साइज-१२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८०८ भादवा सुदी ६। पूर्ण वेष्टन नं० ५४।

विशेष—प्रति हिंदी अर्थ सहित है। ग्रंथ का दूसरा नाम वसुनन्दि श्रावकाचार भी है। एक प्रति और है।

४६. प्रति नं० २। पत्र संख्या-३८। साइज-६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च। लेखन काल-सं० १५६५ चैत्र बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४४।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्री नृप विक्रमादित्यगताब्द संवत् १५६५ वर्षे चैत्र बुदी ५ आदित्यवारे श्रीकुरुजांगल देशे श्री सुवर्णपत्र सुमदुर्गे पातिसाह हम्माऊराज्यप्रवत्त माने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक गुणकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे समय भाषा प्रवीण भट्टारक श्री सहसकीतिदेवा तत्पट्टे विवेकलाकमलिनीविकाशनैकभास्कर भट्टारक श्री मलयकीर्तिदेवा. तत्पट्टे वादीभकुंभस्थलविदारणैककेसरि, भव्याम्बुजविकाशनैकमार्त्तण्ड भट्टा० श्री गुणभद्रसूरिदेवा. तदाम्नाये पातू वशे गर्गगोत्रे गोवानद वास्तव्य अनेक गुण विराजमानु साधु धरणी तस्य समुद्रइव गंभीरान् मेरवद्धीरान् चतुर्विध दानवितरणैक श्रेयांसावतारान् सरस्वती कंठा कठितान् राज्यसभा जैनसभा शृंगारहारान् परोपकारी पंडिणु साधु गोपी तेन इदं श्रावकाचार लिखापित। कर्म क्षयार्थं।

पत्र नं० ३७ के कोने पर एक म्होर लगी हुई है जिसमें उर्दू में चरनदास मूलचन्द ... पंडित लिखा है। ग्रंथ में कुछ परिचय ग्रंथ कर्त्ता का भी दिया हुआ है।

५०. एषणा दोष (छियालीस दोष)-भैया भगवतीदास। पत्र संख्या-७। साइज-१०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०४।

५१. क्रियाकोष भाषा—दौलतराम। पत्र संख्या-६५। साइज-१२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-आचार। रचना काल-सं० १७९५ भादवा सुदी १२। लेखन काल-सं० १८६४ भादवा सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० १६३।

विशेष एक प्रति और है।

५२ ग्यारह प्रतिमा वर्णन । पत्र संख्या–२ । साइज–८½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण वेष्टन नं० ६५ ।

५३ चर्चासागर भाषा—पत्र संख्या–२०० । साइज–१३½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६१ ।

विशेष—२०० से आगे पत्र नहीं है । दो तीन तरह की लिपियां हैं ।

५४ चौबीसदण्डक—दौलतराम । पत्र संख्या–८ । साइज–८×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१२ ।

विशेष—८७ पद्य हैं । दो प्रतियां और हैं ।

५५ जिनपालित मुनि स्वाध्याय—विमल हर्ष वाचक । पत्र संख्या–२ । साइज–१०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५३ ।

विशेष—
प्रारम्भ—सिरि पास संखेसर अलवेसर भगवंत ।
पाय प्रणमि जिण पालित मुनि मत ॥१॥

अंतिम—मत एहनीय परिजय छण्य, अरुविरुया विषयविनाडी ।
एह परभव ते थाइ सुखिया तेहनी कीति गवाणी ॥
जगगुरु हीर यह मोहाकार श्री विजयसेन सुरिंद ।
श्री विमल हर्ष वाचक तउ सेवक भाव कहइ मानंद ॥३६॥

प्रति प्राचीन है ।

५६ त्रिवर्णाचार—सोमसेन । पत्र संख्या–१३८ । साइज–११½×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार । रचना काल–सं० १६६७ । लेखन काल–सं० १८८२ वैसाख सुदी ? । पूर्ण । वेष्टन नं० २८७ ।

विशेष—पाटलिपुत्र (पटना) में प्रतिलिपि हुई । कुल १३ अध्याय हैं । ग्रन्थ ग्रंथ सं० ७०० है । एक प्रति और है ।

५७. धर्म परीक्षा—हरिषेण । पत्र संख्या–२ से ७६ । साइज–११½×४¾ इञ्च । विषय–धर्म । भाषा–अपभ्रंश । रचना काल–सं० १०४४ । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १७१ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

५८ धर्म परीक्षा—अमितगति । पत्र संख्या–८५ । साइज–१२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १०७० । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२१ ।

५६. धर्मपरीक्षा भाषा । पत्र संख्या–३२ । साइज–११¾×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०० ।

६०. **धर्मरत्नाकर—जयसेन** । पत्र संख्या–१२१ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १८६० । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०६ ।

६१. **धर्मरसायन—पद्मनंदि** । पत्र संख्या–८ । साइज–११½×५½ इन्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १८७२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२८ ।

६२. **धर्मसंग्रहश्रावकाचार—पं० मेधावी** । पत्र संख्या–५२ । साइज–११¾×५¾ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–सं० १५४१ कार्तिक बुदी १३ । लेखन काल–सं० १८३५ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४६ ।

विशेष—कुल दश अधिकार हैं । ग्रंथ १४४० श्लोक प्रमाण है । ग्रंथकार प्रशस्ति विस्तृत है पूर्ण परिचय दिया हुआ है । श्रीचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

६३. **धर्मोपदेशश्रावकाचार–ब्रह्मनेमिदत्त** । पत्र संख्या–३५ । साइज–६×६ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १८७३ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

६४. **नास्तिकवाद—**पत्र संख्या–२ । साइज–११×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

६५. **नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव** । पत्र संख्या–१२७ । साइज–१२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १७८५ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१८ ।

६६. **पंचससारस्वरूपनिरूपण—**पत्र संख्या–६ । साइज–१०×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६७ **पाखण्डदलन—वीरभद्र** । पत्र संख्या–१६ । साइज–६×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १८४१ माघ बुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४७४ ।

विशेष—पत्र २ व ४ नहीं हैं । मानवगढ़ में मंगलदास के पठनार्थ पेमदास ने प्रतिलिपि की थी ।

६८. **पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—अमृतचंद्र सूरि** । पत्र संख्या–१०६ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीका सुन्दर एवं सरल है ।

६९. **पुरुषार्थसिद्ध्युपाय भाषा—दौलतराम** । पत्र संख्या–१२४ । साइज–१२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । लेखन काल–सं० १९५९ सावन बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६ ।

विशेष—चिमनलाल मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी। २ प्रतियां और हैं।

७०. **पुरुषार्थानुशासन—गोविन्द** । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८४८ मगसिर सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३ ।

विशेष—विस्तृत लेखक प्रशस्ति दी हुई है। श्रीचंद ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

७१. **पुष्पमाल—हेमचंद्र सूरि** । पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० ३८५ ।

विशेष—कहीं २ गुजराती भाषा में अर्थ दिया है जोकि सं० १५८६ का लिखा हुआ है प्रति प्राचीन है। इसमें कुल ५०५ गाथाएं दी हुई हैं। म० वाछा ने प्रतिलिपि की थी।

पत्र संख्या-२ गुजराती गद्य —

रति सुन्दरी राजपुत्री नंदनपुर नइ राजाइ परिणी। अतिरूप पात्र सांभली हस्तिनपुर नौ राजाइ प्राण लीधी तीण इव मनादिक अशुचि पणउ दिखाला राजा प्रतिबोधउ साल राखिउ रिद्धि सुन्दरी श्रेष्टि श्री व्यवहारि पुत्र परिणी समुद्रि चढिउ प्रवहण भागउ। कान्ट प्रयोगि रत्न द्वीपि पहुता। बीजा प्रवहणि चढेया रूपि मोहि तिणि मंत्रि मंसइ माहिला स्विउ प्रार्थना इह प्रवन्यन ।

७२. **प्रश्नोत्तरोपासकाचार—सकलकीर्ति** । पत्र संख्या-७६ से १४४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल सं० १७५३ मंगसिर सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १७४ ।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि हुई थी। दो प्रतियां और हैं।

७३. **प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—बुलाकीदास** । पत्र संख्या-१३८ । साइज-१२½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १७४७ वैशाख सुदी ३ । लेखन काल-सं० १८५५ सावन सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३ ।

विशेष—चिमनलाल बडजात्या ने अजमेर में स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

७४. **प्रायश्चितसमुच्चय चूलिका—श्री नंदिगुरु** । पत्र संख्या-६७ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२८ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१८ ।

विशेष—लालचंद टोंग्या ने प्रतिलिपि करवाकर शान्तिनाथ चैत्यालय में चढाई। श्वेताम्बर मोतीराम ने प्रतिलिपि की थी।

७५. **प्रायश्चितसग्रह—अकलंक देव** । पत्र संख्या ८ । साइज-८½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २१७ ।

७६. बाईसपरीषह—पत्र सख्या–६। साइज–८×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचना काल–X। लेखन काल–X। पूर्ण। वेष्टन नं० १२५।

७७ भगवती आराधना भाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र सख्या–५७४। साइज–११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–स० १६०८ भादवा सुदी २। लेखन काल–स० १६४५ आषाढ सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन न० ८५।

विशेष—श्लोक सख्या २१६७। एक प्रति और है।

७८. मिथ्यात्व खंडन—बखतराम साह। पत्र सख्या–८६। साइज–८½×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–धर्म (नाटक)। रचना काल–स० १८२१ पौष सुदी ५। लेखन काल–X। पूर्ण। वेष्टन नं० १४८।

पद्य सख्या–१४२८ दिया हुआ है। एक प्रति और है।

७९. मिथ्यात्व निषेध—बनारसीदास। पत्र संख्या–३२। साइज–१०×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी विषय–धर्म। रचना काल–X। लेखन काल–सं० १६०७ सावन सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन न० १५०।

विशेष—२८ पत्र से सुगंध दशमी कथा धानतराय कृत दी हुई है।

८०. मोक्षमार्गप्रकाश—पं० टोडरमल। पत्र संख्या–२७०। साइज–११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–धर्म। रचना काल–X। लेखन काल–स० १६४८ आषाढ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१।

८१. रत्नकरडश्रावकाचार–पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र सख्या–४२०। साइज–११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–सं० ११२० चैत्र बुदी १४। लेखन काल–X। पूर्ण। वेष्टन न० ८३।

विशेष—पं० सदासुखजी के हाथ के खरडे से प्रतिलिपि की गयी है।

८२. रत्नकरडश्रावकाचार—थानजी। पत्र संख्या–२१। साइज–१३½×५½ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–सं० १८२१ चैत्र बुदी ५। लेखन काल–X। पूर्ण। वेष्टन न० १५१।

विशेष—हरदेव के मन्दिर में लिवाली नगर मे फूलचंद की प्रेरणा से ग्रंथ रचना हुई थी।

८३. रयणसार—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र संख्या–१८। साइज–८×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। रचना काल–X। लेखन काल–स० १७६५। पूर्ण। वेष्टन न० ४८७।

विशेष—बसवा नगर में महात्मा गोरधन ने प्रतिलिपि की थी। गाथा स० १०० हैं। एक प्रति और है।

८४. लाटीसंहिता (श्रावकाचार)—राजमल्ल। पत्र संख्या–६१। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–सं० १६४१। लेखन काल–सं० १८५२ आषाढ बुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० २८५।

विशेष—सं० १६४१ मे बादशाह अकबर के शासनकाल में श्रावक इदा के पुत्र कामन ने ग्रंथ रचना कराई थी।

८५. षटकर्मोपदेशमाला—अमरकीर्त्ति। पत्र सख्या–१२०। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–सं० १२४७ भादवा सुदी १०। लेखन काल–सं० १६५५ आसोज सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ९८।

विशेष—१४ संधियां है। लेखक का परिचय दिया हुआ है।

८६. षटकर्मोपदेशमाला—भट्टारक श्री सकलभूषण। पत्र संख्या–११०। साइज–१०३/४×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–सं० १६२७ सावन सुदी ६। लेखन काल–सं० १६४४। पूर्ण। वेष्टन नं० २०३।

विशेषः—सवत् १४४४ वर्षे जेष्ठमासे शुक्लपक्षे नवाम्यां तिथौ रविवासरे हस्तनक्षत्रे सिधियोगे श्री रणथम दुर्गे राजाधिराजराजाश्रीजगन्नाथराज्ये प्रवर्तमाने श्री मल्लिनाथचैत्यालय श्री काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भट्टारक श्री क्षेमकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक कमलकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जयसेणिदेवा। तदाम्नाये अग्रवालान्वये गोयलगोत्रे देव्याना वडि साहजी पदारथ तस्य भार्या भावो। तस्य पुत्र ५। प्रथम पुत्र साह श्री भवानीदास तस्य भार्या गोमा तस्य पुत्र साह खेमचन्द तस्य भार्या छाजो तस्य पुत्र द्वय। प्रथम पुत्र मोहनदास तस्य भार्या कौंजी। द्वितीय पुत्र चिरजीव धूडो। द्वितीय पुत्र साहथान तृतीय पुत्र साह वीरदास। चतुर्थ पुत्र साह श्री रामदास तस्य भार्या भागोती तस्य पुत्र त्रय:। प्रथम पुत्र साह मेघा द्वितीय पुत्र चिरंजीव साह चोखा तस्य भार्या पार्वती तस्य पुत्र चिरजीव देवसी तृतीय पुत्र साह नेतसी। पचमो पुत्र रमीला। एतेषां मध्ये चतुर्विधि–दानवितरणकल्पवृक्ष साह चोखा तस्य भार्या पार्वती इदं शास्त्र लिखाप्य ज्ञानावर्णीकर्मनिमित्तं रत्नत्रयपुन्यनिमित्तं ज्ञानपात्राय ब्रह्म श्री रूपाचन्दये दत्तं ॥ इति ॥

८७. षोडशकारणभावना—पत्र सख्या–१६। साइज–११×५३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १४२।

८८. षोडशकारणभावना व दशलक्षण धर्म—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र सख्या–११३। साइज–११×७१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १३९।

८९. शिखरविलास—मनसुखराम। पत्र सख्या–६३। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–धर्म। रचना काल–सं० १८४५ आसोज सुदी १०। लेखन काल–सं० १८८५ आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२।

विशेष—शिखर महात्म्य म से वर्णन हैं। मनसुख ब्रह्मगुलाल के शिष्य थे।

९०. श्रावकाचार   । पत्र सख्या–६०। साइज–१०३/४×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७३१ वैशाख सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० १६३।

विशेषः—राजनगर में प्रतिलिपि हुई थी। प्राग्वाट ज्ञातीय बाई अमरा ने लिखवाया था।

६१ श्रावकाचार—योगीन्द्रदेव। पत्र संख्या–१४। साइज–११½×५½ इन्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १७३।

विशेष—दोहा संख्या २२१ है।

६२. संबोधपचासिका—गौतमस्वामी। पत्र संख्या–३। साइज–११½×५½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८७।

६३ सबोधपचासिका टीका—पत्र संख्या–१३। साइज–१०½×५½ इञ्च। भाषा–प्राकृत-संस्कृत। विषय–धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। वेष्टन नं० ३८८।

६४. सयमप्रवहण—मुनि मेघराज। पत्र संख्या–४। साइज–१०×४½ इन्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–धर्म। रचना काल–सं० १६६१। लेखन काल–सं० १६८१ आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३३६।

विशेष —

प्रारम्भ दोहा —रिसह जिणेसर जगतिलउ नामि नरिंद मल्हार।
प्रथम नरेसर प्रथम जिन त्रिभोवन जन साधार ॥१॥
चक्री पंचम जाणीइ सोलमउ जिनराय।
शान्तिनाथ जगि शान्तिकर नर सुर प्रणमइ पाय ॥२॥

अन्तिम-राग धन्यासी—
गच्छपति दरिसणि अति आणंद।
श्रीराजचंद सूरीसर प्रतपउ जा लगि हु रविचंद ॥ ४६ ॥ आंकणी ॥
संयम प्रवहण मालिमगायउ नयर खम्भावत माहि ॥
संवत सोल अनह इकसठई आणी अति उछाह ॥ गच्छ० ॥
सरवण ऋषि गुरु साधु शिरोमणि, मुनि मेघराज तसु सीस ॥
गुण गच्छपति ना भावइ भावइ पहुचइ आस जगीस ॥ १५२ ॥

॥ इति श्री संयम प्रवहण संपूर्ण ॥

श्रुश्राविका पुन्यप्रभाविका धर्मधुनिर्वाहिका सम्यक्त्वमूलद्वादसव्रत कर्पूरपूरवासितोत्तमांगा श्रुश्राविकासघ बाई पठनार्थम ॥

संवत् १६८१ वर्षे आषाढ मासे शुक्ल पक्षे पुर्णिमादित्यवारे स्थंभ तीर्थे लिखितं ऋषि कल्याणेन।

श्लोक संख्या २०० है ।

६५　सम्मेदशिखरमहात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र संख्या—७८ । साइज–११×५½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १८४५ । लेखन काल–स० १८४८ । पूर्ण । वेष्टन न० २१६ ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६६　सागारधर्मामृत—प० आशाधर । पत्र सख्या–१८१ । साइज–११×५½ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–स० १२९६ । लेखन काल–सं० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन न० ३०७ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६७　सामायिक टीका—पत्र सख्या–३६ । साइज–१२×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत प्राकृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ३२१ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६८　सामायिक पाठ—पत्र सख्या–१२ । साइज–१०×४½ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ४३ ।

६९.　सामायिक पाठ भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र संख्या–५३ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १९०१ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ८२ ।

विशेष—२ प्रति और है ।

१००.　सुदृष्टितरंगिणि—टेकचन्द । पत्र संख्या–४९७ । साइज–११ ×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १८३८ सावन सुदी ११ । लेखन काल–सं० १९६२ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ८८६ ।

विशेष—४२ संधियां हैं । चंद्रलाल बज ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१　सूतक वर्णन—पत्र संख्या–२ । साइज–६×४ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८७ ।

१०२.　हितोपदेशएकोत्तरी—श्री रत्नहर्ष । पत्र संख्या–३ । साइज–१०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ३५२ ।

विशेष—किशनविजय ने विक्रमपुर में प्रतिलिपि की थी । श्लोक संख्या ७१ है ।

विषय-अध्यात्म एवं योग शास्त्र

१०३ अष्टपाहुड भाषा—जयचद छाबडा। पत्र संख्या-१७८। साइज-१२½×६½ इन्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १९५० फागुन बुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ६८।

१०४ आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य। पत्र संख्या-३०। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-स० १७६४ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन न० २८९।

विशेष—वसवा नगर में श्री चंद्रप्रभ चैत्यालय में श्री क्षेमकर के शिष्य त्रिलोकचद ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है।

१०५. आत्मानुशासन टीका—प्रभाचन्द्र। पत्र सख्या-९५। साइज-९×४ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-स० १४२६/१५२६ आषाढ बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० २८०।

१०६. आत्मानुशासन भाषा टीका—प० टोडरमल। पत्र सख्या-१०५। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। रचना काल-स० १७९६ भादवा सुदी २। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ५१।

विशेष—राजा की मडी (आगरा) के मदिर में महात्मा शम्भूराम ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है।

१०७ आराधनासार—देवसेन। पत्र सख्या-१३। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १५२।

विशेष—एक प्रति और है वह संस्कृत टीका सहित है।

१०८ आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सख्या-१८। साइज-१२½×८ इन्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८२।

१०९. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामीकार्तिकेय। पत्र सख्या-७८। साइज-११×५½ इन्च। भाषा-प्राकृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०।

विशेष—प्रथम ७ पत्र तक सस्कृत में संकेत दिया हुआ है।

११०. कार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा-पं० जयचंद छाबडा। पत्र सख्या-१४७। साइज-११×७¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-अध्यात्म। रचना काल-स० १८६३ सावन सुदी ३। लेखन काल-स० १९१४ माघ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ७२।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

१११. चारित्रपाहुड भाषा—प० जयचंद छावडा। पत्र सख्या–१५। साइज–१२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१।

११२. ज्ञानार्णव—शुभचंद्र। पत्र सख्या–१७६। साइज–११×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–योग। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १६१८। पूर्ण। वेष्टन न० २८५।

विशेष—सवत् १७८२ में कुछ नवीन पत्र लिखे गये हैं। सस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है।

प्रति–एक प्रति और है।

११३ दर्शनपाहुड—प० जयचद छावडा। पत्र संख्या–२०। साइज–१२×८ इच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ९०।

११४. द्वादशानुप्रेक्षा—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र सख्या–१२। साइज–१०¾×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–चिंतन। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८८२ द्वि० वैसाख सुदी ७। अपूर्ण। वेष्टन नं० १७३।

विशेष—हिन्दी सस्कृत में छाया भी दी हुई है।

११५. द्वादशानुप्रेक्षा—आलू कवि। पत्र सख्या–१६। साइज–८½×४¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चिंतन। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० ६५।

विशेष—बारह भावना के ३८ पद्य हैं। इसके अतिरिक्त निम्न हिन्दी पाठ और हैं—

(१) जखडी—हरीसिंह।

(२) पद (वदू श्री अरहंत देव सारद नित सुमरण हृदय धरूं)—हरीसिंह

(३) समाधि मरन—द्यानतराय।

(४) वज्रनाभि चक्रवर्ती की वैराग्य भावना—भूधरदास।

(५) बधावा–(बाजा बाजिया भला)

(६) बाईस परीषह।

रामलाल तेरा पंथी छावडा ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

११६. दोहाशतक—योगीन्द्र देव। पत्र सख्या–९। साइज–६½×४½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–स० १८२७ कार्तिक बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० १२०।

विशेष—श्रीचद्र ने बसवा में प्रतिलिपि की थी।

११७. नवतत्त्वबालावबोध–पत्र संख्या–३१। साइज–१०½×४½ इञ्च। भाषा–गुजराती हिन्दी। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८८५ आसोज सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० १७५।

विशेष—हिम्मतराय उदयपुरिया ने प्रतिलिपि की थी

११८. **परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव** । पत्र संख्या-२० । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७७८ फागुन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० २५० ।

विशेष—वृन्दावती नगरी में श्री चद्रप्रभु चैत्यालय में श्री उदयराम लक्ष्मीराम ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में काठन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं । कुल दोहे ३४६ हैं । २ प्रति और हैं ।

११६ **प्रति नं० २** । पत्र सख्या-१२३ । साइज-११×४½ इञ्च । लेखन काल-स० १४८६ पौष बुदी ६ पूर्ण । वेष्टन नं० २४६ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इसमें कुल ४५ अधिकार हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १४८६ वर्षे पौष बुदी ६ रवौदिने श्री गोपगिरेः तोमरवंशमहाराजाधिराजश्रीमद्डोंगरसीदेवराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तद्गुरु शिष्य श्री पद्मकीर्त्तिदेवा. तस्य शिष्य श्री वादीन्द्रचूडामणी महासिद्धान्ती श्रीब्रह्म हीराख्यानामदेवा । अग्रोतकान्वये मीतलगोत्रे साधु श्री गल्हा भार्या खेमा तयो पुत्री मौणी एक पत्ता । द्वितीय पत्ता अग्रोतकान्वये गर्ग गोत्र साधु श्री क्षेमधरा भार्या हरो । तयोपुत्राश्चत्वार प्रथम पुत्र देसलु, द्वितीय वील्हा, तृतीय आल्हा, चतुर्थ सरया देसल भार्या रुपा. वील्हा भार्या नाथी साधु आल्हा भार्या धानी तयो पुत्राश्चत्वार, साधु श्री चदा साधु हरिचद, सा०, रता, सा०, साल्हा । श्रीचद्र पुत्रमेषा स्वधर्मरत साधु श्री सर्था भार्या मौणा शीलशालिनी धर्म प्रभाविनी रत्नत्रयपाराधिनी बाई जौणी आत्मकर्मक्षयार्थं इदं परमात्मप्रकाश ग्रंथ लिखापित ।

इसमें ३४५ दोहा हैं । प्रथम पत्र नया लिखा गया हैं ।

१२० **प्रवचनसार—कुन्दकुन्दाचार्य** । पत्र सख्या-३३ । साइज-१०¾×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३५८ ।

विशेष—पत्र ८ तक संस्कृत टीका भी दी है ।

१२१. **प्रवचनसार सटीक-अमृतचन्द्र सूरि** । पत्र सख्या-१०७ । साइज-१०¾×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन न० ६१ ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है । बीच में २४ पत्र कम हैं । आगरे में प्रतिलिपि हुई था । प्रति प्राचीन है

१२२ **प्रवचनसार भाषा—पांडे हेमराज** । पत्र सख्या-३० । साइज-११×५ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-स० १७०६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४४ ।

१२३. **प्रवचनसार भाषा—पांडे हेमराज** । पत्र संख्या-१४२ । साइज-१३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-अध्यात्म । रचना काल-स० १७०६ माघ सुदी ५ । लेखन काल-सं० १९५२ आषाढ बुदी २ । पूर्ण वेष्टन नं० ६७ ।

एक प्रति और है ।

१२४. बोधपाहुड भाषा—पं० जयचद छाबडा । पत्र सख्या-२१ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८६ ।

१२५. भव वैराग्य शतक—पत्र सख्या-११ । साइज-१०३/४×५ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १७३ ।

विशेष—हिन्दी में छाया दी हुई है ।

१२६. मृत्युमहोत्सव—बुधजन । पत्र सख्या-३ । साइज-८×६१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३० ।

१२७ योगसमुच्चय—नवनिधिराम । पत्र सख्या १२३ । साइज-९×४१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल × । वेष्टन न० ४६० ।

विशेष—५० पत्र तक श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१२८. योगसार—योगान्द्रदेव । पत्र सख्या-६ । साइज-१११/२×५१/२ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८७२ मंगसिर सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० ३२६ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

१२९. षट्पाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या-६७ । साइज-१२×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २४५ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं जिनमें केवल लिंगपाहुड तथा शीलपाहुड दिया हुआ है ।

१३० षट्पाहुड टीका—टीकाकार भूधर । पत्र संख्या-५२ । साइज-११३/४×५१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७५१ । पूर्ण । वेष्टन न० २४४ ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । यह टीका भूधर ने प्रतापसिंह के लिए बनाई थी ।

१३१ समयसार कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सख्या- १५१ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८२६ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ५० ।

विशेष—दौसा में पृथ्वीसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।
अमृतचन्द्र कृत आत्मख्याति टीका सहित है । एक प्रति और है ।

१३२ समयसार कलशा—अमृतचद्रसूरि । पत्र सख्या-५६ । साइज-११×८ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १२७ ।

१३३. प्रति नं० २। पत्र संख्या-११२। साइज-१०×५¾ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २४७

विशेष—आनदराम के वाचनार्थ नित्य विजय ने यह टिप्पण लिखा था। टिप्पण टव्वा टीका के सदृश है। प्रति सुन्दर है।

१३४. **समयसारनाटक—बनारसीदास**। पत्र संख्या-७३। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। रचना काल-स० १६९३। लेखन काल-स० १८०० चैत सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३२०।

विशेष—बसवा में श्री निरमैराम के बेटा श्री मनसाराम ने फतेराम के पठनार्थ लिखी थी। ४ प्रतियां और हैं।

१३५. **समयसार वचनिका—राजमल्ल**। पत्र संख्या-१६८। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १३।

१३६ **समाधितन्त्र भाषा—पर्वतधर्मार्थी**। पत्र संख्या-७७। साइज-६¾×५ इच। भाषा-गुजराती देवनागरी लिपि। विषय-योग। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७५५ फागुन बदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० १८३।

विशेष—छागपत्तन में श्री आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी। एक प्रति और है।

१३७. **समाधिमरण भाषा**—पत्र संख्या-१३। साइज-१२½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ८१।

१३८. **सूत्रपाहुड—जयचद छाबडा**। पत्र संख्या-१५। साइज-१२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ६२।
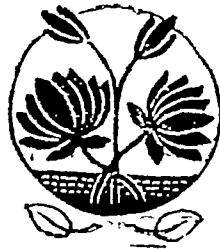
विषय—न्याय एवं दर्शन शास्त्र

१३९. **आप्तपरीक्षा—विद्यानन्दि** । पत्र सख्या-६ । साइज-१०३/४×४३/४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २९० ।

विशेष—पडित धरमू के पठनार्थ गयाससाहि के राज्य में प्रतिलिपि की गई थी ।

१४० **आलापपद्धति—देवसेन** । पत्र सख्या-११ । साइज-१०×४३/४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०६ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

१४१ **तर्कसग्रह—अन्नंभट्ट** । पत्र सख्या-६ । साइज-१०×४३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३०३ ।

विशेष—मोतीलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

१४२ **दर्शनसार—देवसेन** । पत्र सख्या-३ । साइज-१११/२×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७२ मगसिर बुदी अमावस । पूर्ण । वेष्टन न० २१७ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

१४३. **नयचक्र—देवसेन** । पत्र सख्या-३३ । साइज-१११/२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८२६ फागुन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८९ ।

श्लोक सख्या-४५३ हैं ।

१४४ **न्यायदीपिका—धर्मभूषण** । पत्र सख्या-४८ । साइज-८३/४×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८०६ द्वि० भादवा सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० २६८ ।

विशेष—देवादास ने स्वपठनार्थ लिखी थी ।

१४५ **परिभाषा परिच्छेद (नयमूल सूत्र)—पचानन भट्टाचार्य** । पत्र सख्या-११ । साइज-१०३/४×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४३७ ।

अन्तिम—इति श्री महामहोपाध्यायसिद्धान्त पचानन भट्टाचार्य कृत परिभाषा परिच्छेद समाप्त ।
१६६ श्लोक हैं प्रति प्राचीन मालूम देती है ।

१४६ **षट्दर्शन समुच्चय—हरिभद्रसूरि** । पत्र सख्या-७ । साइज-१०×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २८४ ।

विशेष—६६ श्लोक हैं।

१४७ सन्मतितर्क—सिद्धसेन दिवाकर। पत्र सख्या—८। साइज—८×४¾ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय शास्त्र। रचना काल—×। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन न० १०२।

पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान

१४८. अक्षयनिधिपूजा—पत्र सख्या—३। साइज—११×४½ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। चना काल—×। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन न० ११४।

विशेष—लब्धि विधान पूजा भी दी हुई है।

१४६ अकुरारोपण विधि—पत्र सख्या—७। साइज—१०×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—विधि विधान। रचना काल—×। लेखन काल—×। अपूर्ण। वेष्टन न० ३८०।

विशेष—छठा पत्र नहीं हैं।

१५० अनंतव्रतपूजा—श्री भूषण। पत्र संख्या—६। साइज—१०×४¾ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पूजा। रचना काल—×।लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन न० १०२।

१५१. अनतव्रतोद्यापन—पत्र सख्या—२०। साइज—११½×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पूजा। रचना काल—×। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६।

१५२. अभिषेकविधि-पत्र सख्या—३। साइज—७¾×४½ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—विधि विधान। रचना काल—×। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन न० १२५।

विशेष—एक प्रति और है।

१५३ अर्हत्पूजा—पद्मनंदि। पत्र सख्या—५। साइज—६×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। रचना काल—×। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन न० ४८।

१५४. अष्टक—पत्र संख्या–१ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

१५५. अष्टाह्निकापूजा । पत्र संख्या–१० । साइज–७¾×४½ इंच । भाषा–संस्कृत प्राकृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

१५६. अष्टाह्निकापूजा—पत्र संख्या–७ । साइज–६×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—जाप्य से आगे पाठ नहीं है ।

१५७ अष्टाह्निकापूजा—शुभचन्द्र । पत्र संख्या–३ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । ब्र० श्री मेघराज के शिष्य ब्र० सवजी के पठनार्थ लिपि की गई थी ।

१५८. इन्द्रध्वजपूजा—विश्वभूषण । पत्र संख्या–६६ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३ ।

१५९. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा—पत्र संख्या–६ । साइज–९×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—पत्र ४ से चिन्तामणिपार्श्वनाथ पूजा भी है ।

१६०. कर्मदहनपूजा—टेकचंद । पत्र संख्या–१६ । साइज–१½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३ ।

१६१. कौतुकुतुहल—पत्र संख्या–३८४ । साइज–८×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १९०१ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७ ।

विशेष—यज्ञादि की सामग्री एवं विधि विधान का वर्णन है । कुल ६१ अध्याय हैं ।

१६२. गणधरवलयपूजा—शुभचन्द्र । पत्र संख्या–१० । साइज–१०¾×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१६३. गिरनारसिद्धक्षेत्रपूजा—हजारीमल्ल । पत्र संख्या–३६ । साइज–१०½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–सं० १९२० आसोज सुदी १२ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ।

विशेष—हजारीमल्ल के पिता का नाम हरीकिसन था। ये अग्रवाल गोयल ज्ञातीय थे तथा लश्कर के रहने वाले थे कवि ने साहपुर में आकर दौलतराम की सहायता से रचना की थी।

१६४ **चन्द्रायणव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति**। पत्र संख्या-४। साइज-१२½×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १७।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

१६५ **चारित्रशुद्धिविधान (बारहसोचौतीसविधान)—श्री भूषण**। पत्र संख्या-७६। साइज-१२×५¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधि विधान। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८१३। पूर्ण। वेष्टन नं० ३२।

विशेष—दक्षिण में देवगिरि दुर्ग में पार्श्वनाथ चैत्यालय में ग्रंथ रचना की गयी थी। तथा जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१६६. **चौबीसतीर्थंकरपूजा**—पत्र संख्या-५१। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१।

१६७ **चौबीसतीर्थंकरपूजा—सेवाराम**। पत्र संख्या-४३। साइज-१२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १८५४ माह सुदी ६। लेखन काल-सं० १८६६। पूर्ण। वेष्टन नं० २८।

१६८ **चौबीसतीर्थंकरपूजा—रामचन्द्र**। पत्र संख्या-५०। साइज-१०½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८८६ चैत सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन नं० १०।

विशेष—प्रति सुन्दर व दर्शनीय है। पत्रों के चारों ओर भिन्न २ प्रकार के सुन्दर बेल बूटे हैं। स्योजीराम भांवसा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१० प्रतियां और हैं।

१६६ **चौबीसतीर्थंकरपूजा—मनरंगलाल**। पत्र संख्या-५१। साइज-१२½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४।

१७० **चौबीस तीर्थंकर पूजा—वृन्दावन**। पत्र संख्या-१५१। साइज-११×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी विषय-पूजन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०।

विशेष—३ प्रतियां और हैं।

१७१. **चौबीसतीर्थंकर समुच्चय पूजा**—पत्र संख्या-४। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७१।

१७२ **चौसठ ऋद्धिपूजा (गुरावली)**—स्वरुपचन्द । पत्र संख्या-७१ । साइज-११×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६०० श्रावण सुदी ७ । लेखन काल-सं० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २ ।

विशेष—इस प्रति को बहादरजी ठोलिया ने ठोलियों के मन्दिर में चढाई थी ।

१७३ **जम्बूद्वीप पूजा—जिणदास** । पत्र संख्या-३१ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५ ।

१७४. **जलहर तेला को पूजा**—पत्र संख्या-४ । साइज-११×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२ ।

१७५. **जिनयज्ञ कल्प (प्रतिष्ठापाठ)—आशाधर** । पत्र संख्या-१२० । साइज-१०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-सं० १२८५ । लेखन काल-सं० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

ग्रंथाग्रंथ संख्या-२१०० श्लोक प्रमाण है ।

विशेष—संवद्बाणधरास्मृतिप्रमिते मार्गशीर्षमूतिष्टा सिते लिखितमिदं पुस्तकं विदुषा श्वेतांबर सुन्दरदासेन श्रीमज्जयपुरे जयपत्तने ।

१७६. **जैनविवाहविधि—जिनसेनाचार्य** । पत्र संख्या-४४ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५ ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । भाषाकार पन्नालालजी दूनी वाले हैं । सं० १६३३ में इसकी भाषा पूर्ण हुई थी ।

१७७. **ज्ञानपूजा**—पत्र संख्या-८ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

विशेष—श्री मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७८ **तीनचौबीसी पूजा**—पत्र संख्या-२१ से ६८ । साइज-११×४½ इञ्च भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७ ।

१७६ **त्रिंशत्चतुर्विंशतिपूजा-शुभचन्द्र** । पत्र संख्या-१२० । साइज-६½×८½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ क ।

गुटका के आकार में है ।

१८० **तेलाव्रत की पूजा**—पत्र संख्या-४ । साइज१०×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५ ।

१८१. **दक्षिणयोगोन्द्र पूजा—आ० सोमसेन** । पत्र सख्या–५ । साइज–११½×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १७६४ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० ८५ ।

विशेष—पडित मनोहर ने प्रतिलिपि की थी ।

१८२. **दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा**—पत्र संख्या–५० । साइज–६½×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल-X । लेखन काल–X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११८ ।

विशेष—अन्तिम दोहा—

डारि मत दश धर्म को लुब्ध हो ग्रह सेव ।
राचत सुर नर सर्म इत मरि परमव शिव लेव ॥

१८३ **दशलक्षणपूजा**—पत्र संख्या–३ । साइज–११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन न० ११२ ।

विशेष—नदीश्वर पूजा (प्राकृत) भी दी है ।

१८४. **दशलक्षणपूजा**—पत्र सख्या–१७ से २४ । साइज–८½×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन न० १२२ ।

१८५. **दशलक्षणपूजा—अभयनंदि** । पत्र सख्या–१४ । साइज–११½×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन न० ७१ ।

१८६ **दशलक्षणजयमाल—भावशर्मा** । पत्र सख्या–११ । साइज–१०½×४½ इन्च । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । रचना काल-X । लेखन काल–स० १७३३द्वि० सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७१ ।

विशेष—रामकीर्ति के शिष्य प० श्रीहर्ष तथा कल्याण तथा उनके शिष्य प० चिन्तामणि ने खेम रतनसिंह के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१८७. **दशलक्षणपूजा जयमाल–रइधू** । पत्र सख्या–१६ । साइज–११×४¾ इञ्च । भाषा–अपभ्र श । विषय–पूजा । रचना काल -X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन न० १०८ ।

सस्कृत टिप्पण सहित है । ४ प्रतियां और हैं ।

१८८. **द्वादशव्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति** । पत्र संख्या–१५ । साइज–१२×५½ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १७७२ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ८० ।

१८९. **देवपूजा**–पत्र संख्या–६ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन न० ४६ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं। एक प्रति हिन्दी भाषा की है।

१६० नन्दीश्वरविधान—रत्ननंदि। पत्र संख्या-१७। साइज-११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२७ फागुन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२।

विशेष—महाराजाधिराज श्री सवाई पृथ्वीसिंहजी के राज्यकाल में बसवा नगर में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पंडित आनन्दराम के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है।

१६१ नदूसप्तमीव्रतपूजा—पत्र संख्या-५। साइज-१२¾×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १६।

१६२. नवग्रहअरिष्टनिवारकपूजा—पत्र संख्या-१८। साइज-१२½×८ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६।

१६३ नित्यनियमपूजा—पत्र संख्या-४०। साइज-८×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२५।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। ३ प्रतियां और हैं।

१६४. निर्वाणक्षेत्रपूजा-स्वरूपचंद। पत्र संख्या-२६। साइज-११×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १६१६ कार्तिक सुदी १३। लेखन काल-सं० १६३८ चैत्र सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ८२।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी।

१६५. निर्वाणकाण्डपूजा—द्यानतराय। पत्र संख्या-३। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४।

विशेष—निर्वाणकाण्ड गाथा भी दी हुई हैं।

१६६ पद्मावती पूजा—पत्र संख्या-१३। साइज-११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७।

विशेष—निम्न पाठों का और संग्रह है —

पद्मावती स्तोत्र, श्लोक संख्या २३, पद्मावती सहस्रनाम, पद्मावती कवच, पद्मावती पटल, और घंटाकर्ण मंत्र।

१६७ पंचकल्याणपूजा—लक्ष्मीचंद। पत्र संख्या-२ से २८ तक। साइज-११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६०६। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६।

१६८ पंचकल्याणकपूजा—टेकचंद। पत्र संख्या-२४। साइज-८½×६ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६५४ असाढ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ४७।

१९९. पचकल्याणकपूजा पाठ—पत्र संख्या–२७ । साइज–१०½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–स० १९०० वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० २३ ।

विशेष—चिम्मनलाल भांवसा ने जयपुर में बख्शीराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

२०० पचपरमेष्टीपूजा—पत्र संख्या–४ । साइज–११×४½ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन न० १११ ।

विशेष—श्लोक संख्या १०० है ।

२०१ पचपरमेष्टीपूजा—पत्र सख्या–४८ । साइज–९×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ६२ ।

२०२ पंचमेरुपूजा—पत्र संख्या–७ । साइज–७½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १२५ ।

२०३. पूजा एव अभिषेक विधि । पत्र संख्या–१४ । साइज–८½×६½ इञ्च । भाषा–सस्कृत हिन्दी गद्य । विषय–विधि विधान । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १०६ ।

विशेष—गुटका साइज है ।

२०४ पूजापाठसग्रह—पत्र संख्या–६८ । साइज–११×८ इन्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ आदि सग्रह है । पूजा पाठ संग्रह की ८ प्रतियां और हैं ।

२०५. बीसतीर्थंकरपूजा—पन्नालाल सघी । पत्र सख्या–६२ । साइज–१२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–स० १९३४ । लेखन काल–स० १९५४ सावन बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ५ ।

विशेष—टोंक में मोजसिंह के पुत्र पन्नालाल ने रचना की तथा अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी । २ प्रतियां और है ।

२०६ भक्तामर स्तोत्र पूजा—सोमसेन । पत्र संख्या–१० । साइज–१०½×५ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८४ कार्तिक सुदी । पूर्ण । वेष्टन न० १०३ ।

विशेष—पण्डित नानकदास ने प्रतिलिपि क

—:०:—

२०७ मंडल विधान एवं पूजा पाठ संग्रह—पत्र संख्या-६५४। साइज-११×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। लेखन काल-सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टन नं० १२६।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

	नाम पाठ	कर्त्ता	पत्र संख्या	ले० काल	विशेष
(१)	जिन सहस्रनाम	आशाधर	१ से १६	—	—
(२)	" "	जिनसेनाचार्य			
(३)	तीन चौबीसी पूजा	—	१६ से ३३	—	—
(४)	पंचकल्याणकपूजा	—	३४ से ५५	—	मंडल चित्र सहित
(५)	पंचपरमेष्ठीपूजा,	शुभचंद्र	५६ से ७७	ले० काल १८६५	—
(६)	कर्मदहनपूजा	शुभचंद्र	७८ से ६७	—	चित्र सहित
(७)	बीसतीर्थंकरपूजा	नरेन्द्रकीर्ति	६८ से १०१	—	—
(८)	भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्रीभूषण	१०२ से ११२	—	मंडल चित्र सहित
(९)	धर्मचक्र	रणमल्ल	११३ से १२६	—	—
(१०)	शास्त्रमंडल पूजा	ज्ञानभूषण	१३० से १३४	—	चित्र सहित
(११)	ऋषिमंडलपूजा	आ० गणिनंदि	१३५ से १५५	—	"
(१२)	शान्तिचक्रपूजा	—	१५६ से १६१	—	चित्र सहित
(१३)	पद्मावतीस्तोत्र पूजा	—	१६२ से १६६	—	—
(१४)	पद्मावतीसहस्रनाम	—	१६७ से १७३	—	—
(१५)	षोडशकारणपूजा उद्यापन	केशव सेन	१७४ से १६८	—	—
(१६)	मेघमाला उद्यापन	—	१६६ से २१३	—	चित्र सहित
(१७)	चौबीसीनामव्रतमंडलविधान		२१४ से २३०	—	"
(१८)	दशलक्षणव्रतपूजा	—	२३१ से २६०	—	चित्र सहित
(१९)	पंचमीव्रतोद्यापन	—	२६१ से २६७	—	"
(२०)	पुष्पांजलिव्रतोद्यापन	—	२६८ से २८३	—	"
(२१)	कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	२८३ से २६१	—	—
(२२)	अक्षयनिधिव्रतोद्यापन	ज्ञानभूषण	२६२ से ३०५	—	—
(२३)	पंचमासचतुर्दशी व्रतोद्यापन	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	३०६ से ३११	—	—
(२४)	अनंत व्रत पूजा	—	३१२ से ३४१	—	चित्र सहित

नाम	कर्त्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(२५) अनंतव्रतपूजा	गुणचन्द्र	३४२ से ३७४	र० का० १६३०	सचित्र
(२६) रत्नत्रय पूजा	केशवसेन	३७५ से ३९६	—	—
(२७) रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	३९७ से ४१२	—	—
(२८) पल्यव्रतोद्यापन पूजा	शुभचन्द्र	४१३ से ४२६	—	चित्र सहित
(२९) मासांत चतुर्दशी पूजा	अक्षयराम	४२७ से ४४४	—	चित्र सहित
(३०) णमोकार पैंतीसी पूजा	अक्षयराम	४४५ से ४५०	—	चित्र सहित
(३१) जिनगुणसंपत्तिव्रतोद्यापन	—	४५१ से ४५८	—	सचित्र
(३२) क्षेपनक्रियाव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	४५९ से ४६६	—	सचित्र
(३३) सौख्यव्रतोद्यापन	अक्षयराम	४६७ से ४८१	—	सचित्र
(३४) सप्तपरमस्थान पूजा	—	४८१ से ४८८	—	—
(३५) अष्टाह्निका पूजा	—	४८९ से ५११	—	सचित्र
(३६) रोहिणीव्रतोद्यापन	—	५१२ से ५२४	ले० का० १८८९	—

विशेष—जयपुर में लिपि हुई थी ।

नाम	कर्त्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(३७) रत्नावलीव्रतोद्यापन	—	५२५ से ५३६	—	सचित्र
(३८) ज्ञानपच्चीसीव्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्ति	५३७ से ५४५	ले० का० सं० १८४०	—

विशेष—जयपुर में चद्रप्रभु चैत्यालय में लिपि हुई थी।

नाम	कर्त्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(३९) पंचमेरुपूजा	भ० रत्नचंद्र	५४६ से ५५२	—	—
(४०) आदित्यवारव्रतोद्यापन	—	५५२ से ५६१	—	सचित्र
(४१) अक्षयदशमीव्रतपूजा	—	५६२ से ५६५	—	—
(४२) द्वादशव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	५६६ से ५७९	—	—
(४३) चदनषष्ठीव्रतपूजा	—	५८० से ५८६	—	सचित्र पर अपूर्ण

विशेष—५८७ से ६०५ तक पृष्ट नही हैं ।

नाम	कर्त्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(४४) मौनिव्रतोद्यापन	—	६०६ से ६२१	—	—
(४५) श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	६२२ से ६३६	—	—
(४६) कांजीव्रतोद्यापन	—	६३६ से ६५४	—	—
(४७) पूजाटीका संस्कृत	—	६४५ से ६५४	—	—

इसके अतिरिक्त २ फुटकर पत्र हैं। और २ पत्रों में व्रत पजाओं की सूची दी है महत्वपूर्ण पाठ संग्रह है।

२०८ मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा—पत्र संख्या-१८ । साइज-१४×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०२ सावन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७ ।

विशेष—चाकसू के मंदिर चंद्रप्रभ-चैत्यालय में पंडित रतीराम के शिष्य रामबक्श ने प्रतिलिपि की थी ।

२०९. रत्नत्रयजयमाल—पत्र संख्या-५ । साइज-१०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११० ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है । ३ प्रतियां और हैं ।

२१० रत्नत्रयपूजा—पत्र संख्या-६ । साइज-११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६६ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१ ।

विशेष—पं० श्रीचंद्र ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

२११. रत्नत्रयपूजा—आशाधर । पत्र संख्या-४ । साइज-१२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६० ।

२१२. रत्नत्रयपूजा—पत्र संख्या-३४ । साइज-१२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

२१३. रविव्रतपूजा—पत्र संख्या-१५ । साइज-८$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

२१४. रोहिणीव्रत पूजा—केशवसेन । पत्र संख्या-६ । साइज-११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०० ।

२१५. लब्धि विधान पूजा—पत्र संख्या-२१ । साइज-१०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१ ।

२१६. लब्धि विधान व्रतोद्यापन—पत्र संख्या-८ । साइज-१३×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१ ।

२१७. विमलनाथ पूजा—रामचंद्र । पत्र संख्या-३ । साइज-११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

२१८ षोडशकारण पूजा—पत्र संख्या-८ । साइज-६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—दशलक्षण पूजा भी है वह भी संस्कृत में है ।

२१६. **षोडश कारण व्रतोद्यापन पूजा—आचार्य केशव सेन**। पत्र सख्या-२१ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४४ ।

२२०. **शान्तिनाथ पूजा—सुरेश्वर कीर्त्ति**। पत्र सख्या-५ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४६ ।

विशेष—अंत में आरती भी हैं ।

सुज्ञानी जन आरती नित्य करो । गुरु वृषचंद सुरेश्वर कीर्ति भव दुख हरो । प्रभु के पद आरती नित्य करो ।

२२१. **श्रुतज्ञान पूजा**—पत्र सख्या-१३ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६२ ।

विशेष—पत्र ६ से आगे पाठों की सूची दी हुई है । हेमचद्र कृत श्रुत स्कंध के आधार से लिखा गया है । मंडल तथा तिथि दी हुई है ।

२२२. **सप्त ऋषि पूजा**—पत्र सख्या-८ । साइज-१०½×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

२२३ **समवशरण पूजा—ललितकीर्त्ति**। पत्र संख्या-४ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६४ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ ।

विशेष—बसवा • गर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२२४. **समवशरण पूजा—पन्नालाल**। पत्र संख्या-६७ । साइज-१२½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १९२१ आसोज सुदी ३ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३ ।

विशेष—जवाहरलालजी की सहायता से रचना की गयी थी । पन्नालालजी जीवतसिंह जैपुर के कामदार थे ।

२२५. **सम्मेदशिखरपूजा**—पत्र संख्या-१० । साइज-६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

२२६. **सम्मेदशिखरपूजा—नंदराम**। पत्र सख्या-१२ । साइज-१३×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १९१२ माघ बुदी ५ । लेखन काल-स० १९१२ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११ ।

विशेष—रतनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२२७ **सम्मेदशिखर पूजा—जवाहरलाल**। पत्र सख्या-११ । साइज-१२½×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२२८. सहस्रगुणितपूजा—श्रीशुभचन्द्र । पत्र संख्या-५८ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६६८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६० ।

विशेष—संवत् १६६८ वर्षे शाके १५३३ प्रवर्तमाने पौष बुदी ७ महाराजाधिराज महाराज श्री मानसिंह प्रवर्त्तमाने अंबावति मध्ये   ।

२२६ सहस्रनाम पूजा—धर्मभूषण । पत्र संख्या-८७ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७७ ।

विशेष—शान्तिनाथ मंदिर के पास जयपुर में पं० जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी।

२३० सहस्रनाम पूजा—चैनसुख । पत्र संख्या-१८ । साइज-१२½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८ ।

विशेष—पद्य संख्या २२० है।

२३१ सार्द्धद्वय द्वीप पूजा—विश्वभूषण । पत्र संख्या-१०८ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५७ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८ ।

प्रति नं० २—पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५½ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६ ।

विशेष—अढाई द्वीप के तीन नक्शे भी हैं उनमें एक कपडे पर है जिसका नाप २' ५''×२' ७'' फीट है । नक्शे के पीछे द्वीपों का परिचय दिया हुआ है । इसके अतिरिक्त तीन लोक का नक्शा भी है ।

२३२ सिद्धक्षेत्र पूजा— । पत्र संख्या-४५ से ५० तक । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

विषय—निर्वाणकाण्ड गाथा भी हैं । ५ प्रतियां और हैं ।

२३३. सिद्धचक्र पूजा (अष्टाह्निका)—नथमल बिलाला । पत्र संख्या-१० । साइज-१२½×८ इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ ।

२३४. सिद्धचक्र पूजा—सन्तलाल । पत्र संख्या-११० । साइज-१२½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजन । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६८६ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १ ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड ने अजमेर वालों के चौबारे में प्रतिलिपि की थी।

संवत् १६८७ में अष्टाह्निका व्रतोद्यापन में केसरलालजी साह की पत्नी नंदलाल पीडे वालों की पुत्री ने ठोलियों के मन्दिर में भेट की थी।

२३५ सिद्धपूजा—पद्मनंदि । पत्र संख्या-४ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-   आसोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

विशेष—एक प्रति और है।

२३६. **सुगंधदशमीव्रतोद्यापन पूजा**—पत्र संख्या-२२। साइज-८½×६½ इश्च। माषा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४६।

विशेष—कजिकाव्रतोद्यापन भी है वह भी संस्कृत में है।

२३७. **सोलहकारणजयमाल**—पत्र सख्या-१४। साइज-११½×५ इन्च। माषा-अपभ्रंश। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८३५ सावन सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ७०।

विशेष—श्रीचंद ने जयपुर में श्री शान्तिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

२३८. **सौख्यकाख्यव्रतोद्यापन विधि—अक्षयराम**। पत्र संख्या ८। साइज-६½×४½ इन्च। माषा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १८२० भादवा बुदी ४। लेखन काल-सं० १८२८ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन न० ११३।

विषय-चरित्र एवं काव्य

२३९. **ऋषभनाथचरित्र—सकलकीर्ति**। पत्र सख्या-२३१। साइज-११×४½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६६६ माह बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० २२०।

विशेष—मल्लहारपुर में चांदवाड गोत्र वाली बाई लाडा तत्सिष्या मागा ने प्रतिलिपि कराई थी। एक प्रति और है।

२४०. **किरातार्जुनीय—महाकवि भारवि**। पत्र संख्या-१६८। साइज-११×५ इश्च। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४८१।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र दूसरी प्रति के हैं। पत्र ५२ से १६८ तक दूसरी प्रति के है जिसमें श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है।

२४१. कुमारसम्भव—कालिदास। पत्र संख्या-१३ । साइज-१०३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १४८६ आषाढ। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८५।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

प्रशस्ति—संवत् १४८६ वर्षे आषाढमासे वटपद्रवास्तव्य दीसावालजातीय नरवद सुत व्यास पद्मनामेन कुमारसमवकाव्यमलेखि। शुभंभवतु। भट्टारक प्रभु ससारवारणविदारणसिंह श्री सोमसुन्दर सूरिश्चिरं नंदतु। प्रति सुन्दर है।

२४२. चदनाचरित्र—शुभचंद्र। पत्र संख्या-२७। साइज-११३/४×४३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८६१ भादवा सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन न० १५७।

विशेष—शिवलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी।

२४३. चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनन्दि। पत्र संख्या-१८३। साइज-१३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १५५७ भादवा सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन न० ६७।

विशेष—इसमें कुल १८ सर्ग हैं ग्रंथा ग्र थ सख्या २५०० श्लोक प्रमाण हैं। प्रारम्भ के १४ पृष्ठों पर संस्कृत टीका भी दी हुई है।

२४४. चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर। पत्र संख्या-२०२। साइज-१२३/४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १७०२। लेखन काल-१८५० माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० २३३।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

२४५. चारुदत्तचरित्र—भारामल्ल। पत्र सख्या-५१। साइज-१२×८ इच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ७६।

विशेष—पद्य संख्या ११०६ है।

२४६. जम्बूस्वामीचरित्र—ब्रह्म जिनदास। पत्रसंख्या-७२। साइज-१२×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० २४२।

२४७ जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम। पत्र संख्या-३२। साइज-१२३/४×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ८०।

प्रारम्भ—प्रथम प्रणमी परमेष्टिगण, प्रणमी सारद माय।
गुरु निर्ग्रन्थ नमो सदा, भव भव मैं सुखदाय ॥१॥
धर्म दया हरदै धरूं, सब विधि मंगलकार।
जम्बू स्वामी चरित, की करूं बचनिका सार ॥२॥

अथ वचनिका प्रारम्भ। मध्यलोक के असंख्यात द्वीप और समुद्रों के मध्य एक लाख योजन के व्यास वाला थाली के आकार सद्रस गोल जम्बू नाम की द्वीप है। जिसके मध्य में नाभि के सद्रस सोभा देने वाला एक सुदर्शन नाम का पर्वत पृथ्वी से दस हजार योजन ऊंचा है और जिसकी जड पृथ्वी में १०००० दश हजार योजन की है।

अन्तिम - जंबूस्वामी चरित जो, पढे सुने मनलाय।
मनवांछित सुख भोग के, अनुक्रम शिवपुर जाय॥
संस्कृत से भाषा करी, धर्म बुद्धि जिनदास।
लमेचू नाथूराम पुनि, छंद वद्ध की तास॥
किसनदास सुत मूलचद, करी प्रेरणा सार।
जबूस्वामी चरित की, करो वचनिका सार॥
तब तिनके आदेश से भाषा सरल विचार।
लघु मति नाथूराम सुत दीपचंद परवार॥
जगत राग अर द्वेष वश, चहुँगति भमै सदीव।
पावै सम्यक रत्न जो, काटे कर्म अदीव॥
गत संवत निर्वाण को महावीर जिनराय।
एकम श्रावण शुक्ल को करी पूर्ण हरषाय॥
अतिम है इक प्रार्थना सुनो सुधी नरनार।
जी हित चाहो तो करो स्वाध्याय परचार॥
इति श्री जबूस्वामी चरित्र भाषा मय वचनिका संपूर्ण।

२४८. जीवंधरचरित्र—आचार्य शुभचद्र। पत्र संख्या-८०। साइज-११$\frac{3}{4}$×५ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १६२७। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० २१३।

२४९. दुर्घटकाव्य—कालिदास। पत्र सख्या-२०। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८४।

प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२५०. धन्यकुमारचरित्र—गुणभद्राचार्य। पत्र सख्या-१९। साइज-१२×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १७२

विशेष—लवकंचुकगोत्रेभूच्छुभचन्द्रो महामना।
साधु सुशीलवान् शांत· श्रावको धर्मवत्सल॥
तस्य पुत्रो वभूवात्र कल्हणो दानवान् वशी।

परोपकारचित्तस्य न्यायेनार्जितसद्धन. ॥
धर्मानुरागिणा तेन धर्मकर्मनिबंधन ।
चरितं कारित पुण्य शिवापेत्ति शिवार्थिन: ॥
इति धन्यकुमार चरित्र समाप्तं ।

संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया हुआ है । ७ परिच्छेद हैं ।

२५१ धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्त्ति । पत्र संख्या–४० । साइज–१२×५इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १५६४ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६८ ।

प्रशस्ति— संवत् १५६४ वर्षे आषाढादि ६५ वर्षे शाके १४३१ प्रथम मागसिर सुदि २ष श्री गिरिपुरे श्री आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति: तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्त्ति स्ततपट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणस्तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयकीर्त्तिस्तत् शिष्य ब्रह्म मल्लिदासपठनार्थं हुवड ज्ञातीय वृद्ध शाखायां चौकडी आवाङ्का तद्भार्या बभलदे तयो द्वौ पुत्रौ । चोकडी सारुपा तद्भार्या राजलदे । एते ज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थं श्री धन्यकुमार-लिखाप्यदत्त शुभं भवतु पश्चात् ब्रह्म श्री मल्लिदासात् शिष्य उरही आकेन पठितं । प० हीरा की पोथी है । सात अधिकार हैं ।

२५२ धन्यकुमारचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र संख्या–२५ । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४८६ ।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है इसके आगे अपूर्ण है ।

२५३. धन्यकुमारचरित्र—खुशालचंद । पत्र संख्या–२८ । साइज–१४×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १६५६ मगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ६५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२५४. धर्मशर्माभ्युदय—हरिचन्द्र । पत्र संख्या–१०६ । साइज–१२×८¼ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ४३२ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है बीच के कुछ पत्र जीर्ण है । धर्मनाथ तीर्थंकर का जीवन चरित्र वर्णित है ।

२५५. नागकुमारचरित्र—पत्र संख्या–३६ । साइज–१३×८ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न०७६ ।

२५६ नेमिदूतकाव्य—विक्रम । पत्र संख्या–१३ । साइज–१०×४½ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १५८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०३ ।

२५७ **नेमिदूतकाव्य सटीक—मूलकर्त्ता विक्रम कवि। टीकाकार प० गुण विनय।** पत्र संख्या-२३ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । टीका काल-सं० १६८४ । लेखन काल-सं० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६२ ।

२५८ **प्रद्युम्नकाव्य पंजिका—**पत्र संख्या-८ । साइज-१०×६ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३४२ ।

विशेष—१४ सर्ग तक है ।

२५६. **प्रद्युम्नचरित्र—महसेनाचार्य।** पत्र संख्या-८८ । साइज-११¾×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७११ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६४ ।

विशेष—कुल २४ परिच्छेद हैं, कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं ।

२६०. **प्रद्युम्नचरित्र—आ० सोमकीर्ति।** पत्र संख्या-२३६ । साइज-११×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । । पूर्ण । वेष्टन नं० २६३ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । ग्रंथ सं० ४८५० श्लोक प्रमाण है । एक प्रति संवत् १६४७ की लिखी हुई और है ।

२६१ **प्रद्युम्नचरित्र—कवि सिंह।** पत्र संख्या-१४३ । साइज-११×४½ इन्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५६८ चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८१ ।

विशेष—तक्षकगढ (टोडारायसिंह) में सोलंकी वंशोत्पन्न सूर्यसेन के राज्य दावणइया स्थाने खंडेलवालजातीय सोगाणी गोत्रोत्पन्न सघी सोढा के वंशज डूंगा पत्ता सांगा आदि ने प्रतिलिपि कराकर मुनि पद्मकीर्ति को भेंट किया ।

२६२. **पार्श्वपुराण—भूधरदास।** पत्र संख्या-८२ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-काव्य । रचना काल-सं० १७८६ । लेखन काल-सं० १६१६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

२६३. **पार्श्वनाथचरित्र—भ० सकलकीर्ति।** पत्र संख्या-१०३ । साइज-११×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०५ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३ ।

विशेष—श्री बादशाह सलीमशाह (जहांगीर के) शासन काल में प्रयाग में श्री आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी । ब्रह्म आसे ने इसे सुमतिदास के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । आचार्य श्री हेमकीर्ति के शिष्य सा० मेघराज की पुस्तक है ऐसा लिखा है ।

इस ग्रंथ की भण्डार में एक प्रति और है ।

२६४. **प्रीतिंकरचरित्र—ब्रह्मनेमिदत्त।** पत्र संख्या-२७ । साइज-१२×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८०५ द्वि० वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७६ ।

विशेष—वसुपुर नगर में श्री चन्द्रप्रभचैत्यालय में प० परसराम जी के शिष्य आनन्दराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

२६५. **भद्रबाहुचरित्र—रत्ननंदि** । पत्र संख्या-३० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचनाकाल-× । लेखन काल-सं० १६५२ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६७ ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है ग्रंथ ६८८ श्लोक संख्या प्रमाण है।

२६६. **भद्रबाहुचरित्र भाषा—चंपाराम** । पत्र संख्या-३८ । साइज-१०½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १८०० सावन सुदी १५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

विशेष—ग्रंथ १३२५ श्लोक प्रमाण है।

प्रारम्भ—जैवतो वरतो सदा, चौवीसू जिनराज।
तिन वंदत वंदक लहै, निश्चय थल सुखदाय ॥

चौपई—रिषव अजित संभव अभिनंदन।
सुमति पद्म सुपारिस चंद ॥
पुष्पदंत शीतल जिन राय।
जिन श्रीहांस नमूं सिर नाय ॥२॥

पत्र संख्या-२३ पर—अथानतर जे जीव तिस ही भव विर्षे स्त्री कू मोक्ष गमन कहै है, ते जीव आग्रह रूप ग्रह करि ग्रस्य है अथवा तिनकू वाय लगी है ॥८३॥ कदाचि स्त्री परयाय धारि अर दुद्धर घोर वीर तप करैं। तथापि स्त्रीकू तद्भव मोक्ष नाहीं ॥८४॥

अंत—इह चरित्र गुरु गम्य लखि रत्ननंदि मुनिराय।
रच्यौ पसत श्लोक मय मूल महा सुख दाय ॥१॥
लैय तिस अनुसार कछु रच्यौ वचनका रूप।
जात नाम कुल तास अब कहूं सुनौ गुन भूप ॥२॥
देश ढुंढाहड मध्यपुर माधव सूवस्थान।
जगतसिंघ ता नगरपति पातल राज महान ॥३॥
तहां वसे इक वैश्य शुभ हीरालाल सु जान।
जाति श्रावग न्याति मैं खंडेलवाल शुभ जानि ॥४॥
गोत भांवसा फुनि धरै परम गुनी गुन धाम।
तिनकै अति मति हीन सुत उपनौ चंपाराम ॥५॥

ताके फुनि भ्रता जुगम लसे सुजन सुख दाय ।
तानै कछू अक्षर समझि सीखी पाय सहाय ॥६॥
तिस पुर मध्य जिन भवन इक राजत अधिक उदार ।
मध्य लसै जिन वृषभ सुर नर वंदित पद सार ॥७॥
तहा जात दिन रैन सुभि भयौ कछू अभ्यास ।
तब लखि के सुचरित्र इह रची वचनका तास ॥ ८ ॥
होय दोस यामैं जहां अमिलत अक्षर होय ।
सोधौ ताकूं सुघड नर निज लक्षण अब लोय ॥ ६ ॥
संत सदा गुन दुर्जन ग्रहै औगण लेय ।
सुख तै तिष्टौ भूमि पर मो पर कृपा करेय ॥ १० ॥
बुद्धहीन तै मूलवत अर्थ भयो नही होय ।
ता परि संजन पुरुष मो क्षमा करो गुन जोय ॥ ११ ॥
अर सोधी वर बोर तै लखि अक्षर विनास ।
यह मेरी अरजी शुभग धरौ चित्त गुण रासि ॥ १२ ॥
अधिक कहे किम होत है जे है सत पुमान ।
ते थोरे ही कहन तैं समझि लेत उर आन ॥ १३ ॥
नर सुर पति वंदत चरण करन हरन गुन पूर ।
पर दरसत भजन करै धर्म रूप विधि चूर ॥ १४ ॥
जो जिनेश इन गुण सहित सो वंदू सिर नाय ।
सोहु इहा मंगल करन हरन विघ्न अधिकाय ॥ १५ ॥
श्रावण सुदि पूनिम सु रविवार अर्थ रस जानि ।
भद ससि संवत्सर विषै भयौ प्रथ सुख खानि ॥ १६ ॥
चर थिर चवगति जीवत निति होहु सुखी जगथान ।
टरो विघन दुख रोष सब वंधो धर्म भगवान ॥ १८ ॥

— छंद अनुष्टया—

भद्रबाहुमुनेरेतत् चरित्र प्रति दर्सता ।
भाषा मयं कृतं चपारामेण मदंबुद्धिना ॥ १६ ॥

—सोरठा—

त्यरय दोष परित्यज्य ग्रेहू तु गुन सज्जना ।
यथा घृष्टोपि सौरभ्यं ददाति चदनोत्वणं ॥ २१ ॥

तेरह से पचीस श्लोक रूप सख्या गिनौं ।
भद्रबाहु मुनि ईस चरित तनी भाषा भई ॥ २२ ॥

इति श्री आचार्य रत्ननंदि विरचित भद्रबाहु चरित्र सस्कृत ग्रथ ताकी बालबोध वचनका विषै स्वेताम्बर मत उत्पति वा पर्यसंघ की उत्पति तथा लुकामत की उत्पति नाम वर्ननों नाम चतुर्थ अधिकार पूर्ण भया ॥ इति ॥

२६७ **भद्रबाहु चरित्र भाषा—किशनसिंह** । पत्र संख्या–३५ । साइज–११×५ इन्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–स० १७८३ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ७८ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२६८ **भविष्यदत्त चरित्र—श्रीधर** । पत्र संख्या–६६ । साइज–१२×४ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १५८६ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० २३५ ।

विशेष—खडेलवाल जातीय साह गोत्रोत्पन्न साह लाला के वशज नाथा खीमा छीतर आदि ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२६९. **भविष्यदत्तचरित्र—ब्र० रायमल** । पत्र संख्या–३६ । साइज–१२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–स० १६१६ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

२७० **भविष्यदत्त चरित्र—धनपाल** । पत्र संख्या–११२ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १६६२ माघ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० १६५ ।

विशेष—सं० १६६२ वर्षे माघ सुदी ११ गुरुवासरे रोहिणीनक्षत्रे श्री मूलसंघे लिखित खेमकरण कायस्थ हाजीपुरनगरे ।

एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

२७१. **भोजप्रबंध—पंडित बल्लारी** । पत्र संख्या–२६ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० २६८ ।

विशेष—श्लोक संख्या ११०० प्रमाण है ।

२७२ **महीपालचरित्र—नथमल** । पत्र संख्या–७० । साइज–१२½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–स० १९१८ आषाढ सुदी ४ । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ३६ ।

विशेष—प्रारम्भ के २ तथा अन्तिम पत्र नहीं है ।

श्री नथमल दोसी दूलीचद के पौत्र तथा शिवचंदजी के पुत्र थे । इनने प० सदासुखजी के पास रहकर अध्ययन व रचनाएं की थी ।

२७३. **मेघदूत—कालिदास।** पत्र संख्या-२७। साइज-१०×४½ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१३।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। टीकाकार सरस्वतीतीर्थ हैं। काशी में टीका लिखी गई थी। पत्र १० तक मूल सहित (श्लोक ५५) टीका है शेष पत्रों में मूल श्लोकों के लिए स्थान खाली है।

२७४ **यशोधरचरित्र—वादिराजसूरि।** पत्र संख्या-१७। साइज-१२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७०० ज्येष्ठ सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन नं० २७३।

२७५ **यशोधरचरित्र—सकलकीर्त्ति।** पत्र संख्या-५१। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २७१।

विशेष—आठ सर्ग हैं। प्रति प्राचीन है। पत्र पानी में भीगे हुए हैं। एक प्रति और है।

२७६. **यशोधरचरित्र—ज्ञानकीर्ति।** पत्र संख्या-७६। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १६५९ माघ सुदी ५। लेखन काल-सं० १६६१ जेष्ठ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० २७५।

विशेष—९ सर्ग हैं। राजमहल नगर के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में महाराजाधिराज श्री मानसिंह के राज्य काल में उनके प्रधान अमात्य श्री नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी।

२७७. **यशोधरचरित्र—वासवसेन।** पत्र संख्या-६३। साइज-१०½×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१४ चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० २७४।

प्रशस्ति—संवत् १६१४ वर्षे चैत्र सुदि ५ शुक्रवारे तक्षकमहादुर्गे महाराजाधिराजरावश्रीकल्याणराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्यश्री ललितकीर्तिदेवा-स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा दामा तद्भार्या चादो तत्पुत्रौ द्वौ। प्र० साधो जिनपूजापुरंदर चतुर्दानवितरणकल्पवृक्ष शीलगगेव सा बोहिथ, द्वि० सा वाजा। सा० बोहिथ तद्भार्या बालहदे। तत्पुत्रौ द्वौ। प्र० सा. सुरताण द्वि० सा. सागु। सा, सुरताण भार्या द्वे   ।

२७८. **यशोधरचरित्र—पद्मनाभ कायस्थ।** पत्र संख्या-८६। साइज-११½×४½ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० २७२।

विशेष—८ सर्ग तक है, प्रति प्राचीन है।

२७९ **यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति।** पत्र संख्या-५१। साइज-१०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १५३६ पौष सुदी ५। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २७०।

विशेष—आठ सर्ग है। श्री शीतलनाथ चैत्यालय गोटिल्यामेध पाट में ग्रन्थ रचना की गई थी। ग्रन्थ श्लोक संख्या-१०१८ प्रमाण है। २० से ४१ तक पत्र दूसरी प्रति के हैं। प्रति प्राचीन है। एक प्रति और है।

२८०. यशोधरचरित्र—लिखमीदास। पत्र संख्या-२६। साइज-१२×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १७८१ कार्तिक सुदी ६। लेखन काल-सं० १९५२। पूर्ण। वेष्टन नं० १२२।

२८१. यशोधरचरित्र भाषा—खुशालचन्द। पत्र संख्या-२३। साइज-१२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १७८१ कार्तिक सुदी ८। लेखन काल-सं० १९०० असाढ सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० ९४।

विशेष—पं० कालीचरन ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है।

२८२ रघुवंश—कालिदास। पत्र संख्या-११७। साइज-१०×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२०।

विशेष—प्रति प्राचीन है। संस्कृत टीका सहित है। पत्रों के मध्य में मूल सूत्र है तथा ऊपर नीचे टीका दी है। ग्रन्थ टीका श्लोक संख्या-५२८० है। मूल श्लोक संख्या-२००० है।

एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है।

२८३. रामकृष्ण काव्य-पं० सूर्य कवि। पत्र संख्या-२२। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८१७ चैत्र सुदी ११। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४०२।

विशेष—अन्वयदीपिका नाम की टीका है। पण्डित आनन्दराम ने प्रतिलिपि की थी।

प्रारम्भ—श्रीमज्जानकीनाथाय नमः।

श्रीमन्मंगलमूर्तिमार्तिशमनं नत्वा विदित्वा ततं।

शब्दब्रह्ममनोरमं सुगुणकलाधिरं जात्मनं ॥

अंतिम—सुलब्धवठारस्तु विलोमवर्ण कार्येऽत्र मर्व्यैरतिमादधातु।

चातुर्यमायाति यत. कवित्वे, नाशो तथा पाक जातमेति ॥

इति श्री सूर्यकवि कृता रामकृष्णकाव्यस्यान्वयदीपिका नाम्नी टीका संपूर्णा।

२८४ वरांगचरित्र—भट्टारक वर्द्धमान देव। पत्र संख्या-६७। साइज, ११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-१८६३ आषाढ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७०।

विशेष—जयपुर के शान्तिनाथ चैत्यालय में विबुध अमृतचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२८५ वासवदत्ता—महाकवि सुबंधु। पत्र संख्या-२६। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४७६

२८६ विदग्धमुखमंडन—धर्मदास। पत्र सख्या-३१ । साइज-११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४० ।

विशेष—यति अमरदत्त ने जयपुर में सं. १८३१ मे पंडित श्रीचद्र के शिष्य चि० मनोरथराम के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२८७ शिशुपालवध—महाकवि माघ। पत्र संख्या-११ । साइज-११×५३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२६ ।

विशेष—केवल १४ वें सर्ग की टीका है, टीकाकार मल्लिनाथ सूरि है।

२८८. श्रीपालचरित्र—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १५८५ आषाढ सुदी १५ । लेखन काल-स० १८४४ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० २२६ ।

विशेष—पूर्णनासा नगर के आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी।

२८९. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल । पत्र सख्या-१३५ । साइज-१२×६३ इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २७ ।

विशेष—४ प्रतियां और हैं।

२९०. श्रेणिकचरित्र—शुभचंद्र । पत्र सख्या-११३ । साइज-११३×४३ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८५ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४१ ।

विशेष—फोडी ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी।

२९१ सप्तव्यसन चरित्र भाषा । पत्र सख्या-११ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १६२१ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७ ।

विशेष—रचना के मूलकर्त्ता सोमकीर्ति हैं।

२९२. सुकुमालचरित्र—सकलकीर्त्ति । पत्र सख्या-४३ । साइज-१०३×४३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४११ ।

विशेष—६ सर्ग हैं। श्लोक संख्या १२०१ है पत्र पानी में भीगे हुए हैं।

२९३. सुकुमालचरित्र भाषा—नाथूलाल दोसी । पत्र संख्या-६५ । साइज-१३×८३ इच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १४० ।

विशेष—प्रारम्भ में चरित्र पद्य में दिया हुआ है फिर उसकी वचनिका लिखी गई है।

प्रारम्भ (पद्य)—श्रीमत वीर जिनेश पद, कमल नमूं शिरनाय ।
जिनवाणी उर में धरू जजू सुगुरु के पाय ॥ १ ॥
पच परम गुरु जगत मे परम इष्ट पहिचान ।
मन वच तन करि ध्यावते होत कर्म की हानि ॥ २ ॥

अंतिम – सर्वारथ सिध लौ गये, शेष जती तज प्रान ।
जानो भवि संक्षेप तैं ईह विध चरित बखान ॥ १२५ ॥
अब सुकुमाल चरित्र का सफल ज्ञान क हेत ।
देश वचनिका मय लिखूं पढो सुनौ धरि चित ॥ १२६ ॥
वशि प्रमाद कहुं भूलि कै अरथ लिख न जो होय ।
पंडित जन सब सोधियो, मूल ग्रथ अवलोय ॥ १२७ ॥

वचनिका पद्य न०८८ की —

अर झूठ वचनका बोलना तै बुद्धि को नाश हो है । अपजस फैलै है । अर सर्व जीवन कै अविश्वास को पात्र हो है । बहुरि राजादिकनि तैं हाथ पांव कान नाक जीभ आदि का छेद रुप दड पावै है ।

अन्तिम—आदि अत मगल करो श्री वृषभादि जिनेश ।
जैन धर्म जिन भारती, हर संसार क्लेश ॥

सवैया – ढूंढाहड देश मध्य जैपुर नगर सो है,
च्यार वर्ण राह चाले अपने सुधर्म की ।
रामसिंह भूपत के राज मांहि कमी नांहि,
कमी कछु दृष्टि परै जानौ निज कर्म की ॥
वैश्यकुल जैनी को पूरब कृत्य पुण्य भर्यो,
पायो यह खोलो अब मुदी दृष्टि धर्म की ।
जैन वैन कान सुनौ आतमस्वरुप मूनो,
चार अनुयोग भनौ यही सीख मर्म की ॥ २ ॥

चौपाई—दोसी गोत दुलीचद नाम । ताकी सुत शिवचद अभिराम ॥
नाथुलाल तासु सुत भयौ । जैन धर्म को सरणो लयो ॥ ३ ॥
श्रीदीवाण सगही अमरेश । पाय सहाय पढ्यो श्रुत लेश ॥
कासलीवाल सदासुख पास । फिर कीनो श्रुत को अभ्यास ॥ ४ ॥
श्री सुकुमाल चरित्र रसाल । देख कही हरचद गगवाल ॥
होत वचनिका मय जो एह । सब जन बांचै हित गेह ॥ ५ ॥

विन व्याकरण पढे नही ज्ञान । मूलग्र थ को होइ निदान ॥
अैसी प्रार्थना तनें वसाय । मूल ग्र थ को पाय सहाय ॥ ६ ॥
भावारथ सो लिखयो एह । देश वचनिका मय धरि नेह ॥
वाचौ पढौ पढावौ सुनौ । आत्म हित कू नीकृ मुनौ ॥ ७ ॥
जो प्रमाद वस तै कुछ इहा । मोलपने तैं मैंने कहा ॥
सो सव मूल ग्र थ अनुसार । सुध करयो वुध जन सुविचार ॥ ८ ॥
उनवीससतठारहसार । सावण सुदी दशमी गुरुवार ॥
पूरण भई वचनिका एह । वाचौ पढौ सुनौ धरि नेह ॥ ९ ॥

दोहा—मगलमग मगल करन वीतराग चिद्रूप ।
मन वच कर ध्यावतै, हो है त्रिभुवन भूप ॥ १० ॥

इति श्री सकलकीर्ति आचार्य विरचित सुकुमाल चरित्र सस्कृत ग्र थ ताकी देशभाषा वचनिका समाप्ता ॥

२६४. **सीताचरित्र—कवि बालक** । पत्र सख्या–११३ । साइज–१३×६½ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १७०३ मगसिर सुदी ५ । लेखन काल–स० १७६८ सावन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६२

विशेष—प० सुखलाल ने केशूण नगर में प्रतिलिपि की थी । प० सुखराम का गोत ठोलिया, वासी शेखावाटी, वास हिंगूणया था ।

२६५. **हनुमतचौपई—ब्रह्मरायमल्ल** । पत्र सख्या–४० । साइज–१०×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १६१६ । लेखन काल–स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन न० १८० ।

विशेष—छोटेलालजी ठोल्या ने मन्दिर दाणावलि (दीवानजी) के पंडित सवाई रामजी से ⁾ देकर पुस्तक सवत १६०२ में ली थी ।

२६६. **हनुमच्चरित्र—ब्रह्म अजित** । पत्र सख्या–८६ । साइज–१०½×५ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० २३६ ।

विशेष—ग्र थ २००० श्लोक प्रमाण है प्रति प्राचीन है ।

२६७ **होलिकाचरित्र—जिनदास** । पत्र सख्या–१०६ । साइज–११½×५ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० २३८ ।

विशेष—ग्र थ श्लोक संख्या ६४३ प्रमाण है ।

विषय—पुराण साहित्य

२६८. आदिपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या-३४५ । साइज-१२½×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७३६ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५८ ।

विशेष—पालम्ब नगर निवासी विहारीदास के पुत्र निहालचंद जैसवाल ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

२६६ आदिपुराण—पुष्पदंत । पत्र संख्या-४ से २७६ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-हिंदी । भाषा-अपभ्रंश । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५४३ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६४ ।

विशेष—एक प्रति और है । लेकिन वह अपूर्ण है ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—अथ श्रीविक्रमादित्यराज्यात् संवत् १५४३ वर्षे आसोज सुदी ६ गुरुवारे श्री हिसारपेरोजाकोट सलतान श्रीवहलोलसाहराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्रदेवा तत् शिष्य श्री मुनि जयनंदिदेवा तत् शिष्यणी बाई गूजरी निमित्त श्री खंडेलवाल वंशे क्षेत्रपालीय गोत्रे सनामपुरवास्तव्ये जिनशासनप्रभावकपरमश्रावकसंघपतिकल्हू नामा तत्पत्नी शीलशालिनी साध्वी राणी नाम्नी तयो चत्वार पुत्रा अनेकतीर्थयात्रादिमहामहोत्सवकारापिका अर्हंतादिपंचपरमेष्ठिचरणारविंदसेवनैकचंचरीका संघपति हवा स० धारा स० कामा, स० सुरपति नामधेया तन्मध्ये संघपति कामा भार्या विहितानेकव्रतनियमतपोविधानादिधर्मकार्या साध्वी कमलश्री तत्पुत्रौ देवपूजादिषट्कर्मपद्मिनीखंडमार्त्तण्डौ हस्तिनागपुरतीर्थयात्राप्रभावनाकारणोपपन्न पुन्यबलप्रचंडौ स० भीवा स वच्छकौ संघपति भीमाख्यजाया देवगुरुशास्त्रभक्तिविधानप्रलब्धछाया साध्वी भीवश्री इति प्रसिद्धि तद्नंदने प्रथननामा गुरुदास तत् कलत्र शीलाद्यनेकगुणपात्रे गुणश्री नामिका तत्सुतो चिरंजीव जैरणमल संघपति वछू गेहनी विनयादिगुणांसुतद्वाहिनी वडलसिरि इति रुधि । तत् तनुजो जिनचरणकमल सेवनैकचंचरीका स० रावणदासाख्य तज्जननी शीलविनयादिगुणबाधक सरस्वती सज्ञिका । एतेषांमध्ये साध्वीया कमलश्री तया निज पुत्र स० भीवा वच्छूकयो न्यायोपार्जित वित्तेन इदंश्री आदिपुराणपुस्तकं लिखापित ॥ लिखित महेश्वर सोमा सुत उधाकेन इद पुस्तक ।

३०० आदिपुराण भाषा—पं० दौलतराम । पत्र संख्या-६४८ । साइज-१३½×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

ग्रन्थ २३७०० श्लोक प्रमाण है । एक प्रति और है ।

३०१ उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या-३८१ । साइज-१२½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६२ चैत्र सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १५६ ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है। अजमेर पट्ट के भ० देवेन्द्रकीर्ति के पट्ट में आचार्य रामकीर्ति के समय में लश्कर (ग्वालियर) में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गयी थी। इसमें ६६ से ६८ तक पत्र नहीं हैं।

एक प्रति और है। यह प्रति प्राचीन है।

३०२ **नेमिजिनपुराण—ब्रह्मनेमिदत्त**। पत्र संख्या–१८३। साइज–११×५ इन्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १६१० आषाढ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० २३०।

विशेष—तक्षकगढ में राजा रामचन्द्र के शासन काल में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई थी। २ प्रतियां और हैं।

३०३. **पद्मपुराण—रविषेणाचार्य**। पत्र संख्या–१ से १५०। साइज–१३×६½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १६१।

३०४. **पद्मपुराण—पं० दौलतराम**। पत्र संख्या–६२१। साइज–१२×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–पुराण। रचना काल–सं० १८२३ माघ सुदी ६। लेखन काल–सं० १६०० आषाढ सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन नं० ५८

विशेष—दयाचंद चांदवाड ने लिपि की थी।

३०५ **पाण्डवपुराण—शुभचन्द्र**। पत्र संख्या–२०२। साइज१२½×६½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–सं० १६०८ भादवा बुदी २। लेखन काल–सं० १७६२ आसोज सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१।

विशेष—श्वेताम्बर यति गोरखदास ने बसवा में प्रतिलिपि की थी।

३०६ **बलभद्रपुराण—रइधू**। पत्र संख्या–१४५। साइज–१२×८½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–पुराण। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७३२ फागुन बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० १६६।

विशेष—औरंगजेब के शासनकाल में बैराठ नगर में अग्रवाल वंशोत्पन्न मुंगिल गोत्रीय संघी साधु के वंशज संघी श्री कुशलसिंह ने पेमराज से प्रतिलिपि कराई थी।

३०७ **रामपुराण (पद्मपुराण)—भ० सोमसेन**। पत्र संख्या–२२४। साइज–११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–सं० १६५६। लेखन काल–सं० १८०८ माह सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० २५६

विशेष—श्वेताम्बर जयदास ने प्रतिलिपि की थी। कुल ३३ अधिकार हैं। ग्रन्थाग्रन्थ संख्या–५०० श्लोक प्रमाण है।

३०८. **वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति**। पत्र संख्या–१६४। साइज–१०½×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८५८। पूर्ण। वेष्टन नं० २५७।

विशेष—इसमें कुल १६ अधिकार है। महात्मा मालगराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०६ शान्तिनाथपुराण—सकलकीर्ति। पत्र संख्या-८६ से १८४। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१८ माह सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० २५८।

विशेष—कुल १६ अधिकार हैं। श्लोक संख्या ४३८० है। एक प्रति और है।

३१० हरिवंशपुराण—यशःकीर्ति। पत्र संख्या-१५१। साइज-११½×५¾ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-पुराण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१५ सावनसुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० १६६।

विशेष—८००० प्रमाणश्लोक ग्रंथ है। बादशाह अकबर के शासन काल में अग्रवाल वंशोत्पन्न मित्तल गोत्रीय रेवाडा निवासी साह असराज के वंशज सा. भीमसेन ने प्रतिलिपि कराई थी। लेखक प्रशस्ति काफी विस्तृत है।

३११ हरिवंशपुराण—ब्र० जिनदास। पत्र संख्या-३६६। साइज-१०½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७१२ अगहन बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० १६८।

लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। एक प्रति और है।

३१२ हरिवंशपुराण—पं० दौलतराम। पत्र संख्या-६८४। साइज-१३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पुराण। रचना काल-सं० १८२६ चैत्र सुदी १। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १४५।

विशेष—बलदेव कृत जयपुर वंदना भी है।

विषय-कथा एवं रासा साहित्य

३१३. अष्टाह्निकाकथा—पत्र संख्या-३५। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१० मगसिर बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ५२।

विशेष—गुजराती हिन्दी मिश्रित है। प्राकृत गाथाऐं हैं उन पर टीका है। पन्नालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

प्रारम्भ—शांति देव प्रणाम करि निश्चय मन में ध्याय।
कथा अठाईनी लिखी, भाषा सुगम बनाय॥

यहा समस्त खोट कर्म री पालने वाली, निमल धर्म री उपजावने वाली और कर्म तिगरी नासरी करिने वाली फेर, यह लोग रे विषै परलोक रे विषै परलोक रे विषै कियौ छै। घणौ सुख जिन्हे ऐसा पयूषणा पर्व आयौ थकी समस्त देवता भवनपति इन्द्र मेल्या होय ते नंदीश्वर नामा आठमा द्वीप रे विषै धर्म री महिमा करनावे जावे ॥

अन्तिम—मति मदिर किनी सरस कथा अठाई देख।
पद में अशुध केई हुवो कवि जन लीजो देख ॥

३१४. **अष्टाह्निका कथा**—पत्र सख्या-२३। साइज-१०×४½ इन्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८८२ आषाढ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८१।

विशेष—पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी। अन्त मे निम्न दोहा भी है —

रतन कोह सुख सकडो अलवेली पणीयार।
दपत पाणि भरै तीसै पुरष री नार ॥ १ ॥

३१५ **अनतव्रतकथा**—पत्र सख्या-६। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-स० १९०१ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन न० ४२५।

३१६. **अष्टाह्निका कथा—रत्ननदि**। पत्र सख्या-४। साइज-११½×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ७५।

विशेष—सस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिया हुआ है। प्रति प्राचीन है। श्लोक सख्या-८६ है।

३१७. **आराधनाकथाकोष**—पत्र सख्या-८२। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-स० १५८५ माघ बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन न० ३२५।

विशेष—हिसार पैरोजावादपत्तने सुरत्राण मयलोलिसाहि राज्ये गुणभद्र देवा-तेषा आम्नाये साधु चोढा
एतत् कथाकोषम य लिखापित। ब्रह्म घाटम योगदत्त।

प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है। पत्र ३४ से ८२ तक फिर लिखाये गये हैं। अन्तिम पत्र जीर्ण तथा फटा हुआ है।

३१८. **कमलचन्द्रायणकथा**—पत्र सख्या-२। साइज-१०×४½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४२५।

विशेष—१५४ और १५५ वां पत्र अन्य ग्रन्थ के हैं।

३१९. **कालिकाचार्यकथानक—भावदेवाचार्य**। पत्र सख्या-८। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३८४।

विशेष—गाथा सख्या १०० हैं। पत्रों पर सुनहरी पक्ति है।

३२० **आराधनाकथाकोश**—पत्र सख्या-५६ । साइज-१२½×८ इश्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचनाकाल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८८ ।

निम्न कथाओं का सग्रह है —

सम्यक्त्वोद्योत कथा, अकलक स्वामी की कथा, समतभद्राचार्य की कथा, सनतकुमार चक्रवर्ती की कथा, सञ्यत मुनि की कथा, मधुपिंगल की कथा, नागदत्त मुनि की कथा, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की कथा, अजन चोर की कथा, अनतमति की कथा, उद्यापन राजा की कथा रेवती रानी की कथा, जिनेन्द्र भक्त सेठ की कथा, वारिषेण की कथा, विष्णुकुमार कथा, वज्रकुमार कथा, प्रातिकर कथा, तथा जम्बूस्वामी कथा । ये कुल १८ कथाएँ हैं ।

३२१ **नन्दीश्वरविधान कथा**—पत्र सख्या-४ । साइज-१०½×५½ इश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ११६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३२२. **नन्दीश्वरव्रत कथा—शुभचन्द्र** । पत्र सख्या-७ । साइज-११×५ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३२३. **नागकुमारपचमी कथा-मल्लिषेण सूरि** । पत्र सख्या-२१ । साइज-१०×४½ इश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २८१ ।

विशेष—४ सर्ग हैं । ग्रथ श्लोक संख्या ४६५ प्रमाण है ।

३२४. **निशिभोजनकथा—भारामल्ल** । पत्र सख्या-१० । साइज-१२×८ इश्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ११३ ।

प्रति प्राचीन है ।

३२५ **पुण्याश्रवकथाकोष—दौलतराम** । पत्र सख्या-८१ । साइज-१२×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । गद्य । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल स० १७७७ । पूर्ण । वेष्टन न० ३२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३२६. **भक्तामरस्तोत्र कथा**—पत्र सख्या-३७ । साइज-११½×५ इश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० २१५ ।

३२७ **भक्तामरस्तोत्रकथा भाषा—विनोदीलाल** । पत्र सख्या-८७३ । साइज-११½×८ इश्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७४७ सावन सुदी २ । लेखन काल-स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३ ।

विशेष—थानजीलाल जी ने प्रतिलिपि कराई थी। कुल २८ कथाएँ हैं। एक प्रति और है।

३२८ **मदनमंजरीकथा प्रबन्ध—पोपटशाह** । पत्र संख्या-२५ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-मगसिर सुदी १० । लेखन काल-सं० १७०६ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २६३ ।

३२९ **मुक्तावलिव्रतकथा—खुशालचंद** । पत्र संख्या-५ । साइज-८¾×७¾ इञ्च । विषय-कथा । रचना काल-सं० १८८२ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १९६ ।

३३०. **मेघकुमारगीत—कनककीर्त्ति** । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४० ।

विशेष—प्रति प्राचीन है:—४६ पद्य हैं।

श्री वीर जिणंद पसाइ, जे मेघकुमार रिषि गाइ ।
ताही आगली वीनस वीजाइ, वसी सपति सगली पाइ ॥ ४६ ॥ धन धन रै० ॥
जे मुनीवर मेघकुमार, जीणी चारित पालउसार ।
गुणेरू श्री जीन माणीक सीस, इम कनक भणय नीस दीस ॥

॥ इति मेघकुमार गीत सपूर्ण ॥

३३१ **राजुलपच्चीसी—लालचंद विनोदीलाल** । पत्र संख्या-४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

३३२. **रैदव्रत कथा—देवेन्द्रकीर्त्ति** । पत्र संख्या-४ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२ ।

३३३. **रोहिणीव्रत कथा—भानुकीर्ति** । पत्र संख्या-४ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

३३४ **वकचोर कथा (धनदत्त सेठ की कथा)—नथमल** । पत्र संख्या-१४ । साइज-१०½×७½ इञ्च भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७२५ अषाढ बुदी ३ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७ ।

विशेष—एक प्रति और है। चाकसू का विस्तृत वर्णन है। पद्य संख्या २६१ है।

प्रारम्भ— —चौपाई—

प्रणमू पच परमेष्ठी सार । तिह सुमरत पावं भवपार ॥
दूजा सारद नें बिस्तरू । बुधि प्रकास कवित उचरू ॥
गुरु निग्रर्थ नमू जगदीस । मरण्या तीस सहस चौबीस ॥
वाणी तिह्न कहै जनसार । सुणत भव्य जिन उतरै पार ॥

गणधर मुनिवर करूं वंदना । वक चोर की कथा मन तणां ॥
ता सीखा पाली निज मांम । ताको भयौ सोलहो निवाण ॥ ३ ॥
दूजी कथा सेठ की कही । नाम धनदत्त धर्म नगरी सही ॥
मटा व्रत पाले निज सार । ऊँच नीच को नही विचार ॥ ४ ॥

अन्तिम—पढमी सुणमी जे नर कोय । क्रम २ ते मुक्ति ही होय ॥
सहर चाटसू सुवस वास । तिह पुर नाना भोग विलास ॥ २७७ ॥
नवसै कूवा नव मैं ठाय । ताल पोखरी कह्या न जाय ॥
तामै वडो जगोली राव । सवे लोग देषण को भाव ॥ २७८ ॥
पेंडीत माहि बणा चोकोर । नीर भरै नारी चहु ओर ॥
चकवा चकवी केल कराहि । वधिक ताहि नहीं दुख दाय ॥ २७९ ॥
छत्री चोंतरा बैठक घणी । अर मसजद तुरका की बणी ॥
चहुँधा रूप वृक्ष बहु छाय । पथी देखि रहे विरमाय ॥ २८० ॥
चहु धा वाट अधिक बणाय । पीवै संग वछा अर गाय ॥
सहर वीचि तें कोट उतंग । ताहि बुरज अति बणी सुचंग ॥ २८१ ॥
चहु धा खाई भरी सुभाय । एक कोस जाणी गिरदाव ॥
चहु धा वणे अधिक बाजार । वसै वणिक करै व्यापार ॥ २८२ ॥
कोई सोनो रूपौ कमै । कोई मोती माणिक लमैं ॥
कोई वेचैं टका रोक । केई बजाजी रोका ठोकि ॥ २८३ ॥
कोई परचूना वेचै नाज । केई एकठे मेलै साज ॥
केई उधार दाम की गाठि । केई पसारी माडै हाटि ॥ २८४ ॥
च्यार देव ए जिणवर तणा । ता महि विंव वडो अति घणा ॥
करै महोछै पूजा सार । श्रावक लीया सव आचार ॥ २८५ ॥
बाई जती रहण को चाव । उनहीं हाग टोजे करि भाव ॥
आर देहुरे वैसनु तणा । धर्म करै सगला आपणा ॥ २८६ ॥
नागगमाहि राज ते धरै । पोग छतीसो लीला करै ॥
कर चोवा चदन महकाय । कह अगरजा फल विकसाय ॥ २८७ ॥
नगर नायका सोभा धरै । पानु नदु रचित बोली करै ॥
अैसो सहर और नही सही । दुखी दलिद्री दीसै नही ॥ २८८ ॥
हाकिम से मदारखां सही । और जोर कोउ टीमें नही ॥
पा । पजा चाने जाय । मीलवत नर लाभ लहाय ॥ २८९ ॥

संवत सतरा सै पचीस । आषाढ़ बदी जाणो वरतीज ॥
बारज सोमवार ते जाणि । कथा सपूर्ण भई परमाण ॥ २६०॥
पढसी सुणसी जे नर कोय । ते नर स्वर्ग देवता होय ॥
भूल चूक कही लिखयो होय । नथमल षमा करो सब कोय ॥ २६१ ॥
॥ इति श्री वकचोर धनदत्त कथा सपूर्णम् ॥

विशेष – एक प्रति और है ।

३३५. व्रतकथाकोष—श्रुतसागर । पत्र संख्या–८० । साइज–१२×५½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८४ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० १५३ ।

विशेष—भिलाय में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । ४ प्रतियां और हैं ।

३३६. व्रतकथाकोष—खुशालचंद । पत्र संख्या–८० । साइज–१२×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन न० २० ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

निम्न १३ कथाओं का संग्रह है—

मेरुपंक्ति कथा, दशलक्षण कथा, मुक्तावलीव्रतकथा, तपकथा, चंदनषष्ठीकथा, षोडषकारणकथा, ज्येष्ठ जिनवरकथा, आकाशपंचमीव्रतकथा, मोक्षसप्तमीव्रतकथा, अक्षयनिधिकथा, मेघमालाव्रतकथा, लब्धिविधानकथा और पुष्पांजलिव्रतकथा ।

३३७. शुकराज कथा (शत्रुंजयगिरि गौरव वर्णन)—माणिक्य सुन्दर । पत्र संख्या–२१ । साइज–१०½×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७१ ।

३३८. सप्तव्यसनकथा—सोमकीर्ति । पत्र संख्या–६६ । साइज–११×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–सं० १५२६ । लेखन काल–सं० १७१७ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

विशेष—जोशी भगवान ने सिलोर में प्रतिलिपी की थी कुल ७ अध्याय हैं । श्लोक संख्या २१६७ प्रमाण है ।

३३९. सिंहासनद्वात्रिंशका—पत्र संख्या–४१ । साइज–६×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० २८६ ।

विशेष—बत्तीसों कथाएं पूर्ण हैं पर इसके बाद जो कुछ और विवरण है वह अपूर्ण है ।

विपय—व्याकरण शास्त्र

३४० आख्यात प्रक्रिया । पत्र संख्या–७२ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१६ ।

विशेष—श्लोक सख्या १५० हैं ।

३४१. दुर्गपदप्रबोध—श्री वल्लभवाचक हेमचंद्राचार्य । पत्र सख्या–३६ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–सं० १६६१ । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४५ ।

विशेष—लिंगानुशासन की वृत्ति है । प्रति प्राचीन है ।

३४२. धातु पाठ—वोपदेव । पत्र सख्या–१४ । साइज–१०½×७¾ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १८११ मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०० ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ संख्या ४०५ हैं । एक प्रति और है वह सस्कृत टीका सहित है ।

३४३. पंचसन्धि । पत्र सख्या–६ । साइज–८¾×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

३४४. पंच सन्धि टीका । पत्र सख्या–२८ । साइज–८¾×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १७८२ ज्येष्ठ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

विशेष—सं० १७८२ जेठ में नदलाल यति ने टीका लिखी थी ।

३४५. प्रक्रियाकौमुदी—रामचन्द्राचार्य । पत्र संख्या–६१ । साइज ११¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०८ ।

प्रति प्राचीन है । श्लोक सख्या–२५०० है ।

३४६ प्रयोगमुख्यसार । पत्र सख्या–११ । साइज–८×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १७८८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८८ ।

३४७. प्राकृतव्याकरण—चण्ड । पत्र संख्या–३ । साइज–१०×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १८६६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८८ ।

३४८ प्राकृतव्याकरण । पत्र संख्या–१८ । साइज–११¾×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

३४९ लिंगानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र संख्या–५ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन ४४१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३५०. **सारस्वत धातुपाठ —हर्षकीर्ति** । पत्र संख्या-१८ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८१ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६७ ।

विशेष खंडेलवाल ज्ञातीय हेमसिंह के पठनार्थ ग्रन्थ रचना की गई तथा वसु ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

३५१ **सारस्वत प्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य** । पत्र संख्या-१७ । साइज-११×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६४ सावन सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष—६ प्रतियां और हैं ।

३५२. **सारस्वत प्रक्रिया—नरेन्द्रसूरि** । पत्र संख्या-७४ से १३३ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४१५ ।

विशेष—केवल कृदंत प्रकरण है ।

३५३ **सारस्वतप्रक्रिया टीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य** । पत्र संख्या-५६ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५० ।

विशेष—द्वितीय वृत्ति तक पूर्ण है ।

३५४. **सारस्वत रूपमाला—पद्मसुन्दर** । पत्र संख्या-६ । साइज-१०¾×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१६ ।

विशेष—श्लोक संख्या-५२ है । पण्डित ऋषभदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३५५. **सिद्धान्त चन्द्रिका (कृदन्त प्रकरणी)—रामचन्द्राश्रम** । पत्र संख्या-२१ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६६ द्वितीय वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०८ ।

विशेष—जयनगर में घासीराम ने महात्मा फतेहचंद से प्रतिलिपि कराई । तृतीय वृत्ति है । एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण हैं ।

३५६. **सिद्धान्त चन्द्रिका वृत्ति—सदानंद** । पत्र संख्या-२८४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५४ ।

३५७. **हेमव्याकरण—आचार्य हेमचन्द्र** । पत्र संख्या-२५ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२१ ।

विशेष—पत्र के कुछ हिस्से में मूल दिया हुआ है तथा शेष में टीका दी हुई है । चुरादि गण तक दिया हुआ है ।

विषय-कोश एवं छन्द शास्त्र

३५८. अनेकार्थ मंजरी—नंददास। पत्र संख्या-५। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कोष। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४०६।

विशेष—पद्य संख्या-११९ है।

३५९. अनेकार्थ संग्रह—हेमचन्द्र सूरि। पत्र संख्या-६६। साइज-१२½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १४७७ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१५।

विशेष—ग्रंथाग्रंथ संख्या २०४ है। पत्र जीर्ण है। पत्र ५८ तक संस्कृत टीका भी है।

३६०. प्रति नं० २। पत्र संख्या-५४। साइज-१०×५ इञ्च। लेखन काल-सं० १४८० अषाढ। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१६।

विशेष—७ काण्ड तक है। सागरचंद सूरि ने प्रतिलिपि की थी।

३६१ अभिधानचिंतामणि नाममाला—आचार्य हेमचंद्र। पत्र संख्या-१२६। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८०४। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७५।

विशेष—एक प्रति और है।

३६२ अमर कोष (नाम लिङ्गानुशासन)—अमरसिंह। पत्र संख्या-११०। साइज-११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोष। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३९१।

विशेष—द्वितीय काण्ड तक है। पत्रों के बीच २ में श्लोक हैं। एक प्रति और है उसमें तृतीय काण्ड तक है।

३६३. प्रति नं० २। पत्र संख्या-१८७। साइज-१०½×४½ इञ्च। टीका काल-सं० १६८१ ज्येष्ठ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८०।

विशेष—संस्कृत में टीका दी हुई है एवं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुऐ हैं।

३६४. धनंजय नाम माला—धनंजय। पत्र संख्या-१६। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७४७ माघ। पूर्ण। वेष्टन नं० ४०५।

श्लोक संख्या-२०० है।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई तथा टोघराज ने संशोधन किया।
एक प्रति और है।

३६५ शब्दानुशासन-वृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-१५८ । साइज-१०½×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५२४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१४ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५२४ वर्षे श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्रसूरिविजय लब्धविसालगणि, वा० शान्तिरत्नगणि शिष्य वा० धर्मगणि नाम पुस्तक चिरनधात् ।

३६६ वृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार । पत्र संख्या-७ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६२ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ ।

विशेष—५ प्रतियां और हैं जिनमें एक संस्कृत टीका सहित है ।

३६७ वृत्तरत्नाकर टीका—सोमचंद्रगणि । पत्र संख्या-४७ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । टीका काल-सं० १३२६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २१६ ।

३६८. श्रुतबोध—कालिदास । पत्र संख्या-१ । साइज-६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३३ ।

विशेष—६ फुट लम्बा एक ही पत्र है । पद्य संख्या ४३ है । इसके बाद स्वप्नाध्याय दिया हुआ है जिसके ७६ पद्य हैं । इसकी प्रतिलिपि सुखराम मोंटे ने (खंडेलवाल) स्वपठनार्थ सं० १८८५ मगसिर बुदी ६ को वटेश्वर में की थी ।

विशेष—एक प्रति और है ।

विषय-नाटक

३६६. प्रबोधचन्द्रोदय नाटक—श्रीकृष्ण मिश्र । पत्र संख्या-४७ । साइज-१०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८३ फाल्गुन सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

३७०. **मदन पराजय—जिनदेव** । पत्र संख्या-५० । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २४० ।

विषय-लोकविज्ञान

३७१. **त्रिलोकप्रज्ञप्ति—यति वृषभ** । पत्र संख्या-२८३ । साइज-१२½×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४ ।

३७२ **प्रति नं० २** । पत्र संख्या-२०६ । साइज-१२×६ इञ्च । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३३२ ।

विशेष—ग्रंथ के साथ जो लकड़ी का पुट्ठा है उस पर चौबीस तीर्थंकरों के चित्र हैं । पुट्ठा सुन्दर तथा सुनहरी है ।

३७३ **त्रिलोकसार—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र संख्या-२६ । साइज-६¾×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखनकाल-सं० १७६६ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २०८ ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७४ **त्रैलोक्यसार चौपई—सुमतिकीर्ति** । पत्र संख्या-२३ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-हिंदी पद्य । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-सं० १६२७ माघ सुदी १२ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४१ ।

विशेष—१६ पत्र से आगे अजयराज कृत सामायिक क्षमावाणी है । जिसका रचना काल-सं० १७६४ है ।

३७५ **त्रिलोकसार सटीक-मू० कर्त्ता-नेमिचन्द्राचार्य । टीकाकार-सहस्रकीर्ति** । पत्र संख्या-८८ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६ माघ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

विषय—सुभाषित एवं नीतिशास्त्र

३७६ **कामदकीय नीतिसार भाषा—कामन्द**। पत्र सख्या—४। साइज—१०×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—नीति। रचना काल—×। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२८।

प्रारम्भ—अथ कामंदकीय नीतिसार की वात लिख्यते। जाकै प्रभावतै सनातन मारग विषै प्रवर्तै। सो दंड को धारक लक्ष्मीवान राज जयवंत प्रवरतो ॥ १ ॥ जो विष्णुगुप्त नामा आचारिज वडे वश विषै उपजै अयाचक गुणनि करि वडे जे रिषीश्वर तिनके वश मैं प्रथिवी विषै प्रसिद्ध होतो भयो ॥ २ ॥ जो अग्नि समान तेजस्वी वेद के ज्ञातानि मैं श्रेष्ठ अति चतुर च्यारू वेदनि कौ एक वेद नांई अध्ययन करतो हुवो ॥ ४ ॥

अन्तिम—विस्तीर्ण विषय रूप वन विषै दोडतो पीडा उपजायवेको है स्वभाव जाको असो इन्द्रिय रूप हस्ती ताहि आत्मज्ञान रुप अकुश करि वशीभूर्त करै ॥ २७ ॥ प्रयत्न करि आत्मा विषयनि ग्रह ॥ कमदकी ॥ गारशरामजी की लीख ॥

३७७. **चाणक्यनीतिशास्त्र—चाणक्य**। पत्र सख्या—२ से १५ तक। साइज—१०½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—नीति। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४३०।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है तथा आठवें अध्याय तक है। एक प्रति और है। लेकिन वह भी अपूर्ण है।

३७८ **ज्ञानचिंतामणि—मनोहरदास**। पत्र सख्या—६। साइज—१२×८ इन्च। भाषा—हिदी पद्य। विषय—सुभाषित। रचना काल—स० १७२६ माह सुदी ७। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन न० ६३।

३७९ **जैनशतक—भूधरदास**। पत्र सख्या—१०। साइज—११×५ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय—सुभाषित। रचना काल—स० १७८३ पौष बुदी १३। लेखन काल—स० १८६६ मगसिर सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन न० १४।

३८० **प्रति नं० २**। पत्र सख्या—१३। साइज—१०½×५ इन्च। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन न० ११८।

विशेष—इस प्रति में रचना काल स० १७८१ पौष बुदी १३ दिया है।

३८१. **नीति शतक—भर्तृहरि**। पत्र सख्या—६। साइज—१२×५½ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—नीति। रचना काल—×। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७६।

विशेष—श्लोक सख्या—१११ है। एक प्रति और है।

३८२. **नीतिसार—इन्द्रनदि**। पत्र सख्या—५। साइज—११×५ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—नीति। रचना काल—×। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन न० ३३०।

विशेष— श्लोक संख्या ११३ प्रमाण है ।

३८३ शतकत्रय—भर्तृहरि । पत्र संख्या-६७ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८५८ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५१ ।

विशेष -पत्र ३६ तक संस्कृत टीका भी दी हुई है । नीतिशतक वैराग्य शतक एवं शृंगार शतक दिये गये हैं ।

३८४ मनराम विलास—मनराम । पत्र संख्या-१० । साइज-१२×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६५ ।

विशेष—दोहा, सवैया, कवित्त आदि छंदो का प्रयोग किया गया है तथा बिहारीदास ने संग्रह किया है ।

आरम्भ—करमादिक अरिन को हरै अरहत नाम, सिद्ध करै काज सब सिद्ध को भजन है ।
उत्तम सुगुन गुन आचरत जाकी संग, आचार ज भगति वसत जाके मन है ।।
उपाध्याय ध्यान तै उपाधि सम होत, साध परि पूरण को सुमरन है ।
पंच परमेष्टी को नमस्कार मनराम धावै मनराम जोई पावै निज धन है ।।

३८५ राजनीति कवित्त—देवीदास । पत्र संख्या-२४ । साइज-६×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-नीति । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७३ ।

विशेष—११६ कवित्त हैं एवं गुटका साइज है । पत्र १,२,५ तथा अन्तिम बाद के लिखे हुए हैं । ताजगज आगरे के रहने वाले थे तथा औरंगजेब के शासन काल में आगरे मे हीं रचना की ।

३८६ सद्भाषितावली—पन्नालाल । पत्र संख्या-५३ । साइज-१३×८ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६४२ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४ ।

३८७. सिंदूर प्रकरण—बनारसीदास । पत्र संख्या-३७ । साइज-८×६ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । रचना काल-स० १६६१ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३६ ।

विशेष—१८ पत्र से आगे भैया भगवतीदासजी कृत चेतन कर्म चरित्र है जो अपूर्ण है ।

३८८ सुभाषितरत्न सन्दोह—अमितगति । पत्र संख्या-७२ । साइज-१२×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचना काल-स० १०५० । लेखन काल-स० १८०६ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८३

विशेष—मेवात देश में सहाजहानावाद मे प्रतिलिपि हुई । अहमदशाह के शासन काल में लाल इन्द्रराज ने देवादास के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई ।

३८९. सुभाषित संग्रह । पत्र संख्या-२२ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१८ ।

श्लोक संख्या-१११ है।

३६० सद्भाषितावली—सकलकीर्ति। पत्र संख्या-२८। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७७६। पूर्ण। वेष्टन नं० २२१।

विशेष—अमरसिंह छाबड़ा ने टोंक में प्रतिलिपि की थी।

३६१. सुभाषितार्णव—शुभचन्द्र। पत्र संख्या-६५। साइज-११×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७६० भादवा बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० २२४।

विशेष—बसवा में दीपचंद संघी ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है जो संवत् १०८० की लिखी हुई है।

३६२. सुभाषितावली—चौधरी पन्नालाल। पत्र संख्या-१०५। साइज-११×६३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२।

३६३ सूक्तिमुक्तावलि—सोमप्रभाचार्य। पत्र संख्या-४५। साइज-१०३/४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०८।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। अन्तिम पुष्पिका में टीकाकार भीमराज वैद्य लिखा हुआ है। २ प्रतियां और हैं। जो केवल मूल मात्र हैं।

३६४ प्रति नं० २। पत्र संख्या-१८। साइज-१०×४३/४ इन्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १५२।

३६५ प्रति नं० ३। पत्र संख्या-६०। साइज-१२×६१/२ इन्च। लेखन काल-सं० १७६०। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१०।

विशेष—प्रति सटीक है। टीकाकार हर्षकीर्ति हैं।

विषय-स्तोत्र

३९६ इष्टोपदेश—पूज्यपाद। पत्र संख्या-५। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०५।

विशेष—ब्र० धर्मसागर के शिष्य पं० केशव ने प्रतिलिपि की थी। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३९७. एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास। पत्र संख्या-८। साइज-७३/४×४१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२५।

३९८. एकीभावस्तोत्र—वादिराज। पत्र संख्या-८। साइज-१०३/४×५१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८९३ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वेष्टन नं० ७८।

विशेष—२ प्रतियां और हैं। जिसमें एक प्रति टीका सहित है।

३९९ कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्र। पत्र संख्या-१०। साइज-१०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६६५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है। तथा ग्रन्थ कर्त्ता का नाम सिद्धसेन दिवाकर दिया हुआ है। ऋषि रामदास ने प्रतिलिपि की थी। निम्न श्लोक टीका के अंत में दिया हुआ है।

मालवाख्ये महादेशे सारंगपुरपत्तने।
स्तोत्रस्यार्थो कृतो नन्य छात्राय उत्तमविया॥

विशेष—६ प्रतियां और हैं जो केवल मूलमात्र हैं।

४०० कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा—बनारसीदास। पत्र संख्या-८। साइज-११३/४×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०१।

विशेष—इसके अतिरिक्त पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है।

४०१ कुबेरस्तोत्र। पत्र संख्या-१। साइज-११३/४×६३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-× लेखन काल-सं० १६१४ वैशाख सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० २०१।

४०२ चैत्यवंदना। पत्र संख्या-८। साइज-७१/२×३१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६८।

विशेष—इसके अतिरिक्त महावीराष्टक (संस्कृत) भी हैं।

४०३ चौबीसजिनस्तुति—शोभन मुनि। पत्र संख्या-१०। साइज-१०½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३४८।

विशेष—श्लोक संख्या ६४ हैं। प्रथम पत्र नहीं हैं प्रति प्राचीन है। इसका शासन सूत्र नाम भी है।

४०४ चौबीसतीर्थंकरस्तवन—ललित विनोद। पत्र संख्या-१। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८९६ वैशाख बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० ४७५।

४०५. ज्वालामालिनी स्तोत्र । पत्र संख्या-२। साइज-१०×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८३।

४०६. ज्वालामालिनी स्तोत्र । पत्र संख्या-२। साइज-११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८६८ प्र० आसोज सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० १०६।

विशेष—छोटेलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

४०७. जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य। पत्र संख्या-२२। साइज-११×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १५०।

४०८ जिनसहस्रनाम—आशाधर। पत्र संख्या-१४। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३३४।

४०९ जिनसहस्रनाम टीका—श्रुतसागर। पत्र संख्या-१२८। साइज-१२×५¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-× लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० २५६।

विशेष—कुल इसमें १००० (१२३४) पद्य हैं।

४१०. जिनसहस्रनाम टीका—अमर कीर्ति। पत्र संख्या-८४। साइज-११¾×५¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २५५।

प्रति प्राचीन है। मूल कर्त्ता जिनसेनाचार्य हैं। एक प्रति और है।

४११. जखडी—बिहारीदास। पत्र संख्या-४। साइज-६½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८।

विशेष—२६ पद्य हैं।

४१ . दर्शन । पत्र संख्या-५। साइज-८½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४७।

४१३ दर्शनाष्टक ·· । पत्र संख्या-१। साइज-११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०१।

४१४ द्वादशकषट्त्रिंशतिका । पत्र संख्या-३। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६०।

४१५ देवागमस्तोत्र—आचार्य समन्तभद्र। पत्र संख्या-६। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४५।

विशेष—श्लोक संख्या-११७ प्रमाण है।

४१६ देवप्रभास्तोत्र—जयानन्दिसूरि। पत्र संख्या-६। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८५८। पूर्ण। वेष्टन नं० २७८।

विशेष—संस्कृत वृत्ति सहित है। सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

४१७ निर्वाणकाण्डगाथा · । पत्र संख्या-२। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२५।

विशेष—एक प्रति और है।

४१८ नेमिनाथस्तोत्र—शालिपंडित। पत्र संख्या-२। साइज १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १५२।

४१९. पद्मावतीस्तोत्रकवच । पत्र संख्या-२। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र एवं मंत्र शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२५।

४२० पंचपरमेष्ठीगुणस्तवन—पं० डालूराम। पत्र संख्या-३६। साइज-७½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३४।

४२१. पंचमंगल—रूपचन्द। पत्र संख्या-१०। साइज-७½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२५।

४२२. पार्श्वदेशान्तरछंद ··। पत्र संख्या-४। साइज-११½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०१।

४२३ पार्श्वनाथस्तोत्र—मुनिपद्मनंदि। पत्र संख्या-१७ से २५। साइज-१०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५।

४२४　　पार्श्वनाथस्तवन　　　। पत्र सख्या-१ साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६५ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

४२५　　पार्श्वनाथस्तोत्र　　　। पत्र सख्या-१ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

४२६　　भगवानदास के पद—भगवानदास । पत्र सख्या-६५ । साइज-६¾×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पद । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टन न० ४७१ ।

विशेष—१४८ पदों का सग्रह है । विभिन्न राग रागिनि यो में कृष्ण भक्ति के पद है ।

श्रीराग—हरि का नाम विसाहौ रे सतगुरु चोखा वनिज वनाया ।

गोविंद के गुन रतन पदारथ नफा साथ ही पाया । जनम पदारथ पाइ कैं किनहूँ विरलै नेग लगाया ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह मैं मूरख मूल गवाया । हरि हरि नाम श्रराधि कैं जिनि हरि ही सौ मन लाया ।
कहि भगवान हित रामराय तिनि जग मैं श्रानि कमाया ॥११२॥

विशेष—प्रत्येक पद के श्रन्त में "कहि भगवान हित रामराय" लिखा हुश्रा है । ६५ पत्र के अतिरिक्त श्रन्त में ६ पत्रों में विषय वार भिन्न २ रागिनियों की सूची दी है । इसमें कुल १५३ पद तथा ६०० श्लोकों के लिये लिखा है । गोविंदप्रसाद साह के पठनार्थ रूपराम नटेश्वर के गुसाई ने प्रतिलिपि की । पदों की सूची के लेखन का सम्वत् १८२२ दिया है ।

४२७　　भक्तामरस्तोत्र—मानतुगाचार्य । पत्र सख्या-१६ । साइज-५¾×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १४३ ।

विशेष—१२ पत्र से कल्याण मदिर स्तोत्र है जो कि अपूर्ण है । इसी में २ फुटकर पत्रों पर सस्कृत में लक्ष्मी स्तोत्र भी है ।

विशेष – २ प्रति श्रौर है ।

४२८　　भक्तामर टीका　　　। पत्र सख्या-४३ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० २८३ ।

४२९　　भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—भ० रत्नचन्द्र सूरि । पत्र सख्या-८४ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-स० १६६७ आषाढ सुदी ५ । लेखन काल-स० १७२५ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० ३४६ ।

विशेष — वृन्दावती नगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में आचार्य कनककीर्त्ति के शिष्य प० रायमल्ल ने स्वपठनार्थ व परोपकारार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति मत्र तथा कथाओं सहित है ।

अन्तराग परिचयात्मक श्लोक—

श्रीमद् वडवंशेमडणमणिर्महीपेति नामा वणिक ।
तद्भार्या गुणमण्डित व्रतयुता चंपामिति नामधा ॥
तत्पुत्रो जिनपादपङ्कज मधुपो श्रीरत्नचन्द्रो मुनि ।
चक्रे वृत्तिमिमा स्तवस्य नितरां नत्वा श्री वादीन्दुकम ॥ ॥
सप्तषष्ठ्यांकिते वर्षे शोडपाख्येहि सवते ।
आपाढश्वेतपक्षस्य पचम्यां बुधवारके ॥६॥
ग्रीवापुरे महीसिन्धोस्तट भाग समाश्रिते ।
प्रोत्तु गदुर्गसयुक्ते श्री चन्द्रप्रभसद्मनि ॥७॥
वर्णिन कर्मसी नाम्न वचनात मया व्यारचि ।
भक्तामरस्य सद्वृत्ति रत्नचन्द्रे ण सूरिणा ॥८॥

४३०. **भक्तामरस्तोत्र भाषा—जयचदजी छाबडा** । पत्र संख्या–२७ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–स्तोत्र । रचना काल–सं० १८७० कातिक सुदी १२ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७ ।

विशेष—२ प्रतियां और है ।

४३१. **भक्तामर स्तोत्र भाषा कथा सहित—नथमल** । पत्र संख्या–४७ । साइज–१२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–स्तोत्र एव कथा । रचना काल–सं० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १० । लेखन काल–सं० १८५२ सावन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४० ।

विशेष—यह ग्र थ लिखवाकर ब्रह्मचारी देवकरणजी को दिया गया ।

४३२. **भारती स्तोत्र** × । पत्र संख्या–१ । साइज–१७×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

४३३. **भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र—भूपाल कवि** । पत्र संख्या–६ । साइज–११×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १६१ ।

विशेष – संस्कृत मे कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुए है । एक प्रति और है ।

४३४ **लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मनदि** । पत्र संख्या–१ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

४३५ **लघु सहस्रनाम** × । पत्र संख्या–२ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १६० ।

४३६ विचारषडत्रिंशिका स्तोत्र—धवलचन्द के शिष्य गजसार। पत्र संख्या-४। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३५६।

विशेष—सिरिं जिणहंस मुणीसर रजे धवलचद।
मिसण गजसारेण लहिश्रा एसा श्राप हिया ॥४२॥

४३७ विषापहार स्तोत्र—धनजय। पत्र संख्या-३। साइज-११×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३५६।

पद्य संख्या ४० हैं।

४३८ विषापहारस्तोत्र भाषा—अचलकीर्ति। पत्र संख्या-१३। साइज-१०½×५। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०१।

विशेष—पत्र ५ से आगे हेमराज कृत भक्तामर स्तोत्र भाषा भी है। २ प्रतियां और हैं।

४३९. विषापहार टीका—नागचंद्रसूरि पत्र संख्या-२६। साइज-८½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११०।

विशेष—भट्टारक ललितकीर्ति के पट्ट शिष्यों में नागचद सूरि थे।

४४०. विनती—अजयराज। पत्र संख्या-२। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२५।

विशेष – दूसरे पत्र पर रविवार कथा भी दी हुई है पर वह अपूर्ण है। १३ पद्य तक हैं।

४४१ शत्रुञ्जय मुख मडन स्तोत्र (युगादि देव स्तवन)। पत्र संख्या-१०। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-गुजराती। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २६६।

विशेष—ग्रन्थ मे २१ गाथाऐं हैं जिन पर गुजराती भाषा मे अर्थ दिया हुआ हैं। अर्थ के स्थान पर "वखान" नाम दिया है।

४४२ शान्तिनाथ स्तोत्र—कुशलवर्धन शिष्य नगागणि। पत्र संख्या-४। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६२।

विशेष—पद्य संख्या ५२ है।

प्रारम्भ—सकल मनोरथ पूरणो वाछित फल दातार।
वीर जिणेसर नायके जय जय जगदाधार ॥१॥

अन्तिम—ईय वीर जिणवर सयल सुखकर नयर वडली मडनों।
त्रिभुवणो सगति प्रवर युगति रोग सोग विहडनो॥

तप गच्छ निरमल गयण दिनयर श्री विजयसेन सूरिसरो।

कवि कुशलवर्धन नाम ए भणइ नगागणि मंगल करो ॥५२॥

४४३ समवशरण स्तोत्र । पत्र सख्या-७ । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २०० ।

४४४ स्तुति संग्रह—चंद कवि । पत्र सख्या-१ । साइज-८½×६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०४ ।

विशेष—शान्तिनाथ, महावीर तथा आदिनाथ की स्तुतियां हैं ।

दोहा—स्तुतिफल तें मे ना चहुं इन्द्रादिक सुरवास । चंद तणी यह वीनती दीज्यो मुक्ति निवास ॥१८॥

॥ इति आदिनाथजी स्तुति सपूर्ण ॥

४४५. स्तोत्रटीका—आशाधर । पत्र सख्या-३० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १५६१ कातिक सदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६३ ।

विशेष—रायमल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

४४६ स्तोत्र संग्रह । पत्र सख्या-५ । साइज-११½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-संग्रह । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४३ ।

निम्न लिखित स्तोत्र हैं—

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा	र० का०	ले० का०	विशेष
पार्श्वनाथस्तोत्र	जगतभूषण	हिन्दी	×	×	
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मनंदि	सस्कृत	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	,,	×	×	
कलिकुंड पार्श्वनाथस्तोत्र	×	,,	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	,,	×	×	मंत्र सहित
चिन्तामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	×	,,	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	,,	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	द्यानतराय	हिन्दी	×	×	

४४७ सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनंदि । पत्र सख्या-५ । साइज-७¾×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १३७ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

विषय-ज्योतिष एवं निमित्तज्ञानशास्त्र

४४८ **अरिष्टाध्याय**—पत्र संख्या-१० । साइज-१०३/४×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८५६ मगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३१ ।

विशेष—कुल २०३ गाथाएँ हैं । अन्त में ८ पद्य में छाया पुरुष लक्षण है । पं० श्रीचंद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४४६ **क्षीरार्णव—विश्वकर्मा** । पत्र संख्या-१८ । साइज-१२×५३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष (शकुन शास्त्र) । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३७६ ।

४५०. **चमत्कारचिंतामणि—नारायण** । पत्र संख्या-७ । साइज-१०१/२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६६ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६१ ।

विशेष—सवाई जयपुर में महाराजा जगतसिंह के शासन काल में प्रतिलिपि हुई थी ।

४५१. **ज्योतिषरत्नमाला-श्रीपति भट्ट** । पत्र संख्या-१५ । साइज-१०×४१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४६४ ।

४५२ **नीलकंठज्योतिष—नीलकंठ** । पत्र संख्या-५६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-शक सं० १५०१ आसोज सुदी ६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६७ ।

विशेष—नीलकंठ काशी के रहने वाले थे ।

४५३. **पाशाकेवली**—पत्र संख्या-६ । साइज-१११/२×५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०० ।

श्लोक संख्या ४५ है । पाशा फेंक कर उसके फल निकालने की विधि दी हुई है ।

४५४. **भड्डलीविचार—सारस्वत शर्मा** । पत्र संख्या-१४ । साइज-११३/४×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६८ ।

विशेष—प्रत्येक नक्षत्र तथा तिथियों में मेघ की गर्जना को देखकर वर्ष फल जानने की विधि दी हुई है । कुल ३१६ पद्य हैं ।

४५५. **शीघ्रबोध—काशीनाथ** । पत्र संख्या-३४ । साइज-१०×६१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६६ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६६ ।

विशेष—चतुर्थ प्रकरण तक है । श्लोक संख्या-७७ है । उदयचन्द ने स्वपठनार्थ लिपि की थी । गुटका साइज है ।

४५६   षट्पचासिका बालावोध—भट्टोत्पल। पत्र सख्या-१५। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। रचना काल-×। लेखन काल-स० १६५० वैशाख सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६३।

विशेष—मुनि नोरत्नवीर ने नंदासा ग्राम में प्रतिलिपि की थी। यह ग्रंथ कपूर विजय का था। संस्कृत मूल के साथ गुजराती भाषा में गद्य टीका दी हुई है।

प्रारम्भ—प्रणिपत्य रविं मूर्द्ध्ना वराहमिहरात्मजेन सतयशसा।

प्रश्नो कृतार्थ गहनापरार्थमुद्दिश्य पृथु यशसा ॥१॥

टीका—प्रणिपत्य कहीइ नमस्कार करी नइ सूर्य प्रति मूर्द्धा मस्तकि करी वराहमिहरज पडित तेह आत्मज कहीइ पुत्र पृथुयशा एह वर नामि प्रश्न नइ विषइ प्रश्न तीविया कृता कहीइ की थी।

४५७   संक्रान्ति तथा ग्रहातिचारफल—पत्र सख्या-१८ से ४२ तक। साइज-८×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७७३ माघ सुदी ४। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४७०।

विशेष—व्यास दयाराम ने प्रतिलिपि की थी।

विषय-आयुर्वेद शास्त्र

४५८   अंजनशास्त्र—अग्निवेश। पत्र संख्या-१३। साइज-११½×५¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। रचना काल-×। लेखन काल-स० १७५८ आश्विन सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ४५१।

विशेष—श्लोक सख्या २३४ है। नेत्र सबंधी रोगों का वर्णन है। मुल्तान नगर में रामकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी।

४५९.   अष्टांगहृदयसहिता—वाग्भट्ट। पत्र सख्या-१२। साइज-११¾×५¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ५५०।

विशेष—सूत्र मात्र है। जयमल ने प्रतिलिपि की थी।

४६०.   कालज्ञान—पत्र सख्या-११। साइज-१०×५¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८२७ पौष सुदी १५। वेष्टन न० ४५८।

विशेष—श्लोक सख्या-८०० है। सहजराम ने चित्रकोट में अन्नपुराण जी के पास प्रतिलिपि की थी।

४६१. **त्रिशतिकाटीका**—पत्र संख्या-२० । साइज-११३/४×५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५८ ।

४६२. **योगशत—अमृतप्रभसूरि** । पत्र संख्या-१६ । साइज-१०३/४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५५ श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२ ।

विशेष—सपतराम छाबड़ा ने प्रतिलिपि की थी ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री अमृतप्रभ सूरि विरचित योगशतं । संपूर्ण ॥

सं० १८५५ का वर्षे शाके १७२० प्रवर्तमाने मासानामाशुभमासे द्वितियश्रावणमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ षष्ट्म्यां भृगवासरे लिखितं सपतिराम श्रावक गोत्र छाबड़ा निज पठनार्थं ।

४६३. **रसरत्नसमुच्चय**—पत्र संख्या-१३२ । साइज-११३/४×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१२ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५६ ।

विशेष—गुलाबचंद छाबड़ा ने जयपुर में भवानीराम तिवारी की प्रति से लिपि की थी ।

४६४. **रससार**—पत्र संख्या-८ । साइज-१०×४१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५५ ।

विशेष—
प्रारम्भ—श्री गौडीपार्श्वनाथाय नमः पंडित श्री ५ भाग्यनिधानमणि सद्गुरुभ्यः नमः ।

अन्त—इति श्री रससार ग्रंथ निर्विषम् अनुभूतिसंग्रीहतम् बहुशास्त्रसम्मत सम्पूर्णः ।

४६५ **रोगपरीक्षा**—पत्र संख्या-७ । साइज-१२×५१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-आ । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४५७ ।

४६६. **वैद्यजीवन—लोलिम्बराज** । पत्र संख्या-२६ । साइज-१२×५३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१३ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५३ ।

विशेष—श्लोकों के ऊपर टीका दी हुई है ।

४६७. **सर्वज्वरसमुच्चयदर्पण**—पत्र संख्या-३६ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५२ ।

विषय-गणित शास्त्र

४६८. षटत्रिंशिका—महावीराचार्य । पत्र संख्या-४५ । साइज-११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-गणित । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६६५ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६५ ।

विशेष—संवत् १६६५ वर्षे आसोज सुदी ८ गुरौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्तिदेवा । तत्पट्टे भ० शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० सुमतिकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीगुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे वादिभूषणदेवास्तद्गुरुभ्राता ब्र० श्री भीमा तत् शिष्य ब्र० श्री मेघराज तत् शिष्य ब्र० केशव पठनार्थं । ब्र० नेमिदास की पुस्तक है ।

४६९. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-१८ । साइज-११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । लेखन काल-१६३२ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६६ ।

विशेष—प्रति पर छत्तीसी टीका भी लिखी है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है:—

संवत् १६३२ वर्षे जेष्ठमासे शुक्लपक्षे नवम्यां तिथौ गुरुवासरे इलाप्राकारे श्रीसंभवनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टानुसारिण भ० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्री सुमतिकीर्तिदेवा तच्छिष्य ब्र० श्री सुमतिदास लिखापित शास्त्र । भट्टारक श्री गुणकीर्ति शिष्य श्रीमुनिश्रुतकीर्ति पुस्तकं ।

विषय-रस एवं अलंकार शास्त्र

४७० इश्कचिमन—नागरीदास । पत्र संख्या-३ । साइज-११$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-शृंगार रस । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४३८ ।

आरम्भ—इस्क उसी की झलक है ज्यौं सूरज की धूप ।

जहां इस्क तांहां आपहै कादर नागर रूप ॥१॥

कहु कीया नहि इस्क का इस्तमाल सवार ।

सो साहिब सू इस्क हैं करि क्यां सकै गंवार ॥१॥

अन्तिम—जिरद जदम जारी जहां नित लोहू का कीच ।

नागर आसिक लुट रहे इस्क चिमन के बीच ॥४४॥

चलै तेज नागर इफ है इस्क तेज की धार।

और कटै नहीं बार सौ कट्टै करै रिझवार ॥४५॥

४७१. कविकुलकठाभरण—दूलह । पत्र सख्या–११ । साइज–६×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अलकार शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ४७२ ।

प्रारम्भ—पारवती शिव चरन में कवि दूलह करि प्रीति ।

थोरे क्रम क्रम तें कहे अलकार की रीति ॥१॥

चरन वरन लछन ललित रचिरी क्यों करतार ।

बिन भूश्न नहि भूशई कविता वनिता चारु ॥२॥

दीरघ मत सत कविन के अरथा सै लघु तरन ।

कवि दूलह याते कियौ कविकुलकठामरन ॥३॥

जो यह कंठामरन को कठ करै सुख पाई ।

समामध्य सोमा लहै अलकृती ठहराई ॥४॥

चद्रादिक उपमान है वदनादिक उपमेय ।

तुल्य अरथ वाचक लहै धर्म एक सो लेय ॥५॥

मध्य—अप्रस्तुत वरनै प्रसंसा लिए प्रस्तुत की ।

पचधा अप्रस्तुत प्रसंसा होति चाहे तैं ॥

पच्छिन में याही तें भडो है राजहस ।

एक सदा नीर छीर के विवेक अवगाह तैं ॥

प्रस्तुत में प्रस्तुत को घोतन जहाई होइ

प्रस्तुत अकुर तहां वरनौ उछाह तैं ।

फूली रस रली भली मालती समीप तैं

अली कनैर कली कोकले सुदेत काह तैं ॥३२॥

अन्तिम—सूरता उदारता की अदभुत वरनन ।

मिथ्यारुप अति उक्ति भाषै सब लोगु है ॥

दानि ह्वै कें जाचक हुवे रक भरे तेज ।

सूखे सिंधु तेरी रिपु रानी करि सोग्र है ॥
नाम जोग और अर्थ थापिए निरूक्ति ।
सांचे गुपाल भए जो रच्यो राधे सो वियोगु है।
प्रगट निषेध को अनुकथन प्रतिषेध ।
गिर गहिवो नयो तो मानिन को मोग्र है ॥

४७२ वैनविलास—नागरीदास। पत्र संख्या–६। साइज–१०३×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय-शृंगार। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७७।

विशेष—आरम्भ के ४ पत्रों में स्नेहसग्राम प्रतापतेज कृत दिया है जिसके २५ पद्य हैं। इसे सं० १८६८ मे छोटेलाल टोलिया ने ३ आने में खरीदा था ॥१॥

स्नेहसग्राम—आरम्भ—कुंडलिया—

मों हैं बाकी बाक्सी लखी कुंज की ओट ।
समर सस्त्र विछुवा लग्यो लालन लोटहि पोट ॥
लालन लोटहि पोट चोट जब उर में लागी ।
कियो हियो दुस्मार पीर प्रान्न में पागी ॥
ब्रजनिधि बाकेवीर खेत में खडे अगोहे ।
तहां घाव पर घाव करत राधे की मोहे ॥१॥

अन्तिम—नेही वृजनिधि राधिका दोउ समर सधीर
हेत खेत छाडत तही छाके बाके वीर ॥
छाके बाके वीर हथ्य वथ्य न भरि छुट्टे ।
दोऊ करि करि दाव घाव छिन हूं नहि छूट्टे ॥
यह सनेह सग्राम सुनत चित होत विदेही ।
प्रताप तेज की बात जानि है सुघर सनेही ॥२५॥

वैनविलास—आरम्भ —

अहे बावरी वसुरिया ते तप कीनों कौन ।
अधर सुधारस तैं बिमौ हम तरफत विच मोन ॥१॥

अन्तिम - मुरली सुनित में भई आतू द्रगनि विसाल ।
मुख आवै सोही कहे प्रेम विवस व्रज बाल ॥२९॥
नागर हरहि पलाग की दारु धरी दवाय ।
अंग राग वशी लपट्यो हो चिउडी नम काय ॥३०॥
इति श्री नागरीदास कृत वैनविलास संपूर्ण ।

४७३. रसिकप्रिया—केशवदास । पत्र संख्या-२६ । साइज-१२½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-शृंगार । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७३३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६८ ।

विशेष—पद्य संख्या-५७४ हैं । मिश्र श्रामानेरी वाले ने धसवा में प्रतिलिपि की थी । स्वामी गोविंददास की पोथी से प्रतिलिपि हुई थी । सं० १८६८ माह सुदी ६ को छोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने सवाई जयपुर में १।।) रू० निछरावलि देकर यह प्रति खरीदी थी ।

४७४. शृंगारतिलक—कालिदास । पत्र संख्या-४ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-शृंगार । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०६ ।

विशेष—२३ पद्य हैं ।

४७५ शृंगारपच्चीसी—छविनाथ । पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-शृंगार । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७५ ।

प्रारम्भ—कोकिल न हो हिये मतंग महा मस्तक कै ।
वात मातु मत्र की वताई भली वस्त है ॥
फूलै न पलास लाल पौष आइ फैलि गये ।
जग चहु धा राखिवे को वडी दस्त है ॥
मेरी समझाई हिल मिल प्यारी पीतम सों ।
कानि काम भूपति की मान वो ग्रस्त है ॥
कहै छविनाथ आज वकसीष सत छेडि ।
मान गढ पस्त करिवे की करी करत है ॥१॥

अन्तिम—छांडि मकरंद कमलन के मरद भई पाइ कै ।
सुगंध जाको हरत न टारै है ॥
खंजन चकोर मृग मीन सेदखत जाहि ।
चौकत से जहां तहां छपत निचारै हैं ॥
कहै छविनाथ छवि अंगन की देखि ।
जासों हारि गई तिलोत्तमा जाने जग वारे हैं ॥
प्यारे नंद नंदन तिहारे मुख चंद पर ।
वारि वारि डारे वहि नैनन के तारे हैं ॥२५॥

दोहा—माधव नृप की रीझ को कवि छविनाथ विसाल ।
कीन्हे रस शृंगार के कवित्त पच्चीस रसाल ॥२६॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज श्री माधवेश प्रसन्नता व्यवस्थापक गोविंददासात्मज कवि छविनाथ विरचिता श्रृंगारपच्चीसी सोमते ॥ विजैय नाम सवत्सरे दक्षिणायणे हेमत ऋतौ पौषमासे शुक्लपक्षे द्वितीया शुक्रवासरे लिखितमिंद पुस्तक ।

महाराजा माधवसिंह के प्रसन्न करने को गोविंददास के पुत्र छविनाथ ने रचना की थी ।

४७६ हृदयालोकलोचन—पत्र सख्या–१६ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–अलंकार । रचना काल-× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ४७८ ।

स्फुट–रचनायें

४७७ अकलनामा—पत्र सख्या ३ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी सस्कृत । विषय–स्फुट । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ४५६ ।

४७८. अक्षरबत्तीसी—मुनि महिसिंह । पत्र सख्या–२ । साइज–६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–स्फुट । रचना काल–स० १७२५ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १६६ ।

विशेष अन्तिम पद्य—

सतरइसई पच्चीस सवत् कीयो बखाण ।

उदयपुर उद्यम कीयो मुनि महसहि जाण ॥

४७६. ज्ञानार्णव तत्वप्रकरण टीका—पत्र सख्या–१० । साइज–१०½×६¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–योग । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३१२ ।

४८०. गोरसविधि—पत्र सख्या–४ । साइज–६½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–विधान । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ७१ ।

४८१ गोत्रवर्णन—पत्र सख्या–१० । साइज–६×३ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–इतिहास । रचना काल–× । लेखन काल–× पूर्ण । वेष्टन न० १८४ ।

विशेष—गोत्रों के नाम दिये हुये हैं।

४८२. **चौरासी गोत्र**—पत्र सख्या-१। साइज-२१½×१० इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८६२। पूर्ण। वेष्टन न० १८४।

विशेष—खण्डेलवालों के चौरासी गोत्रों के नाम हैं।

४८३. **चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन—नन्दनन्द**। पत्र संख्या-१२। साइज-६×३½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य विषय-इतिहास। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८८६। पूर्ण। वेष्टन न० १८४।

विशेष—पद्य सख्या-१११ है। खण्डेलवालों के ८४ गोत्रों की उत्पत्ति का वर्णन है।

प्रारम्भ दोहा—श्री युगादि रिसमादि गुण, सरण आय गुण गाय।
श्रावक वंस सुग्रंथ रचि अतुल सु सपति थाय ॥१॥
वैस्य वरण में उच्य पद, धर्म दया कौ पाभि।
श्रय कल्यान श्रावक प्रगट, रच्ये गोत्र कुल ग्राम ॥२॥

छद—श्रावक व्रत तीर्थ कर सेय सुच्यारहि वर्ण सु पालत है।
च्यार ही वर्ण सुकर्म क्रिया तव मुक्ति गया सु मालत है॥
श्रीवरवर्द्ध सु मान्य सु स्वामी जु मुक्ति गया सुम तालत हैं।
फेर सुवर्स छह सतीयासिंह वा तव मुनि प्रगटालत है।

चौपाई—अपराजित मुनि नाम सुस्वामी। थान सीधाडा मध कहामी॥
अपराजित मुनि तप सु प्रभाक। जिणसेनाचार्य सु भये ताक॥
श्री जिणसैनचार्य तव होये। सवत येक साल मध्य जोये॥
जिणसैनाचार्य सु मध्य सारा। छह सात मुनि काजु सिधारा॥
प्रभु पदम पद्म ध्यान तहां धर्ता। श्री जिण जोग रटण मुनि कर्ता॥
फिर अवसर इक असहु आया। ग्राम खडेला वन मधि आया॥
मुनिहुँ पाच सह पक्षावलि तह। भूत भवषित वर्त ज्ञान लह॥
मूनी सकल मुनि मुनि की वानी। हैगौ यह उपसर्ग पिछानी॥
होनहार उपसर्ग अठही। होनहार नहि मिटै कठही॥
सावधान मुनि ध्यान सुहावा। जोग सु ध्यान समर्थ सु जूवा॥
ग्राम लगै चतुरासि खडेलै। ताहां इक विघ्न मरी उपजेलै॥
ताहां नरनारी वहुत अति होये। ताहां न्रपति चौंता उपजोये॥
तवै न्रपति सब वीप्र वूलाये। विघ्न मिटै सो करो दुजोये॥

तब इक वींप्र कही सुणि राउये । नरहि मेघ की जग करायें ॥
तब उह न्रपति वाक्य सत्य कीन्हों । नरहि मेघ सायत रचि दीन्हो ॥
नर सब चौरासी के आए । वध्यो विप्र ताहा वहोत कहाये ॥
दुज्य कहि न्रपति मनुप मत चाहि । मिटै विघ्न यह होन कराहैं ॥
ताहा मुनी तप करै सु त्याकु । पकडि मगाय होन किये ज्याकु ॥
हाहाकार वोहोत तहां होयो । न्रपति दुप्टतै काहा कर थोयो ॥
तब वाहा मुनिराज सब आये । जैनसैन आचार्य ताहाये ॥
वडा वडा सब मुनि का स्वामी । जोग ध्यान श्री अतरयामी ॥
नगर सुफल सध्यान लगायो । चक्रेसुरी सु जाप जजायो ॥
वहुरी गुडो जिन थापन कीनो । सांत भई न्रप ग्यान उपीनो ॥
तब आय न्रप वदन कीनी । चमा करो अपराध मुनीनी ॥
न्रपति कहै मुनिराज दयाल । विघ्न मिटै सो करो कृपाल ॥
न्रप सु कही मुनी सर वानी । लाग्यो पाप मानुप को थानी ॥
स्व आतम क्रत नींदत राजा । पर्यो पाय मुनि के सु समाजा ॥
कही भूप मम अघ मेटो । तुम पारस्य मुनिराज सु मेटो ॥
कही मुनि मुनि हे न्रप राजा । श्री जिणधर्म सर्या तुव आजा ॥
दया रूप जिण धर्म प्रकासा । मिटे पाप बुधि निर्मल मासा ॥
श्रावक धर्म न्रपति मुनि लीन्हों । मीटे पाप निर्मल अग तीन्हों ॥
नगर खडेल गांव वयासी । वव्या छा छत्री त्या वासी ॥
द्वय सुनार वव्या छा त्याही । कही भूप ये दोउ व्याही ॥
दोउ वैसु दोहाडी न्यारी । श्रावक धर्म मूल सुखकारी ॥
इक कही आमणी देवी । दूजा वसु मोहणी तेवी ॥
चोरासी सुगोत्र श्रावक का । नीकै रचौ मली बुधि सुखका ॥
गोत्र वस अरु नाम की हाडी । जिणसु धर्म तरु नीकी वाडी ॥

अन्तिम—सवत १८ सह गिनो अब्ठनीवासी साल ।
चैत क्रम्न तेरसि गुरु सुम ग्रथ पूर्णाल ॥ १०६ ॥
मन वछित पठियो सुनै कुल श्रावक गुणसार ।
नद नद देदत सुख, न देचा सिर मार ॥ ११० ॥

इति श्री ग्रंथ श्रावक गोत्र गुण सार नद नद रचिते सपूर्ण । सुम ॥

लीखी गणेश लाल कवी स्वतं कृत । लिखायत राज्य श्री चपाराम का नद चिरजीव ।। पुत्र पौत्र कुल वृद्धि सुख सपति फल प्राती सत्येव वाक्य ।। १११ ।।

४८४ **जैनमार्तण्डपुराण—भ० महेन्द्र भूषण** । पत्र सख्या–१०२ । साइज–१२×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धान्त एव आचार । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८५३ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० १६७ ।

विशेष—भ० महेन्द्रभूषण ने प्रतिलिपि कराई थी । ग्रन्थ का दूसरा नाम कर्म विपाक चरित्र भी है ।

प्रारम्भ —अखडात्मप्रज्ञानलजनित: तीव्रातिशयितज्वल ।

ज्वालावलीनिचय परिदग्धाखिलमल: ।।

महासिद्ध: सिद्धै, कृतचरणपकेरुहनुति ।

महावीरस्वामी जयति जगतां नाथ उ दत ।।१।।

अन्तिमस्तीर्थकरो महात्मा महाशय शीलमहाम्बुराशि ।

नमोस्तु तस्मै जगदीश्वराय श्रीमन्महावीरजिनेश्वराय ।।२।।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्रीमज्जैनमार्तंडमहापुराणे श्रीमद्भट्टारक जिनेन्द्रभूषण पट्टाभरण श्री भट्टारक महेन्द्रभूषण द्वितिय नाम कर्मविपाक चरित्र कृते चित्रांगदाधि मोक्षप्राप्तवर्णनो नवमोऽधिकार समाप्तोयम्ग्रंथ ।।

४८५ **नदबत्तीसी—हेमविमल सूरि** । पत्र सख्या–४ । साइज–१०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । रचना काल–स० १५६० । लेखन काल–स० १६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३०४ ।

प्रारम्भ—गाथा—

आगमवेदपुराणमग्गे जजकवंति कवीयण तं शारद तुह पसायड ।

दूहा—पहिलउ प्रणमउ सरसती, जगवति लील विलास ।

श्री जिणवर शकर नमु मांगु बुद्धि पयास ।।१।।

आपीय अविरल बुद्धि धण जन मन रजन जेह ।

नद बत्तीसी जे सुणउ चरीयर चपुरि तेह ।।२।।

नयरागर अहि ठाण जे तेह तणां बोलेस ।

नद बत्तीसी चुपई एहज नामठ व्योस ।।

चौपई—पुर पाडलीय नगर अभिराम । पुहवि प्रगटउ नेह तु नाम ।।

वरण वरण वसि तहां लोक । जाणस जाण तणा तिहां थोक ।।

सजल सरोवरनि वन खड । राजा लोक न लेवि दंड ।।

गढ मढ मदिर मैडी पोलि । चुरासी चहु टा नीरा डलि ।।

अन्तिम—हीयडि अति ऊमाहु करी । नदरायनु वोल्यु चरी ॥
सुण विनोद कथा चुपई । नद वत्रीसी चुपई ॥५१॥
तप गछ नायक एह मुणिंद । जय श्री हेम विमल सूरद ॥
ज्ञान सील पडित सुविचार । तास सिस्य कहि येह विचार ॥
सवत १५ साठा मझार । चैत सुदि तेरसि वार ॥
जे नर विदुर विसेष सुणि । मुनिवर कुल सघ भणि ॥
भणतां गुणतां लहीर वुद्धि वुद्धि सयल काज ती सिद्धि ॥
ववुधि फलीइ वछित सदा नितु नवर सपदा ॥१५४॥
॥ इति विनोदे नंद वत्रीसी चुपई समाप्त ॥

सवत् १६ श्रीमत् काष्ठासघे नदीतट्टगच्छे विधागणे भ० रामसेनान्वये तदाम्नाये भ० उदयसेन तत्पट्टे भ० श्री त्रिभुवनकीर्त्ति तत्पट्टाभरण वादिगजकेसरी उभयभाषाचक्रवर्ति भ० श्री रत्नभूषण नरसिंह पुरा ज्ञातीय सांपडीया गोत्रे सा० योगा भार्य्या विनादे सूत ब्रह्म श्री वछराज तत्सिष्य ब्र० श्री मगलदास ।

४८६. दशस्थानचौवीसी—द्यानतराय । पत्र सख्या-७ । साइज-८×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन न० १२५ ।

विशेष—चौवीस तीर्थंकरों के नाम, माता पिता के नाम, ऊचाई, आयु आदि १०, बातों का वर्णन है ।
मीठालाल शाह पावटा वाले ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४८७ समयसार कलशा—अमृतचद्र । पत्र सख्या-१४ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २८८ ।

४८८ पद्मनन्दिपचविंशतिका—पद्मनदि । पत्र सख्या-५६ । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १ ।

विशेष—१०५ से आगे के पत्र नहीं हैं । २ प्रतियां और हैं ।

४८९ पचदशशरीरवर्णन—पत्र सख्या-१ । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्फुट । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७५ ।

४९०. प्रतिक्रमण सूत्र । पत्र सख्या-४ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४१० ।

४९१. प्रशस्तिका—पत्र सख्या-१६ । साइज-१×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विविध । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२३ ।

४६२ फुटकर गाथा—पत्र संख्या-२। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण वेष्टन नं० ४०५।

४६३. बारहव्रतोद्यापन (द्वादस व्रत विधान)—पत्र संख्या-५। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८७।

४६४ बारहखडी—सूरत। पत्र संख्या-१६। साइज-७¾×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०५।

४६५ भावनाबत्तीसी—अमितिगति। पत्र संख्या-३। साइज-१०½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चिंतन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६१।

विशेष—पद्य संख्या ३३ है।

४६६ मानवर्णन—पत्र संख्या-५। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्फुट। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ००२।

४६७ मालपच्चीसी—विनोदीलाल। पत्र संख्या-४। साइज-६½×· इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६०४ पौष सुदी ११। अपूर्ण वेष्टन नं० १८४।

४६८ सास बहू का झगडा—देवाब्रह्म। पत्र संख्या-१। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-समाज शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३८।

विशेष—देवाब्रह्म यो देखि समासो ढाल वरणाई सार। मात पिता की सेवा कीज्यो कुलवता नर नारी ॥१७॥ सांची बात कहू छू जी ॥

५००. लीलावती—पत्र संख्या-८। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६२।

विशेष—संक्रमण सूत्र तक दिया हुआ है।

५०१. स्नानविधि—पत्र संख्या-४५। साइज-८½×३½ इञ्च। भाषा-प्राकृत संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४।

प्रति प्राचीन है।

५०२ समस्तकर्मसन्यास भावना—पत्र संख्या-७। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४६।

श्लोक संख्या-१३३ है।

५०३ स्तवन—पत्र संख्या-१ । साइज-१०½×५½ इञ्च । भाषा-फारसी । लिपि-देवनागरी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

विशेष—अदालत में मुकदमा पेश होने का पूरा रूपक है । जिस प्रकार अदालत में अर्ज की जाती है ठीक उसी तरह भगवान से प्रार्थना की गई है ।

गुटके एवं संग्रह ग्रन्थ

५०४. गुटका नं० १—पत्र संख्या-२७५ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-सं० १८५३ । पूर्ण ।

मुख्य रूप में निम्न पाठों का संग्रह है—

(१) व्रत विधान रासो—संगही दौलतराम । पत्र संख्या-१ से २३ । भाषा-हिन्दी । रचना काल-सं० १७६७ आसोज सुदी १० । लेखन काल-सं० १८३८ आसोज सुदी ३ । पूर्ण ।

प्रारम्भ—प्रथम सुमिरों स्वामी वृषभ जिनंद, आदि तीर्थंकर सुख के जो वृंद ।
तो नमो तिर्थंकर बीस हूं, नमो सनमति सदा सिव सुखधाम ।
नमो परमेष्ठी जी पंच पद, ता सुमिरें होय सुख अभिराम ।
तो वरत कहों भवि जैन का ॥ १ ॥

रस ओजली—अहो तप रस ओजली मास वैशाख, सुकल तीजसों जो धरि अभिलाष ।
तो व्रत चौदिस अति निर्मला, तीन रस ओजली जल मन माय ॥

बहुरी जल लेन सख्या नही, ईसु चढाई 'जे जिन पद जाप ॥
तो वरत करौ भवि जैन का ॥ १४१ ॥

अन्तिम पाठ— अहो बूदी जी नग्र हाडा तनौ थान, राज करें बुधसिंह कुल भानु ।
पोन छत्तीस लीला करै, गढ अरु कोट वन उपवन वाय ।
महल तलाव देवल छत्रां, श्रावग धर्म चलै वहु भाय ।' तो वरत० ॥
अहो जगत कीरति भट्टारक परमान, मूल सघी सरस्वती गच्छ जान ।
तो कुदकुदा मुनि पाटई, ब्रह्मचार आचारिज पडित भाय ॥
और आरयिका जी सग मैं, मानत श्रावग यह अमनाय ॥ तो० ॥
अहो पार्श्वनाथ चैत्यालो जी गाय, तहां पडित तुलसी जी दास रहाय ।
तो सास्त्र समूह विद्या धणी करइ, निरतर धर्म दिढ़ाव सुख स्यों काल पूरण करै ।
तास चरचा रचि गथ पसाव ॥ तो० ॥
अहो साह मामां सुतधर धनपाल, ताकौ चतुरभुज रूप दसाय ।
तो सुत दौलतिराम हुव कछुयक, जिन गुण कहि अभिराम ॥
वरत विधान रासौ रच्यौ, ताकै पुत्र हरदैराम सदाराम ॥ तो० ॥
अहो पाटणी गोत परसिद्ध मही मांही, खडेलवाल जिन म तिय कहांहि ।
तो श्रावग धर्म्म मारग माले, करहि चरचा जिन वचन विलास ।'
ओन धर्म नही ऊचरै, सहु परिवार बूदी गढ वास ॥ तो० ॥

× × ×

अहो सवत् सतरासै सत सढि लीन, आसोज सुक्ल दशों दिन परवीन ॥
तो लगन मुहुरत सुभ घरी वार, गुरु वार नछत्र जो ता मांहि ॥
ग्र थ पूरण भयो भविय सवोधन यह उपयोग ॥
अहो दोय सें इक्स्या जी छद निवास, सातसै पचास सख्या तास ॥
तो एक सौ इक्सठि तामै तप कह्या, दौलतराम विविध बुरणाय ॥
भवि करि मन वच काय सौं, अनुक्रम सुर सुख शिव पद पाय ॥ २८१ ॥

॥ इति श्री व्रत विधान रासो सगही दौलतराम कृत सपूर्ण ।।

(२) १५८ व्रतों के नाम – पत्र सख्या २३–२४ ।

(३) पूजा स्तोत्र सग्रह—पत्र सख्या-१ से २५१ तक ।

विशेष— ६३ प्रकार के पाठ व पूजा स्तोत्र आदि का सग्रह है । गुटका के कुल पत्रों की सख्या २७५ है ।

५०५. गुटका न० २—पत्र सख्या–२४ । साइज–८३/४×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं। एवं मंत्रों का सकलन है। सभी मंत्र आयुर्वेद मे सम्बन्धित हैं। स्तोत्र आदि भी हैं।

५०६. गुटका नं० ३—पत्र सख्या-२८। साइज-७×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—नित्य नियम पूजा पाठ हैं।

५०७ गुटका नं० ४—पत्र सख्या-६०। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

निम्न पाठों का संग्रह हैं—

(१) ज्ञानसार—रघुनाथ। पत्र स० १ से ३४। भाषा-हिन्दी। पद्य संख्या-२७०।

प्रारम्भ - छप्पय छंद—

गनपति मनपति प्रथम सकल शुभ फल मंगलकर।
स्वरमति अति मति गूढ देत आरूढ हंस पर॥
निगम धरन जग मरन करन लगि चरन गंगधर।
अमर कोटि तेतीस कहत रघुनाथ जोरकर॥
भवि तिरन हरन जामन मरन सरनि जानि इह देह वर।
श्री हरि पद कौं पांऊ गुननि गाऊ मन वच काय कर॥१॥

दोहा—हरि दरसावन सब सुखद अघ हर ज्ञान उदोत।
गंगनीर गुरु के चरन छुवत सुचि गति होत॥२॥
तुम सर्वज्ञ दयाल प्रभु कहो कृपा करि बात।
अनंत रूप हरि गति अलख लखे कौन विधि जात॥३॥
तब अपनो जन जानि मन मांनि करी प्रतिपाल।
स्रै दयाल तिह काल कर- बोले वचन रसाल॥४॥

संत दशा वर्णन - सवैया—

जग सौं उदास मन वास किये नास मन, धारत न आस रघुनाथ यौं कहैत है।
क्रोधी से न क्रोध, न विरोधी से विरोध, नहिं लोभी सौ प्रमोध नित ऐसे निबहत हैं॥
जीव सकल समानि समझै न कछु अनुराग दोग, अभिमान भ्रम तो देहत है।
ज्ञान जल मंजन मलीन कर्म भंजन कै, राचै है निरंजन सौं, अंजन रहत है॥१०६॥

× × ×

अमल रूप माया मिल्यो मलनि भयो भव ठाव।
मोनौं सोनी संग तें भूषन नाना नांव॥१४३॥

विन जानै वहु दुख है जांनै तें उडि जात ।
तीन काल में एक रस सो निज रूप रहात ॥१८७॥
गृह त्यागी रागी नहीं, भागी भ्रम जग प्रीति ।
हरि पागी जागी सुबुधि इह वैरागी रीति ॥२१७॥

अन्तिम पाठ—ऐसो हरि को निज धर्म सुनि मन भयो हुलास ।
तातै इह भाषा करी लघु मति राघो दास ॥२६४॥
गुनी मुनी पडित कवि चतुर विवेकी सोध ।
कियो ग्रन्थ उनमान विधि छिमा सकल अपराध ॥
वक्ति जुक्ति तुक छद गति भाव वरन गन हीन ।
इक गुन हरि को गुन वरन तातैं गुन्यौ प्रवीन ॥२६६॥
सतरसै चालीसत्रिय सवत् माघ अनूप ।
प्रगट भया सुदि पंचमी ज्ञान सार सुख रूप ॥२६७॥
सुनत गुनत जे ज्ञान सत नसत अस्त भ्रम रूप ।
मत्र नावत गावत निगम पावत ब्रह्म सरुप ॥२६८॥
सुत्र अपार अधार सव सोखन सकल विकार ।
पार करत ससार सर महासर को सार ॥२६९॥
राघव लाघव फेरि करि कहत सव सतन सौ ज्ञक्ति ।
असै दान धो जानि जन सत सग हरि भक्ति ॥२७०॥

॥ इति ज्ञानसार रघुनाथ सा० कृत सपूर्ण ॥

(२) गण भेद—रघुनाथ साह । पत्र सख्या ३ । भाषा–हिन्दी पद्य विषय–छद शास्त्र (पत्र ३४ से ३७ तक) । पद्य सख्या–१५ । पूर्ण ।

प्रारम्भ—गवरिनद आनन्द कर विघन धाय वहु भाय ।
आदि कावि के राज कवि मगल दाय मनाय ॥१॥
प्रथम चरित्र व्रजराज के गाय सु मन वचकाइ ।
जन्म सुधारिउ धारि कुल कल मल सकल नसाइ ॥२॥
हरि गुन भेद विना अमल फल दुह लोक अपार ।
रहन सकत नर कवित्त विनि तिन मधि विवधि विचार ॥३॥

मध्य भाग दोहा—अष्ट गणागण अमरफल अशुभ च्यारि शुभ च्यारि ।
राधव मनि कवि राज सुनि धरहु विचारि विचारि ॥१०॥

अन्त भाग—सुणत गुणत गण भेद कौं रघा प्रकासत ग्यान ।

हर जम कवि रस रीति कौं पावत सकल सुजान ।१५॥

॥ इति श्री रघुनाथ साह कृत गण भेद संपूर्ण ॥

विशेष—छंद शास्त्र की संक्षिप्त रचना है किन्तु वर्णन करने की शैली अच्छी है ।

(३) नित्य विहार (राधा माधो) रघुनाथ—पत्र संख्या-५ । भाषा-हिन्दी पद्य । पद्य सं० १६ । पूर्ण ।

आरम्भ—छंद चरचरी राजत ब्रज रूप अंग अंग छवि अनूप ।

निरखि लजत काम भूप बहु विलास भीनै ॥

रत्न जटित मुकुट हारक मनि। अमित वरन ।

कुंडल दुति उदित करन तिमर करत छीनै ॥१॥

भाल तरल तिलक लस्त भौंहैं जुग अंग रिसत ।

नैंन चपल मीन चिमत नासा शुक मोहै ॥

कुंद कली दसन रसन वीरी जुत मंद हसन ।

कल कपोल अधर लोल मधुर बोल सोहै ॥२॥

अन्तिम—जे जन अघ नाम रटत मंगल सब सुपनि जटत ।

अघ कटित जम जार फटित जगत गीत गावैं ॥

श्री बाल मिचि विहार आनंद तउर जे उदार ।

राधे। मय होत पार प्रेम भक्ति पावैं ॥१६॥

॥ इति राधो माधो नित्य विहार संपूर्ण ॥

विशेष रचना शृंगार रस की है ।

(४) प्रसंग सार—रघुनाथ । पत्र संख्या-४३ से ५६ तक । भाषा-हिन्दी पद्य । पद्य संख्या-१६० । रचना काल-सं० १७४१ माघ सुदी ६ । पूर्ण ।

प्रारम्भ—एक रदन राजत वदन गन मंगल सुख कंद ।

राघव रिधि सिधि बुधि दे नव निम गवरी नंद ॥१॥

वानि गति वानीनतें कास वखानी जात ।

हरि मानी रानी सकल वर दानी जग मात ॥२॥

गुरु सत गुरु तीरथ निगम गंगादिक सुख धाम ।

देव त्रिदेव रखी सुमनि पूरत सबके काम ॥३॥

सीस नाय सब गाय हो राघो मनि इह रीति ।
सकल देव की सेवकौं फल हरि पद सौं प्रीति ॥४॥

अंतिम पाठ—निस दिन रचि पचि मरत सठ सवको इह उनमान ।
सकल जांनि मन जांनि मन राधा भजो भगवान ॥१५६॥
भजनि भजै तिन तैं भजै पाप ताप दुख दानि ।
भागवत भगवत जन ग्यान वत सो जानि ॥१५७॥
सब सुख जुत सुंदर सुमत सतरासैं गुनचास ।
कीयो माघ सुदि पचमी सार प्रसग प्रकास ॥१५८॥
रग रग बहु अग के बरने विवधि प्रसग ।
सुनै गुनै सुख में सनै अति रति ह्वै सतसग ॥ १५६ ॥
अग उधारत गग ज्यों मलिन कर्म करि भग ।
उक्ति जुक्ति हरि भक्ति ह्वै समझै सार प्रसग ॥ १६० ॥

॥ इति श्री रघुनाथ साह कृत प्रसगसार सपूर्ण ॥

विशेष —रचना सुभाषित, उपदेशात्मक एव भक्ति रसात्मक है ।

५०७. गुटका न० ५—पत्र सख्या-४० । साइज—८३/४×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—केवल नित्य नियम पूजा पाठ हैं ।

५०८. गुटका न० ६—पत्र सख्या-२५ । साइज—८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १९६३ भादवा बुदी १० । पूर्ण ।

विशेष—बारह भावना, इष्ट छत्तीसी भाषा, भक्तामर भाषा, निर्वाणकांडभाषा एव समाधिमरण आदि पाठों का सग्रह है ।

५०९ गुटका न० ७—पत्र सख्या-५४ । साइज—८३/४×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—स० १८३९ मगसिर सुदी ६ ।पूर्ण ।

विशेष— रामचन्द कृत चौवीस तीर्थ करों की पूजा है ।

५१० गुटका न० ८—पत्र सख्या-९३ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

(१) वैराट पुराण—प्रभु कवि । प्रारम्भ के पत्र नहीं है ।

विशेष—प्रभु कवि चरणदासी सम्प्रदाय के है ।

अन्तिम पाठ—काष्ठ मिले ते पड कहाये, रुधिर अ उटी पीछे मरकायै।
कवन पवन तें वाक उचारा, कवन पवन के रहैय अधारा।
याको भेद बतावो मोय, प्रभु कहे गुरु पुछु तोय ॥ १ ॥

(२) आयुर्वेद के नुसखे—भाषा-हिन्दी। पूर्ण।

५११ गुटका नं० ९ – पत्र संख्या-२७ ; साइज-६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—यंत्र चिन्तामणि के कुछ पाठ हैं।

५१२ गुटका नं० १०—पत्र संख्या-३४। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—भक्तामर आदि पाठ एवं पूजा संग्रह है।

५१३ गुटका नं० ११ – पत्र संख्या-७१। साइज-८½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—प्रथम तत्वार्थ सूत्र है पश्चात् पूजाओं का संग्रह है।

५१४. गुटका नं० १२—पत्र संख्या-। साइज-१०½×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पद	कबीरदास	हिन्दी	
(२) शब्द व धातु पाठ संग्रह	—	संस्कृत	पत्र ५५ तक
(३) लक्षण चौबीसी पद	विद्याभूषण	हिन्दी	
(४) षोडशकारणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	हिन्दी	पद्य सं० ३७

प्रारम्भ—श्री जिनवर चोवीस नमु, सारद प्रणमी अघ निगमु।
निज गुरु केरा प्रणमु पाय, सकल सत वदत सुख पाय ॥ १ ॥
षोडश कारण व्रतनी कथा, भांषु जिन आगम छे यथा।
श्रावक सुण जो निज मन शुद्ध, जे थी तीर्थंकर पद वृद्ध ॥२॥

अन्तिम भाग—जे नर नारी ए व्रत करे, तें तीर्थंकर पद अनुसरे।
इह भवि पावे रिद्धि अपार, पर भव मोक्ष तणो अधिकार॥
पामे सकल भोग संयोग, टले आपदा रौरव रोग।
श्री भूषण गुरु पद आधार, ब्रह्म ज्ञान सागर कहे सार ॥३७॥

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(५) दशलक्षण व्रत कथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	हिन्दी	पद्य स० ५५

प्रारम्भ —प्रथम नमन जिनवर नें करू, सारद गणधर अनुमरू ।
दश लक्षण व्रत कथा विचार, भाखु जिन आगम अनुसार ॥१॥

अन्तिम पाठ—ए व्रत जे नर नारी करे, विगेंते भव सागर तरे ।
सकल सौख्य पावे नव निद्ध, सर्वारथ मन वांछित सिद्ध ॥५४॥
भट्टारक श्री भूषण धीर, सकल शास्त्र पूरण गभीर ।
तस पद प्रणमी बोले सार ब्रह्म ज्ञान सागर सुविचार ॥५५॥

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(६) रत्नत्रय व्रत कथा	ब्र० ज्ञानसार	हिन्दी	—
(७) अनन्त व्रत कथा	"	"	—
(८) त्रैलोक्य तीज कथा	"	"	—
(९) श्रावण द्वादशी कथा	"	"	—
(१०) रोहिणी व्रत कथा	"	"	—
(११) अष्टाह्निका व्रत कथा	"	"	—
(१२) लब्धि विधान कथा	"	"	—
(१३) पुष्पांजलि व्रत कथा	"	"	—
(१४) आकाश पचमी कथा	"	"	—
(१५ रक्षा बधन कथा	"	"	—
(१६) मौन एकादशी व्रत कथा	"	"	—
(१७) मुकुट सप्तमी कथा	"	"	—
(१८) श्रुतस्कध कथा	"	"	—
(१९) कोकिला पंचमी कथा	"	"	स० १७३६ चैत्र सुदी ६ रविवार को सूरत में ब्रह्म कनकसागर ने प्रतिलिपि की थी ।
(२०) चदन षष्टी व्रत कथा	"	"	—
(२१) निशल्याष्टमी कथा	"	"	—
(२२) सुगध दशमी व्रत कथा	"	"	—
(२३) जिन रात्रि व्रत कथा	"	"	—
(२४) पल्य विधान कथा	"	"	—

(२५) जिनगुनसंपति व्रत कथा	”	”	—
(२६) आदित्यवार कथा	”	”	—
(२७) मेघमाला व्रत कथा	”	”	—
(२८) पंच कल्याण बडा	—	”	—
(२९) ” ” ”	—	”	—
(३०) परमानंद स्तोत्र	पूज्यपाद स्वामी	संस्कृत	

प्रारम्भ—परमानंद संयुक्तं निर्विकारं निरामयं ।
ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थितं ॥१॥

(३१) वर्द्धमान स्तोत्र	—	संस्कृत	—
(३२) पार्श्वनाथ स्तोत्र	राजसेन	”	—
(३३) आदिनाथ स्तवन	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	

स्वामी आदि जिणंद, करूं वीनती आपणीय । तु जग साचो देव त्रिभुवन स्वामी तू धणी ए ॥१॥
लाख चोरासी योनि थावर जगम हूं भम्यो ए । तुहु न लाधो इह संसार सागर तेह तणो ए ॥२॥
चिहु गति संसार मांहि पाम्या दु खमि अति घणा ए । जामन मरण वियोग, रोग दारिद्र जरा तेह तणाए ॥३॥
क्रोध मान माया लोभ इन्द्रि चोरेंहु मोलव्योए । राग द्वेष मद मोह-मयण पापी घणु रोलव्योए ॥४॥
कुदेव कुगुरु कुशास्त्र मिथ्या मारग रंजियुए । साचो देव सुशास्त्र सह गुरु वयण नमे दीयुए ॥५॥
सजन कुटुंब ने काज कीधां पापमि अति घणाए । ते पातिकनीवार जिनवर स्वामी ब्रह्म तणां ए ॥६॥
तु माता तु बाप, तु ठाकुर तु देव गुरु । तु बांधव जिन राज, वांछित फल हत्र दान कर ॥७॥
हवें जो तुम्हं जग देव करम निवारो ब्रह्म तणांए । भवि भवि तुह्म पाय सेव गुण आयो स्वामी ब्रह्म घणां ए ८॥
सकलकीरति गुरु वंदि, जिनवर विनति जे भणेए । ब्रह्म जिणदास भणेसार, मुगति वरांगना ते वरे ए ॥९॥

(३४) चउवीस तीर्थंकर विनती	ब्रह्म तेजपाल	”	—
(३५ जिनमंगलाष्टक	—	संस्कृत	—

५१५. गुटका नं० १३ – पत्र संख्या–१८ । साइज–६×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण ।

विशेष —नित्य नियम की पूजाऐं हैं । ये पूजाऐं बाल सहेली जयपुर मे प्रत्येक शुक्रवार को होती थी ।

५१६. गुटका नं० १४—पत्र संख्या–११ । साइज–५×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत लेखन काल-सं० १९८३ भादवा सुदी १० । पूर्ण ।

विशेष—सुगन्ध दशमी व्रतोद्यापन का पाठ एवं कथा है ।

५१७. गुटका नं० १५ - पत्र संख्या–१६२ । साइज–९×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण

विष-नूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	ले० का०	विशेष
ज्ञान तिलक के पद	कबीरदास	हिन्दी	स० १८०६ कातिक सुदी ७	—
कबीर की परचई	"	"	"	—
रेखता	"	"	"	—
काया पाजी	"	"	"	—
हंसमुक्तावली	"	"	"	—
कबीर धर्मदास की दया	"	"	"	—
अन्य पाठ	"	"	"	—
साखी	"	"	कितने ही प्रकार की हैं	—
सोसट बध	"	"	"	—

विशेष—कबीर दास कृत रचनाओं का अपूर्व सग्रह है।

कासी वसे कबीर गुसाई एव। हरि भक्तन की पकडी टेक॥

बहोत दिना संकिट में गये। अब हरि को गुन लीन भये॥ (कवि की परचई)

५१६ गुटका न० १६—पत्र सख्या-१३ से ५०। साइज-६×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—महाभारत के पाचवे अध्याय से ३० वें तक है प्रारम्भ के ४ अध्याय नहीं है। जिसके कर्ता लालदास हैं।

५ वें अध्याय से प्रारम्भ—दरसन भीषम को प्रीय जदा, सकल रषीस्वर आये तिहा।

सरसउथा भीषम विश्राम, अब सुनि प्रगट रिषिन के नाम॥ २॥

भृगु वसिष्ठ पारास्वर व्यास, चिवन अत्रिय अंगिरा प्रवगाम।

अगस्त नारद परवत नाम, जमदग्नि दुरवासा गम॥ ३॥

२८ वें अध्याय का अन्तिम भाग - धर्म रूपज राजा सिव भयौ, जिहि परकाज अपनपौ दयौ।

तिन्हही आराधै इहि रीति धरम कथा सुनैं करि प्रीति॥ १६॥

जो याह कथा सुनै अरु गावै, धरम सहित धरम गति पावै।

यौं सौं कथा पुरानन कही, लालादास भाख्यौ यो सही॥ २०॥

५१८ गुटका न० १७—पत्र सख्या-१०६। साइज-६×६। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८७५ पौष सुदी ७। पूर्ण।

विशेष—महाभारत में से 'उषा कथा' है जिसके रचयिता 'रामदास' है।

प्रारम्भ—श्री गणेसायनम। श्री सारदा मातार्जा नम। वो नमो भगवत वासदेवाय श्री ऊषा चरण लिख्यते।

वासुदेव पुराण चित लाउ, करी हो कृपा रिकछु ह गुण गाउ ।
सुमरो गुण गोविंद मुरारी, सदा होत सतन हितकारी ॥
सुमरो आदि सुरसति माता, सुमरो श्री गणपती सुखदाता ।
बुधकर जोड चरण चीत लाउ, करी हो कृपा कछु हरि गुणगाउ ॥
सुमरो मात पिता बडभाई, सुमरो श्री रघुपति के पाई ।

दोहा—अडसठी तीरथ कथे, सुमरो देव कोटी तेतीस ।
रामदास कृपा कर वुधी देहो जगदीस ॥ १ ॥
ज्यांहां चत्रभुज राय वीराज, प्रममह तीतहि पुरको राजा ।
जाके धरम कथा अधीकाई, दानव जुध वी वोहोत बडाई ॥
अक्लोकाष सू दरसण पुज सुखमान, गउ विप्र की सेवा जान ॥ २ ॥
नारद उकती व्यास कही नाहा, दसम सकद भागवत कीन्हा ।
व्यास पुराण कह सब साखी, श्री सुखदेव नृप सुभाषी ॥

दोहा— चित दे सुनी नृपति धनी परीछत राय ।
व्यास पुत्र उपदेश तैं रस हीयो अघाय ॥
अमर लोक पग गुल नहीं देख्यो, पच सग सलव सेषा ।
रामदास तवी सगति पाई, माया करी हरी कीरति गाई ॥ ६
प्रेम सयाना पुछत वाता, तुम कसन कहा भये विधाता ।
आदि देस तुमाहारो कहा होइ, हम सुवचन कहो न जसोई ॥
महमा कह राम को दासु, देस मालवो अती सुखवासु ।
सहर, सरु जु निकट ताहां ठाहु, पावो जनम मालनी गाठ ॥
पिता मनोहर दास विधाता, वीरम ने जनम दीयो माता ।
रामदास सुत तीन को भाई, कृष्न नाव को भगती ताही ॥

दोहा—लालदास लालच कथा, सोध्यो भगवत सार ।
रामदास की वुधी लघु पथ कुदे न मार ॥ १० ॥
नृप पुछ सुख है वसु सुनो, सुनाय करौ हो मोहि ।
अनरव ऊषा हरन की कथा, कह सुनावो मोही ॥ ११ ॥
कैसे चत्रा हरी ले गई, कैसे कवट भेंट भई ।
कृष्ण पुनी वाणासूर लीया, घर वसी हरी दरसण दीया ॥
सो ब्र मा मुनी ध्यान लगायो, आदि पुरुष को अत न पायो ।
कहै प्रताप हरी पूजा पाइ, सो हम सु कहीये समझाई ॥

अन्तिम पाठ—धनी सो सुरता चीत दे सुन, अरथ वीचार ग्रेम गुनमन ।

धनी सोही देस धनी सोही गांव, नीस दिन कथा कृष्ण को नांव ।

उषा श्री भागोत पुराना, सहजही दुज दीजे दाना ॥

छुद्र मसक पवन सर सोही, कृष्ण भगति विना अवरथा देही ।

रामदास कथा कियो पुराना, पढत गुणत गगा असनाना ॥

दोहा—चद बदन यो होय फल, तो पातु दल पान ।

ई विध हर पूजही, कथे हो पुत्र की लाण ॥

इति श्री हरिचरित्रपद समो असकदे श्री भागोतपुराणे ऊशा कथा वरणनो नाम सपत दसो अध्याय ॥ १७ ॥

॥ इति श्री उषाकथा सपूर्ण समाप्ता ॥

५२०. **गुटका न० १८**—पत्र सख्या–१३२ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–स० १७६७ फागुन बुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—कवि बालक कृत सीता चरित्र है ।

५२१. **गुटका न० १६**—पत्र सख्या–१३१ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—नददास कृत भागवत महा पुराण भाषा है । केवल ६१ पत्र है ।

५२२ **गुटका न० २०**—पत्र सख्या–३ से ३२ । साइज–८½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—हितोपदेश कथा भाषा गद्य में है । रचना नवीन प्रतीत होती है भाषा अच्छी है आदि अत भाग नहीं है ।

५२३. **गुटका न० २१**—पत्र सख्या–१३६ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी गद्य में राम कथा दी हुई है । प्रति अशुद्ध है ।

५२४ **गुटका न० २२**—पत्र सख्या–२८ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत हिन्दी । लेखन काल–स० १८१५ । पूर्ण ।

विशेष—प० नकुल विरचित शालि होत्र है । सस्कृत से हिन्दी पद्य में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२५. **गुटका न० २३**—पत्र सख्या–१० । साइज–८½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—कृष्ण का बाल चरित वर्णन है। १२० पद्य हैं।

आदि—गर गनेम वदन करि के सतननि कौं सिर नाऊं।

बाल विनोद यथा मति हरि के सु दर सरस सुनाऊं ॥१।

भक्तन के वत्सल करुना मय अद्भुत तिन की क्रीडा।

सुनो संत हो सावधान हो श्री दामोदर लीला ॥२॥

५२६. गुटका नं० २६—पत्र संख्या-३०। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२३ आसोज बुदी ३। पूर्ण।

विशेष—लच्छीराम कृत करूना भरन नाटक है। कृष्ण जीवन की बाल लीला का वर्णन है।

प्रारम्भ—रसिक भगत पंडित कविनु कही महाफल लेहु।

नाटक करूणा भरन तुम लछीराम करि देहु ॥१॥

प्रेम बढे मन निपट हो अरु आवै अति रोइ।

करुणा अति सिंगार रस जहां बहुत करि होइ ॥

लछीराम नाटक कर्‌यो दीनौं गुनिन पढाइ।

भेष रेष नित्त न निपट लाये नर निसि लाइ ॥२॥

अन्तिम पाठ—श्रीकृष्ण कथा अमृत सर बरनी, जन्म जन्म के कश्मल हरनी।

अति अगाध रस बरन्यौ न जाई, बुधि प्रमान कछु बरनि सुनाइ ॥३४॥

सो मति थोरी हरि जस सागर, सिंधु सुमाइ कहां लो गागर।

लछीराम कवि कहा बखानौ, हरिजस को कोई हरिजन जानै ॥३५॥

इति श्री कृष्ण जीवन लछीराम कृत करूणा भरन नाटक संपूर्ण। सं० १८२३ आश्विन बुदी ३ रविवासरे। सप्तमो अध्याय।

५२७ गुटका नं० २५—पत्र संख्या-३८। साइज-६×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण

विशेष—गुटके में भद्रबाहु चरित्र है। यह रचना किशनसिंह द्वारा निर्मित है जिसको उसने सं० १७८३ में समाप्त की थी। प्रति नवीन है।

भद्रबाहु चरित्र—

प्रारम्भ—केवल बोध प्रकाश रवि उदै होत ससि साल।

जग जन अंतर तम सकल छेद्यो दीन दयाल ॥ १ ॥

सनमति नाम जु पाइयौ असे सनमति देव।

मोको सनमति दीजिए नमौ त्रिविध करि सेव ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—अनत कीरति आचारज जानि, ललित कीर्ति सु सिष प्रमान ।
रत्ननंदि ताको मिष होय, अलप मति धरि करना सोय ॥
श्वेतांवर मत को अधिकार, मूढ लोक मन रजन हार।
तिनही परीक्षा कारन जान, पूर्व श्रुत कृत मानस आनि ॥ १० ॥
किया नहीं कविताइ करी, काव कर्न अभिमान ही अरी ।
मगलीक इस चरितह जानि, रच्यौ सबै सुखदाइ मान ॥
मूल ग्रंथ कर्त्ता भये रतन नदि सु जानि ।
तापरि भाषा ग्रहरि कीनी मती परमाव ॥ ११ ॥
नगर चाल सुदेस मै चरवाडा को गांव ।
माधुराय वसत कौ दामपुरौ है नांव ॥
तहा वसत सगही कानो गोट पाटणी जोय ।
ता सुत जाखो प्रगट सुख देव नाम तसु होय ॥
ताकौ लघु सुत जानीयो क्सिन सिंघ सव वान ।
देस ढुंढाहर को मयौ सांगानेर सुथान ॥ १५ ॥
तहां करी भाषा यह मद्रवाह गुणधारी ।
सुमति कुमति को परख कै द्वेव माघ न विचारि ॥
किसनसिंघ विनती करै, लखि कविता की रीति ।
यह चरित्र भाषा कियौ, वाल वोध धरि प्रीति ॥ १७ ॥
जो याकौ वाचै सुनै विपुल मति उरधारी ।
कहुँ ठौर जो भूल है लीज्यौ सुधी सवारी ॥ १८ ॥
सुमति कुमति कौ परख के, कीज्यौ कुमत निवार ।
ग्रहण सुमति कौ कीजियौ जो सुर सिव पदकार ॥ १६ ॥
सवत् सतरह सै असी उपरि और है तीन ।
माघ कृष्ण कुज अष्टमी ग्रंथ समापत कीन ॥ २० ॥

५२८. गुटका नं० २६—पत्र सख्या-२०० । साइज-८३/४×६३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष— गुटका प्राचीन है । निम्न पाठों का सग्रह है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	—
श्रीपालरास	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—
नेमीश्वररास	,,	,,	—
विवेकजखडी	—	,,	—
पद्य संग्रह	—	,,	—
जखडी	रूपचंद	,,	—
मागीतु गी की जखडी	रामकीर्त्ति	,,	—
जखडी	जिनदास	,,	र० का० सं० १६७६
कर्म हिंडोलणो	हर्षकीर्त्ति	,,	—
गीत	चन्द्रकीर्त्ति	,,	—
गीत	मुनि धर्मचन्द्र	,,	—
चेतनगीत	देविदास	,,	—
चेतन गीत	—	,,	—
पचवधावा	—	,,	—
आदिनाथस्तुति	चन्द्रकीर्त्ति	,,	—
शालिभद्रचौपई	—	,,	अपूर्ण

५२६. गुटका नं० २७ – पत्र संख्या–२५ । साइज–६×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—स्फुट पूजाओं का संग्रह है ।

५३०. गुटका नं० २८—पत्र संख्या–२५ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

५३१ गुटका नं० २६—पत्र संख्या–१५ । साइज–८½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है ।

५३२. गुटका नं० ३०—पत्र संख्या–१४ । साइज–९×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है —

विनती संग्रह	—	हिन्दी	—
संबोधपञ्चासिका भाषा	द्यानतराय	,,	—
अठारह नाता	—	,,	—

५३४ गुटका नं० ३२—पत्र संख्या-२० । साइज-७½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—६५ चतुराई की वार्ता दी है जिसका रचना काल वीर सं० २४४२ है ।

५३५. गुटका सं० ३३ – पत्र संख्या-२३ से १४२ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
स्तोत्रविधि	जिनेश्वरसूरि	हिन्दी	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	—
कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,	—
पद संग्रह सतर प्रकार पूजा प्रकरण)	साधुकीर्ति	हिन्दी	र का १६५८ श्रा सु ५
रागमाला	,,	,,	—
अष्टापदगिरिस्तवन	धर्मसुन्दर (वाचनाचार्य)	,,	—
पद २	जिनदत्तसूरि	हिन्दी	—
स्तंभनक पार्श्वनाथ गीत	महिमासागर	,,	—
पद	जिनचन्द्र सूरि, जिनकुशल सूरि व कुमुदचंद्र ।		
कवित्त	—	हिन्दी	र. का सं २४११

इनके अतिरिक्त और भी हिन्दी पद हैं ।

सतर प्रकार पूजा प्रकरण—राग धनाश्री—मणि गुणि धनजि के । सठि दिन तेज तरणि सुख राजइ ।
कवित शतक आठ थ्युणति शक्रस्तव । धय धुप रगह मल्हाजइ ॥भ०॥
अणहिल पुर शान्ति सब सुखदाई । सो प्रभु नवनिधि सिधि आव जइ ॥
सतर सुपूज सुविधि श्रावक की । भणीभई भगति हिज काजइ ॥भ०॥
श्रीजिनचद्रसूरि गरू खरतरपति । धरमनि वचन तासु तसु राजइ ॥
संवत् १६ अठार श्रावण सुदि । पचमि दिवसि समाजइ ॥भ०॥

दयाकलशगणि अमरमाणिक गुरु । तासु पसाइ सुविधि हुँ गाछइ ।
कहइ साधु कीरति कर भजन सरतन सवि ।
साधुकीरति करंत जन सत्तव सविलील सव सुख साजइ ॥

॥ इति सत्तर प्रकार पूजा प्रकरण ॥

५३६. गुटका नं० ३४—पत्र संख्या-१४ से ८६ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—द्रव्य संग्रह की गाथायें हिन्दी अर्थ सहित है तथा समयसार के २०६ पद्य हैं ।

५३७ गुटका नं० ३५—पत्र संख्या-२ से ३८ । साइज-६½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५३८ गुटका नं० ३६—पत्र संख्या-६ से ६३ । साइज-८½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—महाकवि कल्याण विरचित अनंग रंग नामक काव्य है । काम शास्त्र का वर्णन है आगे इसी कवि द्वारा निरूपित संभोग का वर्णन है । आयुर्वेद के नुसखे दिये हुए हैं ।

५३९ गुटका नं० ३७—पत्र संख्या-१६ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम के अतिरिक्त अन्य भी पाठ हैं ।

५४०. गुटका नं० ३८—पत्र संख्या-१५० । साइज-९×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १७९६ पौष सुदी ५ । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न साधारण पाठों का संग्रह है ।

५४१. गुटका नं० ४०—पत्र संख्या-७ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-सं० १८८३ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—चाणक्य राजनीति शास्त्र का संग्रह है ।

५४२ गुटका नं० ४१—पत्र संख्या-३८ । साइज-४×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण एवं जीर्ण ।

५४३. गुटका नं० ४२—पत्र संख्या-२६ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । लेखन काल-सं० १८२० । पूर्ण ।

विशेष—आचार्य कुन्दकुन्द कृत (दर्शन, चारित्र, सूत्र, वोध, भाव और मोक्ष) पट पाहुड का वर्णन है ।

५४४ **गुटका न० ४३**—पत्र सख्या-४८ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण एव जीर्ण ।

विशेष—देहली के बादशाहों की वशावलि दी हुई है अन्य निम्न पाठ भी हैं—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
कृष्ण का बारह मासा	धर्मदास	हिन्दी	—
विरहनी के गीत	—	„	—
आयुर्वेद के नुस्खे	—	„	—
दोहे	दादूदयाल	„	—

५४५ **गुटका न० ४४**—पत्र सख्या-६८ । साइज-८½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—मत्र शास्त्र से सम्बन्धित पाठ है ।

५४६ **गुटका न० ४५**—पत्र सख्या-६० । साइज- ×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—पार्श्वनाथ स्तोत्र-सस्कृत, क्षेत्रपाल पूजा शनिश्चर स्तोत्र-हिन्दी आदि पाठ हैं ।

५४७ **गुटका न० ४६**—पत्र सख्या-१२ । साइज-५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—चरनदास के पद है । कुल १५ पद हैं ।

५४८. **गुटका न० ४७**—पत्र सख्या-१६ । साइज-८½×८½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—भुवनेश्वर स्तोत्र सोमकीर्ति कृत हैं ।

५४९ **गुटका न० ४८**—पत्र सख्या-३४ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । लेखन काल-स० १८६० अषाढ बुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—ऋषि मडल स्तोत्र तथा अन्य पाठ हैं ।

५५० **गुटका न० ४९**—पत्र सख्या-२० से ६०, १७२ से २१२ । साइज-५×३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—पचस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, पचपरमेष्ठीस्तोत्र एव वज्रपजरस्तोत्र (अपूर्ण) आदि हैं ।

५५१. गुटका नं० ५०—पत्र सख्या–४ से २१० । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

५५२ गुटका न० ५१—पत्र सख्या २६ । साइज–५×३½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सग्रह । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र आदि के संग्रह है गुटके के अधिकांश पत्र खाली हैं ।

५५३. गुटका न० ५२—पत्र सख्या–४० । साइज–७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण ।

विशेष—गुटका जल्दी में लिखा गया है । कोई उल्लेखनीय पाठ्य नहीं है ।

५५४ गुटका न० ५३—पत्र सख्या–६ । साइज–७×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

५५५ गुटका नं० ५४—पत्र सख्या–६–१८४ । साइज–६½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ में स्वर्ग लोक का वर्णन है और पीछे तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की हिन्दी टीका है । कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है ।

५५६. गुटका न० ५५—पत्र सख्या–२० । साइज–५×३½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तामर, पार्श्वनाथ, लक्ष्मीस्तोत्र आदि हैं ।

५५७ गुटका न० ५६—पत्र सख्या–८६ । साइज–७×५ । भाषा–सस्कृत । लेखन काल–स० १६७३ । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठ सग्रह है ।

५५८ गुटका न० ५७—पत्र सख्या–२–४६ । साइज–७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सग्रह लेखन काल–स० १६२३ । अपूर्ण ।

विशेष—उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

५५६ गुटका न० ५८—पत्र सख्या–८० । साइज–८½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण एव जीर्ण ।

विशेष—अक्षर घसीट होने पढने में नहीं आते हैं।

५६० गुटका नं० ५६—पत्र सख्या—८ से ५७। साइज-६½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत, हिन्दी। लेखन काल—×। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चौबीस तीर्थंकर पूजा	—	संस्कृत	—
सरस्वती जयमाल	—	,	—
अकृतिम जयमाल	—	,,	—
परमज्योतिस्तोत्र	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	—

५६१. गुटका नं० ६०—पत्र सख्या—५ से ३८। साइज—७×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। लेखन काल—×। अपूर्ण।

विशेष—हितोपदेश की कथाएँ हैं।

५६२ गुटका नं० ६१—पत्र सख्या—१०३। साइज-९×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—×। अपूर्ण।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का सग्रह है।

५६३. गुटका नं० ६२—पत्र सख्या—१७। साइज—६×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। लेखन काल-सं० १७५४। अपूर्ण।

विशेष—१ से १६ एवं १०७ से आगे के पत्र नहीं है। निम्न विषयों का सग्रह है।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
भट्टारक पट्टावली	—	हिन्दी	र का स १७३३
कृष्णदास का रासो	—	,,	र.का.स १७४६ ले का १७५२
पर्वत पाटणी को रासो	—	,,	ले. का स १७५४
षीचड रासो	—	हिन्दी	—
नवरत्न कवित	—	,,	—

५६४. गुटका नं० ६३—पत्र सख्या—६० से १०५। साइज—७×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—सं० १७६० माघ सुदी १५। अपूर्ण।

(१) भर्तृहरि की वार्ता—पत्र संख्या-६८ से ७८ । भाषा-हिन्दी गद्य । लेखन काल-स० १७६० माघ सुदी १५ । अपूर्ण

अंतिम पाठ—भरथरी जी गोरखनाथजी का दरसण नै चालता रह्या । अणी को मात्र सारो देखी करि अकृत चीत हुओ । सागे जगत को सुख । ईद ताको सुध । त्रीणी पराजमन भो देखता ओर सुनी मडल मे चित दीजो । इति भरथरी जी का वात सपूरण । पोथी मान खघ चत्रभुज का वेटा की लिखी जैराम काइथ वाचे जैजैराम । मी माह सुदी १५ स० १७५० ।

(२) आसावरी की वात—पत्र स०-८० से १२५ । भाषा-हिन्दी गद्य । अपूर्ण ।

श्री गणेसाई नीमो । अबै आसावरी की वात ऊतिपति वरण ववरणी जे छै । ईतरा मांही राणी के पुत्र हुवो । नाम मीतु नीसरयो । उछाव हुवो जाति कर्म हुवो । दान पुनि वाजा छतीसु वाजवा लागा । नग्र माहै वुछाह घरि घरि हुवो । आवतै दीनि कन्या को जनम हुवो । पंडिता नाम आसावरी काढ्यो । सिधि को वचन छै । सोई नाम जनम को नीसरयो । आसावरी देव अग अपछरा को औतार हुई तदि आसावरी वरस छहकी हुई । तदि पढिवानै वैठी ।

५६५. गुटका न० ६४—पत्र सख्या-१३ । साइज-७½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का सग्रह है—

विषापहार, एकीभाव एवं भूपालचतुर्विशति ।

५६६ गुटका न० ६५—पत्र सख्या-४८ । साइज-७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल स० १७७० । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
मान मञ्जरी	नन्ददास	हिन्दी	अपूर्ण
जानकी जन्म लीला	बालवृन्द	,,	पूर्ण ले० का० स० १७७६
सीता स्वयवर लीला	तुलसीदास	,,	माघ सुदी ६

आदि पाठ—गुर गणपति गिरजापति गौरी गिरा पति,
सारद सेष सुकवि श्रुति सत सरल मति ।
हाथ जोडि करि विनय सकल सिर नाऊ,
श्री रघुपति विवा जथामति मगल गाऊ ॥१॥
सुभ दिन रच्यौ सुमगल मगल दाइक ।
सुनत श्रवन हिए वसहु सीय रघुनाइक ।
देस सुहावन पावन वेद वखानिये ।
भोमि तिलक सम तिरहुत त्रिभुवन मानिये ॥२॥

जानकी जन्म लीला—

आदि भाग—श्री रघुवर गुर चरन मनाऊ, जानकी जनम सुमगल गाऊ।
काम रहित सुधर्म जग जोहै, देस विरोहित तनु धरि सोहै॥
ता महि मिथुला पुरि सुहाई, मनउ ब्रह्म विद्या छवि छाई॥२॥

अन्तिम पाठ—भये प्रगट भक्ति अनत हित द्रग दया अमृत रस भरे।
सफल सुरनर मुनिन केई है छिनहि सब कारिज सरे॥३॥
जै देवि दानि सिरोमने करि, दया यह वर दीजिये।
सदा अपने चरनदास के दास हम कहुँ कीजिये॥४॥

॥ इति श्री जानुकी जनम लीला स्वामी वालअन्दजी कृत सपूरन ॥ माह सुदी ६ सवत् १७७६

५६७ गुटका न० ६६—पत्र सख्या—८० । साइज—६½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—स० १८२४ पौष सुदी ३ । पूर्ण ।

विषय- सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
भूषाभूषण	महाराज जसवतसिंह	हिन्दी	पद्य स० २१०
छवितरग	महाराजा रामसिंह	,,	पद्य स० ६४

प्रारम्भ—असुर कदन मोहन मदन वदन चद रघुनंद।
सिया सहित वसियो सुचित, जय जय मय आनद ॥१॥

यहां कवि की रीति प्रधानता करिकै राम जू सौ विज्य होत है। तातैं भाव धुनि। अरु प्रथम अनेक चरन अनेक वेर फिरत हैं तातैं किति अनुप्रास चद रघुनद यह रुपक।

दोहा—आनदित ब दन जगत सुख निर्कंद शिव नंद।
भाल चद तुव जपत ही दूरि होत दुख द्वद ॥२॥

अन्तिम पाठ—परी परोसनि सौ अटक, चटक चहचही चाह।
भरि भादौं की चोथि को चंद निहारत नाह ॥६३॥
कछूक गुन दोहान के, वरने और अनूप।
ऐसे ही सहृदय सबै औरौ लखौ अनूप ॥६४॥

इति श्री महाराजा रामसिंहजी विरचिते छवितरग सपूर्ण।

अष्टजाम	कवि देव	हिन्दी	पद्य सं० १३१
औषधि वर्णन	—	,,	—

५६८ गुटका न० ६७—पत्र सख्या-५ से ११३ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
कृष्णलीला वर्णन	—	हिन्दी	पत्र ५-१७
होली वर्णन	—	,,	—
बारहमासा	—	,,	पत्र स० ७४ से ७७
स्फुट पद	—	,,	पत्र ७८ से ११३

५६९. गुटका न० ६८—पत्र सख्या-२३ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल- । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
पीपाजी की पत्रावलि	—	हिन्दी	—
ध्रु चरित	सुखदेव	,,	—
विनति	—	,,	—
पद्मावती कथा	—	,,	—

५७०. गुटका नं० ६९—पत्र सख्या-२४ । साइज-५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न रचना है—

कल्मष कुठार—रामभद्र हिन्दी ।

मध्यम भाग—करनी हो सो कीजियो करनी की कछु दोर ।
मो करनी जिन देखियो तो करनी की ओर ॥ २१ ॥
मो सो करनी कुटिल जग तो सो तारक ताज ।
यही भरोसो मोहि तो सरन गहे की लाज ॥ २२ ॥

इति श्रीमत् काम्यवनस्थ बाधूल सगोत्रोत्पन्न गणेश भट्टात्मज रामभद्र भट्टेन ... ... विरचिते कल्मषकुठार ग्रथ सपूर्ण ॥

५७१ गुटका न० ७०—पत्र सख्या-५ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—रसराज नामक ग्रथ है ।

५७२ गुटका न० ७१—पत्र सख्या-५ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १८१२ चैत्र बुदी १२ । पूर्ण । पद्य सख्या-२५ ।

विशेष—गुटके में नदराम पचीसी दी है। रचना स० १७४४ अथ नदराम पचीसी लिखते।

दोहा—गनपति को ज मनाय हरि, रिद्ध सिद्ध के हेत।
वाद वादनी मात तु, सुम अछिर वहु देत॥
कछु कह्यो हु चाहत हू, तुम्हार पुनि प्रताप।
ताहि सुण्या सुख उपजै, दया करो अव आप॥ २॥

अन्तिम पाठ—नद खडेलवाल है अवावति कौ वासी।
सुत बलिराम गोत है रावत मत है कृष्ण उपासी॥ २४॥
सवत् सतरासै चवाला कातिक चन्द्र प्रकासा।
नदराम कछु . ॥
कली व्योहार पच्चीसी वरनी जथा जोग मति तेरी।
कलजुग की ज बानगी एहै है और रासी वहुतेरी॥
राखे राम नाम या कलि में नद दासा।
नदराम तुम सरनै आयो गायो अजव तमासा॥ २५॥

इति श्री नंदराम पच्चीसी सपूर्ण। सवत् १८१२ चैत बुदी १२।

५७३ गुटका न० ७२—पत्र सख्या-१६। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—कुछ हिन्दी के कवित्त हैं।

५७४ गुटका न० ७३ पत्र सख्या-११-२६३। साइज-६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-× अपूर्ण।

विशेष—मुख्य रूप से निम्न पाठ हैं—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
श्रीपाल रास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	ले का स. १८२५
मधु मालती कथा	चतुर्भुजदास	"	—
गोरख वचन	बनारसीदास	"	—
वैद्य लक्षण	"	"	—
शिव पच्चीसी	"	"	—
भवसिन्धु चतुर्दशी	"	"	—
ज्ञानपच्चीसी	"	"	—

तेरह काठिया	बनारसीदास	हिंदी	—
ध्यान बत्तीसी	"	"	—
अध्यात्म बत्तीसी	"	"	—
सूक्ति मुक्तावली	"	"	—

मधु मालती कथा—

प्रथम—वरवीर चित नया वर पाउ, सकर पूत गणपत मनाऊ।
चातुर हेत सहत रिझाउ, सरस मालती मनोहर गाऊ ॥ १ ॥
लीलावती ललित ऐक देसा, चन्द्रसेन जिहां सुघड नरेसा।
सुभग यामिनी हो गगन प्रवेसा, मानू मडप रचो महेसा ॥ २ ॥
वसहपुर नगर जोजन चार, चौरासी चोहटा चोवार।
अति विचित्र दीसे नरनार मानू तिलक भ्रूम मझार ॥ २ ॥

मध्य भाग—चपावती निपृत मलियदा, ताको कवर नाम जसु चदा।
वरस वीस बाईस मैं सोई, तास पटतर अवर न कोई ॥
जास मत्र ग्रह कन्या सुन्दर, वरस अठारह मांहि पुलदर।
रूपरेख तसु नाम सोहै, जा देखे सुर नर मन मोहे ॥ ४५ ॥

अन्तिम पाठ—हम है काम अम अवतारी, इहै कछैं कहै सोनी की न्यारी।
अैसे कही मधु नृप सुमझायो, राजा सुनत बहोत सुख पायो ॥
राज पाट मधुक सब दीनों, चन्द्रसेन राजा तप लीनों।
राजरिपत्रिय वोहत होई, उनकी कथा लख न्ही कोई ॥ ८६२ ॥

दोहा—कायथ नेंगमा कूल अहै, नाथा सुत मए राम।
तनय चतुर्भुज तास कें, कथा प्रकासी ताम ॥ ८६३ ॥
अलख वधू दीठ दई, काम प्रवध प्रकास।
कवियन सु कर जोर करि, कहत चतुर्भुज दास ॥ ८६४ ॥
काम प्रवधं प्रकाम पुनी, मधू मालती विलास।
प्रदु मनी का लाला इहै, कहत चतुर्भुज दास ॥ ८६५ ॥
वनासपति मे अवफल, रस मे एक रसंत।
कथा मध्य मधू मालती षट् रति मधि वसत ॥ ८६ ॥
लता मध्या पत्रग लता, सो धन में धनसार।
कथा मै मधु मालती, आभूषण मै हार ॥ ८६७ ॥

राजनीत कीया मैं साखी, पचाख्यान बुघ ईहां भाषी ।
चरना ऐका चातुरी बनायी, थोरी थोरी सबहु आई ॥ ८६८ ॥
पुनि बसत राज रस गायो; यामै ईश्वर का मद भायो ।
ताका ऐह विलावसतारी, रसिकनि रसक श्रवन सुखकारी ॥ ८६६ ॥
रसिक होय सो रस कू चाहे, अध्यातम आतम अवगाहे ।
चातुर पूरष होई है जोई, ईहे कल रस समझू सोई ॥ ८७० ॥
किसन देव को कुवर कहावै, प्रदुमन धाम अस मधु गावै ।
पुत्र कलत्र सब सुख पावै, दुख दालिद्र रोग नहीं आवै ॥ ८७१ ॥

दोहा – राजा पढै ही राज नीत, मित्र पढै ताहीं बधू ।
कामी काम विलास रस, ग्यानी ज्ञान सरूप ॥ ८७३ ॥
सपूरन मधु मालती, कलस भयो सपूरण ।
सुरता वकता सवन कूं, सुख दायक दुख दूर ॥ ८७४ ॥
कैसर कै पति सामजी, तीण उपगार माहाराजै ।
कनक वदनी कामनी, तै पामी मै आजै ॥ ८७५ ॥

॥ इति श्री मधु मालती की कथा सपूर्ण ॥

फागुण वुदी ७ मगलवार सवत् १८२५ का दसकत नन्दराम सेठी का ।

५७५. **गुटका नं० ७४**— पत्र सख्या–२४ । साइज–७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–स० १८७३ पूर्ण ।

विशेष—नन्ददास कृत मानमञ्जरी है । पद्य संख्या–२८६ है ।

प्रारम्भ—त नमामि पदम परम गुरु कृष्ण कमल दल नैन ।
जग कारण, करुणार्णव गोकुल जाकौ अैन ॥
नाम रूप गुण भेद लहि प्रगटत सब ही वोर ।
ता विन तहां जु आन कछु कहे सु अति वड वोर ॥

अन्तिम पाठ—
जुगल नाम–जुगल जुग्म जुग द्व य द्वय उभय मिथुन विविवीप ।
जुगल किशोर सदा वसहु नददास कै द्वीप ॥८७॥

रस नाम—मरन्द्य मधु पुनि पुष्प रस कुसुम सार मकरन्द ।
रस के जाननहार जन सुनियै है आनद ॥८८॥

माला नाम—मालाष्टक ज गुणवती यह जु नाम की दाम ।
जो नर कंठ करैं सुनैं हैं है छवि को दाम ॥२८६॥

इति श्री मानमंजरी नंददास कृत संपूर्ण । संवत् १८७३ मगसिर सुदी १३ दीतवार ।

५७६. गुटका नं० ७५—पत्र संख्या-६० । साइज-६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । अशुद्ध ।

विशेष—साधु कवि की रचनाओं का संग्रह है । चरणदास को गुरू के रूप में कितने ही स्थानों पर स्मरण किया है । कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है । प्रति अशुद्ध है ।

५७७ गुटका नं० ७६—पत्र संख्या-२४ से १८६ । साइज-५×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—विविध पाठों का संग्रह है ।

५७८. गुटका नं० ७७—पत्र संख्या-६२ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

दस अछेरा, मुनि अहार लेता के पांच अरथ, मनुष्य राशि भेद, सुमेरु गिरि प्रमाण, जम्बू द्वीपका वर्णन, शील प्रमाद के भेद, जीव का भेद, अढाई द्वीप में मनुष्य राशि, अष्ट कर्म प्रकृति, विवाह विधि आदि ।

५७९. गुटका नं० ७८—पत्र संख्या-१८ से २०४ । साइज-४×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-सं० १७६६ फागुण सुदी ६ । अपूर्ण ।

(१) श्री ध्रू चरित—हिन्दी । लेखन काल-सं० १७६६ फागुण सुदी ६ ।

अन्तिम पाठ—राजा प्रजा पुत्र समाना, सकट दुखी न दीसै आंना ।
राजनीति राजा जु वीचारै, स्वामी धरम प्रजापति पाले ॥
चक्र सुदरशन रछया करई, आग्या भग करत सिर हरई ।
तातें सबको आग्या कारी, चक्र सुदर्शन कौ डर मारी ॥४॥
अैसी विधि करै ध्रू राजू, हरि क्रिया सरै सब काजू ।
घर में बन, बन में घर माई, अतर नाही राम दुहाई ॥५॥
पानी तेल मिलै पुनि न्यारौ, यो ध्रू बरतौ राम पीयारो ।
परवनि पत्र मिलै नहीं पानी, येहि विधि वरतै दास वी रानी ॥६॥
उलटौ मील चलै जल मांही, यो हरि भगत मिलन हरि जाहि ।

जैसे सीप समद तै न्यारी, स्वाति बुंद वरषे सुष भारी ॥७॥
जैमे चद कमोद निभावै, जल में बसै ग्रर प्रेम वढावै ।
जैसे कवल नीर तै न्यारो, असी विधि धू पीयारो ॥८॥
जैसे कनिक न काई लागै, अग्नि दीया तै बाती जागै ।
सुत लपेटि अग्नि में दीजै, मोहरै की सत्या नही छीजै ॥९॥
धू चरित जे को सुनै, मन वच क्रम चित लाय ।
हरिपुरवै सब कामनां, भक्ति मुकति फल पाय ॥१०॥
वसुधा सब कागद करू, सारदा लिखु बनाय ।
उदधि घोरि मसि कीजिये, धूमैह मान समाय ॥
मैं जानी मति आपनी, कलिप कही कछु बात ।
बक्मत सुत अपराध को, जन गोपाल पित मात ॥११॥

इति श्री धू चरित सपूरण समापता ।

(२) भक्ति भावती—(भक्तिभाव) हिन्दी

प्रारम्भ—सब संतन को नाय माथा, जा प्रसाद तै भयो सुनाथा ।
भव जल पार गयौ की चाहै, तो संत चरन रज सीस चढावै ॥१॥
जे नारायण अतरजामी, सब की बुधि प्रकासक स्वामी !
तुम वाणी में प्रगटो आई, निर्वर्ति परवति देह बताई ॥२॥

दोहा—पर्म हस आस्वादित चरन, कंवल मकरंद ।
नमो रामानद नमो अनतानद ॥३॥
जे प्रवृतिं को दुख नहि जानै, तो निवृतिं सौ क्यौ मनमानै ।
कलि अग्यांन भयौ विस्तारा, पुरव नही सचारा ॥४॥

अन्तिम—भगति भावती याकौ नामा, दुख खंडन सब सुख विसरामा ।
सीखै सुणैर करै विचारा, तौ कलि कुसमल कौ ह्वै न्यौ कारा ॥ २७५ ॥
अलप सुख नाही जाणै केता, सु सुख पावै चाहै जेता ।

दोहा—जो बहु गुरु तैं मति लहै वहू पंडित सुर्भ होई ।
सो सब याही मै लहै जै निकै सोधै कोय ॥ २७६ ॥

चौपई—लरिका कछु बरत जो पावै, ले माती आगे गुरुरावै ।
भली बुरी वै लेहि पिछानी, यौ तुम आगै मैं यह आनी ॥ २७७ ॥
अब वहैडो कहा तै करई, अपणौ फल ले आगै धरई ।
जैसी किपा तुम मोस्यु कीन्ही, तैसी मैं वाणी कहि दीन्ही ।

सवत् सौलहसै नव सालै, मथुरापुरी केसवा आलै ।
अगुन पहल ग्यारसि रविवारी, तहा पट पहर माहि विस्तारी ॥ १७६ ॥
करि जागरणै अकमा दीनी, तव ठाकरनै समरपण कीनी ।
भगत समेत सतोखे सोई, ज्यौ तो तद वचन सुन के सुख होई ॥ १८० ॥

दोहा—नमह राम रामनदा, नमह अनतानद ।
चरन कवल रज सिर धरै, पर पनगै सानद ॥ २८१ ॥
॥ इति श्री भगति भावती ग्र थ ममाप्ता ॥

(३) राजा चंद की कथा—प० फूरो । पत्र सख्या–१-१–२०४ । भाषा–हिन्दी । रचना काल–स० १६६३ फागुण सुदी ७ ।

विशेष—राजा चद आमानेरी की कथा है । चन्दन मलयगिरी कथा भी इसका दूसरा नाम है ।

५८०　गुटका नं० ७६—पत्र सख्या–२–२२ । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—चरनदास कृत सतगुरु महिमा है —प्रथम व अन्तिम पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ — .. ... . ।

सुख देव जी पूरन विसवा वीस ।
परम हंस तारन तरन गुरु देवन गुरु देवा ।
अनमै वानी दीजिए सहजो पावे सेवा ।
नमो नमो गुर देवन देवा ॥

५८१. गुटका नं० ८०—पत्र सख्या–३० । साइज–७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण ।

विशेष—तीर्थंकरो के माता, पिता, गणधर, वश नाम आदि का परिचय, नन्दीश्वर पूजा तथा जीव आदि के भेदों का वर्णन किया गया है ।

५८२. गुटका न० ८१—पत्र सख्या–२६ । साइज–८×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण ।

विशेष—पंचमंगल, सिद्धपूजा–सोलह कारण, दशलक्षण, पचमेरु पूजा आदि का सग्रह है ।

५८३　गुटका न० ८२—पत्र सख्या–१०२ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत-हिन्दी । लेखनकाल–× । अपूर्ण ।

विशेष—आचार्य कुन्दकुन्द कृत समयसार गाथा मात्र है, अहवल विचार आदि पाठों का संग्रह है।

५८४ गुटका नं० ८३—पत्र सख्या–२३–५७। साइज–६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण।

विशेष—नारायण लीला के हिन्दी के २५६ पद्य हैं लेकिन वे कहीं २ अपूर्ण है।

५८५. गुटका नं० ८४—पत्र सख्या–४०। साइज–७×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण।

विशेष—गुटके में कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है।

५८६ गुटका नं० ८५—पत्र सख्या–८५। साइज–६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण।

विशेष—शीलकथा-(भारामल्ल,) लावणी तथा समाधिमरण भाषा का सग्रह है।

५८७. गुटका नं० ८६—पत्र सख्या–२०। साइज–६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण

विशेष—विभिन्न चक्र दिये हुए हैं जो भिन्न २ कार्य पृच्छा से सम्बन्धित हैं। आगे उनके अलग २ फल लिखे हुए हैं।

५८८. गुटका नं० ८७—पत्र सख्या–५०। साइज–६½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण।

विशेष—मोह मर्दन कथा है। रचना काल–स० १७६३ कार्तिक बुदी १२ है। जीर्ण तथा अशुद्ध प्रति है।

५८९. गुटका नं० ८८—पत्र सख्या–१४६। साइज–७×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत–हिन्दी। लेखन काल-×।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, सिद्धप्रियस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र (पद्मप्रभ), विषापहारस्तोत्र, परमज्योतिस्तोत्र, आयुर्वेदिक नुसखे, रत्नत्रय पूजा आदि पाठों का सग्रह है। बीसा यत्र भी है जो निम्न प्रकार है—
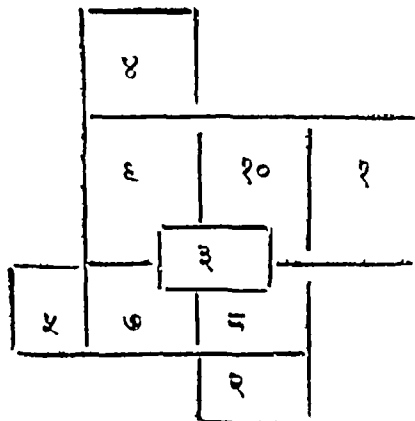
५६० गुटका नं० ८६—पत्र संख्या-६१ से १७१ । साइज-५×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष -ज्वालामालिनीस्तोत्र, चक्रेश्वरीस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र, क्षेत्रपालस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, लक्ष्मी-स्तोत्र, चैतनवधस्तोत्र, शांतिकरस्तोत्र-(प्राकृत), चिन्तामणिस्तोत्र, पुण्डरीकस्तोत्र, मयरस्तोत्र, उपसर्गहरस्तोत्र, सामायिक पाठ, जिन सहस्र नाम स्तोत्र आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

५६१ गुटका नं० ६०—पत्र संख्या-६८ । साइज-५×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-सं० १८६६ । पूर्ण ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं —

न्हवण, सकलीकरणविधान, पुण्याहवाचन और याग मंडल ।

५६२ गुटका नं० ६१—पत्र संख्या-६० । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६३. गुटका नं० ६२—पत्र संख्या-७१ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—अधिकांशत नन्ददास के हिन्दी पदों का संग्रह है । कुछ पद सूरदास के भी हैं । राधाकृष्ण से संबधित पद हैं । पदों की संख्या १५० से अधिक है ।

५६४ गुटका नं० ६३—पत्र संख्या-१६१ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १७६३ वैसाख सुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—नेमीश्वररास, श्रीपालरास (ब्रह्मरायमल्ल) हैं ।

५६५. गुटका नं० ६४—पत्र संख्या-२३ से ५४ । साइज-५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५६६. गुटका नं० ६५—पत्र संख्या-१४० । साइज-४½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—ज्योतिष शास्त्र से संबध रखने वाले पाठ हैं ।

५६७. गुटका नं० ६६—पत्र संख्या-२६ । साइज-४×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

५६८. गुटका नं० ६७—पत्र संख्या–२७६ । साइज–७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण एवं जीर्ण ।

विशेष—२ गुटकों का सम्मिश्रण है । मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) शालिभद्र चौपई	जिनराज सूरि	हिन्दी	र० का० सं० १६७८ आसोज बुदी ६

प्रारम्भ—सासण नायक समरियइ, वर्द्धमान जिनचंद ।
अभिअ विघन दुरइ हरइ, आवइ परमानंद ॥१॥

अन्तिम पाठ—साधु चरित कहवा मन तरसइ, तिणए मास्यउ हरसइजी ।
सोलह सय अठित्तरि वरसइ, आसू वदि छठि दिवसइजी ॥
सा० जिनसिंह सूरि मतिसारइ भवियण नइ उपगारइजी ।
श्री जिनराज वचन अनुसारइ, चरित कह्यउ स विचारइजी ॥
इणि परिसाधु तणा गुण गावइ, जे भवियण मन भावइजी ।
अलिय विघन तसु दूरि पुलावइ मन वंछित सुख पावइजी ॥१०॥
ए सवध भविक जे भणिस्यइ, एक मना सांभलिस्यइजी ।
दुख दुह गतस दूरि गयावस्यइ, मनि वछित फल लहिस्यइ जी ॥११॥

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(२) शीतलनाथ स्तवन	धनराजजी के शिष्य हरखचद	हिन्दी	र० का० सं० १७१६ कार्तिक सुदी १५
(३) पार्श्व स्तोत्र	"	"	र० का० सं० १७५४ कार्तिक सुदी ५
(४) नेमिनाथ स्तोत्र	—	"	र० का० सं० १७१३
(५) पदसग्रह	"	"	र० का० सं० १७५८
(६) नेमिनाथ स्तवन	धनराज	"	र० का० सं० १७४८
(७) चिन्तामणि जन्मोत्पत्ति जन्मोत्सव स्वध्याय	—	"	—
(८) गणनायक क्षेमकरण जन्मोत्पत्ति	धर्मसिंह सूरि	"	र० का० सं० १७६६ माघ सुदी
(९) पुण्यसार कथा	(पुण्यकीर्त्ति)	"	र० का० सं० १७६६

प्रारम्भ—नाभि राय नदन नमु, साति नेमि जिन पासि ।
महावीर चउवीसमउ प्रणम्या पुरइ आस ॥१॥

श्री गौतम गणधर सदा, लीला लब्धि निधान ।
समरी सह गुर सरस्वती, वेविप वधारइ वांन ॥२॥

अंतिम पाठ—खरतर गछ मति महिय विरजिउ, युग प्रधान जिनचंद ।
आचारज मिहमागिर मुनि वरूए, श्री जिनसिंह सुरद ॥२००॥
हर्षचद्र गणि हर्ष हितकरू, वाचक हस प्रमोद ।
तासु सीस पून्यकीरत इम भाखइ, मन धर अधिक प्रमोद ॥१॥
संवत् सोलह सइ छासट्ठि समइ विजय दसमी गुरुवार ।
सांगानेर नगर रलिया मणउ, पभणयउ एह विचार ॥२॥
पद्मप्रभ जिन सुपसाउलउ, दोष दोह गत जा दिन ।
उदय वद्धी भणउ, सुख सपद सतान ॥३॥
एह चरित्र भवियन जे सामलइ दुख दोह गतसु जाइ दीन ।
उदय अद्धकउ न तरुवइ, तसघरन वनि धथाइ ॥४॥

इति अष्ट प्रवचन माता उपर पुण्यसार कथा सपूर्ण ।

(१०) सीमधर स्वामी जिन स्तुति	—	हिन्दी	विशेष
(११) छ जीव कथा	—	”	—

विशेष—९५ पत्र के आगे ८ पत्र किसी के द्वारा फाड दिए गये हैं ।

(१२) श्रावक सूत्र (प्रतिकमण)	—	प्राकृत	—
(१३) अतिचार वर्णन	—	”	—
(१४) नेम गीत	लब्धिविजय	हिन्दी	—
(१५) स्तवन	—	”	—
(१६) सीमधर स्तवन	गणिलाल चद	”	—
(१७) चउसरण परिकरण	—	”	—
(१८) भक्तामरस्तोत्र	—	”	—
(१९) नवतत्व	—	”	—
(२०) नेमिराजुलस्तवन	जिनहर्ष	”	—
(२१) नमि राजुल गीत	—	”	—
(२२) सुभद्रासती सज्झाय	—	”	—
(२३) विजय सेठ विजया सेठाणी सज्झाय	सूरिहर्षकीर्ति	”	—
(२४) पद—श्री अरिहतनी चाकरी	जिनवल्लभ	”	—

(२५) सज्झाय	—	,,	ले० क० स० १७८१
(२६) पचाख्यान पचतत्र)	कवि निरर्मलदास	,,	—

प्रारम्भ—प्रथम जपु अरिहंत, अग द्वादश जु भावधर ।
गणधर गुरु सज्जत, नमो प्रति गणधर तिसतर ॥
नमो गणेश मारदा अवर गुरू गोत्तम स्वामी ।
तीर्थंकर चौबीस सकल मुनि भए शिवगामी ॥
नमो न्याति श्रावक सकल रस हाय मिल मविक सम ।
तुम्हरे प्रसाद यह उच्चरो पचतत्र की कथा अत्र ॥
पच्च्ख्यान वखानि हो न्याय नीति ससार ।
अल्प बुद्धि भाषा रचु करू ग्रन्थ विस्तार ॥१॥

अन्तिम पाठ—राम नाम निज हीरदै धरै, मुख तैं मिष्ट वचन उचरै ।
सव जिय,सुख सौ अपनै थान, सदा कहै निज मन में ग्यान ।

दोहा—सभ निज थानक सुख लहै, सव मुख सुमरै राम ।
सहस किरत भाषा कियो श्रावक निरमल नाम ॥

इति श्री पचाख्यान श्रावक निरमल दास कृत भाषा सपूर्ण । लेखन काल स० १७५४ जेठ सुदी ५ । ग्र थ ५१ पत्रों में है । तथा ११४१ पद्य हैं ।

(२७) सात व्यसन सिज्झाय	क्षेम कुशल	हिन्दी	—
(२८) ज्ञान पच्चीसी	—	,,	—
(२९) तमाखु गीत	सहसकर्ण	,,	—
(३०) नल दमयन्ती चौपई	समयसुन्दर	,,	र० का० स० १७२१ पद्य सं० १०
(३१) शांति नाथ स्तवन	केशव	,,	—
३१ क पार्श्वनाथ स्तवन	—	,,	—
(३२) महावीर स्तवन	—	,,	—
(३३) राजमती नो चिट्ठी	—	,,	—
(३४) नववाडी नो सिज्झाय	—	,,	—
(३५) शीलरासो	विजयदेव सूरि	,,	पद्य स० ७६
(३६) दान शील चौपई	जिनदत्त सूरि	,,	ले० कां० स० १७४२
(३७) प्रमादी गीत	गोपालदास	,,	२५ पद्य

(३८) आत्म उपदेश गीत	समय सुन्दर	,,	—
(३९) यादुरासो	गोपालदास	,,	—
(४०) रात्रिभोजन सज्झाय	—	,,	—
(४१) तमाखु गीत	मुनि आणंद	,,	—
(४२) शांति नाथ स्तवन	गुण सागर	,,	—
(४३) पच सहेली	छीहल	,,	र० का० स० १५७५ फागुण सुदी १५
(४४) माति छत्तीसी	यश कीति	,,	र० का० स० १६८८
(४५) यादवरासो	पुण्य रतन गणि	,,	ले० का० स० १७४३
(४६) सिंहासन बत्तीसी	—	,,	ले० का० स० १६३६
(४७) नेमिराजमतिगीत	—	,,	—
(४८) मुनिगीत	—	,,	—
(४९) मास	मनहरण	,,	र० का० स० १७३५
(५०) सिंघासन बत्तीसी	हरि कलश	,,	र० का० स० १६३२ आसोज सुदी २

५९९. गुटका न० ९८—पत्र सख्या–१७४। साइज–६½×७ इंच। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–स० १७१८ वैशाख सुदी ६। पूर्ण।

विशेष—पर्वतधर्मार्थी कृत समाधितंत्र की बाल बोध टीका है। प्रति जीर्ण है।

६००. गुटका न० ९९—पत्र सख्या–१४६। साइज–१०×५½ इंच। भाषा–सस्कृत। लेखन काल–स० १७९७ वैशाख बुदी ३। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है –

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनसहस्रस्तवन	आशाधर	सस्कृत	—
नवग्रहपूजाविधान	—	,,	—
ऋषिमडलस्तोत्र	—	,,	—
भूपाल चौवीसी	भूपाल कवि	,,	—
आदित्यवार कथा	भाउ कवि	हिन्दी	५६ पद्य
सामायिक पाठ टीका सहित	जयचदजी छाबडा	,,	—

६०१. **गुटका न० १००**—पत्र सख्या–२८ । साइज–१०×७ इञ्च । भाषा–प्राकृत–हिन्दी । लेखन काल–म० १७०६ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—गुणचद्र सूरि के शिष्य छात्र कल्याण कीर्ति ने प्रतिलिपि की थी । त्रिभगी का वर्णन है ।

६०२. **गुटका न० १०१**—पत्र सख्या–१२२ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—लक्ष्मीदास कृत श्रेणिक चरित्र है । भाषा–हिन्दी है । कुल पद्यों की सख्या १६७५ है, अन्तिम के कुछ पद्य नहीं हैं । श्रेणिक चरित्र के मूलकर्त्ता भ० शुभचन्द्र हैं ।

६०३. **गुटका न० १०२**—पत्र सख्या–८० । साइज–१०×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–स० १६४८ । पूर्ण ।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
पद	सघपति राइ डूगर	हिन्दी	—
	श्री जेण सासण सक्ल सुह गुर मिर दे राउर माव ।		
पद	—	”	—
	कुशल करि कुशल करि कुसल सुरिंद गुरु ।		
पद	कालक सूरि	”	—
	जय जय सदा जय जय नदा वनिता वचन विकासइरे ।		
मणिहार गीत	कवि वीर	”	—
	वीर जी चयणे विरचीया, श्रेणिक मन माहि सोइ ।		
गीत	—	”	—
	करि शृंगार पहिर हार तजि विकार कामनी ।		
जइतपद वेलि	कनकसोम	”	४६ पद्य हैं ।
	र० का० स० १६२५, ले० का० सं० १६४८ भादवा बुदी ८ ।		

प्रारम्भ—सरसति सामणि वीनवु , मुझ दे अमृत वाणि ।

मूलमकी खरतरतणा, करिस्यू विरद वखान ॥१॥

श्रावक श्रावी मिलि सुणउ मनि धरि अति आणद ।

चिति विष वादन को धरउ, साचउ कहर मुनिंद ॥२॥

सोलह पचीसइ समइ, वाचक दया मुनीस ।

चउमासि आया आगरइ, बहुपरि करि सुजगीस ॥३॥

रतनचन्द्र वइरागि गणि, पडित साधु कीरति ।
हरिरग गुण आगलउ ज्ञानादेवकी रति ॥८॥

अन्तिम पाठ—दया अमर माणिक गुरु सीस, साधु कीरति लहीय जगीस ।
मुनि कनक सोम इम आखइ चउ विह श्री सघ की सामइ ॥८६॥

इति श्री जइत पद वेलि । सवत् १६४८ वर्षे अषाढ सुदी अष्टमी ।

(६) चूनर्डी	साधुकीर्ति	हिन्दी	—

(थाउलपुरि सोहामणउ, गढ मढ मन्दिर वाई हो)

(७) मजारी गीत	जिनचन्द्र सूरि	,,	—

आली गारउ उदिरउ, नित खेलइ आलि ।

(८) वइरागी गीत	—	,,	—
(९) शील गीत	भारवदास	,,	—
(१०) पद	—	,,	—
(११) दानशीलतपभावना	—	हिन्दी	१४ पद्य हैं ।

सरसति स्वामिणि वीनवु वरदेई सारदा मोहि हो ।

(१२) गोरी काली वाद	—	,,	—
(१३) श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र	—	प्राकृत	—
(१४) पार्श्वनाथ नमस्कार	अभयदेव	,,	—
(१५) रागरागिनी भेद, सगीत भेद	—	हिन्दी	—
(१६) नेमिनाथ स्तवन	—	,,	—

प्रारम्भ—श्री सहगुरना पाय नमी, जिणवाणी पणमेवि ।
नय भव नेमीसर, तणा सपेपइ पभणेसु ।
सील सिरोमणि गुण निलउ, जादव कुल सिणगार ।
सुणता तेह तण उचरा, पामीजइ भवपार ॥१॥

अन्त—इय नेमि जिण जगदीस गुरु, परम सिव लक्ष्मी वरो ।
हरिवस खीर समुद्र ससिहर सामि सुह सपइ करो ।
उद्दाम काम कुरग केसरि, सिवादेवि नदणउ ॥
मह देहि नीय पइ कमल सेवा, सयल जण आणदणो ॥४३॥

(१७) वेताल पच्चीसी	वेतालदास	हिन्दी

प्रारम्भ—सरसति सुललित वचन विलास, आपउ सेवक पूरइ आस ।
तुम्ह पसाइ हुअइ बुद्धि विशाल, कविता रसके ळवउ रसाल ।
महियल मालव देस विख्यात, धरमी लोक विसन नहीं सात ।
उज्जेणी नगरी सु विसाल, राज करइ विक्रम भूपाल ॥१॥

अन्तिम—प्रगट हुई सर्व सिधि रिधि बहु बुधि नरेसर ।
खरउ काज तुम्हि करउ राज, जाम तपइ दिणेसार ॥
इद्रइ दीधउ मान वली, वरदान इसी परि ।
ए प्रबध तुम्ह तणउ प्रसिधि होसी जग भीतरि ॥
रजउ राउ सुपसाउ लहि विक्रमा इत आव्यउ घरहिं ।
उज्जेण नगरि उछव हुय हरष करी अति विस्तरिहि ॥२६७॥
राज रिधि सव सिधि सुजस विस्तरइ महीतलि ।
जरा मरण अवहरण, जन्म लब्भइ उत्तिम कुलि ॥
धरम धराउ धरण करण सुख अहि निसि ।
रमण रूपि रमा समाण, तिजि माण हुउ वसि ॥
चिहु पदहि प्रथम अक्षर करी, जास नाम अछइ प्रसिद्धि ।
तिणि कही कथा पच वीसए सरस वाचउ विवुध ॥२६७॥

इति वेतालपचीसी चउपई समाप्त ।

(१८) विक्रमप्रबन्ध रास विनयसमुद्र हिन्दी र० का० स० १५८३
३६४ पद्य हैं ।

प्रारम्भ—देव सरसति २ प्रथम पणवेवि, वीणा पुस्तक धारिणी ।
चद्र विहसि सु प्रससि वल्लइ कासमीरपुर वासिणी ॥
देइ नांण अनाण पिल्लइ कवियणनी माडली दिउ मुझ बुधि विशाल ।
जिम विक्रम राजा तणउ कहउ प्रबन्ध रसाल ॥१॥

मध्य भाग—विक्रमा दत्य तेज आदित्य बोलइ वचन करइ ते सत्य ।
वलि मागइ भीजउ आदेस खस नयरि करि वेग प्रवेश ॥२४२॥
श्री जयकर्ण राय मेघरे बीजीमि चडि साहस करे ।
पेटी आणि वेगि तिहां जाइ, राजा चाल्यु करि समदाइ ॥२४६॥

अन्तिम भाग—सवत पनरह सई त्रासीयइ, ए चरित्र निसुणी हरि सीयइ ।
साहसीक जे होइ निसंकि, कायर कपइ जे वलि रकि ।

श्री उवएसगच्छ गण वर सूरि, चरण करण गुण किरण मयूर ।
रयण प्रगु गुणगण भूरि, तसु अनुक्रमि जयइ सिद्धसूरि ॥६७॥
तेह नइ वाचक हर्ष समुद्र तसु जसु उजल षीर समुद्र ।
तसु विनये विन या वृद्धि एह, रच्यु अवधि निरवि तणेह ।
पच उठ नामा सुचिरित्र, देर्वी वेहनउ आवि विचित्र ।
तिणि विनोद चउपई रसाल, कीधी सुणतां सुख रसाल ॥४६६॥

(१६) विद्याविलास चउपई   आज्ञासु दर   हिन्दी   ३६४ पद्य हैं ।
रचना काल स० १५१६

प्रारम्भ—गोयम गणहर पाय नमी सरसति हियइ धरेवि ।
विद्या विलास नरवइ तणउ, चरिय भणु सखेवि ॥१॥
जिम जिम समालियइ श्रवणि पुण्य पवित्र चरित्र ।
तिम तिम परमाणद रस अहनिसि विलसइ चित्त ॥२॥
भण कण कचण सुयण जण राणिम भोग विलास ।
मन वछित सुख सपजइ जसु हुय पुण्य प्रकाश ॥३॥

चउपई—पुण्य पसाई पाम्यउ राज, पुण्य प्रमाणि चच्या मविकाज ।
धन धन विद्या विलासहचरी, तेहिय निसणउ आदर करी ॥४॥

मध्य भाग—कमलवती पुत्री तणउ पाणि ग्रहण करत ।
तउसु तउ नरवइ सुणउ वाचा अरणहु त ॥६८॥

अन्तिम पाठ—इण परि पूरउ पाली आउ, देवलोकि पहुतउ नरराउ ।
खरतर गछि जिन वरद्धन सूरि, तासु सीस बहु आणद पूरि ॥
श्री आज्ञासु दर वसु वज्झाय, नव रस किद्ध प्रबंध सुभाव ।
सवत् पनरह सोल वरसमि सथ वयणिगुविय सुरम्म ॥
विद्या विलास नरिंद चरित्त, भविय लोय एह पवित्त ।
जे नर पढइ सुणइ सामलइ, पुण्य प्रभाव मनोरथ फलइ ॥३६८॥
इति श्री विद्या विलास चउपई ।

(२०) साठि सवत्सरी   —   हिन्दी   —
स० १६८८ में स० १६६० का वर्णन है । विषय—ज्योतिष ।

६०४. गुटका न० १०३—पत्र सख्या—७५ । साइज—७×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—× । पूर्ण
विशेष—कर्मों की १४८ प्रकृतियों तथा चौवीस-दडकों का वर्णन है ।

६०५ **गुटका नं० १०४**—पत्र संख्या-३१ | साइज-८×६ इञ्च | भाषा-संस्कृत | लेखन काल-× | पूर्ण

विशेष—सकलीकरणविधान, न्हवनविधि, तथा पूजा सग्रह है।

६०६ **गुटका नं० १०५**—पत्र संख्या-१२० | साइज-५½×५½ इञ्च | भाषा-हिन्दी संस्कृत | लेखन काल-× | पूर्ण |

विशेष—नित्य नियम पूजायें आदि हैं।

६०७. **गुटका नं० १०६**—पत्र संख्या-२१८ | साइज-५×४ इञ्च | भाषा-संस्कृत | लेखन काल-× | पूर्ण |

विशेष—पूजा सग्रह है।

६०८. **गुटका नं० १०७**—पत्र संख्या-२५५ | साइज-५½×६½ इञ्च | भाषा-हिन्दी-संस्कृत | लेखन काल-× | पूर्ण |

विशे—पूजा पाठ सग्रह है।

६०६ **गुटका नं० १०८**—पत्र संख्या-२०० | साइज-६×६ इञ्च | भाषा-हिन्दी |

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) यशोधर चरित्र	खुशालचद	हिन्दी	र० का० सं० १७७५ पद्य ५६६
(२) सप्तपरमस्थानकथा	"	"	— पद्य स० ८३
(३) मुकटसप्तमीव्रतकथा	"	"	लेखनकाल स० १८३६ पद्य स० ५२
(४) मेघमालाव्रतकथा	"	"	स० १८३० पद्य ४४
(५) चन्दनषष्ठिव्रतकथा	"	"	"
(६) लब्धिविधानव्रतकथा	"	"	"
(७) जिनपूजापुरदरकथा	"	"	"
(८) षोडशकारणव्रतकथा	"	"	"
(९) पद (५)	"	"	"
(१०) रूपचद की जखडी	रूपचद	"	१८३०
(११) एकीभावस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"	१८३१ वैशाख सुदी ३
(१२) भक्तामरस्तोत्रभाषा	—	"	"
(१३) कल्याणमदिरभाषा	—	"	"
(१४) शनिश्चर देव की कथा	—	"	१८७४ जेठ सुदी १५

(१५) आदित्यवार कथा भाऊ हिन्दी १८७४ आषाढ सुदी ४

(१६) नेमिनाथ चरित्र अजयराज ,,

पद्य संख्या-२६४ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७९३ अषाढ सुदी १३ । लेखन काल-सं० १७८८ चैत्र सुदी ८ ।

प्रारम्भ—श्री जिनवर बंदो सर्वे, आदि अंत चववीसै ।
ग्यान पुंजि गुण सारिखा, नमो त्रिभुवन का ईस ॥१॥
तामै नमि जिणंद को बंदौ बारंबार ।
तास चरित बखाणिस्यो, तुछ बुधि अनसार ॥२॥

मध्य भाग—जो होइ वियोग तिहारो, निरफल हूँ जनम हमारो ।
तातैं संजम अब तजिए संसार तणा सुख भजिए ॥
जल विन मीन जिम किम मीन, तैसे हूं तुम आधीन ।
तुम भाव दया की कीन्हा, सब जीव छुडाई लीना ॥

अंतिम भाग—अजयराज इह कीयो बखाण, राज सवाई जयसिंह जाण ।
अंबावती महैं सुभ थान, जिन मन्दिर जिम देव विमाण ॥
बाग निवाण माहि वन राई, वेलि गुलाब चमेली जाइ ।
चंपो मरवो अरु सेवति, यौ ही जाति नाना विध कीती ॥२५८॥
बहु मेवा विधि सार, बरणत मोहि लागै बार ।
गढ मन्दिर कछु कह्यो न जाइ, सुखिया लोग बसे अधिकाइ ॥२५९॥
तामै जिन मन्दिर इक सार, तहां विराजै श्री नेमिकुमार ।
स्याम मूर्ति सोभा अति घणी, ताकी ओपमा जाइ न गणी ॥२६०॥
जाके भाग उदै सम होइ, करि दरसण हरषै भेट सोई ।
आवैं जाति सरावग घणा, काटे कर्म सबैं आपणा ॥२६१॥
धर्मराज तहां पूजा कराई, मन वच तन अति हरष धराई ।
निति प्रति बंदै ते बारबार, तारण तरण कहै भव पार ॥२६२॥
ताकी भगति कर्यो मन लाइ, अपणा बुधि सारू उपजाई ।
पंडित पुरुष हसो मति कोई, भूल चूक सौधो जो होई ॥२६३॥
संवत् सतरासै त्रेणवै, मास असाढ पाई वर्णयो ।
तिथि तेरस अंधेरी पास, शुक्रवार शुभ उतिम दास ॥

इति श्री नेमिनाथजी की चौपई संपूर्ण ।

इह पोथी है साह की, चुहड माल तसु नाम ।
मान महातमा लिपि करी, नगर अबावती धाम ॥

इसके अतिरिक्त चौवीस तीर्थंकर स्तुति एवं कक्का बत्तीसी आदि पाठ और हैं ।

६१० गुटका नं० १०६—पत्र सख्या-१६४ । साइज-५३/४×४३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—सुदर्शन रास—पद्य सख्या २०१ । लेखन काल-सं० १८०१ कातिक सुदी ८ । पूर्ण ।
इसके अतिरिक्त १० और पाठ हैं ।

६११. गुटका नं० ११०—पत्र सख्या-१२० । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का सग्रह है ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
टंडाणागीत	—	हिन्दी	—
शिवपच्चीसी	बनारसीदास	"	—
समवशरणस्तोत्र	—	संस्कृत	—
पंचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	—
पद	सुन्दर	"	—
बत्तीसी	मनराम	"	—

अंत में बहुतसी जन्मकुंडलियां दी हुई हैं ।

६१२ गुटका नं० १११—पत्र सख्या-५ से १०४ । साइज-६×४३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनसहस्रनाम भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	"	—
भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	"	—
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	बनारसीदास	"	—
पद	दीपचंद	"	—
सेवा में जाय सोही सफल घडी ।			
पद	—	"	—
मेरे तो यह चाव है निति दरसण पाउं ।			

पद	कनककीर्ति	,,	—
	अवगुनहु बकसी नाथ मेरो।		
पद	द्यानत	,,	—
	सुमरण ही मे त्यारो द्यानत प्रभू		
पद	मनराम	,,	—
	अखियां आज पवित्र भई मेरी		
पद	सोभा कही न जिनवर जाय जिनवर मूरति तेरी		

इस तरह के २२ पद्य और हैं।

त्रेपन क्रिया	ब्रह्मगुलाल	,,	—
पचमकाल का गण भेद	करमचद	,,	—

६१३. गुटका न० ११२—पत्र सख्या-३० । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १८८६ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—गुणविवेक वार निशाणी है।

६१४ गुटका न० ११३—पत्र सख्या-८६ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—मनोघपचासिका भाषा, बारह भावना, एव पचपरमेष्ठियों के मूल गुण आदि का वर्णन है।

६१५. गुटका न० ११४—पत्र सख्या-५४ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—त्रेपन भावों का वर्णन, नरकों के दोहे, भक्तामर आदि सामान्य पाठों का सग्रह है।

६१६. गुटका न० ११५—पत्र सख्या-६७ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—नित्य नियम पूजा, चौबीसठाणा चर्चा, समायिक पाठ आदि का सग्रह हैं।

६१७. गुटका न० ११६—पत्र सख्या-३७ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनकुशलसूरि छंद	—	हिन्दी	—
स्तवन	जिनकुशलसूरि	,,	—

गगाष्टक	शकराचार्य	सस्कृत	—
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	”	—
रगनाथ स्तोत्र	—	”	—
गोविन्दाष्टक	शकराचार्य	”	—

६१८. गुटका न० ११७—पत्र सख्या–६६ । साइज–७×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । निम्न सग्रह है —

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पार्श्वनाथ नमस्कार	अभय देव	प्राकृत	—
(२) अजितशांति स्तोत्र	—	”	—
(३) अजितशांति स्तवन	जिनवल्लभ सूरि	”	—
(४) भयहर स्तोत्र	—	हिन्दी	—
(५) सर्वाधिष्टायिक स्तोत्र	—	”	—
(६) जैनरक्षा स्तोत्र	—	”	—
(७) भक्तामर स्तोत्र	—	”	—
(८) कल्याणमदिर स्तोत्र	—	”	—
(९) नमस्कार स्तोत्र	—	”	—
(१०) वसुधारा स्तोत्र	—	”	—
(११) पद्मावती चउपई	जिनप्रभसूरि	”	—
(१२) शक्र स्तवन	सिद्धसेन दिवाकर	”	”
(१३) गोतमरासा	विनयप्रभ	”	र० का० स० १४१२

६१९. गुटका न० ११८—पत्र सख्या–२२० । साइज–६¾×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सग्रह । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—बीच २ में से पत्र काट लिये गये गये हैं ।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पीपाजी की चतुराई	—	हिन्दी	—
(२) नाग दमन कथा (कालिय नागणी सवाद)	—	हिन्दी गद्य	—
(३) महाभारत कथा		गद्य में ३३ अध्याय हैं ले० का० स० १७८१ आसोज सुदी ८	
(४) पद्मपुराण (उत्तर खड)	—	”	ले० का० सं० १७८२ श्रावण सुदी ३

(५) पृथ्वीराजवेलि (कृष्ण रूकमणी वेलि)	पृथ्वीराज	,,	२०० पद्य हैं

लेखन का० १७८२ श्रावण सुदी १३ । हिन्दी गद्य टीका सहित है ।

६२० गुटका नं० ११६—पत्र संख्या-१२ से ६६ । साइज-४½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—हेमराज कृत भक्तामर स्तोत्र टीका है । प्रति जीर्ण है ।

६२१. गुटका नं० १२०—पत्र संख्या-३४ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण एवं जीर्ण ।

विशेष—परमानन्द स्तोत्र, दर्शन पाठ, सहस्रनाम (जिनसेन), सकलीकरण तथा द्रव्य संग्रह आदि पाठों का संग्रह है ।

६२२. गुटका नं० १२१—पत्र संख्या-४० । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
रामस्तवन	—	संस्कृत	
	सनत्कुमारसंहितायां नारदोक्त श्रीरामस्तवराज संपूर्ण ।		
आदित्यहृदय स्तोत्र	—	,,	
	भविष्योत्तरपुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे ।		
सप्तश्लोकी गीता	—	,,	
चतुश्लोकीगीता	—	,,	
कृष्णकवच	—	,,	

६२३ गुटका नं० १२२-पत्र संख्या-११७ ।साइज-४×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, देवसिद्ध पूजा, लघु चाणक्य नीति शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

६२४. गुटका नं० १२३—पत्र संख्या-६० । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—यंत्र लिखने तथा उसके पूजने की दिनों की विधि दी हुई है ।

६२५. गुटका नं० १२४—पत्र संख्या-१०५ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) सघ पच्चीसी	—	हिन्दी	२५ पद्य

चौबीस तीर्थंकरों के सघों के साधुओं आदि की सख्या का वर्णन है।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(२) बाईस परीषह वर्णन	—	"	—
(३) मांगीतुंगी स्तवन	अभयचन्द सूरि	"	—
(४) सामायिक पाठ	—	"	—
(५) भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	"	—
(६) एकीभाव स्तोत्र भाषा	—	"	—
(७) नेमजी का व्याह लो (नव मगल)	लालचद	"	रचना काल स० १७४० भादवा सुदी ३

विशेष—अलग २ नो मगल हैं। अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

एरी इह संवत सुनहु रसालारी हां,
एरी सतरैसे अधिक चवालारी हां।
एरी भादु सुदि तीज उजारी री हां,
एरी ता इह दिन गीत सुधारी रीहां छै॥

इह गीत मगल नेम जिनका, साहजादपुर में गाइया।
अग्रवाल गरग गोती अनक चूर कहाईया॥
पातिसाह वैठाठिक या च्यौरा चक वैन वाईया।
नौरगस्याह वली कै वारै लाल मगल गाइया॥

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(८) चरचा सग्रह	—	हिन्दी	—

विभिन्न चर्चाओं का सग्रह है।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(९) परमात्म छत्तीसी	भगवतीदास	"	रचना काल सवत् १७५०
पद सग्रह	—	"	

ब्रह्म टोडर, विजयकीर्त्ति, विश्वभूषण, नवलराम, जगतराम, द्यानतराय, खुशालचद, कनककीत्ति, लालविनोद आदि कवियों के हिन्दी पदों का सग्रह है।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१०) पचपरमेष्टी चरचा	—	हिन्दी	—
(११) भक्तामर स्तोत्र भाषा	—	"	—

६२६. **गुटका नं० १२५**—पत्र संख्या—२ से ३३५। साइज—६×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—स० १७१२ ज्येष्ठ सुदी २। अपूर्ण।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) गुनगजनम	—	हिन्दी	८२२ पद्यों

की संख्या है। प्रारम्भ के १०४ पद्य नहीं है। पद्य सुन्दर है लिपि विकृत है। ले० सं० १७१२ जेठ सुदी २।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(२) डूंगर की बावनी	पद्मनाभ	,,	र० का० सं० १५४३

बावनी में ५४ पद्य हैं। कवि ने प्रारम्भ और अन्त में अपना परिचय दे रखा है प्रति अशुद्ध है। लेखन काल सं० १७१३ अषाढ बुदी २। बावनी के प्रत्येक पद्य में डूंगर श्रीमाल को सम्बोधित किया गया है।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(३) विवेक चौपई	ब्रह्मगुलाल	,,	—
(४) चेतन गीत	जिनदास	,,	—
(५) मदनयुद्ध	बूचराज	,,	र० का० सं० १५८६
(६) छीहल की बावनी	छीहल	,,	५० पद्य है।
(७) नन्द सप्तमी कथा	—	,,	र० का० सं० १६४३
(८) चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	,,	—
(९) पंथीगीत	छीहल	,,	—
(१०) साधु वंदना	बनारसीदास	,,	—
(११) जोगीरासो	जिनदास	,,	—
(१२) श्रीपाल रासो	ब्रह्मरायमल्ल	,,	अपूर्ण

इसके अतिरिक्त अन्य पाठ संग्रह भी है। भक्तामर स्तोत्र, पूजा, जयमाल, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, पञ्चमंगल, मेघकुमार गीत (पूनो) आदि।

६२७. गुटका नं० १२६—पत्र संख्या-१४६। साइज-६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६२८. गुटका नं० १२७—पत्र संख्या-२४०। साइज-९×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पचाणुव्रत की जयमाल	बाई मेघश्री	हिन्दी	(सुणि चेतन सुगुण घणा जीहां जीव दया व्रत पालो)
(२) सिद्धों की जयमाल	—	,,	—
(३) गोमट्ट की जयमाल	—	,,	

(४) मुनीश्वरों की जयमाल	जिणदास	,,	—
(५) योगसार	योगचन्द्र	,,	
		गद्य में दोहों पर अर्थ दिया हुआ है।	
(६) अध्यात्म सवैया	रुपचद	,,	—

प्रारम्भ—अनमौ अभ्यास में निवास सुध चेतन कौ।
अनमौ सरुप सुध बोध को प्रकास है॥
अनमौ अनूप उप रहत अनत ग्यान।
अनमौ अनीत त्याग ग्यान सुखरास है॥
अनमौ अपार सार आप ही कौ आप जानै।
आप ही मै व्याप्त दीसै जामै जड नास है॥
अनुमौ सरुप है सरुप चिदानन्द चद।
अनुमौ अतीत आठ कम स्यौ अकास है॥१॥

अन्तिम पाठ—चौथे सरवाग सुधि मानै सौ मिथ्याती जीव,
स्यादवाद स्वाद विना भूलौ मूढ मती है।
चौथे अति इन्द्री ग्यान जानै नहीं सो अजान,
वहै जगवासी जीव महा मोह रती है॥
चौथे बध्यो खुल्यौ मानै दुह नै को भेद जानै,
दानैं यो निदान कीयौ साचौ सील सती है।
चार चाल्यौ धारा दोइ ग्यान भेद जानै सोइ,
तेरहे प्रगट चौदे गयो सिध गती है॥

इति श्री अध्यात्म रूपचद कृत कवित्त समाप्त। ग्रन्था ग्रन्थ ४०१।

६२६ **गुटका न० १२८**—पत्र सख्या-१३०। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखनकाल-×। अपूर्ण।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं।

काल चरित्र	कबीर	हिन्दी	अपूर्ण
साखी	,,	,,	७३ पद्य हैं

अन्तिम पद्य—ऐसे राम कहे सब कोई, इन वातीन तौ भगतिन न होई।
कहै कबीर सुनहु गुर देवा, दूजो जानै नाही सेवा॥

साखी, कबीर धनी धर्मदास की माला, सबद, रमानी, रेखता तथा अन्य पदों व पाठों का सग्रह है।

गुटका अधिक प्राचीन नहीं है।

६३० **गुटका नं० १२६**—पत्र संख्या-२ से ८। साइज-८×५ इंच। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—संस्कृत में अभिषेक पाठ है।

६३१ **गुटका नं० १३०**—पत्र संख्या-१६। साइज-७½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

६३२ **गुटका नं० १३१**—पत्र संख्या-२२५। साइज-८×६ इंच। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-सं० १७७६ मगसिर सुदी ३। पूर्ण।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
मोक्ष पैडी	बनारसीदास	हिन्दी	—
विनती	मनराम	”	—
विनती	अजयराज	”	—
अठारह नाता का चौढाल्या	लोहट	”	दो प्रति है।
श्रीपाल स्तुति	—	”	२१ पद्य है।
साधु वंदना	बनारसीदास	”	—
आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	”	१५० पद्य हैं।
			ले० का० सं० १७७६ फागुण सुदी ३।
गुणाक्षरमाला	मनराम	”	४० पद्य है।

प्रारम्भ—मन वच कर या जोडि कैरे वंदौ सारद मायरे।
गुण अछिर माला कहु सुणौ चतर सुख पाई रे।
भाई नर भव पायौ मिनख को ॥१॥
परम पुरिष प्रणमौ प्रथम रे, श्री गुर गुन आराधौ रे,
ग्यान ध्यान मारिगि लहै, होई सिधि सब साधो रे।
भाई नर भव पायौ मिनख कौ ॥२॥

अन्तिम भाग—हा हा हासी जिन करै रे, करि करि हासी आनौ रे।
हीरौ जनम निवारियो, विना भजन भगवानौ रे ॥३७॥
पढै गुणै अर सरदहै रे, मन वच काय जो पीहारे।
नीति गहै अति सुख लहै, दुख न व्यापै ताही रे।
भाई नर भव पायौ मिनख कौ ॥३८॥

निज कारण उपदेस मेरे, कीयौ बुधि अनुसार रे ।
कविगण दूसण जिनधरो लीज्यौ सव सुधारी रे ।
यह विनती मनराम की रे, तुम हौ गुणह निधान रे ।
सत सहज अब गणत जो, करै सुगुण परवानौ रे ।
माई नर भव पायो मिनख कौ ॥४०॥

समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण
विनती	दीपचन्द	"	
	अविनासी आनन्द मय गुण पूरण भगवान ॥		
विनती	कुमुदचंद	"	—
	प्रभु पाय लागौं करूं सेव थारी ॥		
विनती	मनराम	"	—
	पारस प्रभु तुम नाम जी जो सुमरै मन वंच काय		
पचमगति वेलि	हर्षकीर्ति	"	—
प्रद्युम्नरास	ब्र० रायमल्ल	"	—

६३३. **गुटका नं० १३२**—पत्र सख्या-१० से ३७ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—श्रीपाल चरित्र (ब्रह्मरायमल्ल) तथा प्रद्युम्नरास, (ब्रह्मरायमल) अपूर्ण हैं ।

६३४. **गुटका नं० १३३**—पत्र सख्या-३५ । साइज-८×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-सं० १७७३ माह बुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—चिन्तामणि महाकाव्य तथा उमा महेश्वर के सवाद का वर्णन है ।

६३५. **गुटका नं० १३४**—पत्र सख्या-१०१ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण

विशेष—ऋषिमण्डल पूजा, दशलक्षण पूजा तथा होम विधान (आशाधर) आदि है ।

६३६ **गुटका नं० १३५**—पत्र सख्या-५६ । साइज-७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

वच्छराज हसराज चौपई—जिनदेव सूरि ।

प्रारम्भ—आदीपुर आदि करी, चौवीसउ जिणद ।
सुरसती मन समरु सदा, श्री जिनतिलक सुनिंद ॥१॥
सद गुरु पायि प्रणमु करी पामु गुरु आदेस ।

पुनित सामल वोलिसु, कहस्यु लवलेस ॥२॥
पुनि सु सुख उपजे हां, पुन्य संपति होइ ।
राजरीध लीला घणी, पुण्य पावै सोई ॥३॥
पुन्य उत्तम कुल होवै, पुण्य पुरष प्रधान ।
पुण्य पुरो आवुषो, पुण्य बुधी निधान ॥४॥
पुण्य उपरि सुणी जो कथा, सुणता अचिरज थायि ।
हसराज वछराज नृप हुआ पुण्य पसाई ॥५॥

मध्यभाग—

कामनी—विविध तेल ताहा कादि घंरे कुमर न जाणै भेद ।
कुमरी नगखे नरीवई रे देखी धरो विषाद ॥७१॥

कामनी—कत भणै ताहां कामनी के दाहारै छेई मन कुड ।
नस टालसी साधि परि कासी सगलो श्री घुड ॥७२
वछराज कहै कामनी रे, चिंता म करि काय ।
जेह वे जिण नई चितवई रे, तेह श्री तिण नै थाय ॥७३॥

अंतिम पाठ नहीं है

६३७. **गुटका नं० १३६**—पत्र संख्या-११२ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

निम्न लिखित पूजा पाठ संग्रह हैं—रत्नत्रयपूजा, त्रिपचाशतक्रियाव्रतोद्यापन, जिनगुणसंपत्तिव्रतपूजा (भ० रत्नचन्द), सारस्वतयंत्रपूजा, धर्मचक्रपूजा (अपूर्ण), रविव्रतविधान (देवेन्द्रकीर्ति) वृहत् सिद्धचक्रपूजा ।

६३८ **गुटका नं० १३७**—पत्र संख्या-५-३६ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—गणधरवलय पूजा, एवं आचार्य केशव विरचित षोडशकारणपूजा है ।

६३९ **गुटका नं० १३८**—पत्र संख्या-६८ । साइज-८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

भक्तामरस्तोत्र, (मंत्र सहित) तथा भक्तामर भाषा हेमराज कृत । एकीभावस्तोत्र मूल एवं भाषा । निर्वाण काण्ड भाषा । तत्वार्थसूत्र, पचमगल रूपचन्द कृत । चरचा संग्रह-(आठ कर्मों की प्रकृतियों का वर्णन, जीव समास वर्णन आदि हिन्दी में) तथा सरकृतमजरी ।

६४०. **गुटका न० १३६**—पत्र सख्या-१०२ । साइज-७३/४×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
मधुमालती की बात	चतुर्भुजदास	हिन्दी	अपूर्ण
६४५ पद्य तक हैं ।			
पचतत्रभाषा	—	हिन्दी गद्य	

विशेष—मित्र लाभ तथा सुहृद भेद तो पूर्ण है किन्तु विग्रह कथा अपूर्ण है ।

६४१. **गुटका न० १४०**—पत्र सख्या-५६ । साइज-७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
नेमीश्वरराजुलसंवाद	विनोदीलाल	हिन्दी	—
पद	नेमकीर्त्ति	"	—
	सरणागति तेरो नाथ त्यारिये श्री महावीर ।		
पचकुमारपूजा	—	"	—
वीस विद्यमान तीर्थंकर पूजा	—	"	—
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	सस्कृत	—
परीषह वर्णन	—	हिन्दी	—
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	"	—

६४२. **गुटका न० १४१**—पत्र सख्या-६२ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र (मत्रसहित) तथा देवसिद्धपूजा है ।

६४३. **गुटका नं० १४२**—पत्र सख्या-१५ से १८६ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण एव जीर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) अजितशांति स्तवन	—	प्राकृत	४० गाथा
		प्रथम चार गाथायें नहीं है ।	
(२) सीमधरस्वामीस्तवन	—		
(३) नेमिनाथ एव पार्श्वनाथ स्तवन,			
(४) वीर स्तवन और महावीर स्तवन	—	सस्कृत	—

(५) पार्श्वनाथ स्तवन	—	संस्कृत	—
(६) शत्रु जयमडल श्री आदिनाथ स्तवन	—	,,	१३ पद्य हैं
(७) गौतम गणधर स्तवन	—	,,	६ पद्य हैं
(८) वर्द्धमान जिन द्वात्रिंशिका	—	,,	—
(६) मारी स्तोत्र	—	,,	१० पद्य हैं।
(१०) भक्तामर स्तोत्र	—	,,	४४ पद्य हैं।
(११) सत्तरिसय स्तोत्र	—	,,	—
(१२) शान्ति स्तवन एवं बृहद् शान्ति स्तवन	—	,,	—
(१३) आत्मानुशासन	पार्श्वनाग	,,	७७ पद्य हैं
		र० का० सं० १०४० भादवा बुदी १५।	
(१३) अजितनाथ स्तवन	जिनप्रभ सूरि	,,	
(१४) वर्द्धमान स्तुति	—	,,	
(१५) वीतरागाष्टक	—	,,	
(१६) षष्टिशत	भडारी नेमिचन्द्र	,,	
(१७) गौतम पृच्छा	—	प्राकृत	
(१८) सम्यक्त्व सप्तति	—	संस्कृत	
(१६) उपदेश माला	—	हिन्दी	
(२०) भर्तृहरि शतक	भर्तृहरि	संस्कृत	

६४४. **गुटका नं० १४३**—पत्र संख्या-५५ । साइज-५×२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकरों का सामान्य परिचय है ।

६४५. **धर्मविलास—द्यानतराय** । पत्र संख्या-४४ । साइज-१०½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८ ।

विशेष—धर्म विलास द्यानतरायजी की स्फुट रचनाओं का संग्रह है ।

६४६. **पद संग्रह**—पत्र संख्या-४१ से ६६ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-संग्रह । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

६४७. **पाठ संग्रह**—पत्र संख्या-८८ से ११३ । साइज-७½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) भक्तामर स्तोत्र	मानतु ग	सस्कृत	
(२) परमज्योति	वनारसीदास	हिन्दी	
(३) निर्वाणकाण्ड भाषा	भैयाभगवतीदास	"	
(४) छहढाला	द्यानतराय	"	

६४८. **पाठसंग्रह**—पत्र सख्या-३६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है.—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पच मंगल	रूपचद		
(२) कल्याणमन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	
(३) विषापहार	—	"	
(४) एकीभाव स्तोत्र	भूधर	"	
(५) जिनस्तुति	श्रीपाल	"	
(६) प्रभात जयमाल	विनोदीलाल	"	
(७) बीसतीर्थंकर जखडी	हर्षकीर्त्ति	"	
(८) पचमेरु जयमाल	भूधरदास	"	
(९) वीनती	नवलराम	"	
(१०) वीनतियां	भूधरदास	"	
(११) निर्वाण काण्ड भाषा	भैयाभगवतीदास	"	
(१२) साधु वदना	बनारसीदास	"	
(१३) सवोध पचासिका भाषा	द्यानतराय	"	
(१४) वारह खडी	सूरत	"	
(१५) लघु मगल	रूपचद	"	
(१६) जिनदेव पच्चीसी	नवलराम	"	
(१७) वारह भावना	आलू कवि	"	
(१८) वाईस परीषह	भूधरदास	"	
(१९) वैराग्य भावना	"	"	
(२०) गज भावना	"	"	

(२१) चौबीस दण्डक　　दौलतराम　　,,
(२२) जखडी　　भूधरदास　　,,

६४९. पाठसंग्रह—पत्र सख्या-४ से १२ तक। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४६।

विशेष—भक्तामर भाषा पूर्ण है एकीभाव स्तोत्र अपूर्ण है।

६५०. पाठसंग्रह—पत्र सख्या-६१। साइज-१०×४½ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३५।

निम्न पाठों का सग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	पत्र
(१) पाक्षीसूत्र	कुशल मुनिंद	प्राकृत	१ से २० तक
(२) प्रतिक्रमण	—	,,	२० से २६ तक
(३) अजितशान्तिस्तवन	—	सस्कृत	३६ से ४६ तक
(४) पार्श्वनाथ स्तवन	—	,,	४६ से ५० तक
(५) गणधर स्तवन	—	प्राकृत	५० से ५३ तक
(६) भक्तामर स्तोत्र	—	सस्कृत	५४ से ५८ तक
(७) शान्तिनाथ स्तोत्र	मालदेवाचार्य	,,	

इनके अतिरिक्त ये पाठ और —स्थानक स्तुति, नवपद स्तुति, शत्रु जय स्तुति, कल्याणमन्दिर स्तोत्र। सध्या चौविहार, पचक, विचार, षटत्रिंशक, सामायिक विधि एव सथारा विधि।

६५१. बुधजनविलास—बुधजन। पत्र सख्या-५६। साइज-१०½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सग्रह। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०९।

विशेष—पं० बुधजनजी की रचनाओं का सग्रह है।

६५२. भूधरविलास—भूधरदास। पत्र सख्या-११६। साइज-७½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १३२।

विशेष—भूधरदास की स्फुट रचनाओं का सग्रह है।

६५३ मित्रविलास—घीसा। पत्र सख्या-५१। साइज-१०½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १९५३। पूर्ण। वेष्टन नं० ११०।

विशेष—

प्रारम्भ—श्री जिन चरण नमूं सदा, भ्रम तम नाशक मान।
जा सुम दर्शन दर्शतै, प्रगटत आतम ज्ञान ॥१॥

चौपई—बदू श्रीमत वीर जिनद, मेटत सकल कर्म जग फंद,
बन्दू सिद्ध निरजन देव, अष्टगुणातम त्रिभुवन सेव।
बदो आचारज गुण लीन, जिन निज माव सुद्ध अति छीन ॥
बदो उपाध्याय करि ध्यान, नाशक मिथ्यातम अज्ञान,
बदू साधु महा गमीर, ध्यान विषय अति अचल शरीर।
बदू वीतराग हित माव, आतम धर्म प्रकाशन चाव ॥४॥
मित्र विलास महासुख दैन, वरनू वस्तु स्वमाविक ऐन।
प्रगट देखिये लोक मझार, सग प्रसाद अनेक प्रकार ॥५॥

—सवैया—

अन्तिम— कर्म रिपु सो तो च्यारु गति में घसीट फिर्यो,
ताही के प्रसाद सेती घीसा नाम पायो है।
मारामल मित्र वो वहालसिंह पिता,
तिनकी सहाय सेती ग्रंथ यो वनायो है ॥
यामें मूल चूक होय सोधि सो सुधार लीजो,
मो पै कृपा दृष्टि कीजो माव यो जनायो है।
दिग निध सत ज्ञान हरि को चतुर्थ गन,
फागुन सुदि चोथ मान जिन गुन गायो है ॥

दोहा—आनंदमय आनद करन हरन सकल दुख रोग।
मित्र विलास ग्रथ यह निज रस अमृत मोग ॥

इसमें निम्न लिखित पाठों का सग्रह है —

षट द्रव्य निर्णय—दूसरे अधिकार तक। मावों का पूर्ण सैद्धान्तिक विवेचन है।

द्वादस व्रत वर्णन, कषाय के पच्चीस भेद वर्णन, सम्यक् दृष्टि अवस्था वर्णन, गुरु स्वरुप वर्णन, द्वादसानुप्रेक्षा वर्णन, वाईस परीषह वर्णन, पच प्रकारचारित्र वर्णन, मोक्ष तत्व वर्णन, एवं सुख दुख निर्णय/ग्रथ का विषय है आत्मा में स्व और परमावों का सैद्धान्तिक विवेचन।

६५४ वचनशुद्धिव्याख्यान—पत्र सख्या–६। साइज–१२×७ इञ्च। माषा–हिन्दी। विषय–सग्रह। रचना काल–×। लेखन काल–स० १९४३ जेष्ठ बुदी ऽऽ। पूर्ण। वेष्टन न० १५१।

विशेष—व्याख्यान कर्त्ता भूथालालजी को कहा गया है।

६५५ विनती पद संग्रह—पत्र संख्या-१४३ से १७६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्फुट संग्रह । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विषय
विनती	भूधरदास	हिन्दी	—
भक्तामर भाषा	हेमराज	”	—
सम्मेदशिखर पूजा	नंदराम	”	—
स्फुट श्लोक	—	संस्कृत	—
पद	आतमराम	”	—
उपदेशी पद	—	”	—
पद	नवलराम	हिन्दी	—
आलोचना पाठ	जौहरीलाल	हिन्दी	—
पद	द्यानतराय	हिन्दी	—

ग्रन्थानुक्रमणिका

अ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
अनंतव्रतोद्यापन	—	(सं०)	१८७
अनंतव्रतकथा	—	(सं०)	२२५
अनंतव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५
अनंतव्रतपूजा	श्रीभूषण	(सं०)	१९७
अनंतव्रतपूजा	—	(सं०)	२०४
अनंतव्रतपूजा	गुणचन्द्र	(सं०)	२०४
अभ्रकमारणविधि	—	(हि०)	१४८
अभिषेकपाठ	—	(सं०)	५०,१२६
अभिषेकविधि	—	(सं०)	१८७
अभिधानचिंतामणि नाममाला	हेमचन्द्र	(सं०)	२३२
अमरकोश	अमरसिंह	(सं०)	८८,२३२
अर्द्धकथानक	बनारसीदास	(हि०)	११७
अरहंत स्वरूप वर्णन	—	(हि०)	२३
अर्हत् पूजा	पद्मनंदि	(सं०)	१८७
अर्हन् सहस्रनाम	—	(सं०)	१६८
अरिष्टाध्याय	—	(प्रा०)	२४५
अवजदकेवली	—	(हि०)	१३८
अष्टक	—	(सं०)	१६८
अष्टविधिपूजा	सिद्धराज	(हि०)	१४२
अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन	—	(हि०)	१६४
अष्टजाम	कवि देव	(हि०)	२७६
अष्टपाहुड	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	३६
अष्टपाहुड भाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	३६,१६१
अष्टसहस्री	विद्यानंदि	(सं०)	४६
अष्टांगहृदयसंहिता	वाग्भट्ट	(सं०)	२४६
अष्टापदगिरिस्तवन	धर्मसुन्दर वाचनाचार्य	(हि०)	२७३
अष्टाह्निकाकथा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	८१
अष्टाह्निकाकथा		(हि०)	२२४,२२५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
अष्टाह्निकाकथा	रत्ननन्दि	(सं०)	२३५
अष्टाह्निकापूजा	—	(हि०)	१७
अष्टाह्निकापूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	१६८
अष्टाह्निकापूजा	द्यानतराय	(हि०)	६०,६१
अष्टाह्निकापूजा	—	(सं०)	११८
अष्टाह्निकाव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५
अष्टाह्निकास्नपनविधि	—	(हि०)	१४८
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	६०
[illegible] मिथ्या की बातें	—	(हि०)	११०
अंकुरारोपणविधि	इन्द्रनन्दि	(सं०)	४६
अंकुरारोपणविधि	—	(सं०)	११७
अंगोपांगफुरकनवर्णन	—	(हि०)	१४८
अंजननिदान	अग्निवेश	(सं०)	२४६

आ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
आकाशपंचमीकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५
आख्यातप्रक्रिया	—	(सं०)	२३०
आगतिनागतिपाठ	—	(हि०)	[illegible]
आगमसार	मुनि देवचन्द्र	(हि०) (ग)	१०५
आचाररासा	—	(हि०)	१६६
आचारशास्त्र	—	(सं०)	१८७
आचारसार	वीरनन्दि	(सं०)	२३,१८७
आचारसारवृत्ति	—	(सं०)	२२
आठ कर्म की भावना	जगराम	(हि०)	१६३
आम उपदेश गीत	समयसुन्दर	(हि०)	२१२
आत्मसंबोधनकाव्य	रइधू	(अपभ्रंश)	३१
आत्महिंडोलन	केशवदास	(हि०)	१६३
आत्मानुशासन	गुणभद्राचार्य	(सं०)	३६,१६१
आत्मानुशासन	पार्श्वनाग	(सं०)	३१०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
कर्मदहनव्रतपूजा	—	(स०)	५१
कर्मदहनव्रतमत्र	—	(स०)	५१
कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३, १२५, १७६
कर्मप्रकृतिवर्णन	--	(स०)	६, १५३, १५६, १६६, २६६
कर्मप्रकृतिविधान	बनारसीदास	(हि०)	४, ११५
कर्मप्रकृतियों का व्योरा (कर्मप्रकृतिचर्चा)	--	(हि०)	५
कर्मप्रकृति वृत्ति	सुमतिकीर्ति	(स०)	१७६
कर्मछत्तीसी	—	(हि०)	१६३
कर्मबत्तीसी	अचलकीर्ति	(हि०)	११५
कर्मस्वरूपवर्णन	अभिनव वादिराज (प० जगन्नाथ)	(स०)	५
कर्मविपाकरास	ब्र० जिनदास	(हि० गु०)	८१
कर्महिंडोलना	—	(हि०)	१२८
कर्महिंडोलना	हर्षकीर्ति	(हि०)	१६७, २७२
कृष्ण का बारहमासा	धर्मदास	(हि०)	२७५
कृष्णदास का रासा	—	(हि०)	२७७
कृष्णरुक्मणी वेलि	पृथ्वीराज राठौड	(हि०)	११८
कृष्णलीलावर्णन	—	(हि०)	२८०
कृष्णबालचरित	—	(हि०)	२७८
कृष्णकवच	—	(स०)	३०२
करुणाभरन नाटक	लच्छीराम	(हि०)	२७०
करुणाष्टक	—	(स०)	११२
कल्मषकुठार	रामचन्द्र	(हि०)	२८८
कल्याणकवर्णन	मनसुख	(अप०)	१३७
कल्याणमदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	(स०)	१०१, ११२, १२२ १२६, १३६, १५६, २३८, २७३, ३१२
कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा	--	(हि०)	१२२, २६७, ३०१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	(हि०)	१०२, ११३, ११५, १२४, १४६, १५३, १५८, १७२, २३८, २६६, ३११.
कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा	अखयराज	(हि०)	१०२
कलिकुडपूजा	—	(स०)	१५६
कलिकुडपार्श्वनाथपूजा	—	(स०)	१६८
कलियुग की वीनती	ब्रह्मदेव	(हि०)	१७७
कलियुगचरित	—	(हि०)	११२
कलावतीचरित्र	भुवनकीर्त्ति	(हि०)	६७
कवित्त पृथ्वीराज चौहाण का	—	(हि०)	१२४
कवलचन्द्रायण व्रत कथा	—	(स०)	८१
कवित्त	गिरधर	(हि०)	१३६
कवित्त	पृथ्वीराज	(हि०)	१३६
कवित्त	खेमदास	(हि०)	१३७
कवित्त	—	(हि०)	१३६, २७३
कवीर की परचई	कवीरदास	(हि०)	२६७
कवीर धर्मदास की दया	,,	(हि०)	२६७
कविकुलकठाभरण	दूलह	(हि०)	२४६
कवीर धनी धर्मदास की माला		(हि०)	३०५
कांजीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	२०५
कातिकेयानुप्रेक्षा	स्वामी कातिकेय	(प्रा०)	१६१
कार्तिकेयानुप्रेक्षा	जयचद छाबड़ा	(हि०)	१६१
कामदकीयनीतिसार भाषा	—	(हि०)	२३५
काल और अन्तर का स्वरूप	—	(हि०)	५
काया पाजी	कवीरदास	(हि०)	२६७
कालचरित्र	कवीरदास	(हि०)	३०५
कालज्ञान	—	(स०)	२४६
कालिकाचार्यकथानक	भावदेवाचार्य	(प्रा०)	२२५
किशोरकल्पद्रुम	शिवकवि	(हि०)	१६६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
ज्ञानपच्चीसीव्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२०५
ज्ञानपूजा	—	(सं०)	२००
ज्ञानसार	रघुनाथ	(हि०) प	२६०
ज्ञानसूर्योदयनाटक	वादिचन्द्र सूरि	(सं०)	८६
ज्ञानसूर्योदय नाटक भाषा	पारसदास निगोत्या	(हि०)	६०
ज्ञानमार्गणा	—	(हि०)	२८
ज्ञानसारगाथा	—	(प्रा०)	१३२
ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	(हि०)	१६३
ज्ञानसूघडी	शोभचन्द्र	(हि०)	१२६
ज्ञानानंद श्रावकाचार	रायमल्ल	(हि०)	२८
ज्ञानार्णव	आ० शुभचन्द्र	(सं०)	४०, १६२
ज्ञानार्णव भाषा	जयचन्द छाबडा	(हि०)	४०
ज्ञानार्णव तत्वप्रकरण टीका		(हि०)	२५२
जिनकुशलसूरि छंद	—	(हि०)	१००
जिनगीत	अजयराज	(हि०)	१६३
जिनगुणसंपत्तिव्रतपूजा	भ० रत्नचन्द्र	(सं०)	३०८
जिनगुणसंपत्तिव्रतोद्यापन	—	(सं०)	२०५
जिनगुणसंपत्ति व्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६६
जिनगुणपच्चीसी	—	(हि०)	२८
जिनदत्तचरित्र	गुणभद्राचार्य	(सं०)	६६
जिणयतचरित्र (जिनदत्तचरित्र)	प० लाखू	(अपभ्रंश)	६६
जिनधर्मपच्चीसी	भगवतीदास	(हि०)	१५५
जिनदेवपच्चीसी	नवलराम	(हि०)	३११
जिनपंजरस्तोत्र	कमलप्रभ	(सं०)	१०२
जिनपूजापुरंदर कथा	खुशालचंद	(हि०)	२६७
जिनदर्शन	—	(प्रा०)	१०२
जिनदर्शन	—	(सं०)	१२३
जिनपालितमुनि स्वाध्याय	विमलहर्ष वाचक	(हि०)	१८४
जिनमंगलाष्टक	—	(सं०)	२६६
जिनराजस्तुति	कनककीर्त्ति	(हि०)	१५२
जिनराज विनती	—	(हि०)	१५३
जिनरात्रिव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५
जिणलाडूगीत	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	११७
जिनविनती	सुमतिकीर्त्ति	(हि०)	१६४
जिनयज्ञकल्प (प्रतिष्ठापाठ)	आशाधर	(सं०)	२००
जिनस्तुति	—	(हि०)	१०३
जिनस्तुति	रूपचंद	(हि०)	१५२
जिनस्तुति	श्रीपाल	(हि०)	३११
जिनवाणीस्तुति	—	(सं०)	१५४
जिनसंहिता	—	(सं०)	५३
जिनस्वामीविनती	सुमतिकीर्त्ति	(हि०)	११७
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१०२, १०७, ११६, २०८, २३६, ३०१, ३०३
जिनसहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	५३, ११४
जिनसहस्रनामपूजाभाषा	स्वरुपचंद बिलाला	(हि०)	५३
जिनसहस्रनाम	आशाधर	(सं०)	१०२, १३४, २०४, २३६, २६२
जिनसहस्रनामस्तोत्र	—	(सं०)	२८८
जिनसहस्रनामटीका	मू० आशाधर टीका० श्रुतसागर सूरि	(सं०)	१०२, २३६
जिनसहस्रनाम टीका	अमरकीर्त्ति	(सं०)	२३६
जिनसहस्रनाम भाषा	बनारसीदास	(हि०)	१०३, १३७, २६६
जीवों की संख्या का वर्णन	—	(हि०)	२८
जीतकल्पाव चूरि	—	(हि०)	१७०
जीवंधरचरित्र	आ० शुभचन्द्र	(सं०)	२११
जीवमोक्षबत्तीसीपाठ	—	(हि०)	२
जीवसमासवर्णन	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१०

द

ध

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
नेमिजी को व्याहलो	लालचन्द	(हि०)	३०३
नेमि व्याहलो (नव मंगल)	हीरा	(हि०)	८४
नेमिनाथ का व्याहला	नाथू	(हि०)	१२०
नेमिराजमति वेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	११७
नेमिनाथराजुल गीत	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	१६६
नेमिनाथचरित्र	अजयराज	(हि०)	२६८
नेमिजिनपुराण	ब्र० नेमदत्त	(सं०)	६४, २०३
नेमिनाथ मंगल	—	(हि०)	१२१
नेमिराजमति गीत	जिनहर्ष	(हि०)	१४७
नेमिराजमति जखडी	हेमराज	(हि०)	१५२
नेमिदूत काव्य	विक्रम	(सं०)	२१०
नेमिदूत काव्य सटीक	टीका० गुण विनय	(सं०)	२११
नेमिनाथस्तवन	धनराज	(हि०)	२८६
नेमिनाथस्तवन	—	(हि०)	२६६
नेमिनाथस्तवन	—	(सं०)	३०६
नेमिनाथस्तोत्र	—	(हि०)	२८६
नेमिनाथस्तोत्र	शालि पंडित	(सं०)	२४०
नेमिशीलवर्णन	—	(हि०)	१३८
नेमीश्वरगीत	जिनहर्ष	(हि०)	१५६
नेमीश्वरगीत	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	१६६
नेमीश्वरराजमतिगीत	विनोदीलाल	(हि०)	१५६
नेमीश्वरराजमति गीत	—	(हि०)	१६६
नेमीश्वरराजुल संवाद	विनोदीलाल	(हि०)	३०६
नेमीश्वर के दशभवांतर	ब्र० धर्मरूचि	(हि०)	१५७
नेमीश्वरगीत	छीहल	(हि०)	११७
नेमीश्वरजयमाल	भंडारी नेमिचंद्र	(अप०)	११७
नेमीश्वररास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	११२, १३२, २७२ २८८
नेमीश्वररास (हरिवंशपुराण)	नेमिचंद	(हि०)	१२७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
नेमीश्वर लहरी	—	(हि०)	१५२
नेमीश्वर विनती	—	(हि०)	१५५
नैणसी (नैनसिंहजी) के व्यापार का प्रमाण		(हि०)	१६०
नैमित्तिक पूजा	—	(हि०)	१५५
पट्टावलि भद्रबाहु से पद्मनंदि तक		(सं०)	११७
पत्रिका	—	(सं०)	१७१, १३१, १३२
पद	अजयराज	(हि०)	१३०, १६३
पद	कनककीर्त्ति	(हि०)	३००
पद	कृष्ण गुलाब	(हि०)	१५५
पद	कबीरदास	(हि०)	२६४
पद	कालिक सूरि	(हि०)	२६३
पद	किशनसिंह	(हि०)	१६३
पद	कुमुदचन्द्र	(हि०)	२७३
पद	किशोरदास	(हि०)	१२७
पद	खुशालचन्द्र	(हि०)	२६७
पद	चरनदास	(हि०)	२७५
पद	छीहल	(हि०)	११७
पद	जगजीवन	(हि०)	१२०
पद	जगतराम	(हि०)	१३३, १३७, १५५
पद	जगराम	(हि०)	१६२
पद	जिनकुशलसूरि	(हि०)	२७३
पद	जिनदत्तसूरि	(हि०)	२७३
पद	जिनदास	(हि०)	१६४, १७२, १५५
पद	जिनवल्लभ	(हि०)	२६०
पद	जीवनराम	(हि०)	१५५
पद	जोधा	(हि०)	१३७, १५३
पद	जौहरीलाल	(हि०)	१७२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
पदसग्रह	टेकचंद	(हि०)	११३
पद	टोडर	(हि०)	१२८
पद	डालूराम	(हि०)	१४७
पद	सघपति राइ डूगर	(हि०)	२६३
पदसंग्रह	ब्र० दयाल	(हि०)	१०४
पद	द्यानतराय	(हि०)	१२६, १३७, १६३, ३१०
पदसग्रह	दीपचन्द्र	(हि०)	११३, १५१, १५३, १६३, २६६, १२७, १३७
पदसग्रह	मंदास	(हि०)	११३
पद	नददस	(हि०)	२८८
पद	नवलराम	(हि०)	१३७, १५१, १६२
पद	नाथू	(हि०)	१२७
पद	नेमकीर्त्ति	(हि०)	३०६
पद	पूनो	(हि०)	१३२
पद	परमानद	(हि०)	११६
पद	बुधजन	(हि०)	१३७
पद	बालचन्द	(हि०)	१२३
पद	भागचन्द	(हि०)	१६२
पद	बनारसीदास	(हि०)	११३, १५३, १५५, १६१, १६३
पद	भूधरदास	(हि०)	११३, १३७, १५१, १५५
पदसग्रह	मनराम	(हि०)	११४, ११५, १२०, १४७, ३००, ३१०
पद	मलजी	(हि०)	१३७
पद	रामदास	(हि०)	१२६, १३२
पद	ऋषभनाथ	(हि०)	१३१
पद	रूपचंद	(हि०)	१११, ११३, १२३, १२६, १६३, १६५
पद	बखतराम	(हि०)	१३७
पद	वृन्द	(हि०)	१३२
पद	विश्वभूषण	(हि०)	१३१, १३२
पद	श्यामदास	(हि०)	१६४
पद	सालिग	(हि०)	१६२
पद	कवि सुन्दर	(हि०)	१६७, २६६
पद	सूरदास	(हि०)	२८८
पद	सोभचद	(हि०)	१५५
पद	हरखचद (धनराज के शिष्य)	(हि०)	२८६
पदसग्रह	हर्षचद	(हि०)	११३
पद	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	११७
पद	हरीसिह	(हि०)	१२७, १३७, १६२
पदसग्रह	—	(हि०)	१०३, १०४, १२६, २८०, १२८, १४३, १४५, १४६, १४६, १५१, १५३, १५८, १६३, २६३, २६४, २६६, ३०३, १३५, २८८, २७२
पदसंग्रह (सत्तर प्रकार पूजा प्रकरण)	साधुकीर्त्ति	(हि०)	२७३
पद्मपुराण	रविषेणाचार्य	(सं०)	२२३
पद्मपुराण (उत्तर खण्ड)	—	(हि०)	३०१
पद्मनदिपचविंशति	पद्मनंदि	(प्रा०)	३०, २५६
पद्मनदिपच्चीसी	मन्नालाल खिन्दुका	(हि०)	३१
पद्मपुराणभाषा	खुशालचद	(हि०)	६४
पद्मपुराणभाषा	दौलतराम	(हि०)	६४, २२३
पद्मावतीअष्टकवृत्ति	—	(स०)	१०४
पद्मावतीकवच	—	(स०)	२०२
पद्मावतीपटल	—	(स०)	२०२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पचाख्यान (पचतत्र)	निरमलदास	(हि०)	२६१
पचाणुव्रत की जयमाल	बाई मेघश्री	(हि०)	३०४
पचास्तिकाय	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	१६, १८०
पचास्तिकाय टीका	अमृतचन्द्राचार्य	(स०)	१६, १८०
पचास्तिकायप्रदीप	प्रभाचन्द्र	(स०)	१६
पचास्तिकायभाषा	हेमराज	(हि०)	१६, १८
पचास्तिकाय भाषा	बुधजन	(हि०)	१६१
पंचेंद्रियवेलि	ठक्कुरसी	(हिं०)	११७,११६ १६५,२६६
पन्थीगीत	छीहल	(हि०)	११४,११६ १६५, ३०४
पद्रहप्रकार के पात्र वर्णन	—	(हि०)	१२७
पन्नाशाहजादा की बात	—	(हि०)	१७१
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	(अ०)	४१,११४ ११८ १३२, १७१, १८३
परमात्मप्रकाश टीका	ब्रह्मदेव	(स०)	४१
परमात्मप्रकाश भाषा	दौलतराम	(हि०)	४१
परमात्मपुराण	दीपचद	(हि०)	४१
परमात्मछत्तीसी	भगवतीदास	(हि०)	३०३
परमार्थगीत	रूपचंद	(हि०)	११६,१६४
परमार्थदोहाशतक	रूपचद	(हि०)	१११
परमानंदस्तोत्र	—	(स०)	११२, १३३ १५७, १८८, ३०२
परमानदस्तोत्र	पूज्यपाद स्वामी	(स०)	२६६
परमज्योति	बनारसीदास	(हि०)	१७२, २७७ ३११
परमज्योतिस्तोत्र	—	(स०)	२८७
पर्वतपाटणी का रासो	—	(हि०)	२८७
परीषह विवरण	—	(हि०)	३१, ३०६
परीक्षामुख	आचार्य माणिक्यनदि	(स०)	४८
परीक्षामुख	जयचद छावडा	(हि०)	४८

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
परिभाषापरिच्छेद (नयमूलसूत्र)	पचानन भट्टाचार्य	(स०)	१६६
प्रथमशुक्लध्यानपच्चीसी	—	(हि०)	३
प्रक्रियारूपावली	पं० रामरत्न शर्मा	(स०)	८७
प्रतिक्रमण	—	(प्रा०) (स०)	३१
प्रतिक्रमणसूत्र	—	(प्रा०)	२५६, ३१२
प्रतिमास्तवन	राजसमुद्र	(हि०)	१४१
प्रतिष्ठापाठ	आशाधर	(स०)	१७२
पृथ्वीराजवेलि	पृथ्वीराज	(हि०)	३०२
प्रतिष्ठासारसग्रह	वसुनदि	(स०)	५७
प्रबोधसार	प० यश कीर्त्ति	(स०)	३१
प्रद्युम्नचरित्र	—	(हि०)	७०
प्रद्युम्नचरित्र	सधारु	(हि०)	७०
प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	(स०)	२१३
प्रद्युम्नचरित्र	कविसिंह	(अप०)	२१३
प्रद्युम्नकाव्य पजिका	—	(प्रा०)	२१३
प्रद्युम्नरासो	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	१३२,३०७ ३१३
प्रबोधबावनी	जिनरग	(हि०)	१४१
प्रबोधचन्द्रोदय	मल्लकवि	(हि०)	६०
प्रबोधचन्द्रोदय नाटक	कृष्णमिश्र	(स०)	२३३
प्रभातजयमाल	विनोदीलाल	(हि०)	३०१
प्रमादीगीत	गोपालदास	(हि०)	२६१
प्रमेयरत्नमाला	अनन्तवीर्य	(स०)	८८
प्रयोगमुख्यसार	—	(स०)	२३०
प्रवचनसार	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	४२,१६३
प्रवचनसार भाषा	हेमराज	(हि० ग०)	४२, १११, १६३
प्रवचनसार भाषा	वृन्दावन	(हि०)	४२
प्रवचनसार भाषा	हेमराज	(हि० प०)	१६३

भ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
शान्तिपाठ	—	(सं०)	१५६
शान्तिनाथस्तवन	केशव	(हि०)	२६१
शान्तिनाथस्तवन	गुणसागर	(हि०)	२६०
शान्तिनाथस्तोत्र	गुरुभद्र (गुणभद्र)	(सं०)	११७
शान्तिनाथस्तोत्र	कुशलवर्धनशिष्य नगागणि	(हि०)	२४३
शान्तिनाथस्तोत्र	मालदेवाचार्य	(सं०)	३१२
शान्तिस्तवन	—	(सं०)	३१०
शान्तिस्तवनस्तोत्र	—	(हि०)	१०७
शालिभद्रचौपई	जिनराजसूरि	(हि०)	७८,२८६
शालिभद्रचौपई	—	(हि०)	२७२
शालिभद्रसज्झाय	मुनि लावनस्वामी	(हि०)	१७४
शालिहोत्र	पं० नकुल	(सं० हि०)	२६६
शास्त्रपूजा	द्यानतराय	(हि०)	६०
शास्त्रमण्डलपूजा	ज्ञानभूषण	(सं०)	२०८
शिखरविलास	मनसुखराम	(हि०)	१८८
शिखरविलास	—	(हि०)	१२६
शिवपच्चीसी	बनारसीदास	(हि०)	७८१,२८६
शिवरमणी का विवाह	अजयराज	(हि०)	१६३
शिशुपालवध	महाकवि माघ	(सं०)	२१६
शिष्यदीक्षाबीसी पाठ	—	(हि०)	२
शीघ्रबोध	काशीनाथ	(सं०)	२४८
शीलगीत	भैरवदास	(हि०)	२६४
शीतलनाथस्तवन	धनराज के शिष्य हरखचंद	(हि०)	२८६
शीलकथा	भारामल्ल	(हि०)	८५,२८७
शीलतरंगिनीकथा	अखैराम लुहाडिया	(हि० प०)	८६
शीलरास	विजयदेवसूरि	(हि०)	१०१,२६१
शुक्रराज कथा (शत्रु जयगिरि स्तवन)	माणिक्यसुन्दर	(सं०)	२२६
शुभाषितार्णव	—	(सं०)	१६३
श्रद्धाननिर्णय	—	(हि०)	३५
श्रावकाचार	अमितगति	(सं०)	३६
श्रावकाचार	गुणभूषणाचार्य	(सं०)	३६
श्रावकाचार	पद्मनंदि	(सं०)	३५
श्रावकाचार	पूज्यपाद	(सं०)	३५
श्रावकाचार	योगीन्द्रदेव	(अप०)	१८६
श्रावकाचार	वसुनंदि	(सं०)	३५
श्रावकाचार	—	(प्रा०)	३५
श्रावकाचार	—	(सं०)	३५
श्रावकाचार	—	(हि०)	१८८
श्रावकाचारदोहा	लक्ष्मीचंद	(प्रा०)	११०
श्रावकों के १७ नियम	—	(हि०)	४
श्रावकक्रियावर्णन	—	(हि०)	३५
श्रावकधर्मवचनिका	—	(हि०)	३५
श्रावकदिनकृत्यवर्णन	—	(हि०)	३५
श्रावक प्रतिक्रमणसूत्र	—	(प्रा०)	३५,२६४
श्रावकनी सज्झाय	जिनहर्ष	(हि०)	१४०
श्रावकधर्मवर्णन	—	(हि०)	१७२
श्रावकसूत्र	—	(प्रा०)	२६०
श्रावणद्वादशी कथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि० प०)	२६५
श्रीपालचरित्र	कवि दामोदर	(अप०)	७८
श्रीपालचरित्र	दौलतराम	(हि०)	७८
श्रीपालचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	७८,११६
श्रीपालचरित्र	परिमल्ल	(हि०)	७६,२१६
श्रीपालचरित्र	—	(हि० ग०)	७६
श्रीपालदर्शन	—	(हि०)	१४३
श्रीपालरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	११३,१३१ २७०, २८१, २८८, ३०४, ३०७
श्रीपाल की स्तुति	—	(हि०)	१८६,३०६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
सखेश्वर पार्श्वनाथस्तुति	रामविजय	(हि०)	१५०
सखेश्वर पार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	१४०
सथारा विधि	—	(स०)	३१२
सन्मतितर्क	सिद्धसेन दिवाकर	(सं०)	१६६
सरकृतमजरी	—	(स०)	३०८
सप्तपदार्थी	श्री भावविद्येश्वर	(स०)	४८
सप्तऋषिपूजा	—	(स०)	१५६,२०७
सप्तपरमस्थान कथा	खुशालचद	(हि०)	२६७
सप्तपरमस्थान पूजा	—	(स०)	२०५
सप्तपरमस्थान विधानकथा	श्रुतसागर	(स०)	८६
सप्तव्यसन कथा	आ० सोमकीर्त्ति	(स०)	८६,१२६
सप्तव्यसन कवित्त	—	(हि०)	१५५
सप्तव्यसन चरित्र	—	(हि०)	२१६
सप्तश्लोकी गीता	—	(स०)	३०२
सबोधपचासिका	गोतमस्वामी	(प्रा०)	१२३,१८६
सबोधपचासिका	त्रिभुवनचद	(हि०)	११४
सबोधपचासिका	द्यानतराय	(हि०)	३७,११६, १२३, २७३, ३११
सबोधपचासिका	देवसेन	(प्रा०)	११८
सबोधपंचासिका	विहारीदास	(हिं०)	१५३
सबोधपचासिका	—	(प्रा०)	१३६
सबोधपंचासिका	—	(हि०)	३००
सबोधपचासिका टीका	—	(प्रा० सं०)	१८६
सबोधपचासिका	रइधू	(अप०)	३६
सबोधसत्तरी सार	—	(स०)	३७
सम्मेदशिखरपूजा	जवाहरलाल	(हि०)	२०७
सम्मेदशिखरपूजा	नदराम	(हि०)	२०७
सम्मेदशिखरपूजा	रामचद	(हि०)	६१
सम्मेदशिखरपूजा	—	(हि०)	६१, ११६
सम्मेदशिखरपूजा	—	(स०)	२०७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
सम्मेदशिखरमहात्म्य	दीक्षित देवदत्त	(स०)	३६,१६०
सम्मेदशिखरमहात्म्य	मनसुख सागर	(हि०)	३६
सम्यग्प्रकाश	डालूराम	(हि०)	३६
सम्यग्दर्शन के आठ अंगों की कथा	—	(सं०)	८६
सम्यक्त्वकौमुदी	मुनि धर्मकीर्त्ति	(स०)	८६
सम्यक्त्वकौमुदी कथा	जोधराज गोदिका	(हि० प०)	८६, २२५
सम्यक्त्वकौमुदी कथा	—	(हि०)	८५
सम्यक्त्व के आठ अंगों का कथा सहित वर्णन	—	(हि०)	१०८
सम्यक्चतुर्दशी	—	(हि०)	३
सम्यक्त्वपच्चीसी	भगवतीदास	(हि०)	३६,१७२
सम्यक्त्वसप्तति	—	(स०)	३१०
सम्यक्त्वी का बधावा	—	(हि०)	१५२
समकितभावना	—	(हि०)	१५४
समतभद्रस्तुति (वृहद् स्वयभू स्तोत्र)	समंतभद्र	(स०)	१०८
समयसारकलशा	अमृतचन्द्राचार्य	(स०)	४३,१६८, २५६
समयसारगाथा	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	१३२, १६४, २८७
समयसारटीका	अमृतचन्द्राचार्य	(स०)	४३
समयसारनाटक	बनारसीदास	(हि०)	४४,११३, ११५, ११८, १२०, १५८, १६५, २७४, ३०३
समयसारभाषा	राजमल्ल	(हि०)	४ ,१६५
समयसारभाषा	जयचद छावडा	(हि०)	४५
समयसारवचनिका	—	(हि०)	१६३
समवशरणपूजा	पन्नालाल	(हि०)	२०७
समवशरणपूजा	लालचद विनोदीलाल	(हि०)	११६

★ ग्रन्थ प्रशस्तियों की सूची ★

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
१.	अध्यात्मसवैया	रूपचंद	—	६२८
२	आगमसार	मुनि देवचन्द्र	सं० १७७६	१
३.	आदिनाथ के पंचमंगल	अमरपाल	—	८५६
४	आदिनाथस्तवन	ब्र० जिनदास	—	५१५
५	आराधनास्तवन	वाचक विनयविजय	सं० १७२६	६२१
६	इश्कचमन	नागरीदास	—	४७०
७	उपदेशसिद्धांतरत्नमाला भाषा	—	सं० १७७२	१५२
८	उपासकदशासूत्रविवरण	अभयदेव सूरि	—	१५४
९	ऊषा कथा	रामदास	—	५१६
१०	एक सौ गुणहत्तर जीव पाठ	लक्ष्मणदास	सं० १८२४	५
११.	करुणाभरन नाटक	लच्छीराम	—	५२६
१२	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	—	११
१३	कर्मस्वरूपवर्णन	—	—	१८
१४	कविकुलकंठाभरण	दूलह	—	४७१
१५	कामन्दकीयनीतिसार भाषा	कामद	—	०७६
१६	काल और अंतर का स्वरूप	—	—	१८
१७	गणभेद	रघुनाथ साह	—	५०७
१८	गुणाक्षर माला	मनराम	—	६३२
१९.	गोमट्टसारकर्मकांड भाषा	पं० हेमराज	—	३७
२०	गौतमपृच्छा	—	—	५४४
२१	चंदराजा की चौपई	—	सं० १६०३	७३२
२२	चन्द्रहंसकथा	टीकम	सं० १७०८	५४६
२३	चारित्रसारपंजिका	—	—	१६१

क्रम सख्या	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्र थ सूची का क्रमांक
२४	चारित्रसारभापा	मन्नालाल	स० १८७१	१६२
२५	चौबीसठाणाचौपई	साह लोहट	सं० १७३६	८६१
२६	चौरासीगोत्रोत्पत्तिवर्णन	नदानद	—	४८३
२७	छवितरंग	महाराजा रामसिंह	—	५६७
२८	छदरत्नावली	हरिराम	स० १७०८	५८२
२९	जडतपदवेलि	कनकसोम	स० १६२५	६०३
३०	जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	—	२४७
३१	जानकीजन्मलीला	बालवृन्द	—	५६६
३२	जिनपालित मुनि स्वाध्याय	विमलहर्ष वाचक	—	५५
३३	जैनमार्त्तण्ड पुराण	भ० महेन्द्र भूषण	—	४८४
३४	ज्ञानसार	रघुनाथ	—	५०७
३५	तत्वसारदोहा	भ० शुभचन्द्र	—	१६
३६	तत्वार्थबोध भापा	बुधजन	स० १८७९	६५
३७	तत्वार्थसूत्र भापाटीका	कनककीर्त्ति	—	८२, ६२
३८	तमाखू की जयमाल	आणदमुनि	—	८०८
३९	त्रिलोकसारबधचौपई	सुमतिकीर्त्ति	स० १६२७	७१६, ५६४
४०	त्रिलोकसारभापा	उत्तमचन्द	स० १८४१	५६८
४१	दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	—	५१४
४२	दस्तूरमालिका	वशीधर	स० १७६५	८६४
४३	द्रव्यसग्रहभापा	वशीधर	—	१२४
४४	श्री धू चरित्त	—	—	५७६
४५	नववाडसज्झाय	जिनहर्ष	—	८०८
४६	न्यायदीपिकाभापा	पन्नालाल	स० १९३५	३१२
४७	नागदमनकथा	—	—	७५८
४८	नित्यविहार (राधामाधो)	रघुनाथ साह	—	५०७
४९	नेमिजी का व्याहलो (नवमंगल)	लालचन्द	—	६२५
५०	नेमिव्याहलो	हीरा	स० १८४८	५५४
५१	नेमिनाथचरित्र	अजयराज	स० १७९३	६०६

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
५२	नवबत्तीसी	हेमविमल सूरि	सं० १५६०	४८५
५३	नदरामपच्चीसी	नदराम	स० १७४५	५७२
५४	परमात्मपुराण	दीपचन्द	—	२६८
५५	पाकशास्त्र	अजयराज पाटनी	स० १७६३	७२६
५६	पार्श्वनाथ स्तुति	भानकुशल	—	८०६
५७	पुरदरचौपई	ब्र० मालदेव	—	५५७
५८	पुण्यसारकथा	पुण्यकीर्त्ति	स० १६६६	५६७
५९.	पचाख्यान (पचतत्र)	कवि निरमलदास	—	५६७
६०	पचास्तिकायभाषा	बुधजन	स० १८६२	१३२
६१	प्रबोधचन्द्रोदय	मल्ल कवि	स० १६०१	५८६
६२	प्रतिष्ठासारसग्रह	वसुनदि	—	४०५
६३.	प्रद्युम्नचरित्र	सधारु	स० १४११	४६७
६४	प्रसगसार	रघुनाथ	—	५०७
६५.	बारहखडी	श्रीदत्तलाल	—	८४०
६६	बुधरासा	—	—	८०८
६७.	भक्तामरस्तोत्रभाषा	गगाराम पांडे	—	७३१
६८	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	भ० रत्नचन्द्र सूरि	स० १६६७	४२६
६९.	भक्तिभावती (भक्ति भाव)	—	—	५७६
७०.	भद्रबाहुचरित्रभाषा	चपाराम	सं० १८००	२६६
७१.	भद्रबाहुचरित्र	किशनसिंह	स० १७८२	५२७
७२.	मदनपराजय भाषा	स्वरूपचद बिलाला	स० १९१८	५६०
७३	मधुमालतीकथा	—	—	५७४
७४.	महाभारत	लालदास	—	५१८
७५.	मानमजरी	नददास	—	५०५
७६	मितभाषिणी टीका	शिवादित्य	—	३१६
७७	मूलाचारभाषाटीका	ऋषभदास	स० १८८८	२११
७८.	मृगीसवाद	—	—	७२६
७९.	मोडा	हर्षकीर्त्ति	—	८०७
८०	यशोधरचरित्र	परिहानद	स० १६७०	५१४
८१	रामकृष्णकाव्य	प० सूर्यकवि	—	२६३

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
८२	रूपदीपपिंगल	जयकृष्ण	स० १७७६	५८५
८३	वच्छराजहंसराजचौपई	जिनदेव सूरि	—	६३६
८४.	वणिकप्रिया	सुखदेव	सं० १७६०	७१६
८५.	वर्द्धमानपुराणभाषा	प० केशरीसिंह	स० १८७३	४७१
८६	वकचोरकथा	नथमल	स० १७२५	३३४
८७.	विक्रमप्रवधरास	विनयसमुद्र	स० १५८३	६०३
८८.	विद्याविलासचौपई	आज्ञासुन्दर	स० १५१६	६०३
८६.	वैतालपच्चीसी	—	—	५६२, ६०३
६०	वैनविलास	नागरीदास	—	४७२
६१	वैराग्यशतक	—	—	२७६
६२.	व्रतविधानरासो	सगही दौलतराम	सं० १७६७	५०४
६३	शांतिनाथस्तोत्र	कुशलवर्द्धन शिष्य नगागणि	—	४४२
६४	शालिभद्रचौपई	जिनराज सूरि	स० १६७८	५६७
६५	श्रृंगारपच्चीसी	छविनाथ	—	४७५
६६.	पट्मालवर्णन	श्रुतसागर	स० १८२१	७६२
६७	पोडशकारणव्रतकथा	व्र० ज्ञानसागर	—	५१४
६८	सतरप्रकारपूजा प्रकरण	साधुकीर्त्ति	स० १६१८	५३५
६६	सप्तपदार्थी	भावविद्येश्वर	—	३१७
१००	सखेश्वरपार्श्वनाथ स्तुति	रामविजय	—	८०८
१०१.	सयमप्रवहण	मुनि मेघराज	सं० १६६१	६४
१०२	संबोधसत्तरी सार	—	—	२४१
१०३	संबोधपचासिका	रइधू	—	२३६
१०४	साखी	कबीरदास	—	६२६
१०५.	सामायिकपाठभाषा	त्रिलोकेन्द्रकीर्त्ति	सं० १८३२	६८७
१०६	सारसमुच्चय	कुलभद्र	—	२४४
१०७	सारसमुच्चय	दौलतराम	—	२४५
१०८.	सुकुमालचरित्र भाषा	नाथूलाल दोसी	—	२६३
१०६	सुबुद्धिप्रकाश	थानसिंह	सं० १८४७	६११

★ लेखक प्रशस्तियों की सूची ★

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	लेखन काल	ग्रन्थ सूची का क्रमांक
१.	आगमसार	मुनि देवचन्द्र	सं० १७६६	१
२.	आत्मानुशासन टीका	पं० प्रभाचन्द्र	स० १५८१	२५३
३	आदिपुराण	पुष्पदंत	स० १५४३	२६६
४	आराधनाकथाकोष	—	स० १५४५	३१७
५	उत्तरपुराण	पुष्पदंत	स० १५५७	५७६
६	उपासकाध्ययन	आ० वसुनंदि	स० १८०८	४८
७	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	स० १६०६	६
८	कर्मप्रकृति	"	स० १६७६	१२
६.	गोमट्टसार	"	स० १७६६	२६
१०.	चतुर्विंशतिजिनकल्याणक पूजा	जयकीर्त्ति	सं० १६८४	२४५
११.	चारित्रशुद्धिविधान	भ० शुभचन्द्र	स० १५८४	३५३
१२.	जंवूस्वामीचरित्र	महाकवि वीर	सं० १६०१	५८५
१३.	जिणयत्तचरित्त	प० लाखू	सं० १६०६	५८६
१४.	जिनसंहिता	—	सं० १५६०	३५६
१५.	णायकुमारचरिए	पुष्पदंत	सं० १५१७	४६०
१६.	"	"	स० १५२८	४६१
१७.	तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	सं० १६४६	७८
१८.	तत्वार्थसूत्र वृत्ति	—	सं० १५५७	७६
१६.	त्रैलोक्य दीपक	वामदेव	स० १५१६	६०१
२०.	द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	—	१११
२१.	द्रव्यसंग्रहटीका	ब्रह्मदेव	सं० १४१६	२८
२२	धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्त्ति	सं० १६५६	४६३
२३	धन्यकुमारचरित्र	"	सं० १५६४	३५१
२४.	धर्मपरीक्षा	आ० अमितगति	सं० १७६२	१७७
२५	नंदवत्तीसी	हेमविमल सूरि	सं० १६	४८५
२६.	पद्मनंदिपंचविंशति	पद्मनंदि	सं० १५३२	१६१

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	लेखन काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
२७.	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	स० १४८६	११६
२८.	प्रबोधसार	प० यश कीर्त्ति	सं० १५२५	१६५
२६.	प्रवचनसारभाषा	हेमराज	स० १७११	२७१
३०.	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	सकलकीर्त्ति	स० १६३२	१६६
३१	बाहुबलिदेवचरिए	प० धनपाल	स० १६०२	५००
३२	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	भ० रत्नचन्द्र सूरि	स० १७२५	४२६
३३	भगवानदास के पद	भगवानदास	स० १८७३	४२६
३४	भविसयत्तचरिए	प० श्रीधर	सं० १६४६	५०५
३५.	भविसयत्ताचरिए	"	सं० १६०६	५०६
३६.	भावसग्रह	देवसेन	सं० १६२१	१३३
३७.	"	"	सं० १६०६	१३४
३८.	"	श्रुतमुनि	स० १५१०	१३५
३६.	भोजचरित्र	पाठक राजवल्लभ	सं० १६०७	५०७
४०.	मृगीसंवाद	—	स० १८२३	७२६
४१	मूलाचारप्रदीपिका	भ० सकलकीर्त्ति	स० १५८१	२१०
४२.	यशोधरचरित्र	वासवसेन	स० १६१४	२७७
४३	लब्धिसार	नेमिचन्द्राचार्य	सं० १५५१	१३६
४४.	वड्ढमाणकहा	नरसेन	स० १५८४	५१८
४५	वड्ढमाणकव्व	प० जयमित्रहल	स० १५५०	५१६
४६	वणिकप्रिया	सुखदेव	सं० १८५५	७१६
४७.	शब्दानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	सं० १५२४	३६५
४८.	षट्कर्मोपदेशमाला	अमरकीर्त्ति	सं० १५५६	५२३
४६	षट्कर्मोपदेशमाला	भ० सकलभूषण	स० १६४४	८६
५०	षट्पचासिका बालावबोध	भट्टोत्पल	सं० १६५०	४५६
५१	समयसार टीका	अमृतचन्द्राचार्य	स० १७८८	२८३
५२	"	"	स० १८००	२८६
५३.	समयसारनाटक	बनारसीदास	स० १७०३	२६०
५४.	संयमप्रवहण	मुनि मेघराज	स० १६८१	६४
५५	सिद्धचक्रकथा	नरसेनदेव	सं० १५१५	५३३
५६	हरिवंशपुराण	महाकवि स्वयभू	सं० १५८२	५३६

ग्रंथ एवं ग्रंथकार

संस्कृत-भाषा

प्राकृत–भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	रयणसार	१८७
	षट्पाहुड	४३, ११०, १३२, १६४
	समयसार	१३२, १६४, १८७
गौतम स्वामी—	संबोधपचासिका	१२३, १८६
देवसेन—	आराधनासार	८०, ११०, ११७, ११८, १६१, ३१२
	तत्वसार	१०, ११०
	दर्शनसार	१५६, १६६
	भावसंग्रह	२०, १८१
	संबोधपंचासिका	११८
धर्मदास गणि—	उपदेशसिद्धांतरत्नमाला	२३
भंडारी नेमिचन्द्र—	उपदेशसिद्धांतरत्नमाला	२३
	षष्टिशतप्रकरण	३१०
नेमिचन्द्राचार्य—	आश्रवत्रिभंगी	१
	उदय उदीरणा त्रिभंगी	१६
	कर्मप्रकृति	३, १३५, १७६
	क्षपणासार	६
	गोमट्टसार	६, १७७
	गोमट्टसार (कर्मकाण्ड गाथा)	११२
	चौबीस ठाणा चर्चा	६, १७७
	जीव समास वर्णन	१०
	त्रिभंगीसार	११०, १७६
	त्रिभंगीसारसदृष्टि	१८०
	त्रिलोकसार	६२, २३४
	द्रव्यसंग्रह	१६, १०७, ११२, १२२, १४५, १८०
	बंधत्रिभंगी	१६
	भावत्रिभंगी	१६
	लब्धिसार	२०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	विशेषसत्तात्रिभंगी	१६
	सत्तात्रिभंगी	१६
पद्मनन्दि—	धर्मरसायन	२६, १८४
	पद्मनन्दिपंचविंशति	३०, २५६
भावदेवाचार्य—	कालिकाचार्यकथानक	२१५
भाव शर्मा—	दशलक्षण जयमाल	५४, २०१
विनयराज गणि—	रत्न संचय	१८१
यति वृषभ—	त्रिलोक प्रज्ञप्ति	२३५
हेमचंद्र सूरि—	पुष्पमाला	१८६

अपभ्रंश भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अमरकीर्त्ति—	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	७८, १८८
गोयमा—	रोग (क्रोध) वर्णन	११७
जयमित्र हल—	वर्द्धमान काव्य	७७
	श्रेणिक चरित्र	७८
धनपाल—	बाहुबलि चरित्र	७२
	भविसयत्तपंचमीकहा (भविष्यदत्त पंचमी कथा)	७३, २१६
धवल—	हरिवंशपुराण	१७४
नयमानन्द—	सुगंधदशमीव्रत कथा	८६
नरसेन देव—	वर्द्धमान कथा	७७
	सिद्धचक्र कथा	७६
भंडारी नेमिचन्द्र—	नेमीश्वर जयमाल	११७
पुष्पदंत—	आदिपुराण	२२२
	उत्तरपुराण	६७
	नागकुमारचरित्र	६१
मनसुख—	कल्याणक वर्णन	१३७
यशःकीर्ति—	हरिवंशपुराण	१२४
पं० योगदेव—	मुनिसुव्रतानुप्रेक्षा	११७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
योगीन्द्रदेव—	दोहा शतक	१६२
	परमात्मप्रकाश	४१, ११४, ११८, १३१, १७१, १६७
	योगसार	४२, ११४, ११६, ११८, १३२, १६४, १६४, २०५
	श्रावकाचार दोहा (सावयधम्मदोहा)	१८६
रइधू—	आत्मसंबोधन काव्य	३६
	दशलक्षण जयमाल	५२, २०१
	बलभद्र पुराण	२२३
	षोड़शकारण जयमाल	६१
	सबोध पचासिका	३६
पं० लाखू—	जिणयत्तचरित्र	६६
वीर—	जम्बूस्वामीचरित्र	६८
स्वयंभू—	हरिवंश पुराण	७६
कवि सिंह—	प्रद्युम्नचरित्र	२१३
हरिषेण—	धर्मपरीक्षा	१८४

हिन्दी भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अखयराज (श्रीमाल)	कल्याणमंदिरस्तोत्र भाषा	१०२
	भक्तामरस्तोत्र भाषा	११४
अखयराम लुहाडिया—	शीलतरंगिनी कथा	८६
साह अचल—	सारमनोरथमाला	११७
अचलकीर्ति—	कर्मबत्तीसी	१७७७
	विषापहार स्तोत्र भाषा	१०६, १२४, १२६, १३१, २४३
अजयराज (पाटणी)	आदिनाथ पूजा	१३०
	कक्का बत्तीसी	१३३, १५१
	चरखा चउपई	१५५
	चार मित्रों की कथा	१५३
	चौबीसतीर्थंकर पूजा	१३०, १५३
	चौबीसतीर्थंकर स्तुति	१३०
	जिनगीत	१६३
	जिनजी की रसोई	१७६
	णमोकर सिद्धि	१३१
	नंदीश्वर पूजा	१३०
	नेमिनाथ चरित्र	२६८
	पद	१३०, १३२, १२३, १६३
	पचमेरु पूजा	१३०
	पार्श्वनाथजी का सालेहा	१३०
	बाल्यवर्णन	१३०
	बीसतीर्थंकरों की जयमाल	१३०
	यशोधर चौपई	७७
	चंदना	१३०
	शांतिनाथ जयमाल	१३०
	शिवरमणी का विवाह	१६३
	विनती	१५१
ब्रह्म अजित—	हंसा भावना	११७
अनंतकीर्त्ति—	जखडी	१५६
अभयचंद्र सूरि—	मांगीतुंगी स्तवन	३०३
अमरपाल—	आदिनाथ के पंच मंगल	१६८
अमरमणिक—	चैत्रीविधि	१४५
बालक अमीचन्द—	बधाई	१३७
अवधू—	द्वादशानुप्रेक्षा	११६
आज्ञा सुन्दर—	विद्याविलास चौपई	२६६
आणंदमुनि—	तमाखू की जयमाल	१५०, २६२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	निशिभोजनत्याग कथा	८४, २२६
	शीलकथा	८५, २८७
भावकुशल—	पार्श्वनाथस्तुति	१४६
भावभद्र—	चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	१४०
भुवनकीर्ति—	कलावती चरित्र	६७
	चिंतामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	१४०
भूधरदास—	एकीभावस्तोत्र भाषा	२३८, ३११
	गजभावना	३११
	चर्चा समाधान	६, ११७
	जखडी	१३७, ३१२
	जैनशतक	६४, १३४, २३५
	पद सग्रह	११३, १३२, १३७, १५१
	पचमेरु पूजा	५७, ३११
	पार्श्वपुराण	७०, १११, २१३
	बारह भावना	१५७
	भूधर विलास	३१२
	वज्रनाभि चक्रवर्ती की	१५४, १६२
	वैराग्य भावना	३११
	बाईस परीषह	३११
	वीनतियाँ	३११
भूधरमल्ल—	हुक्का निषेध	१०६
मनराम—	अक्षरमाला	१०७
	गुणाक्षरमाला	३०६
	धर्मसहेली	१६७
	पद	११४, ११५, १२०, १४०, ३००
	बडा कक्का	१५३
	बत्तीसी	२१६
	मनराम विलास	२३६
	रोगापहार स्तोत्र	११५
	विनती	३०६, ३०७
मनरंग—	चौबीस तीर्थंकर पूजा	१६६
	पार्श्वनाथ स्तोत्र	१४०
मनसुखराम—	शिखर विलास	१८८
मनसुख सागर—	सम्मेदशिखर महात्म्य	३६
मन्नालाल (खिन्दूका)		
	चारित्रसार भाषा	२५
	पद्मनंदिपच्चीसी भाषा	३१
मनोहरदास—	ज्ञानचिंतामणि	७८, १३१, १५३, २३५
	धर्म परीक्षा	२६
मनोहर—	चिन्तामणि मान बावनी	११२, ११६
	लघु बावनी	११६
	सुगुरु सीख	१६५
मनहरण—	भास	२६२
मलजी—	पद सग्रह	१३०
कवि मल्ल—	प्रबोधचन्द्रोदय (नाटक)	६०
महमद—	पद	१४६
महिमा सागर—	स्तमनक पार्श्वनाथ गीत	२७३
मुनि महिसिंह—	अक्षर बत्तीसी	२५२
ब्र० मालदेव—	पुरदर चौपई	८४, ११४
बाई मेघश्री—	पचाणुव्रत की जयमाल	३०५
मुनि मेघराज—	सयम प्रवहण	१८६
उपाध्याय मेरुनन्दन—		
	अजित शांति स्तोत्र	१४०
सहजकीर्त्ति—	प्रीति छत्तीसी	२६२
यशोनन्दि—	श्रीजिननमस्कार	१६७
रघुनाथ—	गणभेद	२६१
	ज्ञानसार	२६०
	नित्यविहार (राधा माधो)	२६२

★ शुद्धाशुद्धि विवरण ★

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१× १ ३१५×१५	अन्तगढदशाओ वृत्ति	अन्तगडदशाओ वृत्ति
१× ७	इकवीसठाणा चर्चा	इकवीसठाणा—सिद्धसेनसूरि
१×१३	जीवपाठ	जीवसंख्यापाठ
१×१४	माघ सुदी	पोस बुदी
२×१६	—	१ से १७ तक सभी पाठ रामचन्द्र कृत हैं।
४× ६	कणयणिंद	कणयणंदी
५×२२	पावछी	यावछी
८×१५	वोछ	वोन्छं
६×२१	समोसरमवर्णन	समोसरणवर्णन
१३×११	१८३६	१८४६
१५×१७	×	१४२६
२०×२२	जिनाय	—
२४× ७	भडार	भडारी
२८×२२	—	भाषा–हिन्दी
२६× ६	रचनाकाल ×	रचनाकाल—
३६×२३ ३४५×२५ ३५३×२४	रइधू	अज्ञात
३८×१६	मे प्रतिलिपि की थी	मे संशोधन करके प्रतिलिपि करवाई थी
३६× ७	५१	२५१
३६×२०	चिन्तान	चित्तान्
३६×२०	धर्मरेजितचैतसान	धर्मरंजितचेतसान
४१× ६	भाषा–अपभ्रंश	—
४५×१८	वियानन्दि	वियानन्द

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
४६×१४	१८८३	१८६३
४६× ७ ३४६×१२	आ. समन्तभद्र	पूज्यपाद
४७×१०	यति	अभिनव
४७×१३	३१	३१२
४८×१०	स० १६२७ श्रावण सुदी २	सं० १८६३ अषाढ सुदी ४ बुधवार
६०×२३	—	भाषा-संस्कृत
६१× ३	प्राकृत	अपभ्रंश
६५×२५	रामचन्द	रायचन्द
६६× ८	अधुसारि	अनुसारि
६६× ७	वसतपाल	वसतपाल
७०×१८	प्रद्युम्नचरि	प्रद्युम्नचरित—सधारु
७३×२४	भविसयन्त	भविसयत्त
७५× २	संस्कृत	अपभ्रंश
७५× ४ ३३६×२३ ३५२×३०	परिहानन्द	नन्द
७६×२२	परिहानन्द	परि हां नन्द
७८×१६	सं०१६१८	सं० १६७८
७८×२६	आराधना	दौलतरामजी कृत आराधना
७६× ३	श्रेणिक चरित्र	श्रेणिक चरित्र (वर्द्धमान काव्य)
७६×११	कवि बालक	कवि रामचन्द "बालक"
८१×१६	गौतम पृच्छा	गौतमपृच्छा वृत्ति
८२× १	अंतिमपाठ—"पाठक पद सयुक्तं" के पूर्व निम्न श्लोक और पढे —	

श्रीजिनहर्षसूरिणा सुशिष्या पाठकवरा ।
श्रीमत्सुमतिहसाञ्च तच्छिष्योमतिवर्द्धते ॥ १ ॥

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
८४×१८	ब्र० मालदेव	मालदेव
८४×२१	अनुरुव कोठ	अउरुव कोउ
८४×२५	अगर्या मील तो	अगमी मीलतो
८५×२५	मारामल्ला	मारामल्ल

पत्र एव पक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
८५X२५	पथ	पद्य
८६X ८	आ०	भ०
८७X ७	१७०८	१७६५
८७X ७	लेखनकाल X	लेखनकाल-सं० १८०६ फागुण बुदी १३
८७X२१	रचन	रचना
६०X१५	प्रारंभिक पाठ के चौथे पद्य से आगे निम्न पद्य और पढ़ें—	

अंतर नाडी सोखैं वाय, समरस आनद सहज समाय।
विस्व चक्र मे चित न होय, पंडित नाम कहावै सोय ॥ ५ ॥
जब वर खेमचन्द गुर दीयो, तब आरभ ग्रंथ को कीयो।
यह प्रवोध उतपन्यो आय, अधकार तिहि घाल्यो खाय ॥ ६ ॥
भीतर बाहर कहि समुझावैं, सोई चतुर तापै कहि आवैं।
जो या रस का भेदी होय, या मे खोजैं पावैं सोइ ॥ ७ ॥
मथुरादास नाम विस्तारथ्यो, देवीदास पिता कौ धारथ्यो।
अंतर वेद देस मे रहै, तीजैं नाम मल्ह कवि कहै ॥ ८ ॥
ताहि सुनत अद्‌भुति रुचि भई, निहचैं मन की दुविधा गई।
जितने पुस्तक पृथ्वी आहि, यह श्री कथा सिरोमणि ताहि ॥ ६ ॥
यह निज बात जानीयो सही, पर्चैं प्रगट मल कवि कही।
पोथी एक कहुं तै आनि, ज्यो उहां त्यों इहा राखी जानि ॥ १० ॥
सोरह सै सवत जब लागा, तामहि वरष एक अर्द्ध भागा।
कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वादसी, ता दिन कथा जु मन में बसी ॥११॥
जो हों कृष्ण भक्ति नित करौं, वासुदेव गुरु मन मे धरौं।
तो यह मोपैं ह्वै ज्यौं जिसी, कृष्ण भट्ट भाषी है तिसी ॥१२॥

॥ दोहा ॥

मथुरादास विलास इहि, जो रमि जानैं कोय।
इहि रस वेधे मल्ह कहि, बहुरनि उलटैं सोय ॥१३॥
जब निसु चन्द्र अकासैं होइ, तब जो तिमिर न देखैं कोइ।
तैसे हि ज्ञान चन्द्र परकासैं, ज्यौं अज्ञान अध्यारौ नासै ॥१४॥
परमात्म परगट है जाहि, मानौ इहै महादेव आहि।
ग्यान नेत्र तीजे जब होई, मृगतृष्णा देखैं जगु सोई ॥१५॥

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ

अनुभै ध्यान धारना करैं, समता सील माहि मन धरैं ।
इहि विधि रमि जो जानैं सही, महादेव मन वच क्रम कही ॥१६॥

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
६०×२६	या र	यार
६१×३ ३६४×७	उतमचंद	टोडरमल
६४×६	बनारसीदास	द्यानतराय
१००×१८	वाचक विनय सूरि	वाचक विनय विजय
१०१×६	उगणसीयइ	उगणतीसइ
१०१×६	राते रचउ	राते
१०१×७	कारया	कारणां
१०१×६	इठवन	इतवन
१०३×२६	नेमिदशभवर्णन	नेमिदश भववर्णन
१०४×२२	मानतुंगाचार्य टीकाकार	मानतुंगाचार्य । टीकाकार
१०७×२१	६	५
१०६×१	प्रथम पक्ति के आगे निम्न पक्ति और पढे— "शिष्य ताहि भट्टारक मत, तिलोकेन्द्रकीरति मतिव्रत ।	
११०×११	प्राकृत („)	अपभ्रंश
११४×१,१८	कवि बालक	कवि रामचन्द्र 'बालक'
११४×२३	दोह	दोहा
११५×२४	१६६१	१६६३
१ ७×१४	नि कनकामर	मुनि कनकामर
१२१×२	१७६०	१७१७
१२७× ७	ोप	विशेष
१३ ×६	मनरकट	मरकट
१३५×३	वडा चादन्त	वड़ाचा दन्त
१३७×५	वंदो के पठनार्थ ने	चंदो के पठनार्थ
१३८×११	क	धार्मिक
१३६×१	का नाम	कर्त्ता का नाम
१३६×२६	चरित	धू चरित

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१४६×५	ललचचंद	लालचन्द
१४७×१६ ३६३×२७	अमरमणिक	अमरमणिक के शिष्य साधुकीर्त्ति
१४८×२	माणिक सूरि	पुण्यसागर
१४८×२४, २६ ३३८×२६ ३५२×२६	मोडा	मोरडा
१४६×२१	गुजराती	हिन्दी (राजस्थानी)
१४६×३	मोडो	मोरडो
१५०×११	जसुमालीया	जसु मालिया
१५०×१८	कापथ	कायथ
१५०×२०	पखार	परवार
१५१×६	नारी चरित्र	नारी चरित्र संबंधी एक कथा
५५×१०	जैन	जे न
१५५×२१	बुधजन	द्यानतराय
१५०×६	राज पट्टावली	देहली की राजपट्टावली
१५६×१०	राजाओं के	देहली के राजाओं के
१६३×१५ ३७०×२१	ज्ञानबत्तीसी	अध्यात्म बत्तीसी
१७०×६	३५ वें पद्य के आगे की पक्ति निम्न प्रकार है— तस शिष्य मुनि नारायण जपइ धरी मनि उल्हास ए ॥१३५॥	
१६६×८	पत्र सख्या– ।	पत्र सख्या–१६ ।
१७८×२६	रचनाकाल–× ।	रचनाकाल सं० १४२६ ।
१८०×१६	कण कणत्व	देवपट्टोदयाद्रितरुण तरुणित्व
१८०×१८	लोधा ही	लोधाही
१८४×६	विमलहर्षवाचक	भाव
१८७×११	१६०७	१६००
१८७×१६	१८२१	१६२१
१८८× ६	१४४४	१६४४
१६०×२१	श्रीरत्नहर्ष	श्री रत्नहर्ष के शिष्य श्रीसार
१६४× ४	भव वैराग्य शतक	वैराग्यशतक

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१६४×१८	भूधर	पं० भूधर
१६६×१७	धर्मभूषण	अभिनव धर्मभूषण
२००×२५	तेलाव्रत	लब्धिविधान तेला व्रत
२०४×१५ ३१८×१०	आ० गणिनंदि	आ० गुणिनंदि
२०४×२४	पीले	पील्या
२१८×१६	पंडि	पंडित
२१६×२४	रचनाकाल	रचनाकाल सं० १६१८
२२१×१२	कवि बालक	कवि रामचन्द्र 'बालक'
२२१×१३	सं० १७०३	१७१३
२२४×१६	अष्टान्हिका कथ	अष्टान्हिका कथा–मतिमंदिर
२२७× ७	कनककीर्ति	कनक
२२७×२१ ३३६× २	वकचोरकथा (धनदत्त सेठकी कथा)	वकचोरकथा, धनदत्त सेठ की कथा
२२८×२१	देव ए	देवरा
२२८×२६	सै मदारखां	सैंमदारखा
२३५× २ ३५०×१८ ३६४×५	कामन्द	—
२३५×१५	१७२६	१७२८
२३७× ७	१०८०	१७८०
२३८×१०	कुमुदचन्द्र	मू० क० कुमुदचन्द्र/टीकाकार उतमऋषि
२४०× ८	जयानंदिसूरि	जयनंदिसूरि
२४०×१४	शलिपंडित	शालि पंडित
२४३×१७	(युगादि देव स्तवन)।	(युगादिदेव स्तवन) विजयतिलक
२४३×२७	मिधुण्यो	मिंघुण्यो
२४४× २	ए भणइ	पभणइ
२४५× ६	ज्योतिष (शकुनशास्त्र)	वास्तुविज्ञान
२४६× ७	वराहमिहरज	वराहमिहर
२५२×१०	महिसिंह	महेस

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२५२×१४	महसंहि	महेसहि
२५२×१६	गोत्रवर्णन	खडेलवालों के गोत्र वर्णन
२५३× ६	रचनाकाल	रचनाकाल सं० १८८६
२५३× ६	लेखनकाल सं० १८८६	लेखनकाल ×।
२५३×१५	छह सतीयासिंह	छहस तीयासिंह
२५४×२५	अब्दनीवासी	अब्द नीवासी
२५५×१४	हेमविमलसूरि	हेमविमल सूरि के प्रशिष्यण संघकुल
२५७×१६	समासो	तमासो
२५८× ६	व्रतविधानवासों	व्रतविधानरासो
२५६× ५	श्रावण	श्रावक
२६०× ८	२७०	२७० रचना काल सं० १७४३
२६७× ६	५१६	५१८
२६६×१२	वालक	रामचन्द्र 'बालक'
२७०× ६	२६	२४
२७१×१२	गोट	गोत
२७३× ६	वीर स०	विक्रम सं०
२७३×११	हिन्दी	सस्कृत
२७३×१५	१६५८	१६१८
२७३×१८	पद २	जिनदत्त सूरि गीत
२७३×१८	जिनदत्तसूरि	
२७६×८	पाठ्य	पाठ
२७६×१३	भूषाभूषण	भाषाभूषण
२८०×१०	पत्रावली	च्पत्रावली
२८४×१८ ३२८×१६ ३५१×२२	श्री धूचरित	श्री धूचरित–जनगोपाल
२८६×२८	१७६६	१६६६
२६०× ६	भाथइ	भाषइ
२६०×१२	तसघरन वनि धथाइ	तस घर नवनिधथाइ
२६०×१२	अद्वकउ न तरुवइ	अधक उनत हुवइ

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२६१×२८	जिनदत्त सूरि	मययसुन्दर
२६१×२०	र० का० स० १७२१ पद्य १०	—
२६२×८ ३०८×१८	माति छत्तीसी	प्राति छत्तीसी
२६२×८ ३३८×१८	यश कीर्त्ति	महजकीर्त्ति
२६२×१४	हरिकलश	हीरकलश
२६२×१४	स० १६३२	१६३६
२६४×७	थाउलपुरि	पाडलपुरि
२६४×११	भारवदा	भैरवदास
२६४×२८	वेतालदास	—
२६७×६	२१८	३१८
३०१×१६	„ (१२)	संस्कृत (१२)
३०१×२०	„ (१३)	हिन्दी (१३)
३०१×२५	चतुराई	परिचई
३०३×६	१७४०	१७४४
३०४×२ ३२०×२४	गुनगंजनम	गुनगंजन कला
३१०×१५	षष्ठिशत	षष्ठिशत प्रकरण
३१०×१५	„	प्राकृत
३१२×६	६१	८१
३१२×६	कुशलमुनिंद	—
३१५×८	चैनसुखदास	चैनसुख
३१५×१५	मुनि महिसिंह	मुनि महेस
३१६×७	गणचन्द्र	गुणचन्द्र
३१८×६	उपदेशशतक—बनारसीदास	उपदेशशतक—द्यानतराय
३२०×१६	यति धर्मभूषण	अभिनव धर्मभूषण
३३१×११	र्मदास	धर्मदास
३४१×२२	२६१	२६०
३५०×१८	२७६	३७६
३६२×१४	गोयमा	गोयम
३६३×१४	सम्बोध पचासिका	—
३६४×७	उत्तमचद्र	टोडरमल
३६४×५	कामन्द कामन्दकीय नीतिसार	—